सिद्धांत पंचाध्यायी

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] हरि को [illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥

जद रूप सों उदासीन तौऊ पुनि प्रेम-निपुनता ।
नेह मीठ भरै निर्मोह, गोपकुल-केलि-प्रवीनता ॥
सोइ प्रभु त्रिभुवनगामी, कामी कामिन के बस ।
सब घट अंतरजामी स्वामी परम पुरुष रस ॥
निज आत्माराम, रमत रमनि उदारा ।
विलसत प्रेम सुगन्ध, अनन्य अखंड परकासा ॥
ताते निज ही माहि फुरयौ, परि छुटि न भायौ ।
सो माया अति विमल, प्रकटित प्रेम दिखायौ ॥
जैसैं शुद्ध स्फटिका, निर्मल उजारा ।
तैसैं उज्जल रूप अपुन निज करि पतियारा ॥
अगम - उजागर - धाम, एक ह्वै सब दिखरावै ।
कामी कामिनि मनभाये, ज्यौं जिनि चहि पावै ॥
सो सब निज है देखौ, ताहौ मोहनि पेरी ।
रूप अद्भुत तें सब तें, किरनी छिटकी जैसी ॥
जोती, किरनै, उन मैं, मन मैं, अनन्त भारी ।
निज सीली चढ सों चारु चंद्रिका न्यारी (?) ॥
वह सुन्दर गति सैं चल लिहि, नवलानन्द सारे ।
रूप - रस - माधुरी, सु जस्यै, मति मति सादै ॥
सारीरैं प्रेम-प्रकासनिधि कहि सदै अविचल तजीरै ।
विहरत हैं सदै सगरे, सदा सो सरस दोर्दे ॥
सब नरहैं नवरंगित, सहज रस-रुप-रंगित ।
सोई - रस - निरखित, सो है मोहित सबन ॥

[illegible] ब्रज लौं [illegible] [illegible] यदि [illegible] ।
[illegible] मोर नचै [illegible], गोकुल-केलि-कलानिधि ॥
तौन [illegible] रमनगनी, कामी कामिन के बस ।
सब [illegible] अंतरजामी स्वामी परम गुरु जस ॥
जिन आत्माराम, [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] मैन [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥
ताहै निज ही माहि पुन्यौ, पदि दृढ़ि न भायौ ।
सो यागा अति किलति, प्रगटित प्रेम दिखायौ ॥
जैसैं कृष्ण [illegible], विदरत उदारा ।
तैसैं उज्ज्वल रस प्रगट निज करि परिवारा ॥
ज्ञान - उपासन - कारन, गुरु हैं सब दिखावै ।
कामी कामिनि समभावै, ज्यों निनि टहि गावै ॥
जो नद निज हैं देखी, ताही मोहनि पैरी ।
गुरु ब्रह्म तें सन हैं, किंहूं दिखूं जैसी ॥
मोसी, किन्है, कब मैं, मन मैं, अनन्त भारी ।
निज कीनी [illegible] मैं [illegible] [illegible] [illegible] (?) ॥
[illegible] सुन्दर [illegible] मैं [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ।
[illegible] - [illegible] - [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] मों [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] ।
[illegible] - [illegible] - [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

गोपिहि धारी [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] नहि [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible], [illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] महा [illegible], सिसुपाल भयौ जब ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] न [illegible] तब ॥
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] प्रबिसैं ।
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] सो तिन [illegible] [illegible] ॥
जोगी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] उलटि करि कै ।
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] धरि कै ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] जहँ ।
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] नहँ ॥
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] है है [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] की नाहि ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] भामिनि ।
[illegible] न [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] जो ब्रज-भामिनि ॥
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] भरी [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] त्यों [illegible] ।
[illegible] [illegible] निसि [illegible] [illegible], जिहि [illegible] भये [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कुल-[illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible], [illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] महा [illegible], शिशुपाल भयौ जब ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] न [illegible] तब ॥
[illegible], [illegible], [illegible], [illegible] अखिलनि ।
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible], [illegible] सो तिन [illegible] देहीं ॥
जोगी [illegible] [illegible]-भावना [illegible] [illegible] ते ।
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ते ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] करि कै ।
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कै ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] नहीं ॥
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] है कै जोरी [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] की [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] कामिनि ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] जो [illegible]-गामिनि ॥
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] भरी [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] । २६५
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥ [illegible]
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] । [illegible]
[illegible] ॥

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible] ।
[illegible] पहिचानें ।
[illegible] ।
[illegible] 'अलंकार' [illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] 'गनौं' ।
[illegible] 'बिरलौं' [illegible] ।
[illegible] 'गल' [illegible] ।
[illegible] 'पीवन' ।
[illegible] ।
[illegible] 'अलंकार' [illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] 'निर्धार' ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।

लयौ लपेटि सु पट वर बाल, वसुदेव चले तुरत तिहि काल।
आपुहि उघरे कुटिल किवार, भोर भये ज्यौं भजत अँध्यार।
पौरिनि परे पहरुवा ऐसैं, अति मादक मद पीये जैसैं।
घुरि आये घन करि अँधियारौ, जान्यौ परै न ज्यौं रवि वारौ।
फुही फूल से परत सुदेस, ते सहि सक्यौ न सेवक सेस।
प्रेम-मगन सु गगन में आइ, लयौ फनन कौ छत्र बनाइ।
वसुदेव सुत-मुख के उजियारे, चल्यौ जाइ आनँद भरि भारे।
जमं-अनुजा की ढिंग जौ जाइ, बाट न घाट, रही जल छाइ।
उठहि जु लहरि सुधि न कछु परै, चढ़ी गगन सौ बातैं करै।
दृष्टि परि गये मोहन जब ही, मधि तैं इत-उत ह्वै गई तब ही।
दीनौ प्रभु कौ मारग ऐसैं, सीतापति कौ सागर जैसैं।
इत सोचति देवकि महतारी, ह्वैहै मेरौ ललन दुखारी।
भरि भादौं की रैनि अँध्यारी, लहलहाति बिजुरी बजमारी।
बहरयौ बीच कलिंदी कारी, भरि रही नीर भयानक भारी।
चंद सौ बदन दुरयौ नहिं रहिहै, दैया कोऊ दूरि तैं लहिहै।
डोलत बहुत कंस के दूत, दैव कुसर सौं जैहे सूत।
यौं बिललाइ देवकी माइ, कहति कि हो हरि तुमहि सहाइ।
निरख्यौ जदपि पूत-परभाउ, तदपि प्रेम कौ यहै सुभाउ।
वसुदेव जब गोकुल में गये, देखे सब निद्रा-बस भये।
सुत जसुमति की ढिंग पौढाइ, सुता परी तहँ तैं इक पाइ।
तैं आये फिरि ताही बाट, तैसेई जुरि गये कुटिल कपाट।
बैठे बहुरि पहिरि पग बेरी, ज्यौं कोउ गाड़ि धरै धन ढेरी।

लयौ लपेटि सु पट वर बाल, वसुदेव चले तुरत तिहि काल।
आपुहि उघरे कुटिल किवार, भोर भये ज्यौं भजत अँध्यार।
पौरिनि परे पहरुवा ऐसैं, अति मादक मद पीये जैसैं।
घुरि आये घन करि अँधियारौ, जान्यौ परै न ज्यौ रवि वारौ।
फुही फूल से परत सुदेस, ते सहि सक्यौ न सेवक सेस।
प्रेम-मगन सु गगन मैं आइ, लयौ फनन कौ छत्र बनाइ।
वसुदेव सुत-मुख के उजियारे, चल्यौ जाइ आनँद भरि भारे।
जम-अनुजा की ढिंग जौ जाइ, वाट न घाट, रही जल छाइ।
उठहि जु लहरि सुधि न कछु परै, चढ़ी गगन सौं वातैं करै।
दृष्टि परि गये मोहन जब ही, मधि तै इत-उत ह्वै गई तब ही।
दीनौ प्रभु कौ मारग ऐसैं, सीतापति कौ सागर जैसैं।
इत सोचति देवकि महतारी, ह्वैहै मेरौ ललन दुखारी।
भरि भादौं की रैनि अँध्यारी, लहलहाति बिजुरी बजमारी।
बहरचौ बीच कलिंदी कारी, भरि रही नीर भयानक भारी।
चंद सौ बदन दुरचौ नहिं रहिहै, दैया कोऊ दूरि तै लहिहै।
डोलत बहुत कंस के दूत, दैव कुसर सौं जैहै सूत।
यौं बिललाइ देवकी माइ, कहति कि हो हरि तुमहि सहाइ।
निरख्यौ जदपि पूत-परभाउ, तदपि प्रेम कौ यहै सुभाउ।
वसुदेव जब गोकुल मैं गये, देखे सब निद्रा-वस भये।
सुत जसुमति की ढिंग पौढाइ, सुता परी तहँ तै इक पाइ।
सौ आये फिरि ताही बाट, तैसेई जुरि गये कुटिल कपाट।
बैठे बहुरि पहिरि पग बेरी, ज्यौं कोउ गाड़ि धरै धन ढेरी।

ताके वचन सुनत ही कंस, विस्मय भयौ, परयौ जिय संस।
कहत कि देवी बानी महा, झूठ परी सो कारन कहा।
देवकि वसुदेव दीने छोरि, बिनती करत कंस कर जोरि।
अहो भगिनि! अहो भगिनीभर्ता! मो सम नहिन पाप कौ कर्ता।
राच्छस ज्यों अपने सुत खाइ, सो मैं कीनी नीच सुभाइ।
ज्यों ब्रह्महा जीवत ही मरयौ, ऐसौ हौं हूँ विधना करयौ।
नर तौ जनी अनृत ही पगे, अमरौ अनृत वकन पुनि लगे।
जिहि विस्वास सुसा के तात, सौनक ज्यों मैं कीनी घात।
जिनि सोचहु उन के अनुराग, जातैं तुम समझत बड़ भाग।
निज प्रारब्ध कर्म करि बौरे, रहत न सदा जत इक ठौरे।
तातैं सोक तजहु दुखमई, कर्म-बिवस जु भई सो भई।
छिमा करहु मेरौ अपराध, जातैं दीनबंधु तुम साध।
ऐसैं कहि लोचन जल भरयौ, दौरि सुसा के पाइनि परयौ।
सांत भयौ देवकि कौ रोष, वसुदेव वहु पुनि कीनौ तोष।
आग्या पाइ जाइ घर कंस, कन्या-वचन सुनि परी संस।
रजनी गये भयौ परभात, मंत्रिन सौं बरनी सब बात।
सुनि नृप-वचन असुर भहराने, अमरन पर निपट ही रिसाने।
कहन लगे जौ ऐसैं आहि, महाराज तौ डरौ न ताहि।
दस दस दिन के बालक जिते, हम सब मारि डारिहैं तिते।
कौ उद्दिम करिहैं सब देव, जानत है हम उन के भेव।
असय ठौर तौ वलगन करैं, भीर परे तैं थर थर डरैं।
सुरपति कवन अल्प बल जाहि, ब्रह्मा वपुरौ तपसी आहि।

ताके वचन सुनत ही कंस, विस्मय भयौ, पर्यौ जिय संस।
कहत कि देवी बानी महा, झूठ परी सो कारन कहा।
देवकि वसुदेव दीने छोरि, बिनती करत कंस कर जोरि।
अहो भगिनि! अहो भगिनीभर्ता! मो सम नहिन पाप कौ कर्ता।
राच्छस ज्यों अपने सुत खाइ, सो मैं कीनी नीच सुभाइ।
ज्यों ब्रह्महा जीवत ही मर्यौ, ऐसौ हौं हूँ बिधना कर्यौ।
नर तौ जनी अनृत ही पगे, अमरौ अनृत बकन पुनि लगे।
जिहि बिस्वास सुसा के तात, सौनक ज्यों मैं कीनी घात।
जिनि सोचहु उन के अनुराग, जातें तुम समझत बड़ भाग।
निज प्रारब्ध कर्म करि बौरे, रहत न सदा जंत इक ठौरे।
तातें सोक तजहु दुखमई, कर्म-बिबस जु भई सो भई।
छिमा करहु मेरौ अपराध, जातें दीनबंधु तुम साध।
ऐसें कहि लोचन जल भर्यौ, दौरि सुसा के पाइनि पर्यौ।
सांत भयौ देवकि कौ रोष, वसुदेव वहु पुनि कीनौ तोष।
आग्या पाइ जाइ घर कंस, कन्या-वचन सुनि परी संस।
रजनी गये भयौ परभात, मंत्रिन सौं बरनी सब बात।
सुनि नृप-बचन असुर भहराने, अमरन पर निपट ही रिसाने।
कहन लगे जौ ऐसैं आहि, महाराज तौ डरौ न ताहि।
दस दस दिन के बालक जिते, हम सब मारि डारिहैं तिते।
को छद्दिम करिहैं सब देव, जानत हैं हम उन के भेव।
असय ठौर तौं बलगन करैं, भीर परे तें थर थर डरैं।
सुरपति कवन अल्प बल जाहि, ब्रह्मा बपुरौ तपसी आहि।

यों सुत-उदै-पयोनिधि पेखि, बढ़ति है रस-तरंग विसेखि।
बोले ब्रज के द्विज बड़भागी, जिन के हुती यहै लौ लागी।
स्वच्छ सुगंध सलिल अन्हवाये, विप्रन चंदन तिलक बनाये।
नंद के भूपन दिखि मन भूल्यौ, जनु आनद महीरुह फूल्यौ।
विधिवत जातकरम करवाइ, लागे दान दैन व्रजराइ।
द्वै लख धेनु सवछ बहु दूधी, प्रथम प्रसूता, सुंदर, सूधी।
कंचन सींग मढ़ी सोहनी, कंचन की बड़ी दोहनी।
बहुरी तिल अरु रतन मिलाइ, कीने बड़े सैल बनाइ।
ऊपर कंचन छादन छाइ, दीने व्रज के द्विजन बुलाइ।
अवर बहुत दीनौ व्रजराज, अपने कुल-मंडन के काज।
तिहि छिन नंद-सदन की सोभा, नहि कहि परत लगत जिय लोभा।
इत जु वेद-धुनि की छवि बढ़ी, मंगल बेलि सी त्रिभुवन चढ़ी।
इत मागध सु वंस जस पढ़ै, इत वंदीजन गुनगन रढ़ैं।
गावत इत जु रागिनी राग, चुये परत जिन के अनुराग।
आनँदघन जिमि दुंदुभि बजैं, जिन सुनि सकल अमंगल भजैं।
सुनि कै गोप महा मुद भरे, चले महरि-घर रंगनि ररे।
पहिरे अंबर सुंदर सुंदर, जे कब हूँ निरखे न पुरंदर।
मंगल भेट करन मैं लिये, मैन से लरिकन आगे किये।
गोपी मुदित, भयौ मन भायौ, महरि जसोदा ढोटा जायौ।
प्रफुल्लित ह्वै सो लागनि भली, को है प्रात कमल की कली।
कुंकुम-रस रंजित मुख लौने, कनक-कमल अस नाहिन होने।
चलीं तुरत सजि सहज सिंगार, छतियन उछरत मोतियन हार।

यौं सुत-इंदु-पयोनिधि पेखि, बढ़ति है रंग-तरंग विसेखि।
बोले ब्रज के द्विज बड़भागी, जिन के हुती यहै लौ लागी।
स्वच्छ सुगंध सलिल अन्हवाये, विप्रन चंदन तिलक बनाये।
नंद के भूपन दिखि मन भूल्यौ, जनु आनद महीरुह फूल्यौ।
विधिवत जातकरम करवाइ, लागे दान दैन ब्रजराइ।
द्वै लख धेनु सवछ बहु दूधी, प्रथम प्रसूता, सुंदर, सूधी।
कंचन सींग मढ़ी सोहनी, कंचन की बड़ी दोहनी।
बहुरी तिल अरु रतन मिलाइ, कीने बड़े सैल बनाइ।
ऊपर कंचन छादन छाइ, दीने ब्रज के द्विजन बुलाइ।
अवर बहुत दीनो ब्रजराज, अपने कुल-मंडन के काज।
तिहि छिन नंद-सदन की सोभा, नहि कहि परत लगत जिय लोभा।
इत जु वेद-धुनि की छवि बढ़ी, मंगल बेलि सी त्रिभुवन चढ़ी।
इत मागध सु बंस जस पढै, इत वंदीजन गुनगन रढ़ैं।
गावत इत जु रागिनी राग, चुये परत जिन के अनुराग।
आनँदघन जिमि दुंदुभि बजै, जिन सुनि सकल अमंगल भजैं।
सुनि कै गोप महा मुद भरे, चले महरि-घर रंगनि ररे।
पहिरे अंबर सुंदर सुंदर, जे कब हूँ निरखे न पुरंदर।
मंगल भेट करन मैं लिये, मैन से लरिकन आगे किये।
गोपी मुदित, भयौ मन भायौ, महरि जसोदा ढोटा जायौ।
प्रफुल्लित ह्वी सो लागनि भली, को है प्रात कमल्न की कली।
कुंकुम-रस रंजित मुख लौने, कनक-कमल अस नाहिन हौंने।
चली तुरत सजि सहज सिंगार, छतियन उछरत मोतियन हार।

षष्ठ अध्याय

सुनि लै छठौ अध्याइ अब, अहो मित्र अति चित्र ।
जहाँ सकल मल कौ हरन, वकी चरित्र पवित्र ॥

सोचत चले नंद मग माहीं वसुदेव वचन मृषा तौ नाहीं ।
हो हरि ईस्वर, सरन तुम्हारी, वा सिसु की कीजहु रखवारी ।
इक तौ सहजहि हुती नृसंस, पुनि चेरी करि प्रेरी कंस ।
ग्राम, नगर, पुर, पट्टन जिते, मास बीच के बालक तिते ।
चली पूतना सिसुन सँघारति, केउ पटकति केउ खाइहि डारति ।
इहि विधि विचरति विचरति वकी, इक दिन व्रज आई तक तकी ।
श्री सुक यों जब कही सुभाइ, राजा सुनत विकल ह्वै जाइ ।
ताकौ समाधान सुक करै, हे राजन ! इहि डर जिनि डरै ।
नाममात्र जिहि प्रभु कौ जहाँ, ऐसन कौ प्रभाउ नहि तहाँ ।
सो साच्छात नंद को धाम, भै-संका कौ इहाँ न काम ।
अद्‌भुत वनिता-वेष बनाइ, अँग अँग रूप अनूप चुचाइ ।
ललित सु भूषन, ललित दुकूल, खसि खसि परत सीस तैं फूल ।
कंठ मैं हीरा, आनन बीरा, पाइनि बाजत मंजु मँजीरा ।
लटकि चलत तब की छवि गनौं, परिहै टूटि लटी कटि मनौं ।
कमल फिरावत नयन डुरावति, मधुर-मधुर मुसकति, छवि पावति ।
गोप रहे सब जोहे मोहे, जानहिं नहिन कछू हम को हे ।
गोपी चकित चाहि कैं ताहि, कहन लगी कि रमा यह आहि ।
अपने पिय कौं देखति डोलति, यातैं नहिं काहू सौं बोलति ।

षष्ठ अध्याय

सुनि लै छठौ अध्याइ अब, अहो मित्र अति चित्र ।
जहाँ सकल मल कौ हरन, वकी चरित्र पवित्र ॥

सोचत चले नंद मग माहीं वसुदेव वचन मृषा तौ नाहीं ।
हो हरि ईस्वर, सरन तुम्हारी, वा सिसु की कीजहु रखवारी ।
इक तौ सहजहि हुती नृसंस, पुनि चेरी करि प्रेरी कंस ।
ग्राम, नगर, पुर, पट्टन जिते, मास बीच के बालक तिते ।
चली पूतना सिसुन सँघारति, केउ पटकति केउ खाइहि डारति ।
इहि विधि विचरति विचरति वकी, इक दिन ब्रज आई तक तकी ।
श्री सुक यौं जब कही सुभाइ, राजा सुनत विकल ह्वै जाइ ।
ताकौ समाधान सुक करै, हे राजन ! इहि डर जिनि डरै ।
नाममात्र जिहि प्रभु कौ जहाँ, ऐसन कौ प्रभाउ नहि तहाँ ।
सो साच्छात नंद को धाम, भै-संका कौ इहाँ न काम ।
अद्भुत वनिता-बेष वनाइ, अँग अँग रूप अनूप चुचाइ ।
ललित सु भूषन, ललित दुकूल, खसि खसि परत सीस तैं फूल ।
कंठ मैं हीरा, आनन बीरा, पाइनि बाजत मंजु मँजीरा ।
लटकि चलत तब को छवि गनौं, परिहै टूटि लटी कटि मनौं ।
कमल फिरावत नयन डुरावति, मधुर-मधुर मुसकति, छवि पावति ।
गोप रहे सब जोहे मोहे, जानहिं नहिन कछू हम को हे ।
गोपी चकित चाहि कै ताहि, कहन लगी कि रमा यह आहि ।
अपने पिय कौं देखति डोलति, यातैं नहिं काहू सौं बोलति ।

मुगं रसातल, भूतल जेतौ, सब कलमल्यौ, हलमल्यौ तेतौ।
दोउ कुच पकरि उचकि वह नारी, लै डारी गोकुल तें न्यारी।
षट कोस के लता-द्रुम जिते, चूरन ह्वै गये तिहि-तर तिते।
जे द्रुम-लता निपट प्रतिकूल, हुते न गोकुल के अनुकूल।
ते तिहि तन-तर चूरन करे, उबरे जे ब्रज-हित करि भरे।
प्रथमहि ताके नाद जु डरे, ब्रज-जन जहाँ तहाँ गिरि परे।
पाछे उठि उठि देखन धाये, देखि रूप अति त्रासहि पाये।
मुँह-बाये जु परी विकरार, तपत ताम्र से वगरे वार।
हल-दंड से वड़े वड़े दंत, गिरि-कंदर-सम नासा-दंत।
अंध कूप से नैन गँभीर, वैठि जु गये प्रान की पीर।
उदर भयंकर लागत ऐसी, विनु जल महा सरोवर जैसी।
जघन सघन जु भयानक भारे, महानदी के जनु कि किनारे।
ताके उर पर सुंदर वाल, खेलत अभय, सु नैन विसाल।
जे पद रहत भगत-जन हिये, लाल्लति ललित भाँति श्री लिये।
मुनि-मन जिनहिं पत्यात न रती, ते पद विलुठत ताकी छती।
गोपी परम प्रेम-रस-बोरी, फिरति पूतना तन पर दौरी।
ललहि उठाइ छती लपटाइ, लै आई जहँ जसुमति माइ।
ब्रजरानी अनेक धन वारति, पुनि पुनि राई लौन उतारति।
गोमूत्र लै ललहि अन्हवाइ, गोरज, गोमय अंग लगाइ।
हरि के द्वादस नामन करि कै, रच्छा करी ब्रज तियन डरि कै।
तौकों भयौ, पयोधर प्यायौ, जननी-जठर जीउ तव आयौ।
वदन चूमि जसुमति यौं भाख्यौ, आज पूत परमेसुर राख्यौ।

मुर्ग रसातल, भूतल जेतौ, सब कलमल्यौ, हलमल्यौ तेतौ ।
दोउ कुच पकरि उचकि वह नारी, लै डारी गोकुल तें न्यारी ।
षट कोस के लता-द्रुम जिते, चूरन ह्वै गये तिहि-तर तिते ।
जे द्रुम-लता निपट प्रतिकूल, हुते न गोकुल के अनुकूल ।
ते तिहि तन-तर चूरन करे, उवरे जे व्रज-हित करि भरे ।
प्रथमहि ताके नाद जु डरे, व्रज-जन जहाँ तहाँ गिरि परे ।
पाछे उठि उठि देखन धाये, देखि रूप अति त्रासहि पाये ।
मुँह-बाये जु परी विकरार, तपत ताम्र से वगरे वार ।
हल-दंड से वड़े वड़े दंत, गिरि-कंदर-सम नासा-दंत ।
अंध कूप से नैन गँभीर, वैठि जु गये प्रान की पीर ।
उदर भयंकर लागत ऐसौ, विनु जल महा सरोवर जैसौ ।
जघन सघन जु भयानक भारे, महानदी के जनु कि किनारे ।
ताके उर पर सुंदर वाल, खेलत अभय, सु नैन विसाल ।
जे पद रहत भगत-जन हिये, लालति ललित भाँति श्री लिये ।
मुनि-मन जिनहिं पत्यात न रती, ते पद विलुठत ताकी छती ।
गोपी परम प्रेम-रस-वोरी, फिरति पूतना तन पर दौरी ।
ललहि उठाइ छती लपटाइ, लै आई जहँ जसुमति माइ ।
व्रजरानी अनेक धन वारति, पुनि पुनि राई लौन उतारति ।
गोमूत्र लै ललहि अन्हवाइ, गोरज, गोमय अंग लगाइ ।
हरि के द्वादस नामन करि कै, रच्छा करी व्रज तियन डरि कै ।
ताकौ भयौ, पयोधर प्यायौ, जननी-जठर जीउ तव आयौ ।
वदन चूमि जसुमति यौं भाख्यौ, आज पूत परमेसुर राख्यौ ।

सप्तम अध्याय

अब सप्तम अध्याइ सुनि, सुंदर श्रुति कौ सार।
जामैं लाल रसाल की, बालचरित-मधुधार॥

सुनि सप्तम अध्याइ उदार, जामैं बालचरित-मधुधार।
जिहि रस-सिंधु मगन भयौ राजा, फिरि पूछै सुक अति सुख काजा।
हो प्रभु ! हरि कौ बालचरित्र, अति बिचित्र अरु परम पवित्र।
जदपि अवर हरि के अवतार, मंगलरूप सकल श्रुति-सार।
पै यह बालचरित-मधुधार, या सम कछु न अवर संसार।
पियत तृपति मानत नहिं कान, औरौ कहौ जानमनि जान।
फुरे जु बालचरित-रस-रंग, कहन लगे सुक पुलकित अंग।
इक दिन आपुहि करवट लई, जननी निरखि मुदित अति भई।
बोलि सबै गोकुल की बाला, उत्सव किये महा तिहि काला।
सकट के अध धरि कंचन-पलना, सुतहि सुवाइ नंद की ललना।
बिदा करन लोगन कहुँ लगी, डोलत सुत-सनेह रँगमगी।
रतन मिलै तिल-चावल कीनी, भरि भरि गोद सबन कौं दीनी।
पून उठै के हित ललचाइ, मति कोउ मन मैलौ करि जाइ।
लगी जु भूख ललन जब जगे, मधुर मधुर तब रोवन लगे।
पलना ढिंग बालक जब आइ, निरखे हरि बालक के भाइ।
कबहुँ किलकि किलकि कल केलत, चरन-अँगूठा मुख मैं मेलत।
जसुमति रुदन सुनति नहिं भई, अति आनंद मगन ह्वै गई।
कबहूँ चरन फिरत ज्यौं गाइ, सब मन रहत बच्छ मैं आइ।

सप्तम अध्याय

अब सप्तम अध्याइ सुनि, सुंदर श्रुति कौ सार।
जामैं लाल रसाल की, बालचरित-मधुधार ॥

सुनि सप्तम अध्याइ उदार, जामैं बालचरित-मधुधार।
जिहि रस-सिंधु मगन भयौ राजा, फिरि पूछै सुक अति सुख काजा।
हो प्रभु ! हरि कौ बालचरित्र, अति विचित्र अरु परम पवित्र।
जदपि अवर हरि के अवतार, मंगलरूप सकल श्रुति-सार।
पै यह बालचरित-मधुधार, या सम कछु न अवर संसार।
पियत तृपति मानत नहिं कान, औरौ कहौ जानमनि जान।
फुरे जु बालचरित-रस-रंग, कहन लगे सुक पुलकित अंग।
इक दिन आपुहि करवट लई, जननी निरखि मुदित अति भई।
बोलि सबै गोकुल की बाला, उत्सव किये महा तिहि काला।
सकट के अध धरि कंचन-पलना, सुतहि सुवाइ नंद की ललना।
बिदा करन लोगन कहुँ लगी, डोलत सुत-सनेह रँगमगी।
रतन मिलै तिल-चावल कीनी, भरि भरि गोद सबन कौं दीनी।
पूत उठै के हित ललचाइ, मति कोउ मन मैलौ करि जाइ।
लगी जु सूख ललन जब जगे, मधुर मधुर तब रोवन लगे।
पलना ढिंग बालक जब आइ, निरखे हरि बालक के भाइ।
कबहुँ किलकि किलकि कल केलत, चरन-अँगूठा मुख मैं मेलत।
जसुमति रुदन सुनति नहिं भई, अति आनंद मगन ह्वै गई।
कबहूँ चरन फिरत ज्यौं गाइ, सब मन रहत बच्छ मैं आइ।

परी धरनि धुकि यौं बिललाइ, ज्यौं मृत बच्छ गाइ डिडियाइ ।
जमुननि-धुनि सुनि धाईं गोपी, आईं महा बिरह-रस-ओपी ।
गिरि गईं जसुमति ढिंग-ढिंग ऐसी, कञ्चन-बेलि पवन-बस जैसी ।
त्रिभुवन कौ जु भार हो जितौ, श्री हरि उदर धर्यौ हो तितौ ।
यदपि तृनावर्त बल जुड़्यौ, ऐसैं लरिकहि लै नभ उड़्यौ ।
थोरिक दूरि गयौ रँगमग्यौ, पुनि अति भार भर्यौ डगमग्यौ ।
चहत कि वह सिसु हाथ न आयौ, यह कोउ गिरिवर जाइ उठायौ ।
लरिकहि डारन कौं अरबरे, लरिका डरपि घुरि गयौ गरे ।
गर के गहत निचेष्टित भयौ, दृगन की बाट निकसि जिउ गयौ ।
तब वह महा असुर खरहर्यौ, ब्रज के बीच सिला पर पर्यौ ।
किरच किरच टुटि-फुटि गयौ ऐसैं, हर सर हत्यौ तिपुर रिपु जैसैं ।
ताके उर पर मोहनलाल, खेलत अभै, सु नैन बिसाल ।
गोपिन धाइ जाइ सिसु लयौ, आनि जसोदा गोद मैं दयौ ।
सुनि कैं सब जन धाये आये, निरखि रूप अति बिस्मय पाये ।
चूमत बदन नंद बड़भागी, पोंछत रेनु तनय-तन लागी ।
कहत कि कवन पुन्य हम कियौ, हरि अरचे कि दान बहु दियौ ।
काल के मुख मैं बालक गयौ, तहँ तैं बहुरि बिधाता दयौ ।
पापी अपने पापहि मरै, साधु की रच्छा ईस्वर करै ।

दीपक प्रगट्यौ नंद-घर, निर्मल जोति अभंग ।
उड़ि उड़ि परन लगे जहाँ, दानव दुष्ट पतंग ।।

तृनावर्त आवन मैं बाल, भयौ जु अति भारी तिहि काल ।
जननी के जिय संका रहै, हरि वह भार जनायो चहै ।

परी धरनि धुकि यौं बिललाइ, ज्यौं मृत बच्छ गाइ डिडियाइ।
जसुमति-धुनि सुनि धाईं गोपी, आईं महा बिरह-रस-ओपी।
गिरि गई जसुमति ढिंग-ढिंग ऐसी, कंचन-बेलि पवन-बस जैसी।
त्रिभुवन कौ जु भार हो जितौ, श्री हरि उदर धर्‌यौ हो तितौ।
चढ़ियैं तृनावर्त बल जुड़्यौ, ऐसैं लरिकहि लै नभ उड़्यौ।
थोरिक दूरि गयौ रँगमग्यौ, पुनि अति भार भर्‌यौ डगमग्यौ।
चहत कि वह सिसु हाथ न आयौ, यह कोउ गिरिवर जाइ उठायौ।
लरिकहि डारन कौं अरबरे, लरिका डरपि धुरि गयौ गरे।
गर के गहत निचेष्टित भयौ, दृगन की बाट निकसि जिउ गयौ।
तब वह महा असुर खरहर्‌यौ, ब्रज के बीच सिला पर पर्‌यौ।
किरच किरच टुटि-फुटि गयौ ऐसैं, हर सर हत्यौ तिपुर रिपु जैसैं।
ताके उर पर मोहनलाल, खेलत अभै, सु नैन बिसाल।
गोपिन धाइ जाइ सिसु लयौ, आनि जसोदा गोद मैं दयौ।
सुनि कैं सब जन धाये आये, निरखि रूप अति बिस्मय पाये।
चूमत बदन नंद बड़भागी, पौंछत रेनु तनय-तन लागी।
कहत कि कवन पुन्य हम कियौ, हरि अरचे कि दान बहु दियौ।
काल के मुख मैं बालक गयौ, तहँ तैं बहुरि बिधाता दयौ।
पापी अपने पापहि मरै, साधु की रच्छा ईस्वर करै।

दीपक प्रगट्यौ नंद-घर, निर्मल जोति अभंग।
उड़ि उड़ि परन लगे जहाँ, दानव दुष्ट पतंग॥

तृनावर्त आवन मैं बाल, भयौ जु अति भारी तिहि काल।
जननी के जिय संका रहै, हरि वह भार जनायो चहै।

कही कि तुम परिपूरन नाथ ! रिधि-सिधि-निधि सब तुम्हरे हाथ।
कवन वस्तु करि पूजा कीजै, ज्यौं दिनमनि कौं दीपक दीजै।
महापुरुष जो चलत ठौर तें, नहि कछू चाहत काहु और तें।
कृपन जु गृह-ममता करि बँधे, चलि न सकत दृढ़ फंदन फँधे।
केवल तिन कौ करन कल्यान, दिखियत नहिन प्रयोजन आन।
ज्योतिसास्त्र जु अतींद्रिय ग्यान, ताके तुम ही बीज निदान।
पूर्व-जन्म जु सुभासुभ करे, जा करि जंतु जगत संचरै।
आगे होनहार पुनि जोई, प्रभु तुम सम्यक जानत सोई।
नामकरन लरिकन कौ कीजै, कवन सु विधि मोहिं आयसु दीजै।
गर्ग कहत अहो सुनि ब्रजराज ! यातें अवर न उत्तम काज।
ऐ परि हौं गुर जदु-बंस कौ, मोहिं बड़ौ डर वा कंस कौ।
सुनि पावै नीचन कौ राउ, तौ तौ होइ बड़ौ अन्याउ।
नंद कहत तौ ऐसें करौ, गृह-मधि गुपत ठौर अनुसरौ।
तनक स्वस्ति-बाचन करि लीजै, लरिकन कछू नाँउ धरि दीजै।
गर्गहि अरग गये लै नंद, अगिनिहोत्र करि मंदहि मंद।
प्रथम रोहिनी-सुत के नाम, धरन लग्यौ द्विज सब गुन-धाम।
याकौ एक नाम संकर्षन, जन-हर्षन, सब के मन-कर्षन।
बहुर्यौ रमन परम अभिराम, अति बल तै कहिहैं बलराम।
अब सुनि अपने सुत के नाम, अद्भुत अद्भुत गुन के धाम।
इक श्री कृष्न नाम अस ह्वैहै, ससि-सम सुधा सवन पर च्वैहै।
कबहूँ पूर्व-जन्म सुत तेरौ, पूत भयौ है बसुदेव केरौ।
तातें वासुदेव इक नाम, पूरन करिहैं सब के काम।

कही कि तुम परिपूरन नाथ ! रिधि-सिधि-निधि सब तुम्हरे हाथ।
कवन वस्तु करि पूजा कीजै, ज्यौं दिनमनि कौं दीपक दीजै।
महापुरुष जो चलत ठौर तें, नहिं कछु चाहत काहु और तें।
कृपन जु गृह-ममता करि बँधे, चलि न सकत दृढ़ फंदन फँधे।
केवल तिन कौ करन कल्यान, दिखियत नहिंन प्रयोजन आन।
ज्योतिशास्त्र जु अतींद्रिय ग्यान, ताके तुम ही बीज निदान।
पूर्व-जन्म जु सुभासुभ करै, जा करि जंतु जगत संचरै।
आगे होनहार पुनि जोई, प्रभु तुम सम्यक जानत सोई।
नामकरन लरिकन कौ कीजै, कवन सु बिधि मोहिं आयसु दीजै।
गर्ग कहत अहो सुनि व्रजराज ! यातैं अवर न उत्तम काज।
ऐ परि हौं गुर जदु-बंस कौ, मोहिं बड़ौ डर वा कंस कौ।
सुनि पावै नीचन कौं राउ, तौ तौ होइ बड़ौ अन्याउ।
नंद कहत तौ ऐसैं करौ, गृह-मधि गुपत ठौर अनुसरौ।
तनक स्वस्ति-वाचन करि लीजै, लरिकन कछू नाँउ धरि दीजै।
गर्गहिं अगा गये लै नंद, अगिनिहोत्र करि मंदहि मंद।
प्रथम रोहिनी-सुत के नाम, धरन लग्यौ द्विज सब गुन-धाम।
याकौ एक नाम संकर्षन, जन-हर्षन, सब के मन-कर्षन।
बहुर्यौ राम परम अभिराम, अति बल तै कहिहैं बलराम।
अब सुनि अपने सुत के नाम, अद्भुत अद्भुत गुन के धाम।
इक श्री कृष्ण नाम अस ह्वैहै, ससि-सम सुधा सबन पर च्वैहै।
कबहूँ पूर्व-जन्म सुत तेरौ, पूत भयौ हे वसुदेव केरौ।
तातैं वासुदेव इक नाम, पूरन करिहैं सब के काम।

झुनुक मुनुक वह पगन की डोलनि, मधुर तैं मधुर तोतरी बोलनि ।
आपुहि ललन चलन अनुरागे, दौरि पौरि लगि आवन लागे ।
अपने रंगन खेलत मोहन, जसुमति डोलति गोहन गोहन ।
अगन तैं, खगन तैं, नगन तैं डरै, जसुमति भाखति राखति फिरै ।
दिखि दिखि बालचरित अभिराम, बिसरे सबन धाम के काम ।
लै ब्रज-बालक अपनी वयस के, दधि माखन की चोरी चसके ।
मोहन मंत्र सौं घर घर डोरत, दधि-माखन चोरत, चित चोरत ।
जब घर आवहि मोहनलाल, अंतर सहि न सकत ब्रज-बाल ।
उरहन मिस मिलि नंद-निकेत, आवति मुख-छबि देखन हेत ।
अहो महरि ! यह तुम्हरौ तात, कहा कहैं हम याकी बात ।
असमय देइ बछरुवन छोरि, ठाढौ हँसै खरिक की खोरि ।
चोरि चोरि दधि-माखन खाइ, जौ हम देहिं तौ देइ बगाइ ।
धाम कौ काम कर्‌यौ ही चहियै, कब लगि धाम धसे ही रहियै ।
जब कोउ रचक इत उत जाइ, अरग अरग गृह-अंतर आइ ।
नूपुर, किंकिनि लेइ छिपाइ, सखन खवावै आपुन खाइ ।
अस बड़ चोर कहि न कछु आवै, चपरि कै चखन तैं मसिहि चुरावै ।
यह सुनि आनँद भरि नंद-रानी, तिन सौं कहति मुसकि मधु बानी ।
बलि बलि तौ तुम ऐसैं करौ, दिन दस भाजन ऊँचे धरौ ।
जब लगि याकी बुद्धि अयानी, तब लगि तुम ही होहु सयानी ।
तौ जनु ! जौ कोउ ऊँचे धरै, तहँ तुम सुनहु जु जतनन करै ।
तातर आनि उलूखल नावै, ऊखल पर इक सखहि चढ़ावै ।
ता पर आपुन चढ़ि कै खाइ, चोर लौं इत उत चितवत जाइ ।

झुनुक मुनुक वह पगन की डोलनि, मधुर तें मधुर तोतरी बोलनि ।
आपुहि ललन चलन अनुरागे, दौरि पौरि लगि आवन लागे ।
अपने रंगन खेलत मोहन, जसुमति डोलति गोहन गोहन ।
अगन तें, खगन तें, नगन तें डरै, जसुमति भाखति राखति फिरै ।
दिखि दिखि बालचरित अभिराम, बिसरे सबन धाम के काम ।
लै ब्रज-बालक अपनी बयस के, दधि माखन की चोरी चसके ।
मोहन मंत्र सौं घर घर डोरत, दधि-माखन चोरत, चित चोरत ।
जब घर आवहि मोहनलाल, अंतर सहि न सकत ब्रज-बाल ।
उरहन मिस मिलि नंद-निकेत, आवति मुख-छबि देखन हेत ।
अहो महरि ! यह तुम्हरौ तात, कहा कहैं हम याकी बात ।
असमय देइ बछरुवन छोरि, ठाढौ हँसै खरिक की खोरि ।
चोरि चोरि दधि-माखन खाइ, जौ हम देंहि तौ देइ बगाइ ।
धाम कौ काम कर्यौ ही चहियै, कब लगि धाम धसे ही रहियै ।
जब कोउ रचक इत उत जाइ, अरग अरग गृह-अंतर आइ ।
नूपुर, किंकिनि लेइ छिपाइ, सखन खवावै आपुन खाइ ।
अस बड़ चोर कहि न कछु आवै, चपरि कै चखन तें ससिहि चुरावै ।
यह सुनि आनँद भरि नंद-रानी, तिन सौं कहति मुसकि मधु बानी ।
बलि बलि तौ तुम ऐसैं करौ, दिन दस भाजन ऊँचे धरौ ।
जब लगि याकी बुद्धि अयानी, तब लगि तुम ही होहु सयानी ।
हो जसु ! जौ कोउ ऊँचे धरै, तहँ तुम सुनहु जु जतनन करै ।
तातर आनि उलूखल नावै, ऊखल पर इक सखहि चढ़ावै ।
ता पर आपुन चढ़ि कै खाइ, चोर लौं इत उत चितवत जाइ ।

अद्भुत सिसु कछु समझि न परै, सब विधि सब ही के मन हरै।
कबहुँक दिखियें माखन चोर, कबहूं झलकें नवल किसोर।
ऐसे सब ब्रज कहुँ मधु प्यावत, मधि नधि ईस्वरता दिखरावत।
मथुर वस्तु ज्यौं खात है कोई, बीच अमल रस रुचिकर होई।
सिसुन कौ कहि राख्यौ जसु माइ, दिखियहु बलि यह चपल कन्हाइ।
माटी खाइ सलिल मैं जाइ, बलि बलि मो सौं कहियहु आइ।
इक दिन तनक कहूँ हरि वारे, मुख मेली माखन मो हारे।
धाइ गये सिसु जहँ जसु माई, तेरे कान्हर माटी खाई।
सुनि सहि सकी न इतनी बात, हित-ईपनी जसोमति मात।
धाइ जाइ गहि कै विवि पानि, डाटन लागी आँगन आनि।
रे रे चपल-गात, अनियाई, क्यों तै दुरि कै माटी खाई।
ये सिसु सबै कहत यह बात, अरु यह तेरौ अग्रज भ्रात।
भै भरी अँखियन कहत कन्हैया, मैं माटी नहिं खाई मैया।
ये सब मिथ्यावादी आहि, इन के कहे न तनक पत्याहि।
जमुननि कहति कि अग्रज तेरौ, यह तौ झूँठ न बोलत मेरौ।
तब हरि कहत कि जौ न पत्याहि, मैया तौ मेरौ मुख चाहि।
जननी कहति तौ बदन दिखाइ, डरपे कुवर दियो मुख बाइ।
बदन मध्य जो जसुमति चहै, सगरौ विस्व चराचर अहै।
प्रथम चहौ भूगोलक तहाँ, दीप, समुद्र, सरित, गिरि जहाँ।
जोति-चक्र, जल, तेज, समीर, अगिनि, अरक, ससि, तारक भीर।
इंद्री अरु इंद्रिन के देव, सतगुन, रजगुन, तमगुन भेव।
काल, कर्म, सुभाउ अरु जंत, बुद्धि, चित्त, मन मूरतिवंत।

अद्भुत गिनु कछु समझि न परै, सब विधि सब ही के मन हरै ।
कबहुंक दिखियें माखन चोर, कबहूं झलकै नवल किसोर ।
ऐसैं सब ब्रज कहुँ मधु प्यावत, मधि मधि ईस्वरता दिखरावत ।
मधुर वस्तु ज्यौं खात है कोई, बीच ग्रमल रस रुचिकर होई ।
सिसुन कौं कहि राख्यौ जसु माइ, दिखियहु बलि यह चपल कन्हाइ ।
माटी खाइ सलिल मैं जाइ, वलि वलि मो सौं कहियहु ग्राइ ।
इक दिन तनक कहूँ हरि वारे, मुख मेली माखन मो हारे ।
धाइ गये सिसु जहँ जसु माई, तेरे कान्हर माटी खाई ।
सुनि सहि सकी न इतनी बात, हित-ईपनी जसोमति मात ।
धाइ जाइ गहि कैं विवि पानि, डाटन लागी ग्राँगन ग्रानि ।
रे रे चपल-गात, ग्रनियाई, क्यौं तैं दुरि कैं माटी खाई ।
ये सिसु सबै कहत यह बात, ग्ररु यह तेरौ ग्रग्रज भ्रात ।
भै भरी ग्रँखियन कहत कन्हैया, मैं माटी नहिं खाई मैया ।
ये सब मिथ्यावादी ग्राहि, इन के कहे न तनक पत्याहि ।
जसुननि कहति कि ग्रग्रज तेरौ, यह तौ झूँठ न वोलत मेरौ ।
तब हरि कहत कि जौ न पत्याहि, मैया तौ मेरौ मुख चाहि ।
जननी कहति तौ बदन दिखाइ, डरपे कुवर दियो मुख वाइ ।
बदन मध्य जो जसुमति चहे, सगरौ विस्व चराचर ग्रहै ।
प्रथम चर्हौ भूगोलक तहाँ, दीप, समुद्र, सरित, गिरि जहाँ ।
जोनि-चक्र, जल, तेज, समीर, ग्रगिनि, ग्ररक, ससि, तारक भीर ।
इंद्री ग्ररु इंद्रिन के देव, सतगुन, रजगुन, तमगुन भेव ।
काल, कर्म, सुभाउ ग्ररु जंत, वुद्धि, चित्त, मन मूरतिवंत ।

डरें जु जननी डाट तें, साट निरखि पुनि हाथ ।
मुख में विस्व दिखाइ कैं, बचे नाथ इहि साथ ॥
'नंद' न डरि भव-व्याल तें, बालचरित-मधु पाइ ।
स्रवन-पुटन करि पान करि, इहि अष्टमौ अध्याइ ॥

नवम अध्याय

अब सुनि मित्र नवम अध्याइ, जामैं अद्भुत अद्भुत भाइ ।
जोगीजन मन ढूँढ़त जाकौं, बाँधैगी हठि जसुमति ताकौं ।
इक दिन भोरहिं उठि नँदरानी, आपुहिं मंजु मथानी आनी ।
धौंराई दूध पूत के हित हीं, राखनि जमु जमाइ नित नित ही ।
और जु नंदमहर घर दह्यौ, कितक आहि कछु परत न कह्यौ ।
प्रेरीं तहाँ अनेक जु दासी, मंथन करें सबै कमला सी ।
ठौं ठौं मधुर मथानी बजैं, जनु नव आनँद-अंबुद गर्जैं ।
मथत जु आप जहाँ नँदरानी, सोभा नहिं कछु परत बखानी ।
सुंदर गौर बरन तन सोहैं, ओटे कंचन कौ रँग को है ।
मृदुल उजल गंगाजल पहिरें, उठति जु तन तें छबि की लहरें ।
पृथु कटि कल किंकिनि की बाजनि, बिलुलित बर कबरी की राजनि ।
नैंन की करखनि, बदन की हरखनि, तैंसिय सिर तें सुमन सु बरखनि ।
आनन पर स्रमकन अस बनी, कनक-कमल जनु ओस की कनी ।
किधौं चंद मधि प्रगटे मोती, आये जानि आपनौ गोती ।
लाल के बालचरित कछु गावति, भाग-भरी सब राग रिझावति ।

हरैं जु जननी डाट तैं, साट निरखि पुनि हाथ।
मुख मैं विस्व दिखाइ कैं, बचे नाथ इहि साथ॥
'नंद' न डरि भव-व्याल तैं, बालचरित-मधु पाइ।
श्रवन-पुटन करि पान करि, इहि अष्टमौ अध्याइ॥

नवम अध्याय

अब मुनि मित्र नवम अध्याइ, जामैं अद्भुत अद्भुत भाइ।
जोगीजन मन ढूँढ़त जाकौं, बाँधैगी हठि जसुमति ताकौं।
इक दिन भोरहिं उठि नँदरानी, आपुहिं मजु मथानी आनी।
धौरी धूध पूत के हित हीं, राखनि जमु जमाइ नित नित ही।
और जु नंदमहर घर दह्यौ, कितक आहि कछु परत न कह्यौ।
प्रेरी तहाँ अनेक जु दासी, मंथन करैं सबै कमला सी।
ठौं ठौं मधुर मथानी बजै, जनु नव आनँद-अंबुद गजैं।
मथत जु आप जहाँ नँदरानी, सोभा नहिं कछु परत बखानी।
सुंदर गौर बरन तन सोहैं, ओटे कंचन कौ रँग को है।
मृदुल उजल गंगाजल पहिरैं, उठति जु तन तैं छबि की लहरैं।
पृथु कटि कल किंकिनि की बाजनि, बिलुलित बर कबरी की राजनि।
नैन की करखनि,बदन की हरखनि, तैसिय सिर तैं सुमन सु बरखनि।
आनन पर स्रमकन अस बनी, कनक-कमल जनु ओस की कनी।
किधौं चंद मधि प्रगटे मोती, आये जानि आपनौ गोती।
लाल के बालचरित कछु गावति, भाग-भरी सब राग रिझावति।

खसत जु सिर तैं सुमन सुदेस, जनु चरनन पर रीझे केस।
आगे फूल की बरषा करै, तिन पर ब्रजरानी पग धरै।
जोगीजन-मन जहाँ न जाहीं, इत सब वेद परे बिललाहीं।
ताहि जसोमति पकरति भई, रहपट एक बदन पर दई।
पानि पकरि जब आँगन आने, जिन तैं डर डरपैं सु डराने।
डर तैं नैन सजल ह्वै आये, जनु अरबिंद अलिद हलाये।
परत दृगन तैं जलकन जोती, डारत ससि जनु मंजुल मोती।
मीजत चख, मसि प्रसरित ऐसै, निर्मल बिधु कलंककन जैसै।
भै भरे सुतहि निरखि नँदनारी, दीनी लकुट हाथ तैं डारी।
कहत कि रचक बाँधौं याहि, जैसैं सिख लागै लरिकाहि।
मृदुल पाट की नोई लई, लाल के पेट लपेटति भई।
ऊजल सों जब बनैं न गाँठि, तासों अवर लई तब साँठि।
सो पुनि परिपूरन नहि भई, तब इक बड़ी जेवरी लई।
उहै न तनक उदर फिरि आई, तब जसुमति अति बिस्मय पाई।
तिहि छिन गोप-बधू घिरि आई, हँसति परस्पर लगति सुहाई।
भै भरे लाल के लोइन लसैं, दिखि दिखि गोप-बधू सब हसैं।
हँसि हँसि कहति, सु लगति सुहाई, ये न होंहि बरि बस्तु पराई।
धाम की दाम-दावरी जिती, ब्रजतिय लै लै आवति तिती।
जसुमति ग्रंथि दैन जब चहै, द्वै अंगुल तब ऊनी रहै।
आदि अंत कछु पैयै जाकौ, बंधन अवसि पूछियै ताकौ।
आदि अंत जो कोऊ न पावै, तनक जिवरिया कित फिरि आवै।
निरखि अमित जननी कहुँ जानी, निरवधि वत्सल रस पहिचानी।

खसत जु सिर तैं सुमन सुदेस, जनु चरनन पर रीझे केस।
आगे फूल की बरषा करै, तिन पर व्रजरानी पग धरै।
जोगीजन-मन जहाँ न जाहीं, इत सब वेद परे बिललाहीं।
ताहि जसोमति पकरति भई, रहपट एक बदन पर दई।
पानि पकरि जब आँगन आने, जिन तैं डर डरपै सु डराने।
डर तैं नैन सजल ह्वै आये, जनु अरविंद अलिंद हलाये।
परत दृगन तैं जलकन जोती, डारत ससि जनु मंजुल मोती।
मीजत चख, मसि प्रसरित ऐसैं, निर्मल बिधु कलंककन जैसैं।
भै भरे सुतहि निरखि नँदनारी, दीनी लकुट हाथ तैं डारी।
कहत कि रचक बाँधों याहि, जैसैं सिख लागै लरिकाहि।
मृदुल पाट की नोई लई, लाल के पेट लपेटति भई।
ऊखल सों जब बनै न गाँठि, तासों अवर लई तब साँठि।
सो पुनि परिपूरन नहिं भई, तब इक बड़ी जेवरी लई।
उहै न तनक उदर फिरि आई, तब जसुमति अति विस्मय पाई।
तिहि छिन गोप-बधू घिरि आईं, हँसति परस्पर लगति सुहाईं।
भै भरे लाल के लोइन लसैं, दिखि दिखि गोप-बधू सब हसैं।
हँसि हँसि कहति, सु लगति सुहाई, ये न होंहि बनि वस्तु पराई।
धाम की दाम-दावरी जिती, ब्रजतिय लै लै आवति तिती।
जसुमति ग्रंथि दैन जब चहै, द्वै अंगुल तब ऊनी रहै।
आदि अंत कछु पैयै जाकौं, बधन अवसि पूछियै ताकौं।
आदि अंत जो कोऊ न पावै, तनक जिवरिया कित फिरि आवै।
निरखि अमित जननी कहुं जानी, निरवधि वत्सल रस पहिचानी।

भक्ति विना श्री भागवत, कहहिं सुनहिं जे 'नंद'।
दरवी ज्यौं विंजनन मैं, स्वाद न जानै मंद ॥
'नंद' नवम अध्याइ यह, बरन्यौ कापै जाइ।
चातक चंचु-पुटी लटी, सब घन कितहि समाइ ॥

दशम अध्याय

अब सुनि दशम कौ दशम अध्याइ, सुत कुबेर के गहि कै पाइ।
स्तुति करि हरि पै आग्या पैहैं, भक्ति-पात्र ह्वै निज घर जैहैं।
सुक मुनि सौं पुनि राजा कहै, नारद परम भागवत रहै।
तिन करि कवन कर्म अस करयौ, जा करि जिनहि क्रोध संचरयौ।
बोले बिहँसि व्यास के तात, हो नृप सत्तम ! सुनि यह बात।
सुत कुबेर के अति अभिराम, नलकूबर, मनिग्रीव सु नाम।
गंगा मधि ललनागन लिये, विहरत हुते वारुनी पिये।
तहँ ह्वै नारद निकसे आइ, बीना कर आपने सुभाइ।
तिहिं दिखि तिय सब लज्जित भईं, चटपट अपने पट गहि गईं।
ये दोउ नगन मगन अस भये, मद बाढ़े, ठाढ़े रहि गये।
कहन लगे मुनि तिन तन चाहि, जग मैं अवर बहुत मद आहि।
ऐ परि यह श्री-मद है जैसौ, बड़ अनरथ कर अवर न ऐसौ।
मति-भ्रंसक, सब धर्म-बिधुंसक, निर्दय महा बिरथ पसु-हिंसक।
नस्वर देह सबै कोउ जानैं, ता कहुँ अजर अमर करि मानैं।
रच्यौ पांचभौतिक कौ देह, अंत समै कृमि बिष्टा खेह।

भक्ति बिना श्री भागवत, कहहिं सुनहिं जे 'नंद'।
दरबी ज्यौं बिंजनन मैं, स्वाद न जानैं मंद॥
'नंद' नवम अध्याइ यह, बरन्यौ कापै जाइ।
चातक चंचु-पुटी लटी, सब घन कितहि समाइ॥

दशम अध्याय

अब सुनि दसम की दसम अध्याइ, सुत कुबेर के गहि कैं पाइ।
स्तुति करि हरि पै आग्या पैहैं, भक्ति-पात्र ह्वै निज घर जैहैं।
सुक मुनि सौं पुनि राजा कहै, नारद परम भागवत रहै।
तिन करि कवन कर्म अस करयौ, जा करि जिनहि क्रोध संचरयौ।
बोले बिहँसि ब्यास के तात, हो नृप सत्तम ! सुनि यह बात।
सुत कुबेर के अति अभिराम, नलकूवर, मनिग्रीव सु नाम।
गंगा मधि ललनागन लिये, बिहरत हुते बारुनी पिये।
तहँ ह्वै नारद निकसे आइ, बीना कर आपने सुभाइ।
तिहिं दिखि तिय सब लज्जित भईं, चटपट अपने पट गहि गईं।
ये दोउ नगन मगन अस भये, मद बाढ़े, ठाढ़े रहि गये।
कहन लगे मुनि तिन तन चाहि, जग मैं अवर बहुत मद आहि।
ऐ परि यह श्री-मद है जैसौ, बड़ अनरथ कर अवर न ऐसौ।
मति-भ्रंसक, सब धर्म-बिधुंसक, निर्दय महा बिरथ पसु-हिंसक।
नस्वर देह सबै कोउ जानैं, ता कहुँ अजर अमर करि मानैं।
रच्यौ पांचभौतिक कौ देह, अंत समै कृमि बिष्टा खेह।

तब बोलें अलका भौन के, हो प्रभु ! तुम बालक कौन के ।
परम पुरुष सब ही के कारन, प्रतिपारन, तारन, संघारन ।
व्यक्त-अव्यक्त जु बिस्व अनूप, वेद बदत प्रभु तुम्हरी रूप ।
तुम सब भूतन कौ बिस्तार, देह, प्रान, इंद्री, अहँकार ।
काल तुम्हारी लीला श्रीधर, तुम व्यापी, तुम अव्यय ईस्वर ।
तुम ही प्रकृति, पुरुष, महतत्व, धर, अंबर, आडंबर, सत्व ।
तुम ही जीवन, तुम ही जीय, सब ठाँ तुम, कोउ अवर न बीय ।

पूर्व पक्ष

घट-पट-ग्यान बिसेखै सब ही, हमरी ग्यान होइ किन अब हीं ।
दुर्लभ ब्रह्म सुलभ ही बनै, तहाँ कहत कुबेर के तनै ।
इंद्रिन करि तुम जात न गहे, प्रगट ग्राहि पै परत न चहे ।
जैसें दिष्टि कुंभ कहुँ देखै, कुभ तौ नाहिन दिष्टि कौ पेखै ।
कुंभ के दिष्टि होइ जब कब ही, सो तुम दिष्टिहि देखै तब हीं ।
तातैं तुम कहुँ बंदन करै, जानि न परहु परे तै परैं ।
इहि बिधि स्तुति करि हरि देव की, प्रार्थित पद-पंकज-सेव की ।
हे करुनानिधि करुना कीजै, अपनी भाउ-भगति-रति दीजै ।
बानी तुमरे गुन गन गनै, श्रवन परम पावन जस सुनै ।
ये करि अवर कर्म जिनि करै, प्रभु की परिचर्या अनुसरैं ।
मन-अलि चरन-कमल-रस रसौ, चित्र-कमल-जग भूलि न बसौ ।
हो जगदीस ! जसोदा-नंदन, सीस रहौ नित तुव-पद-वंदन ।
तुमरी मूरति भक्त तुम्हारे, नित ही निरखहु नैन हमारे ।

तब बोले अलका भौन के, हो प्रभु ! तुम बालक कौन के।
परम पुरुष सब ही के कारन, प्रतिपारन, तारन, संघारन।
व्यक्त-अव्यक्त जु बिस्व अनूप, वेद बदत प्रभु तुम्हरौ रूप।
तुम सब भूतन कौ बिस्तार, देह, प्रान, इंद्री, अहँकार।
काल तुम्हारी लीला श्रीधर, तुम व्यापी, तुम अव्यय ईस्वर।
तुम ही प्रकृति, पुरुष, महतत्व, धर, अंबर, आडंबर, सत्व।
तुम ही जीवन, तुम ही जीय, सब ठाँ तुम, कोउ अवर न बीय।

पूर्व पक्ष

घट-पट-ग्यान बिसेखै सब ही, हमरौ ग्यान होइ किन अब हीं।
दुर्लभ ब्रह्म सुलभ ही बनै, तहाँ कहत कुबेर के तनै।
इंद्रिन करि तुम जात न गहे, प्रगट ग्राहि पै परत न चहे।
जैसें दिष्टि कुंभ कहुँ देखै, कुंभ तौ नाहिन दिष्टि कौ पेखै।
कुंभ के दिष्टि होइ जब कब ही, सो तुम दिष्टिहि देखै तब हीं।
तातें तुम कहुँ बंदन करै, जानि न परहु परे तें परै।
इहि बिधि स्तुति करि हरि देव की, प्रार्थित पद-पंकज-सेव की।
हे करुनानिधि करुना कीजै, अपनी भाउ-भगति-रति दीजै।
बानी तुमरे गुन गन गनै, श्रवन परम पावन जस सुनै।
ये करि अवर कर्म जिनि करैं, प्रभु की परिचर्या अनुसरैं।
मन-अलि चरन-कमल-रस रसौ, चित्र-कमल-जग भूलि न बसौ।
हो जगदीस ! जसोदा-नंदन, सीस रहौ नित तुव-पद-बंदन।
तुमरी मूरति भवन तुम्हारे, नित ही निरखहु नैन हमारे।

पलक माँ लागन लगे बिचारन, प्रबल पवन नहिं, नहिं बड़ बारन ।
लागत झलन जु ये तरु परे, दिखि सब लोग अचंभे भरे ।
तिन मां कहन लगे सिसु बात, अहो महरि यह तुम्हरो तात ।
आगन तरु के अंतर परयौ, ऊखल तनक तिरीछो करयौ ।
दये उखारि दोऊ द्रुम भारे, ये हम सिगरे देखनहारे ।
निकसे उभय पुरुष द्युति भरे, या ढोटा के पाइनि परे ।
ऐसें जब उन लरिकन कह्यौ, किनहूँ गह्यौ, किनहुँ नहिं गह्यौ ।
तिन बिच हरि बैठे छवि-ऐना, डरपे मृग-सिसु के से नैना ।
अति वत्सल रस भरि व्रजराइ, द्रुमन मध्य तैं लिये उठाइ ।
बंधन छोरि छती लपटाइ, पोंछत सुंदर अंग सुहाइ ।
जसुमति परि व्रजराज रिसाइ, ऐसैं सिसु कोउ बाँधति माइ ।
पुनि बिहरन लागे ब्रज महियाँ, दैन लगे सुख आनन कहियाँ ।
कहूँ ब्रज नवबधू नंदलालहि, पकरि नचावहिं नैन बिसालहि ।
जे जे बिकट मान उपजावहिं, ते ते सहज नाचि दिखरावहिं ।
रीझि रीझि ब्रज की बर बाला, वारहिं भूषन कंचन-माला ।
चुंबन करहिं बलैया लेहिं, बहुरि नचावहिं माखन देहिं ।
कबहुँक बहुरि टहल अनुसरै ब्रज की बहू कहै सो करै ।
कोउ कहै अहो अहो मोहनलाल ! मुहिं गुहि दे यह फूल की माल ।
कोउ कहै लाल लाउ दोहनी, कोउ कहै मोहिं गहाउ मोहनी ।
कोउ कहै चलि वे पाँवरि लावौ, चलि चलि मोहिं पिढ़ी पकरावौ ।
अब लावौ सुख चुंबन करैं, इहि बिधि ब्रज तिय सुख बिस्तरैं ।
सिव कौ सरबस, श्रुति कौ हियौ, सो ब्रजतियन खिलौना कियौ ।

पलक माँ लागन लगे बिचारन, प्रबल पवन नहिं, नहिं बड़ वारन ।
लागत कवन जु ये तरु परे, देखि सब लोग अचंभे भरे ।
तिन सों कहन लगे सिसु बात, अहो महरि यह तुम्हरो तात ।
आपुन तरु के अंतर परयौ, ऊखल लटक निरोछो करयौ ।
ऐंचे उखारि दोऊ द्रुम भारे, ये हम सिगरे देखनहारे ।
निकसे उभय पुरुष द्युति भरे, या ढोटा के पाइनि परे ।
ऐसें जब उन लरिकन कह्यौ, किनहूँ गह्यौ, किनहुँ नहिं गह्यौ ।
तिन बिच हरि बैठे छबि-ऐना, डरपे मृग-सिसु के से नैना ।
अति वत्सल रस भरि व्रजराइ, द्रुमन मध्य तैं लिये उठाइ ।
बंधन छोरि छती लपटाइ, पोंछत सुंदर अंग सुहाइ ।
अनुमति परि व्रजराज रिसाइ, ऐसैं सिसु कोउ बाँधति माइ ।
पुनि विहसन लागे व्रज महियाँ, दैन लगे सुख आनन कहियाँ ।
कहुँ व्रज नवल वधू नंदलालहि, पकरि नचावहिं नैन विसालहि ।
जे जे निकट मान उपजावहिं, ते ते सहज नाचि दिखरावहिं ।
रीझि रीझि व्रज की वर बाला, वारहिं भूषन कंचन-माला ।
चुंबन करहिं बलैया लेहिं, बहुरि नचावहिं माखन देहिं ।
कबहुँक बहुरि टहल अनुसरै व्रज की बहू कहै सो करै ।
कोउ कहै अहो अहो मोहनलाल ! मुहि गुहि दे यह फूल की माल ।
कोउ कहै लाल लाउ दोहनी, कोउ कहै मोहिं गहाउ सोहनी ।
कोउ कहै चलि वे पाँवरि लावौ, चलि चलि मोहिं पिढ़ी पकरावौ ।
अब लावौ मुख चुंबन करै, इहि विधि व्रज तिय सुख विस्तरै ।
सिव कौ सरबस, श्रुति कौ हियौ, सो व्रजतियन खिलौना कियौ ।

इन लरिकन की रच्छा करौ, ह्याँ तैं वेगि अनत अनुसरौ।
तहँ उपनंद नाम इक कोई, ग्यान-वृद्ध, वय-वृद्ध है सोई।
कहन लग्यौ कि कुमर है परी, इत तैं चलहु अबहिं इहि घरी।
आई प्रथम बकी घर-घालक, काल के मुख तैं उबरचौ बालक।
अरु वह सकट बिकट भर भरचौ, या सिसु के ऊपर नहिं परचौ।
पुनि वह बात-चक्र ह्वै आई, लै गयौ लरिकहि गगन उड़ाई।
दहुरचौ आनि सिला पर नाख्यौ, तब यह सिसु परमेसुर राख्यौ।
जे द्रुम नभ सौं बातैं करे, ते तरु अकस्मात भुवि परे।
जौ जगदीस सहाइ न होई, तिन तर आयौ बचै न कोई।
चाहत हौ जौ ब्रज कौ भलौ, तौ तुम ह्याँ तैं अब ही चलौ।
सुंदर वृंदावन इक नाम, सब गुन-धाम, परम अभिराम।
जामैं गिरि गोवर्द्धन आहि, सब रितु संतत सेवत जाहि।
गोपी-गोप गाइ-बछ लाइक, सुखदाइक, सुभकरन, सुभाइक।
एकै बुद्धि सबै जन जुटे, सुनतहि 'साधु साधु' कहि उठे।
अनने सकट तुरत ही जोरे, बड़े मंदल कंदल घोरे।
गोधन वृंद धरि लये आगे, धरे सरासन नीके लागे।
कंचन सकटहि चढ़ि चढ़ि गोपी, चली जु नंदसुवन-रस-ओपी।
कंठनि पदिक जगमगत जोती, लटकै ललित सु बेसर-मोती।
केसरि आड़ ललाटन लसी, चंद मैं चंद-कला-दुति जसी।
चंचल दृग खंजन छवि बढ़े, ससिन मैं जनु नव खंजन चढ़े।
लाल के बालचरित जु पुनीत, लये है बनाइ बनाइ सु गीत।
ठा ठा गोपी गान जु करै, सीतल कंठ सब कौ हिय हरैं।

इन लरिकन की रच्छा करौ, ह्याँ तै वेगि अनत अनुसरौ।
तहँ उपनंद नाम इक कोई, ग्यान-वृद्ध, वय-वृद्ध है सोई।
कहन लग्यौ कि कुमर है परौ, इत तै चलहु अबहिं इहि घरी।
आई प्रथम वकी घर-घालक, काल के मुख तै उबर्यौ बालक।
अरु वह सकट विकट भर भर्यौ, या सिसु के ऊपर नहिं पर्यौ।
पुनि वह वात-चक्र ह्वै आई, लै गयौ लरिकहि गगन उड़ाई।
बहुर्यौ आनि सिला पर नाख्यौ, तब यह सिसु परमेसुर राख्यौ।
जे द्रुम नभ सौं वातैं करे, ते तरु अकस्मात भुवि परे।
जौं जगदीस सहाइ न होई, तिन तर आयौ बचै न कोई।
चाहत हौ जौ ब्रज कौ भलौ, तौ तुम ह्याँ ते अब ही चलौ।
सुंदर वृंदावन इक नाम, सब गुन-धाम, परम अभिराम।
जामैं गिरि गोवर्द्धन आहि, सब रितु संतन सेवत जाहि।
गोपी-गोप गाइ-वच्छ लाइक, सुखदाइक, सुभकरन, सुभाइक।
एकै बुद्धि सबै जन जुठे, सुनतहि 'साधु साधु' कहि उठे।
अपने सकट तुरत ही जोरे, बड़े मंदल कंदल घोरे।
गोधन वृंद धरि लये आगे, धरे सरासन नीके लागे।
कंचन सकटहि चढ़ि चढ़ि गोपी, चली जु नंदसुवन-रस-ओपी।
कंठनि पदिक जगमगत जोती, लटकै ललित सु वेसर-मोती।
केसरि आड़ ललाटन लसी, चंद मैं चंद-कला-दुति जसी।
चंचल दृग खंजन छवि बढ़े, ससिन मैं जनु नव खंजन चढ़े।
लाल के बालचरित जु पुनीत, लये है बनाइ बनाइ सु गीत।
ठाँ ठाँ गोपी गान जु करै, सीतल कंठ सब कौ हिय हरैं।

इहि परकार कुमार बयस के, करत बिहार, उदार सु रस के ।
कोउ होइ मेष, कोऊ होइ पालक, आपुन चोर होहिं हरि बालक ।
एकादस अध्याइ यह, अगदराज की धार ।
पान करौ नर चित्त दै, मिटै रोग संसार ॥

द्वादश अध्याय

अब सुनि लै द्वादसौ अध्याइ, महा सर्प-बपु धरि अघ आइ ।
गिलिहैं बछ-बालक वह नीच, हनिहैं हरि तिहिं बढ़ि गल बीच ।
इक दिन बन भोजन मन आनि, सोये सुंदर सारँगपानि ।
बेनु बजाइ जगाये ग्वाल, सुनत उठे सब ताही काल ।
जैसैं कमल अमोदहि पाइ, ठाँ ठाँ उठत मधुप अकुलाइ ।
बन भोजन जु कान्ह मन आनी, बेनु बजावन ही मैं जानी ।
सुंदर बिजन सुंदर छीके, कनक लकुटियन लटकत नीके ।
अपने बछरन लै लै आये, कान्ह के बछरन आनि मिलाये ।
नंद-सुवन सौं मिलि कै चले, लागत सबै मैन मे भले ।
तिन मधि मोहन अति सुखदाइक, नग जराइ मधि ज्यौं मधि नाइक ।
छींकन तैं बिजनन चुरावत, ते तौ इन कछु और बनावत ।
हँसि हँसि कहत कि देखि कन्हैया, कहा दियौ इहि याकौ मैया ।
खेलत खेलत खेल सुहाये, सुंदर श्री वृंदावन आये ।
और खेल खेलत छबि पावत, महुवरि बेनु बजावत-गावत ।
खगन खिजावत, खगन खिजावत, केई खग की छाया गहि धावत ।

इहि परकार कुमार बयस के, करत विहार, उदार सु रस के।
कोउ होइ मेष, कोऊ होइ पालक, आपुन चोर होहि हरि बालक।

एकादस अध्याइ यह, अगदराज की धार।
पान करौ नर चित्त दै, मिटै रोग संसार॥

द्वादश अध्याय

अब सुनि लै द्वादसौ अध्याइ, महा सर्प-वपु धरि अघ आइ।
गिलिहै बछ-बालक दह नीच, हनिहै हरि तिहि बढ़ि गल बीच।
इक दिन बन भोजन मन आनि, सोये सुंदर सारँगपानि।
बेनु बजाइ जगाये ग्वाल, सुनत उठे सब ताही काल।
जैसै कमल अमोदहि पाइ, ठाँ ठाँ उठत मधुप अकुलाइ।
बन भोजन जु कान्ह मन आनी, बेनु बजावन ही मैं जानी।
सुंदर बिजन सुंदर छीके, कनक लकुटियन लटकत नीके।
अपने बछरन लै लै आये, कान्ह के बछरन आनि मिलाये।
नंद-सुवन सौं मिलि कै चले, लागत सबै मैन मे भले।
तिन मधि मोहन अति सुखदाइक, नग जराइ मधि ज्यौं मधि नाइक।
छीकन तैं बिजनन चुरावत, ते तौ इन कछु और बनावत।
हँसि हँसि कहत कि देखि कन्हैया, कहा दियौ इहि याकी मैया।
खेलत खेलत खेल सुहाये, सुंदर श्री वृंदावन आये।
और खेल खेलत छवि पावत, महुवरि बेनु बजावत-गावत।
खगन खिजावत, खगन खिजावत, केई खग की छाया गहि धावत।

निरखि महिमा अनुमति-तात की, सुधि-बुधि गई कमल-जात की।
सो वह अजगर परम पवित्र, सूक्यौ वृंदावन मधि मित्र।
अति गह्वर तहँ ब्रज के बाल, डुका-डुकी खेलें बहु काल।
यह कौमार वयस कौ कर्म, पायौ नहिं किन हूँ कछु मर्म।
छठें बरस जब सब निरबह्यौ, तब उन सबन आनि ब्रज कह्यौ।
आजु जु एक नंद के लाल, मारचौ व्याल सु केवल काल।
हम सब ताके मुख मधि गये, आये बहुरि जन्म धरि नये।
ताके तन तें उठी जु जोति, नखत तें टूटि ज्यौं ज्वाला होति।
जाइ गगन मैं थिर ह्वै रही, हम देखी अरु सबहिन चही।
कान्हहि निरखि बहुरि उलटानी, आनि कै इन हीं माँझ समानी।
ऐसें जब उन लरिकन कह्यौ, सुनि सब लोग अचंभे रह्यौ।
अहो मित्र मुनि चित्र न कीजै, हरि की महिमा मैं मन दीजै।
इन की जो कोउ प्रतिमा करै, एक बार बल करि हिय धरै।
प्रल्हादादिक की गति जोई, सु पुरुष सहजहि पावै सोई।
सो साच्छात अघासुर हिये, आये अपने भक्तन लिये।
सूत कहत हैं हो भृगुनंदन, सुनि हरि सुचरित दुरित-निकंदन।
पुनि पुनि मुनि के गहि कै पाइ, पूछत यहै परीच्छित राइ।
हो सर्वग्य व्यास के तात!, यह कौमार वयस की बात।
पौगंडमय चरित सब कहे, अब लौं ये सिसु कहँ है रहे।
यह कछु हरि की माया आहि, हो प्रभु! नीके बरनहु ताहि।
हम सम धन्य न कोहि संसार, जातें कृष्नकथामृत-धार।
निगम सार तासौं पुनि सार, पियत हैं हम तिहिं बारंबार।

निरखि महिमा जसुमति-तात की, सुधि-बुधि गई कमल-जात की ।
सो वह अजगर परम पवित्र, सूक्यौ वृंदावन मधि मित्र ।
अति गह्वर तहँ ब्रज के बाल, डुका-डुकी खेलें बहु काल ।
यह कौमार वयस कौ कर्म, पायौ नहिं किन हूँ कछु मर्म ।
छठौं बरस जब सब निरवह्यौ, तब उन सबन आनि ब्रज कह्यौ ।
आजु जु एक नंद के लाल, मारयौ व्याल सु केवल काल ।
हम सब ताके मुख मधि गये, आये बहुरि जन्म धरि नये ।
ताके तन तें उठी जु जोति, नखत तें टूटि ज्यौं ज्वाला होति ।
जाइ गगन मैं थिर ह्वै रही, हम देखी अरु सबहिन चही ।
कान्हहि निरखि बहुरि उलटानी, आनि कै इन हीं माँझ समानी ।
ऐसैं जब उन लरिकन कह्यौ, सुनि सब लोग अचंभे रह्यौ ।
अहो मित्र सुनि चित्र न कीजै, हरि की महिमा मैं मन दीजै ।
इन की जो कोउ प्रतिमा करै, एक बार बल करि हिय धरै ।
प्रल्हादादिक की गति जोई, सु पुरुष सहजहि पावै सोई ।
सो साच्छात अघासुर हिये, आये अपने भक्तन लिये ।
सूत कहत हैं हो भृगुनंदन, सुनि हरि सुचरित दुरित-निकंदन ।
पुनि पुनि मुनि के गहि कै पाइ, पूछत यहै परीच्छित राइ ।
हो सर्वज्ञ व्यास के तात !, यह कौमार वयस की बात ।
पौगंडमय चरित सब कहे, अब लौं ये सिसु कहँ है रहे ।
यह कछु हरि की माया आहि, हो प्रभु ! नीके बरनहु ताहि ।
हम सम धन्य न इहिं ससार, जातैं कृष्नकथामृत-धार ।
निगम सार तासौं पुनि सार, पियत हैं हम तिहिं बारंबार ।

अग-मग तें निकाइ बछ-बाल, लै गये जमुन-पुलिन नँदलाल।
भोजन कियौ चहत तिहि काल, करत स्तुति पुलिन की गोपाल।
कहत कि निपट भली यह ठौर, ऐसौ नाहिन पाइहौ और।
सीतल मृदुल बालुका स्वच्छ, इत ये हरे हरे तृन कच्छ।
इत ये सुंदर सरसिज फूले, तरवर फूल फूलि जल झूले।
जगल की धुनि-प्रतिधुनि हिय हरै, मंद सुगंध पवन अनुसरै।
सब दिसि तें ये परिमल लपटैं, आवति सहज सुमन की दपटैं।
भूख लगी है भोजन करैं, इत ये बच्छ कच्छ मैं चरैं।
मंडल करि बैठे ब्रजबाल, मध्य बने तहँ मोहनलाल।
मोहन सब तें सन्मुख ऐसैं, कमल के बीच करनिका जैसैं।
चहुँ दिसि बाल मंडली बैसी, नखत बिसाखा होति है जैसी।
तिन मधि स्याम सुभग सोहत यौं, राका-निसि राकेस लसै ज्यौं।
फूलि मुनि मित्र अवर उपाइ इक, अज हूँ ध्यान धरत ब्रह्मादिक।
जनु चहुँ दिसि मुकता-मनि रची, मधि गुपाल मरकत मनि खची।
रचिका कर मुद्रिका दिखाई, यह ताकौं जगमगत जराई।
ऐसैं सुक राजा प्रति कही, नृप मुनि कै कमनीय सु गही।
भोजन करत कुँवर साँवरे, छवि दिखि अमर भये बावरे।
भाजन बिबिधि सुपादन बने, फल दल सिल बलकल अति घने।
अपने ब्यंजन तिन मैं धरे, चखत चखावत अति मुद भरे।
तिन के मध्य बने नँद-नंद, उड़-मंडल जस पूरन चंद।
पट अरु जठर बीच तौ बेनु, काख बेत, कच लपटे रेनु।
दधि-ओदन कौ कवल सु लिये, छवि सौं वाम हस्त हरि लिये।

अघ-मुख तें निकसाइ बच्छ-बाल, लै गये जमुन-पुलिन नँदलाल ।
भोजन कियौ चहत तिहि काल, करत स्तुति पुलिन की गोपाल ।
कहत कि सखा भलौ यह ठौर, ऐसौ नाहिन पाइहौ और ।
सीतल मृदुल बालुका स्वच्छ, इत ये हरे हरे तृन कच्छ ।
इत ये सुंदर सरसिज फूले, तरवर फूल फूलि जल झूले ।
खगन की धुनि-प्रतिधुनि हिय हरै, मंद सुगंध पवन अनुसरै ।
सब दिसि तें ये परिमल लपटैं, आवति सहज सुमन की दपटैं ।
भूख लगी है भोजन करै, इत ये बच्छ कच्छ मैं चरैं ।
मंडल करि बैठे ब्रजबाल, मध्य बने तहँ मोहनलाल ।
सोहत सब तैं सन्मुख ऐसैं, कमल के बीच करनिका जैसैं ।
चहूँ दिसि बाल मंडली बैसी, नखत बिसाखा होति है जैसी ।
तिन मधि स्याम सुभग सोहत यौं, राका-निसि राकेस लसै ज्यौं ।
पुनि मुनि मित्र अवर उपाइ इक, अज हूँ ध्यान धरत ब्रह्मादिक ।
मनु चहूँ दिसि मुकता-मनि रची, मधि गुपाल मरकत मनि खची ।
रचिका कर मुद्रिका दिखाई, यह ताकौं जगमगत जराई ।
ऐसैं सुक राजा प्रति कही, नृप सुनि कै कमनीय सु गही ।
भोजन करत कुँवर साँवरे, छवि दिखि अमर भये बावरे ।
भाजन बिबिधि सुवासन बने, फल दल मिल बलकल अति घने ।
अपने ब्यंजन तिन मैं धरे, चखत चखावत अति मुद भरे ।
तिन के मध्य बने नँदनंद, उडु-मंडल जस पूरन चंद ।
पट अरु जठर बीच तौ बेनु, काख बेत, कच लपटे रेनु ।
दधि-ओदन कौ कवल सु किये, छवि सौं बाम हस्त हरि लिये ।

देखियँ हँसनि, चहनि पुनि बोलनि, बैसियँ लटकनि, मटकनि, डोलनि ।
नूपुर, कंकन, किंकिनि माल, सबै भये ईस्वर नँदलाल ।
वेद जु विदित विस्व यह जिते, सबै विष्नुमय भासत तिते ।
जो यह बानी निगमन गाई, सो प्रभु मूर्तिवंत दिखराई ।
गंगाजल ज्यौं हिमकन पाइ, ठाँ ठाँ सहज जाइ ठहराइ ।
आपुहि आप घेरि बछ-बाल, लै आये ब्रज मोहनलाल ।
बेनु की धुनि सुनि गोपी धाई, अपने कंठनि लै लपटाई ।
धूरि झारि पुनि पुनि मुख चूमनि, नहि कहि परै प्रेम की घूमनि ।
उबटन उबटि सलिल अन्हवाये, मनभाये भोजन करवाये ।
उपज्यो प्रेम तिन विषै ऐसौ, पाछे नंदसुवन सौं जैसौ ।
अब सुनि लै गाइन की पेम, बिसरत जिहिं दिग्गि मुनि मन नेम ।
खरिक निकट जब बछरा बोलै, सुनतहि गोधनवृंद कलोलैं ।
हूँकि हूँकि आतुर गति आवनि, इत तें इन बछरन की धावनि ।
चुरनि, चुखावनि, चाटनि, चूँबनि, बार बार हित की वह हूँसनि ।
आपुहि बछरा, आपुहि बाल, विहरत ब्रज बन मोहनलाल ।
एकाकी जस खेलत कोई, खेलन ताहि कछु न सुख होई ।
ऐसैं बरस दिवस निरवह्यौ, संकर्षन हू नाहिन लह्यौ ।
इक दिन गिरि गोधन पर गाइ, चरति ही चढ़ी आपने चाइ ।
ब्रज-समीप बछरन अवहेरि, चली जु ग्वाल सके नहिं फेरि ।
रुचिर पुच्छ ऊँची करि लई, मानहुँ ढुरत चँवर छबि छई ।
उनि उनि पग डारनि, हुंकारनि, सींचति धरनि दूध की धारनि ।
अपने बछरन पै चलि आई, मिली आइ, कछु नहिं कहि जाई ।

देखियै हँसनि, चहनि पुनि बोलनि, वैसियै लटकनि, मटकनि, डोलनि ।
नूपुर, कंकन, किंकिनि माल, सबै भये ईस्वर नँदलाल ।
बेद जु विदित बिस्व बहु जिते, सबै विष्नुमय भासत तिते ।
जो यह बानी निगमन गाई, सो प्रभु मूर्तिवंत दिखराई ।
गंगाजल ज्यौं हिमवन्त पाइ, ठाँ ठाँ सहज जाइ ठहराइ ।
आपुहि आप घेरि बछ-ग्वाल, लै आये ब्रज मोहनलाल ।
बेनु की धुनि सुनि गोपी धाई, अपने कंठनि लै लपटाई ।
धूरि झारि पुनि पुनि मुख चूमनि, नहि कहि परै प्रेम की घूमनि ।
उबटन उबटि सलिल अन्हवाये, मनभाये भोजन करवाये ।
उपज्यो प्रेम तिन विषै ऐसौ, पाछे नंदसुवन सौं जैसौ ।
अब सुनि लै गाइन की पेम, बिसरत जिहिं दिखि मुनि मन नेम ।
खरिक निकट जब बछरा बोलै, सुनतहि गोधनवृंद कलोलै ।
हूँकि हूँकि आतुर गति आवनि, इत तें इन बछरन की धावनि ।
चुरनि, चुखावनि, चाटनि, चूंबनि, बार बार हित की वह हूँसनि ।
आपुहि बछरा, आपुहि बाल, बिहरत ब्रज बन मोहनलाल ।
एकाकी जस खेलत कोई, खेलत ताहि कछु न सुख होई ।
ऐसैं बरस दिवस निरबह्यौ, संकर्षन हू नाहिन लह्यौ ।
इक दिन गिरि गोधन पर गाइ, चरति ही चढ़ी आपने चाइ ।
ब्रज-समीप बछरन अवहेरि, चलीं जु ग्वाल सके नहि फेरि ।
स्वच्छ पुच्छ ऊँची करि लई, मानहुँ दुरत चँवर छबि छई ।
उनि गनि पग डारनि, हुंकारनि, सींचति थननि दूध की धारनि ।
अपने बछरन पै चलि आई, मिली आइ, कछु नहि कहि जाई ।

बदन बदन मुसकनि छबि लसी, नंदन मध्य चंद्रिका जसी।
भिन्न भिन्न ब्रह्मांड बिराजैं, तिन मधि इक इक मूरति भ्राजैं।
ब्रह्महिं आदि चराचर जिते, मूरति धरे उपासत तिते।
अनिमा महिमादिक सिधि जिती, महदादिक बिभूति है तिती।
काल-करम-गुन अवर न अंत, सेवत हैं तहँ मूरतिवंत।
सुधि गई बिधिहिं अचेतन भयौ, हंस कौ अस पकरि रहि गयौ।
तिहि छिन ताहि फबी छबि ऐसी, चतुर्मुखी कोउ पुतरी जैसी।
सरस्वति पति बिचार इमि करै, कहा आहि यह सुधि नहिं परै।
तब श्री हरि निज हिये बिचारि, अज पर अजा जवनिका डारि।
कही कि ये अभिमानी लोग, मो महिमा नहिं चाहत जोग।
तब श्री हरि वह माया जिती, अंतरध्यान करी तहँ तिती।
बड़ी बेर बिधि सुधि भई ऐसैं, मरि कै बहुरि उठत कोउ जैसैं।
दृग उघारि जौ चितवन चहै, तौ वह श्री बृंदावन अहै।
जामैं सब सुंदर, तरु सुंदर, जे कबहूँ निरखे न पुरंदर।
नर हरि-मृग जहँ इक सँग चरैं, क्षुतपियास नैंक न संचरैं।
सुख भरि श्री हरि कौं नित चहैं, जाके काम-क्रोध-भय रहैं।
तहँ निरखे ब्रजराजकुमार, अद्वै ब्रह्म अनंत अपार।
बहुरि अगाध बोध श्रुति बोलै, सो बछ-बालक ढूँढ़त डोलै।
परस्यौ धरनि चरनन पर जाइ, सब मुकटन करि परसत पाइ।
ज्यौं ज्यौं वह महिमा उर फुरै, उठि उठि पद-पंकज सौं घुरै।
श्री हरि कछु न कहत हँसि सोये, हमरे खेल आनि इन खोये।
ऐसौं प्रभु हरि-महिमा करि जोरयौ, बृंदावन की रज मैं खोरयौ।

वदन सदन मुसकानि छबि लसी, चंदन मध्य चंद्रिका जसी ।
भिन्न भिन्न ब्रह्मांड बिराजैं, तिन मधि इक इक मूरति भ्राजैं ।
ब्रह्महिं आदि चराचर जिते, मूरति धरे उपासत तिते ।
अनिमा महिमादिक सिधि जिती, महदादिक विभूति है तिती ।
काल-करम-गुन अवर न अंत, सेवत हैं तहँ मूरतिवंत ।
सुधि गई बिधिहिं अचेतन भयौ, हंस कौ अंस पकरि रहि गयौ ।
तिहिं छिन ताहि फबी छबि ऐसी, चतुर्मुखी कोउ पुतरी जैसी ।
सरस्वति पति विचार इमि करै, कहा आहि यह सुधि नहिं परै ।
तब श्री हरि निज हिये बिचारि, अज पर अजा जवनिका डारि ।
कही कि ये अभिमानी लोग, मो महिमा नहिं चाहत जोग ।
तब श्री हरि वह माया जिती, अंतरध्यान करी तहँ तिती ।
बड़ी बेर बिधि सुधि भई ऐसें, मरि कै बहुरि उठत कोउ जैसें ।
दृग उघारि जौ चितवत चहै, तौ वह श्री वृंदावन अहै ।
जामैं नर सुंदर, तरु सुंदर, जे कबहूँ निरखे न पुरंदर ।
अरु हरि-मृग जहँ इक सँग चरै, क्षुतपियास नैक न संचरै ।
सुभ गति श्री हरि कौं नित चहै, ताके काम-क्रोध-भय रहै ।
तहँ निरखे ब्रजराजकुमार, अद्वै ब्रह्म अनंत अपार ।
बहुरि अगाध बोध श्रुति बोलै, सो बछ-बालक ढूँढत डोलै ।
परयौ धरनि चरनन पर जाइ, सब मुकटन करि परसत पाइ ।
ज्यौं ज्यौं वह महिमा उर फुरै, उठि उठि पद-पंकज सौं घुरै ।
श्री हरि कछु न कहत हँसि सोये, हमरे कौन आनि उन खोये ।
इहि सु हरि-महिमा करि बोरयौ, बृंदाबन की रज मैं खोरयौ ।

पूर्व पक्ष

जो कहहु कि तुम अन दुर्बोध, पायो परे न जाको शोध।
तो पै उतर दुस्तर संसार, कैसै तरिहैं, परिहैं पार।
तहां कहत विधि माथ नवाइ, सुनहु नाथ निज प्राप्ति उपाइ।
ग्यान विषै प्रयास परिहरैं, तुम्हरी कथा विषै मन धरैं।
जैसे सुंदर संत तुम्हारे, कथा-अमृत के वरपनहारे।
तिन पै सुनैं, श्रवन रस भरैं, मन-वच-कर्म वंदन पुनि करैं।
बैठे ठौर कथा-रस पीवैं, जे इहि भांति जगत में जीवैं।
अहो अजित! तिन करि तुम जीते, ग्यानी डोलत भटकत रीते।
सब विधि कहत ग्यान है जोई, भक्ति बिना सोउ सिद्ध न होई।
तुम्हरी भगति अमीरस-सरवर, मोच्छादिक जाके बस निर्झर।
तिहि तजि जे केवल बोध कों, करत कलेस चित्त सोध कों।
तिन कहुँ छिन ही छिन श्रम बढ़ै, और कछू न तनक कर चढ़ै।
जैसे कनविहीन लै धान, धमकि धमकि कूटत अग्यान।
फल नहिं निस्च यहे दुख भरैं, खोटत हाथनि फोटक परैं।
सब विधि सदाचार-विधि लिये, करत सनान भक्ति दृढ़ हिये।
हो प्रभु ! पाछे बहुतक भोगी, तजि तजि भोग भये भल जोगी।
फिर अस्टांग जोग अनुसरैं, ग्यान हेतु बहुतै तप करैं।
थकि श्रम मानि तहां तैं फिरैं, तुम कहुँ कर्म समर्पन करैं।
तिन करि सुद्ध भयो मन मर्म, तब कीने प्रभु तुम्हरे कर्म।
कथा श्रवन करि पाई भक्ति, जाके संग फिरत सब मुक्ति।
ता करि आतमतत्व कौं पाइ, बैठे सहज परम गति पाइ(जाइ?)।

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि तुम अगम अगोय, पायो परै न जाको गोय।
तौ पै अतर दुस्तर संसार, कैसैं तरिहैं, परिहैं पार।
तहां कहत विधि माथ नवाइ, सुनहु नाथ निज प्राप्ति उपाइ।
ग्यान विषै प्रयास परिहरैं, तुम्हरी कथा विषै मन धरैं।
जैसैं सुंदर संत तुम्हारे, कथा-अमृत के वरषनहारे।
तिन पै सुनैं, श्रवन रस भरैं, मन-वच-कर्म वंदन पुनि करैं।
बैठे ठौर कथा-रस पीवैं, जे इहि भांति जगत मैं जीवैं।
अहो अजित! तिन करि तुम जीते, ग्यानी डोलत भटकत रीते।
सब विधि कहत ग्यान है जोई, भक्ति विना सोउ सिद्ध न होई।
तुम्हरी भगति अमीरस-सरवर, मोच्छादिक जाके वस निर्झर।
तिहि तजि जे केवल बोध कौ, करत कलेस चित्त सोध कौ।
तिन कहुँ छिन ही छिन श्रम बढ़ै, और कछू न तनक कर चढ़ै।
जैसैं कनविहीन लै धान, धमकि धमकि कूटत अग्यान।
फल नहिं निरफल सहै दुख भरैं, खोटक हाथनि फोटक परैं।
अब विधि सदाचार-विधि लिये, करत सनान भक्ति दृढ हिये।
हो प्रभु! पाछे बहुतक भोगी, तजि तजि भोग भये भल जोगी।
किये अस्टांग जोग अनुसरैं, ग्यान हेतु बहुतै तप करैं।
पुनि श्रम मानि तहां तैं फिरैं, तुम कहुँ कर्म समर्पन करैं।
तिन करि सुद्ध भयौ मन मर्म, तब कीने प्रभु तुम्हरे कर्म।
कथा श्रवन करि पाई भक्ति, जाके संग फिरत सब मुक्ति।
ता करि आतमतत्व कौं पाइ, बैठे सहज परमगति पाइ(जाइ?)।

रज गुन तें उपज्यो अग्यानी, तुम तें भिन्न ईस अभिमानी।
मायामद उनमद ह्वै गयौ, सूझै न कछू, अंध तम छयौ।
यातें अनुकंपाही करौ, भृत्य जानि कछु जीय न धरौ।
चारचौ फुटौ जु जन जानियौ, ताकौ नाथ न बुरौ मानियौ।

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि कयौ इतौ लिलाहि, तुम हूँ तौ इक ईसुर आहि।
तहाँ कहत बिधि जोरे हाथ, वातें समुझि कहौ ब्रजनाथ।
कित हौं कित महिमा नाथ की, कहत हौं चीटी हथी साथ की।
प्रकृति, महद, हंकार, अकास, वायु, वारि, वसुमती, हुतास।
सप्तावरन जु यह इक भौन, तुम ही कहौ तहाँ हौं कौन।
सप्त बितस्ति काइ कौं करचौ, रहत वहुत कहाँ धौं परचौ।
ऐसौ कोटि कोटि ब्रह्मंड, तुमरी एक रोम के खंड।
उपजत भ्रमत फिरत नहिं चैन, जैसैं जालरंध्र त्रिसरैन।
निपटहि तुच्छ, न काहू लाइक, कृपा करौ, न लरौ ब्रजनाइक।
हौं प्रभु जैसैं जननी-गर्भ, रहत है निपट अबुध वह अर्भ।
कूखि बिषै कर-चरनन तानै, तौ कहा मात बुरौ है मानै।
तैसैं हौं नव कूखि के माहीं, करत कलोल कछू सुधि नाहीं।
अब कहत कि हौं तुम्हरौ चेरौ, तुम तें प्रगट जनम यह मेरौ।
जब सब लोग चराचर जितौ, प्रलय-उदधि मधि मज्जत नितौ।
तब हौं तुम्हरी नाभि-कमल तें, निकस्यौं नहिं इहि उदर अमल तें।
'कमलज कमलज' मेरौ नाम, मृषा आहि जानैं सब ग्राम।

रज गुन तैं उपज्यो अग्यानी, तुम तै भिन्न ईस अभिमानी।
मायामद उनमद ह्वै गयौ, सूझै न कछू, अंध तम छयौ।
यातैं अनुकंपाहीं करौ, भृत्य जानि कछु जीय न धरौ।
चारचौ फुटी जु जन जानियौ, ताकौ नाथ न बुरौ मानियौ।

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि क्यौं इनौ लिलाहि, तुम हूँ तौ इक ईसुर आहि।
तहां कहत विधि जोरे हाथ, यातैं समुझि कहौ ब्रजनाथ।
कित हौं कित महिमा नाथ की, कहत हौं चीटी हथी साथ की।
प्रकृति, महद, हंकार, अकास, वायु, वारि, वसुमती, हुतास।
सप्तावरन जु यह इक भौन, तुम ही कहौ तहाँ हौं कौन।
सप्त वितस्ति काइ कौं करचौ, रहत बहुत कहाँ धौं परचौ।
ऐसौ कोटि कोटि ब्रह्मंड, तुमरी एक रोम के खंड।
उपजत भ्रमत फिरत नहिं चैन, जैसै जालरंध्र त्रिसरैन।
निपटहि तुच्छ, न काहू लाइक, कृपा करौ, न लरौ ब्रजनाइक।
हौं प्रभु जैसै जननी-गर्भ, रहत है निपट अबुध वह अर्भ।
कूखि विषै कर-चरनन तानै, तौ कहा मात बुरौ है मानै।
तैसै हौं तव कूखि के माहीं, करत कलोल कछू सुधि नाहीं।
अब कहत कि हौं तुम्हरौ चेरौ, तुम तैं प्रगट जनम यह मेरौ।
जब सब लोग चराचर जितौ, प्रलय-उदधि मधि मज्जत नितौ।
तब हौं तुम्हरी नाभि-कमल तैं, निकस्यौं नहिं इहि उदर अमल तैं।
'कमलज कमलज' मेरौ नाम, मृषा आहि जानै सब ग्राम।

बिंब मध्य प्रतिबिंब ज्यौं होइ, जाकौं कहैं-चहैं सब कोइ।
प्रतिबिंब में बिंब दिखरावै, माया बिन यह क्यों बनि आवै।
जानें थर थर कपत हियौ, अजहूँ सुधि न कहा है कियौ।
प्रथमहि मैं तुम देखे एक, बहुरयौ बालक-बच्छ जितेक।
बेन, बिखान, बेत्र दल जिते, ह्वै रहे चारु चतुर्भुज तिते।
पुनि इक इक ब्रह्मांड के नाइक, सेवत मो समेत सब लाइक।
पुनि अति एक एक छबि बाढ़े, देखे मैं मनमोहन ठाढ़े।
तव महिमा कौतुक जो आहि, को समरथ जानै जो ताहि।
हो प्रभु तव-पद-कमल सुदेस, ताके रस प्रसाद कौ लेस।
कबहूँ काहू पैं ढुरि आवै, तब भल महिमा तत्वहि पावै।
ऐसें अस्तुति बहु बिधि कीनी, निर्गुन-सगुन रूप रँग भीनी।
पुनि प्रार्थत सब सुरन कौ रानौ, भक्ति-बिभौ जु देखि ललचानौ।
अहो नाथ ! मो कहुँ यों करौ, जो तरुना करुना रस ढरौ।
इहि जनम मैं, और जनम मैं, नर जनम मैं, तृजग जनम मैं।
तुमरे भक्तन मैं कछु ह्वै कैं, सोऊ चरन-सरोजन छ्वै कै।
अब बिधि भक्तानंद जु पर्यौ, ब्रज को भाग सराहन लग्यौ।
हो प्रभु धन्य धन्य ये गोपी, धनि ये धेनु परम रस ओपी।
बालक ह्वै, बछ ह्वै प्रभु जिन के, पीवत भये पयोधर तिन के।
बहुरयौ तनक स्तन-पय पाइ, बार बार तुम रहत अघाइ।
गाय के धन्य-भाग हौ ग्वाल, तहँ तुम तनकौ नहिन अघात।
यह ब्रजजन कौ भाग बड़ाई, हो प्रभु, मो पै नहि कहि जाई।
जा प्रभु के आनँद कौ लेस, बरनें अज, सिव, सेस, महेस।

बिंब मध्य प्रतिबिंब जो होइ, जाकौं कहैं-चहैं सब कोइ।
प्रतिबिंब में बिंब दिखरावै, माया बिन यह क्यों बनि आवै।
जानें थर थर कपत हियौ, अजहूँ सुधि न कहा है कियौ।
प्रथमहिं मैं तुम देखे एक, बहुरचौ बालक-बच्छ जितेक।
वेनु, विषान, बेत्र दल जिते, ह्वै रहे चारु चतुर्भुज तिते।
पुनि इक इक ब्रह्मांड के नाइक, सेवत मो समेत सब लाइक।
पुनि अति एक एक छवि बाढ़े, देखे मैं मनमोहन ठाढ़े।
तब महिमा कौतुक जो आहि, को समरथ जानै जो ताहि।
हो प्रभु तव-पद-कमल सुदेस, ताके रस प्रसाद कौ लेस।
कबहूँ काहू पै ढुरि आवै, तब भल महिमा तत्वहि पावै।
ऐसें अस्तुति बहु बिधि कीनी, निर्गुन-सगुन रूप रँग भीनी।
पुनि प्रार्थत सब सुरन कौ रानी, भक्ति-बिभौ जु देखि ललचानी।
अहो नाथ! मो कहुँ यों करौ, जौ तरुना करुना रस ढरौ।
इहि जनम मैं, और जनम मैं, नर जनम मैं, तृजग जनम मैं।
तुमरे भक्तन मैं कछु ह्वै कैं, सोऊ चरन-सरोजन छ्वै कैं।
अब बिधि भक्तानद जु पर्यौ, ब्रज को भाग सराहन लग्यौ।
हो प्रभु धन्य धन्य ये गोपी, धनि ये धेनु परम रस ओपी।
बालक ह्वै, बछ ह्वै प्रभु जिन के, पीवत भये पयोधर तिन के।
बहुर्यौ तनक स्तन-पय पाइ, बार बार तुम रहत अघाइ।
जग के जग्य-भाग हो खात, तहँ तुम तनकौ नहिन अघात।
इह ब्रजजन कौ भाग बड़ाई, हो प्रभु, मो पै नहि कहि जाई।
जा प्रभु के आनँद कौ लेस, बरनत अज, सिव, सेस, महेस।

इन के भक्ति लहलहत ऐसी, देखी सुनी न कितहूँ तैसी ।
मोहिं सो सोच परयौ है महा, हौं प्रभु इन कौं दैहौं कहा ।
बड़ी बड़ाई मुकति तुम्हारे, जाकौं चार्यौ वेद पुकारे ।
इन के वेष मात्र पूतना, महा पापिनी, जगत बूतना ।
चहर्यौ प्रभु कौं मारन कारन, आई थन लगाइ गर दारुन ।
सो वह बकी सकल कुल लै कैं, बैठी जाइ तनक विष दै कैं ।
जिन के गेह देह धन धाम, लागे सकल रावरे काम ।
दैहौं कहा महा अरफेरौ, मोह्यौ जात इहाँ मन मेरौ ।
हौं जानौं नित रिनी रहौंगे, टक टक इन के वदन चहौंगे ।

पूर्व पक्ष

जो कहहु कि ये सो सब रागी, सुत, वित, मित्र, विषै-रस पागी ।
मोहि कोउ वीतराग भल पावै, तहं विधि भक्ति-विभौ दिखरावै ।
हे सुंदर वर नंदकिसोर, रागादिक तबई लगि चोर ।
तबई लगि बंधन आगार, देह, गेह अरु नेह विचार ।
तबई लगि दिढ़ जजर जेरी, मोह-लोह की पाइनि बेरी ।
तब लौं सबनि वासना छये, जब लगि तुम्हरे नाहिन भये ।
जो कोउ कहै प्रभु-वैभव जितौ, हम सम्यक जानत हैं तितौ ।
जानहु ते जानहु जो जग चर, मो तै तौ मन, वचन अगोचर ।
अब मो कौं अपनौ करि जानौ, मो कृत कछु अपराध न मानौ ।
हमरौ ग्यान दौर्ज बल जितौ, प्रभु तुम सम्यक जानहु तितौ ।
इतनौ मांगत अहो अनंत, वदन करौं कल्प परजंत ।

इन के भक्ति लहलहत ऐसी, देखी सुनी न कितहुँ तैसी।
मोहिं सो सोच पर्‌यौ है महा, हौं प्रभु इन कौं दैहौं कहा।
बड़ी बड़ाई मुकति तुम्हारे, जाकौं चार्‌यौ वेद पुकारे।
इन के वेष मात्र पूतना, महा पापिनी, जगत धूतना।
चहर्‌यौ प्रभु कौं मारन कारन, आई थन लगाइ गर दारुन।
सो वह बकी सकल कुल लै कै, बैठी जाइ तनक विष दै कै।
जिन के गेह देह धन धाम, लागे सकल रावरे काम।
दैहौ कहा महा अरफेरौ, मोह्यौ जात इहाँ मन मेरौ।
हौं जानौं नित रिनी रहौंगे, टक टक इन के वदन चहौंगे।

पूर्व पक्ष

जौ कहहु कि ये सौ सब रागी, सुत, वित, मित्र, विषै-रस पागी।
मोहि कोउ वीतराग भल पावै, तहँ विधि भक्ति-विभौ दिखरावै।
हे सुंदर वर नंदकिसोर, रागादिक तबई लगि चोर।
तबई लगि बंधन आगार, देह, गेह अरु नेह विथार।
तबई लगि दिढ़ जजर जेरी, मोह-लोह की पाइनि बेरी।
तब लौं सननि वासना छये, जब लगि तुम्हरे नाहिन भये।
जो कोउ कहै प्रभु-वैभव जितौ, हम सम्यक जानत हैं तितौ।
जानहु ते जानहु जो जग चर, मो तै तौ मन, वचन अगोचर।
अब मो कौं अपनौ करि जानौं, मो कृत कछु अपराध न मानौ।
हमरौ ध्यान दीजै जन जितौ, प्रभु तुम सम्यक जानहु तितौ।
इतनौ माँगत अहौ अनंत, वदन करौं कल्प परजंत।

देखहु हो ये द्रुम या बन के, सब सुख करने, हरने मन के ।
निसा निकरि परसत तुव पाइ, जानत हौं कछु इन कौ भाइ ।
कहत कि हो ईस्वर जगनाइक, हौ तौ तुम सबहिन सुखदाइक ।
ऐ परि हम पर बहुतें ढरें, जातें या बन के द्रुम करे ।
अरु देखहु या बन के भृंग, बोलत डोलत तुम्हरे संग ।
जनु ये मुनिगन अलि ह्वै आये, जदपि गुपत तदपि लखि पाये ।
धनि यह धर जा पर पग धरौ, धनि ये कुंज जहाँ संचरौ ।
धनि ये सरित-सरिता जहँ खोरत, धनि ये कुसुम जिनहिं कर तोरत ।
इहि बिधि बिहरत बृंदाबन मैं, छिन छिन अति रति उपजत मन मैं ।
कहुँ कहुँ हंसन मिलि सु कलोलत, वैसैं ही डोलत, वैसैं ही बोलत ।
कहूँ मत्त निरतत दिखि मोर, तैसैं ही निरतत नंदकिसोर ।
कहूँ मदांध मधुप जहँ गावत, तिन सँग मिलि गावत छबि पावत ।
कबहूँ दूरि जाइ जब गाइ, ललित कदंबन पर चढ़ि जाइ ।
आनँदघन सम सुंदर टेरनि, इत उत वह हेरनि, पट-फेरनि ।
हे गंगे, हे हे गोदावरि, हे जमुने, हे भावरि, चावरि ।
हे मंजरि, हे कुंजरि, सीयरि, हे हे धौरी, धूमरि, पीयरि ।
कबहूँ मल्लजुद्ध मिलि खेलत, मद गज ज्यौं ठेलत, पग पेलत ।
स्रमित होत आवत तरु तरें, किसलय सयन, सु पेसल करें ।
पौढ़त सखा सघन सिर नाइ, कोई बड़भाग पलोटत पाइ ।
कोई कोमल पद लै कर मीजत, कोई लै कुसुम बीजना बीजत ।
कोई अति मधुर मधुर सुर गावत, सांवरे कुंवरहि नींद अनावत ।
कबहूँ बल भैया के पाइ, आपुन होंहि दावत भरि भाइ ।

देखहु हो ये द्रुम या बन के, सब सुख करने, हरने मन के ।
सिखा निकरि परसत तुव पाइ, जानत हौं कछु इन कौ भाइ ।
कहत कि हो ईस्वर जगनाइक, हौ तौ तुम सबहिन सुखदाइक ।
ऐ परि हम पर दहुनैं ढरैं, जातैं या बन के द्रुम करैं ।
अरु देखहु या बन के भृंग, बोलत डोलत तुम्हरे संग ।
जनु ये मुनिगन अलि ह्वै आये, जदपि गुपत तदपि लखि पाये ।
धनि यह बन जा पर पग धरौ, धनि ये कुंज जहाँ संचरौ ।
धनि ये सरन्सरिता जहँ खोरत, धनि ये कुसुम जिनहिं कर तोरत ।
इहि बिधि बिहरत बृंदाबन मैं, छिन छिन अति रति उपजत मन मैं ।
कहुँ कहुँ हंसन मिलि सु कल्लोलत, वैसैं ही डोलत, वैसैं ही बोलत ।
कहूँ मत्त निरतत दिखि मोर, तैसैं ही निरतत नंदकिसोर ।
कहूँ मदांध मधुप जहँ गावत, तिन सँग मिलि गावत छबि पावत ।
कबहुँ दूरि जाइ जब गाइ, ललित कदंबन पर चढ़ि जाइ ।
आनँदघन सम सुंदर टेरनि, इत उत वह हेरनि, पट-फेरनि ।
हे गंगे, हे हे गोदावरि, हे जमुने, हे भावरि, चावरि ।
हे मंजरि, हे कुजरि, सीयरि, हे हे धौरी, धूमरि, पीयरि ।
कबहूँ मल्लजुद्ध मिलि खेलत, मद गज ज्यौं ठेलत, पग पेलत ।
स्रमित होत आवत तरु तरैं, किसलय सयन, सु पेसल करैं ।
पौढ़त सखा सघन सिर नाइ, कोई बड़भाग पलोटत पाइ ।
कोई कोमल पद लै कर मींजत, कोई लै कुसुम बीजना बीजत ।
कोई अति मधुर मधुर सुर गावत, साँवरे कुँवरहिं नींद अनावत ।
कबहूँ बल भैया के पाइ, आपुन हरि चापत भरि भाइ ।

जमुनहिं मिल्यौ निकट ही महा, अति अगाध ह्रद कहियै कहा ।
विष की आगि लागि जल जरै, उडते खग जहँ गिरि गिरि परैं ।
पवन लागि उठि तुठि जल लहरै, तिन तैं विष की फुही जु फहरै ।
एक जोजन के थिर चर जंत, जरि जरि मरि मरि गये अनंत ।
जो वृंदावन जोग्य न हुते, ते सब विष-जल-ज्वाला हुते ।
ताहीं ढिंग इक मृदुल कदंब, सो छ्वै सक्यौ न विष कौ अंब ।
या पर कृष्न-चरन परसिहैं, इहि चढि या दुष्टहि करसिहैं ।
भावी जा कदंब की ऐसै, विष-जल परसि सकै तिहि कैसे ।
ऐसै ही भावी सवन जु आहि, कालादिक छ्वै सकत न ताहि ।
कान्ह कह्यौ कि हमारी जमुना, क्यौं पूछियै विष भरी अमुना ।
सखिनहिं मुख्ख करन कलमले, छवि सौं उहि कदंब ढिंग चले ।
किंकिनि सौं कटि पटहिं लपेटि, कुटिल अलक मुकट मैं समेटि ।
चट दै जिहि कदंब पर चढे, छाजत ता छिन अति छवि बढे ।
जिहिं जल छुवत जात जन जरै, तिहिं जल कुँवर कूदि ही परै ।
वर वारन ज्यौं जल मैं धसरै, सत सत धनु चहुँ दिसि पय पसरै ।
अति उधम सुनि काली डर्यौ, वज्र पर्यौ कि गरुर वल कर्यौ ।
अग्र अग्र आयौ रिस भर्यौ, कोमल कुंवर दिष्टि-पथ पर्यौ ।
नूतन घन तन सुंदर स्याम, तडि दिव पीतवसन अभिराम ।
घन इव. तड़ि दिव उपमा ऐसैं, साखा विन ससि सुझै न जैसैं ।
बिहरत विभु अपने रस-रंग, ईस्वरता कछु नाहिन संग ।
ताकौं वह जानै यह नीच, लोचन भरे महा तम कीच ।
अरुन तरुन नै कोमल पाइ, उसन भयौ दुरात्मा आइ ।

जमुनहिं मिल्यौ निकट ही महा, अति अगाध ह्रद कहिये कहा ।
तिह की आगि लागि जल जरै, उडते खग जहँ गिरि गिरि परैं ।
पवन लागि उठि लुठि जल लहरै, तिन तैं विष की फुही जु फहरैं ।
उहि आंगन के थिर चर जंत, जरि जरि मरि मरि गये अनंत ।
जो वृंदावन जोग्य न हुते, ते सव विष-जल-ज्वाला हुते ।
नाहीं ढिंग इक मृदुल कदंब, सो छ्वै सक्यौ न विष कौ अंव ।
या पर कृष्न-चरन परसिहैं, उहि चढि या दुष्टहि करसिहैं ।
भावी जा कदंव कौ ऐसै, विष-जल परसि सकै तिहि कैसे ।
ऐसै ही भावी सवल जु आहि, कालादिक छ्वै सकत न ताहि ।
कान्ह कह्यौ कि हमारी जमुना, क्यौं पूछियै विष भरी अमुना ।
सखनिहिं मुद्ध करन कलमले, छवि सौं उहि कदंव ढिंग चले ।
किंकिनि सौं कटि पटहि लपेटि, कुटिल अलक मुकट मैं समेटि ।
चट दै जिहि कदंव पर चढे, छाजत ता छिन अति छवि वढे ।
जिहि जल छुवत जात जन जरे, तिहि जल कुँवर कूदि ही परे ।
वर वारन ज्यौं जल मैं धसरै, सत मन धनु चहुँ दिसि पय पसरै ।
अति उधम सुनि काली उरच्यौ, वज्र परचौ कि गरुर वल करचौ ।
अन्ध अन्ध आयौ रिस भरचौ, कोमल कुँवर दिष्टि-पथ परचौ ।
नूतन घन तन सुंदर स्याम, तडि दिव पीतवसन अभिराम ।
घन इव. तड़ि दिव उपमा ऐसें, साञ्झा विन ससि सुझै न जैसें ।
विहरत विभु अपने रस-रंग, ईस्वरता कछु नाहिन संग ।
नागौं यह जानै यह नीच, लोचन भरे महा तम कीच ।
अहह नगन ये कोमल पाइ, उमत भयौ दुरात्मा आइ ।

तिन तें अगिनि की चिनगी परें, ठाढ़े उहां तीर के जरें।
ऐसैं काली सौं बनमाली, खेलन लगे सकल गुनसाली।
वाम भाग दिये तिहि उर मेलत, जैसैं गरुड़ सर्प सौं खेलत।
बढ़ि गयौ ओज उरग कौ ऐसैं, नाग दवन के देखत जैसैं।
पुनि ताके फन पर चढ़ि गये, सकल कला गुरु निर्तत भये।
सोहैं नंद-सुवन तहँ ऐसैं, सेस उपर नाराइन जैसैं।
तिहि छिन यक्ष गंधर्व जितेक, लै लैं ताल मृदंग अनेक।
सुघर सुघर जे सुर लोक के, सिव लोक के बिष्नु ओक के।
अद्भुत नर्तक नांहि कछु बचे, सर्प फनन पर तांडव नचे।
फनन तें निकसि निकसि मनि परैं, पगन में झलमल झलमल करैं।
तैसिय हरि-नख-मनि की जोति, सब दिसि जगमग जगमग होति।
जोई जोई फन अहि उन्नत करै, तहँ तहँ मान कान्ह कौ परै।
पगन की कूटनि दुखित जु भयौ, सर्प कौ दर्प सबै गिरि गयौ।
कहत कि यह बल नहिन मनुज कौ, निरबधि ईस्वर बल जु अनुज कौ।
नागनाथ अहि निपटहि डरयौ, मन करि चरन सरन अनुसरयौ।
दुखित देखि ताकी गह तिया, आई थर थर कंपत हिया।
चहूँ नारिकन आगे किये, जैसैं दया फुरै हरि हिये।
नैनन तैं जलकन यों परैं, कमलन तैं जनु मुक्ता झरैं।
बिगलित बसन सु बदन छवि बढ़े, अहि सिसु जनु कि ससिन पर चढ़े।
कछू सुख भरी कछू भय भरी, करि दंडवत स्तुती अनुसरी।
कह्यौ नाथ अनुचित नांहि करयौ, अहि कहुँ दंड न्याय ही धरयौ।
दुष्ट-दमन तुम्हरौ अवतार, हो ईस्वर ब्रजराज-कुमार।

तिन तें अगिनि की चिनगी परें, ठाढ़े इहां तीर के जरें।
ऐसें कालौ सौं वनमाली, खेलन लगे सकल गुनसाली।
वाम भाग दियें तिहि उर मेलत, जैसें गरुड़ सर्प सौं खेलत।
थकि गयौ ओज उरग कौ ऐसें, नाग दवन के देखत जैसें।
पुनि ताके फन पर चढ़ि गये, सकल कला गुरु निर्तत भये।
सोहैं नंद-सुवन तहँ ऐसें, सेस उपर नाराइन जैसें।
तिहि छिन जच्छ गंधर्व जितेक, लै लै ताल मृदंग अनेक।
सुघर सुघर जे सुर लोक के, सिव लोक के बिष्नु ओक के।
अद्भुत नर्तक नहिं कछु बचे, सर्प फनन पर तांडव नचे।
फनन तें निकसि निकसि मनि परैं, पगन में झलमल झलमल करैं।
तैसिय हरि-नख-मनि की जोति, सब दिसि जगमग जगमग होति।
जोइ जोइ फन अहि उन्नत करै, तहँ तहँ लात कान्ह की परै।
पगन की कूटनि दुखित जु भयौ, सर्प कौ दर्प सबै गिरि गयौ।
कहत कि यह बल नहिन मनुज कौ, निरवधि ईस्वर बल जु अनुज कौ।
सावधान अहि निपटहि डरयौ, मन करि चरन सरन अनुसरयौ।
दुखित देखि ताकी गति तिया, आई थर थर कंपत हिया।
बहुते बालक आगे किये, जैसें दया फुरै हरि हिये।
नैनन तें जलकन यौं परैं, कमलन तें जनु मुक्ता झरैं।
बिगलित कच सु बदन छबि बढ़े, अहि सिसु जनु कि ससिन पर चढ़े।
कछू गद्गद भरी कछू भय भरी, करि दंडवत स्तुती अनुसरी।
कह्यौ नाथ अनुचित नहिं करयौ, अहि कहुँ दंड न्याय ही धरयौ।
दुष्ट-दमन तुम्हरौ अवतार, हौ ईस्वर ब्रजराज-कुमार।

श्री सुक कह्यौ अहिन के ठौर, परी रहति नित खगपति दौर।
घेरे खाइ, बहुत हनि जाइ, तब सर्पन मिलि कियौ उपाइ।
आवहु मास मास बलि दीजै, इहि बिधि भले कैऊ दिन जीजै।
तब पर्बनि पर्बनि तरु तरे, अपनी अपनी बलि लै धरे।
यह अति बिष-बीरज-मद भर्यौ, गरुड तें रंचक नाहिन डर्यौ।
अपनौ भाग, अवर कौ भाग, खाइ जाइ यह काली नाग।
सुनि कै कुपित भयौ द्विजराज, कद्रू-सुतहि हनन के काज।
महा बेग धरि रिस भरि धायौ, बल-आलय उरगालय आयौ।
इत यह बली बानि भिहरानौ, मधु-रिपु-आसन अति समुहानौ।
इक सत फनन फुकात सु तानौ, द्वै सत लोचन अनल चुवातौ।
अति बल गरुड़ नखायुध जाके, दूजौ मधुसूदन बल ताके।
बाम पच्छ, नव कंचनमई, रहपट एक जु ताकौं दई।
तहँ तैं भज्यौ सु बिह्वल भयौ, धाइ आइ इहि दह दुरि गयौ।
इहां गरुर कौ कछु न बसानौ, फिरि गयौ सौभरि संका मानौ।
सुनि कै प्रस्न करौ नृप ऐसैं, हो प्रभु ! सोभरि संका कैसै।
तब राजा सौं श्री सुक कहै, सौभरि कौ तहँ आश्रम रहै।
एक समै इहि दह मैं आइ, खगपति कीनौ बहुत उपाइ।
तहँ के मीनन कहँ दुख दीनौ, तिन कौ राउ पकरि है लीनौ।
जलचर दुखित देखि कै खरे, बोले रिषि अति करुना भरे।
अब कै जौ ह्यां खगपति आवै, प्रान सहित तौ जान न पावै।
अहिनौ कालौ जानत आहि, और न लोगनि जानत नाहि।
सो यह कालौ, हरि बनमाली, काढ़ि दियौ करि कीरति बिसाली।

श्री सुक कह्यौ अहिन के ठौर, परी रहति नित खगपति दौर।
धारे खाइ, बहुत हनि जाइ, तब सर्पन मिलि कियौ उपाइ।
आवहु मास मास बलि दीजै, इहि बिधि भले कैऊ दिन जीजै।
तब पर्वनि पर्वनि तरु तरे, अपनी अपनी बलि लै धरे।
यह अति बिष-बीरज-मद भर्यौ, गरुड तैं रंचक नाहिन डर्यौ।
अपनौ भाग, अवर कौ भाग, खाइ जाइ यह काली नाग।
सुनि कै कुपित भयौ द्विजराज, कद्रू-सुतहि हतन के काज।
महा बेग धरि रिस भरि धायौ, बल-आलय उरगालय आयौ।
इत यह बली बालि भिहरानी, मधु-रिपु-आसन अति समुहानी।
एक सत फनन फुकात सु तानी, द्वै सत लोचन अनल चुचाती।
अति बल गरुड़ नखायुध जाके, दूजौ मधुसूदन बल ताके।
बाम पच्छ, नव कंचनमई, रहपट एक जु ताकौं दई।
तहँ तै भज्यौ सु बिह्वल भयौ, धाइ आइ इहि दह दुरि गयौ।
यहां गरुड़ कौ कछु न बसानी, फिरि गयौ सौभरि संका मानी।
सुनि कै प्रस्न कर्यौ नृप ऐसैं, हो प्रभु ! सोभरि संका कैसै।
तब राजा सौं श्री सुक कहै, सौभरि कौ तहँ आश्रम रहै।
एक समै इहि दह मैं आइ, खगपति कीनौ बहुत उपाइ।
तहँ के मीनन कहँ दुख दीनौ, तिन कौ राउ पकरि है लीनौ।
जलचर दुखित देखि कै खरे, बोले रिषि अति करुना भरे।
अब कै जौ ह्यां खगपति आवै, प्रान सहित तौ जान न पावै।
अहिनौ कालौ जानत आहि, और न लोगनि जानत नाहि।
सो यह कालौ, हरि बनमाली, काढ़ि दियौ करि कीरति बिसाली।

जे द्रुमलता दवानल जरे, अमी-दृष्टि करि तेरौई करे।
भोर भये अपने ब्रज आये, मिटे असंगल, मंगल गाये।
अगिनि पान हरि जान कौं, गान जु करिहैं कोइ।
महा भार संसार-भर, बहुरि न परिहैं सोइ॥

अष्टादश अध्याय

अब सुनि अष्टादसौं अध्याइ, सुनत सहज सब ताप नसाइ।
जामैं कृष्न केलि अभिराम, हतिहैं असुर प्रलंबहि राम।
श्री सुक कहत हैं हो नृप सत्तम, अवर एक लीला सुनि उत्तम।
गोप-बेष करि अद्भुत सोहत, राम-कृष्न सब के मन मोहत।
ग्रीषम रितु आपने सुभाइक, प्रगटची जगत सबन दुखदाइक।
अति निदाघ नहँ कछु सुधि नाहीं, दादुर दुरे फनी-फन-छांहीं।
सो बृंदावन मधि जब आयौ, सरस बसंत समान सुहायौ।
ठौं ठौं गिरि तैं निर्झर झरैं, ते वै सलिल सिलन पर परैं।
तिन तैं बहति जु सरिता गहिरी, दूरि दूरि लौं परसति लहरी।
बहुरि अनेक अगाध सु सरवर, रस झूमरे, घूमरे तरवर।
तिन के तर तृन-बीरुध जिते, हरित हरित रँग भरित सु तिते।
तरनि किरन जिन नेंक न परसैं, छिन छिन मैं छवि तिन मैं सरसैं।
कुसुमित बनराजी अति राजी, जैसी नहिन बसंत बिराजी।
ठौर ठौर सर सरसिज फूले, डोलत लंपट अलिकुल भूले।
सरस पवन, अरु चंदन सीत, मिलि जु बहत, सुख कहियें कौन।

जे द्रुमलता दवानल जरे, अमी-दृष्टि करि तेसेई करे।
भोर भये अपने ब्रज आये, मिटे अमंगल, मंगल गाये।
अगिनि पान हरि जान कों, गान जु करिहैं कोइ।
महा झार संसार-झर, बहुरि न परिहैं सोइ॥

अष्टादश अध्याय

अब सुनि अष्टादसौं अध्याइ, सुनत सहज सब ताप नसाइ।
जामैं कृष्न केलि अभिराम, हतिहैं असुर प्रलंबहि राम।
श्री सुक कहत हैं हो नृप सत्तम, अवर एक लीला सुनि उत्तम।
गोप-बेष करि अद्भुत सोहत, राम-कृष्न सब के मन मोहत।
ग्रीषम रितु आपनै सुभाइक, प्रगट्यौ जगत सबन दुखदाइक।
अति निदाघ तहँ कछु सुधि नाहीं, दादुर दुरें फनी-फन-छाँहीं।
सो बृंदावन मधि जब आयौ, सरस वसंत समान सुहायौ।
ठौं ठौं गिरि तैं निर्झर झरैं, ते वै सलिल सिलन पर परैं।
तिन तें बहति जु सरिता गहिरी, दूरि दूरि लौं परसति लहरी।
बहुरि अनेक अगाध जु सरवर, रस झूमरे, घूमरे तरवर।
तिन के तर तृन-बीरुध जिते, हरित हरित रँग भरित जु तिते।
तरनि किरन जिन नेंक न परसैं, छिन छिन मैं छवि तिन मैं सरसैं।
कुसुमित बनराजी अति राजी, जैसी नहिन वसंत बिराजी।
ठौर ठौर सर सरसिज फूले, डोलत लंपट अलिकुल भूले।
सुमन्द पवन, अरु चवन पौन, मिलि जु बहत, सुख कहियै कौन।

श्रीदामा वृषभादिक ग्वाल, बल दिसि गये बजावत गाल।
जमुना पुलिन ललित चौगान, खेलन लगे जान-मनि जान।
लै गये मारि टोल बल प्यारे, कमल-नयन दिसि के सब हारे।
तिन पर चढ़ि चढ़ि बल ओर के, चले चपल अपनी जोर के।
श्रीदामा हरि पर चढ़ि चले, को ठाकुर जो खेल मैं रले।
बल प्रलंब पर सोहत ऐसें, सो उपमा अब कहियत कैसें।
बट भंडीर तीर लगि चढ़े, लै गये बालकेलि रस बढ़े।
कान्ह कुँवर की दृष्टि बचाइ, असुर अवधि तै आगे जाइ।
अपने रूपहि आश्रित भयौ, तब ही अंबर लौ चढ़ि गयौ।
ता छिन भयौ भयानक भारी, पहिरे कंचन-भूपन कारी।
ता पर सकर्षन अति सोहे, ब्रजबालक बिलोकि सब मोहे।
जो होइ कारी भारी घटा, बिच बिच चमकै-दमकै छटा।
ऊपर सरद चंद होइ जैसें, सोहैं रोहिनि-नंदन तैसें।
बिकट बदन अरु बड़े दंत, बिकट भृकुटि दृग अग्नि बमंत।
तपन ताम्र से सिररुह लसै, तब दिखि हलधर रंचक त्रसै।
पुनि सुधि आइ तनक मुसकाइ, दियौ जु मुठिका मूँड बनाइ।
किरच किरच ह्वै गयौ लिलार, मुख तै चली रुधिर की धार।
धर्‌यौ प्रलंब न कछु सभार्‌यौ, गिरि जनु गिरत बज्र कौ मार्‌यौ।
सोइ पसारि असुर जब पर्‌यौ, निरखि रूप तब सब ब्रज डर्‌यौ।
पुरि पुरि मिले ग्वालगन ऐसें, मरि गयौ कोउ फिरि आवत जैसें।
अमर निकर बर अतिसय हरषे, बल पर सुमन सु सुंदर बरषे।
कृष्न पर लै ब्रज कौं आवत, बालक-वृंद सु कीर्तन गावत।

श्रीदामा वृषभादिक ग्वाल, बल दिसि गये बजावत गाल।
जमुना पुलिन ललित चौगान, खेलन लगे जान-मनि जान।
लै गये मारि दाँव बल प्यारे, कमल-नयन दिसि के सब हारे।
तिन पर चढ़ि चढ़ि बल ओर के, चले चपल अपनी जोर के।
श्रीदामा हरि पर चढि चले, को ठाकुर जो खेल मैं रले।
बल प्रलंब पर सोहत ऐसें, सो उपमा अब कहियत कैसें।
बट भंडीर तीर लगि चढ़े, लै गये बालकेलि रस बढ़े।
कान्ह कुँवर की दृष्टि बचाइ, असुर अवधि तै आगे जाइ।
अपने रूपहि आश्रित भयौ, तब हौ अंबर लौ चढि गयौ।
ता छिन भयौ भयानक भारी, पहिरे कंचन-भूषन कारी।
ता पर मकर्पन अति सोहे, ब्रजबालक बिलोकि सब मोहे।
जो होइ कारी भारी घटा, बिच बिच चमकै-दमकै छटा।
ऊपर सरद चंद होइ जैसे, सोहै रोहिनि-नंदन तैसे।
बिकट बदन अरु बड़े दंत, बिकट भृकुटि दृग अग्नि बमंत।
तपन ताम्र से सिररुह लसे, तब दिखि हलधर रंचक त्रसे।
पुनि सुधि आइ तनक मुसकाइ, दियौ जु मुठिका मूँड बनाइ।
सिरस किरच ह्वै गयौ लिलार, मुख तै चली रुधिर की धार।
धर्यौ प्रलंब न कछु सँभार्यौ, गिरि जस गिरत बज्र कौ मार्यौ।
सोइ पसारि असुर जब पर्यौ, निरखि रूप तब सब ब्रज डर्यौ।
धूरि धूरि मिले ग्वालगन ऐसे, मरि गयौ कोउ फिरि आवत जैसे।
अमर निकर बर अतिसय हरषे, बल पर सुमन सु सुंदर बरषे।
हलधर लै ब्रज कौं आवत, बालक-वृंद सु कीर्तन गावत।

तब हरि इक कदंब पर चढ़े, छाजत तिहि छिन अति छबि बढ़े ।
मनु नव कुल कौ फल रस-पग्यौ, है कदंब एकै यह लग्यौ ।
चंचल दृगन कौ इत उत हेरनि, मधुर मधुर टेरनि, पट फेरनि ।
मुकुट कौ झलकनि, कुंडल झलकनि, कछु कछु राजति गोरज अलकनि ।
लै लै नामन गाइन टेरे, यह छबि सदा बसहु मन मेरे ।
धवरी उत तें चाइन चाइन, हरि-मुख तें सुनि अपने नाइन ।
प्रेम सहित आवनि, हुंकारनि, सींचत धरनि दूध की धारनि ।
आनि जु भई धेनु इकठौरी, धौरी धौरी, अति छबि बौरी ।
सब के कंठनि कंचन-माला, सोहत सुंदर नयन बिसाला ।
घनन घनन घंटागन गजैं, अमरराज-गज की छबि लजैं ।

हरि सनमुख आवति उमहि, उज्जल गोधन-धार ।
समुदहि मनहुँ मिलन चली, गंग भई सतधार ॥

ऐसेंहि माहिं दवानल लग्यौ, वृप-रवि-रस्मि परसि जगमग्यौ ।
प्रबल पवन लागि अनि झर झरटैं, लतन सौं लपटि द्रुमन सौं लपटैं ।
जरि जरि नाग तमाल जु लटके, पटके बाँस, काँस-तृन चटके ।
डरे गोप-गोधनगन सबै, आये नंद-सुवन ढिंग तबै ।
ज्यौं कोउ काल व्याल तें डरे, भजि हरि-चरन-सरन अनुसरै ।
कहन लगे कि अहो बलराम, हो श्रीकृष्ण कृष्ण घनस्याम ।
राखि लेहु हम बंधु तुम्हारे, जरत हैं सबै दवानल जारे ।
तब हँसि बोले मोहनलाल, मूँदहु नैन धेनु, बछ, बाल ।
जब सब के दृग मुद्रित भये, तब हरि अगिनि पान करि गये ।
दृग उघारि जौ चहुँदिस अभीर, ठाढ़े वट भांडीर के तीर ।

तब हरि इक कदंब पर चढ़े, छाजत तिहि छिन अति छबि बढ़े।
पत सब कुल कौ फल रस-पग्यौ, हि कदब एकै यह लग्यौ।
चंचल दृगन कौ इत उत हेरनि, मधुर मधुर टेरनि, पट फेरनि।
मुकुट की झलकनि, कुंडल झलकनि, कछु कछु राजति गोरज अलकनि।
लै लै नामन गाइन टेरे, यह छबि सदा बसहु मन मेरे।
टगरी उत तैं धाइन धाइन, हरि-मुख तैं सुनि अपने नाइन।
प्रेम सहित आवनि, हुंकारनि, सींचत धरनि दूध की धारनि।
आनि जु भई धेनु इकठौरी, धौरी धौरी, अति छबि बौरी।
सब के कंठनि कंचन-माला, सोहत सुंदर नयन बिसाला।
घनन घनन घंटागन गजैं, अमरराज-गज की छबि लजैं।

हरि सनमुख आवति उमहि, उज्जल गोधन-नार।
समुदहि मनहुँ मिलन चली, गंग भई सतधार॥

ऐसेहि नाहि दवानल लग्यौ, नृप-रवि-रस्मि परसि जगमग्यौ।
प्रबल पवन लागि अति झर झरटैं, लतन सौं लपटि द्रुमन सौं लपटै।
जरि जरि ताल तमाल जु लटके, पटके बाँस, काँस-तृन चटके।
डरे गोप-गोधनगन सबै, आये नंद-सुवन ढिंग तबै।
ज्यौं कोउ काल ब्याल तैं डरै, भजि हरि-चरन-सरन अनुसरै।
कहन लगे कि अहो बलराम, हो श्रीकृष्न कृष्न घनस्याम।
राखि लेहु हम बंधु तुम्हारे, जरत हैं सबै दवानल जारे।
तब हँसि बोले मोहनलाल, मूँदहु नैन धेनु, बछ, बाल।
जब सब के दृग मुद्रित भये, तब हरि अगिनि पान करि गये।
दृग उघारि जौ चहुँदिस अभीर, ठाढ़े बट भांडीर के तीर।

जैसैं नृप अपनौ कर लेइ, समय पाइ पुनि परजहिं देइ ।
तड़ित-दृगन करि मेघ महंत, देखे ताप तपे सब जंत ।
प्रेरे पवन सु जीवन बरषैं, सबन के दुख करषैं, मन हरषैं ।
जैसैं करुन पुरुष पर हेत, अपने प्यारे प्रानन देत ।
ग्रीष्म-ताप करि कृश हुती धरनी, सरस भई, सोहति वर बरनी ।
ज्यौं सकाम कोउ फल कौं पाइ, भोगन भुगति पुष्टि ह्वै जाइ ।
साँझ समै पटबिजना चमकैं, घन करि छपे नखतगन दमकैं ।
ज्यौं कलि विषैं पाप पाखंड, नहिन निगम के धरम प्रचंड ।
घन-गरजनि सुनि मुदित जु भेक, बोले बरनि अनेक अनेक ।
ज्यौं गुरु आग्या सुनि चटसार, चटा पढ़ि उठत एक हि बार ।
पाछे सुकी हुती जे सरिता, उत्पथ चलीं बहुत जल भरिता ।
अजितेंद्रिय नर ज्यौं इतराइ, देह, गेह, धन, संपति पाइ ।
बूढ़ी लूटी जु हरित भई धरनी, उछलीध्र छवि फवि हियहरनी ।
जनु कोउ भूपति उतर्यौ आइ, छत्र तनाइ, बिछौन बिछाइ ।
निपजे छेत्र फागुनी धान, तिनहिं निरखि हरखे जु किसान ।
धनी लोग उपतापहि जाहीं, दैवाधीन सु जानत नाहीं ।
जल के, थल के बासी जिते, जल-सोभा करि सोभित तिते ।
जैसैं हरि-सेवा करि कोई, रुचिर रूप अति राजत सोई ।
सरित-संग करि छुभित जु सिंधु, उमगि ऊरमी, ह्वै गयौ अंधु ।
ज्यौं अपक्व जोगी चित धाइ, विषयन पाइ भ्रष्ट ह्वै जाइ ।
गिरिगन पर जलधर बर बरसैं, ऐ परि गिरि कछु विथा न परसैं ।
बरसैं पै बिरसैं नहिं ऐसैं, कष्टन पाइ कृष्नजन जैसैं ।

जैसें नृप अपनौ कर लेइ, समय पाइ पुनि परजहिं देइ।
तड़ित-द्रुगन करि मेघ महंत, देखे ताप तपे सब जंत।
प्रेरे पवन जु जीवन बरषै, सबन के दुख करषै, मन हरषै।
जैसें करुन पुरुष पर हेत, अपने प्यारे प्रानन देत।
ग्रीष्म-ताप करि कृश हुती धरनी, सरस भई, सोहति वर बरनी।
ज्यौं सकाम कोउ फल कौं पाइ, भोगन भुगति पुष्टि ह्वै जाइ।
साँझ समै पटबिजना चमकै, घन करि छपे नखतगन दमकै।
ज्यौं कलि विषै पाप पाखंड, नहिन निगम के धरम प्रचंड।
घन-गरजनि सुनि मुदित जु भेक, बोले बरनि अनेक अनेक।
ज्यौं गुरु आग्या सुनि चटसार, चटा पढ़ि उठत एक हि बार।
पाछे सूकी हुती जे सरिता, उत्पथ चली बहुत जल भरिता।
अजितेंद्रिय नर ज्यौं इतराइ, देह, गेह, धन, संपति पाइ।
बूढ़ी लूटी जु हरित भई धरनी, उछलीध्र छवि फबि हियहरनी।
जनु कोउ भूपति उतरयौ आइ, छत्र तनाइ, बिछौन बिछाइ।
निपजे छेत्र कागुनी धान, तिनहिं निरखि हरखे जु किसान।
धनी लोग उपतापहि जाही, दैवाधीन सु जानत नाही।
जल के, थल के बासी जिते, जल-सोभा करि सोभित तिते।
जैसें हरि-सेवा करि कोई, रुचिर रूप अति राजत सोई।
सरित-संग करि छुभित जु सिंधु, उमगि ऊरमी, ह्वै गयौ अंबु।
ज्यौं अपक्व जोगी चित धाइ, विषयन पाइ भ्रष्ट ह्वै जाइ।
गिरिगन पर जलधर बर बरसै, ऐ परि गिरि कछु बिथा न परसै।
परसे पै निरसै नहिं ऐसें, कष्टन पाइ कृष्नजन जैसें।

एकविंश अध्याय

अब सुनि इकईसौं अध्याइ, सरद समैं वृंदावन जाइ।
बेनु बजैहैं मोहनलाल, तिहि सुनि सुंदर ब्रज की बाल।
बरनन करिहैं परम पुनीत, अहो मीत ! सुनि गोपी-गीत।
सरद स्वच्छ जल-कमल जितेक, प्रफुल्लित भये अनेक अनेक।
तिन की बास बायु लै गयौ, ता करि सब बन बासित भयौ।
तिहि बन अच्युत मोहनलाल, गवने बल-बालक-गोपाल।
भौंरौं सुमन कुसुमगन फूले, मधुकर मत्त फिरत जहँ भूले।
तरुवर, सरवर के खग जिते, मुद भरि करत कुलाहल तिते।
तहँ गिरि गोधन सुछ छबि छये, नित बरसत, सरसत सुख नये।
जहँ नँद-नंदन चारत धेनु, मधुर मधुर सुर बजवत बेनु।
सो वह बेनु-गीत सु रसाल, सुनत भई ब्रज मैं ब्रजबाल।
बढ्यौ जु तन-मन प्रेम अनंग, मनु उत ही हैं हरि के संग।
बरनत भई सखिन प्रति ऐसैं, परतछ कान्ह कुँवर वर जैसैं।
हे सखि ! दिखि नटवर बपु धरैं, कर्ननि कँवल कर्निका करैं।
धरैं मुकुट चटकीलौ माथ, फेरत कमल दाहिने हाथ।
राजत उर बैजंती माल, चलत जु मत्त द्विरद की चाल।
अधर-सुधा मुरली के रंध्रनि, निकसति मिलि सुर सप्त सुगंधनि।
ता करि सब बन पूनित कियौ, काहू माँझ रह्यौ नहिं हियौ।
निज पद अंकित, नित कमनीय, वृंदारन्य परम रमनीय।
तहाँ अबेर करत छबि पावत, गोपबृंद जस कीरति गावत।

एकविंश अध्याय

अब सुनि इकईसौं अध्याइ, सरद समै वृंदावन जाइ ।
बेनु बजैहैं मोहनलाल, तिहिं सुनि सुंदर ब्रज की बाल ।
बरनन करिहैं परम पुनीत, ग्रहो मीत ! सुनि गोपी-गीत ।
सरद स्वच्छ जल-कमल जितेक, प्रफुलित भये अनेक अनेक ।
तिन की बास बायु लै गयौ, ता करि सब बन बासित भयौ ।
तिहिं बन अच्युत मोहनलाल, गवने बल-बालक-गोपाल ।
औरौ सुरस कुसमगन फूले, मधुकर मत्त फिरत जहँ भूले ।
तरुवर, सरवर के खग जिते, मुद भरि करत कुलाहल तिते ।
तहँ गिरि गोधन सुछ छबि छये, नित बरसत, सरसत सुख नये ।
तहँ नँद-नंदन चारत धेनु, मधुर मधुर सुर बजवत बेनु ।
सो वह बेनु-गीत सु रसाल, सुनत भई ब्रज मैं ब्रजबाल ।
बढ्यौ जु तन-मन प्रेम अनंग, मनु उत ही हैं हरि के संग ।
बरनत भई सखिन प्रति ऐसैं, परतछ कान्ह कुँवर बर जैसैं ।
हे सखि ! दिखि नटवर वपु धरैं, कर्ननि कँवल कर्निका करैं ।
धरैं मुकुट चटकीलौ माथ, फेरत कमल दाहिने हाथ ।
राजत उर बैजंती माल, चलत जु मत्त द्विरद की चाल ।
अधर-सुधा मुरली के रंध्रनि, निकसति मिलि सुर सप्त सुगंधनि ।
ता करि सब बन धूनित कियौ, काहू माँझ रह्यौ नहिं हियौ ।
निज पद अंकित, नित कमनीय, वृंदारन्य परम रमनीय ।
तहाँ प्रवेस करत छबि पावत, गोपवृंद जस कीरति गावत ।

मुनि पुनि कर्म फलन तजि जैसें, अप अपनी श्रुति-सापा वैसें ।
कमल-नयन अवलोकन करें, फलन के अंतर नहिं सहि परें ।
तरैऊ इह बन खगगन जिते, मुनि हौंन के जोग हैं तिते ।

अन्याहु

हे सखि ! चेतन जन की रहौ, ये जु अचेतन ते किन चहौ ।
बेनु-गीत सुनि सरिता जिती, उमगि मनोभव बिथकित तिती ।
बीचि जु भ्रमत भँवर अभिराम, मारत मनहि ससूने काम ।
लै लै अमल कमल उपहार, लहरि भुजन करि ढारहि ढार ।
पसारे चहत स्याम के पाउ, जैसें काम-बिथा मिटि जाइ ।

अन्याहु

बन में बल अरु सुंदर स्याम, पसु चारत, परसत दिखि घाम ।
निरखहु सजनि नेह कौ नेह, छत्र करि लियौ अपनौ देह ।
छांह किये डोलत दिन संग, फुहीं फूल बरषत बहु रंग ।
कनक-दंड जिमि दामिनि बनी, छाजति छबि कछु परत न गनी ।
सखा भयौ घन घनस्याम कौ, मानौ मानि एक नाम कौ ।
जग-आरति हरनें, रस-सनें, दोऊ आनि एक से बनें ।

अन्याहु

हे सखि ! मेह-नेह की रहौ, भील-भामिनी तन किन चहौ ।
प्रमुदित बन जु फिरति हैं सखी, मैं इक इनके मन की लखी ।
प्रिया-उरज कुंकुम-रस-रंगे, ते कुंकुम हरि पिय-पद लगे ।
परस तें बन-तृन भूषित भये, ते तृन इन नीचन लखि पये ।

मुनि पुनि कर्म फलन तजि जैसें, अप अपनी श्रुति-सापा बैसें।
कमल-नयन अवलोकन करैं, फलन के अंतर नहिं सहि परैं।
तैसेई इह बन खगगन जिते, मुनि हौन के जोग हैं तिते।

अन्याहु

हे सखि ! चेतन जन की रही, ये जु अचेतन ते किन चही।
बेनु-गीत सुनि सरिता जिती, उमगि मनोभव विथकित तिती।
बीचि जु भ्रमत भँवर अभिराम, मारत मनहि मसूसे काम।
लै लै अमल कमल उपहार, लहरि भुजन करि ढारहि ढार।
पकरे चहत स्याम के पाइ, जैसें काम-बिथा मिटि जाइ।

अन्याहु

बन में बल अरु सुंदर स्याम, पसु चारत, परसत दिखि घाम।
निरखहु सजनि नेह कौ नेह, छत्र करि लियौ अपनौ देह।
छाँह किये डोलत दिन संग, फुहीं फूल बरषत बहु रंग।
कनक-दंड जिमि दामिनि बनी, छाजति छवि कछु परत न गनी।
सखा भयौ घन घनस्याम कौ, नातौ मानि एक नाम कौ।
जग-आरति हरने, रस-सने, दोऊ आनि एक से बने।

अन्याहु

हे सखि ! मेह-नेह की रह्यौ, भील-भामिनी तन किन चह्यौ।
प्रमुदित ये जु फिरति हैं सखी, मैं इक इनके मन की लखी।
प्रिया-उरज कुंकुम-रस-पगे, ते कुंकुम हरि पिय-पद लगे।
परस तें धन-तृन भूषित भये, ते तृन इन नीयन लखि पये।

'नंद' इकीस अध्याइ यह, ऐसैं सुनि चित चाहि ।
प्रिया-वचन जिमि पीय के, सुनियैं फल अवगाहि ॥

द्वाविंश अध्याय

विवि विंसत अध्याइ सुनि मित्र, वस्त्रहरन मनहरन पवित्र ।
नंद गोप व्रज की दारिका, अद्भुत अद्भुत सुकुमारिका ।
जदपि समस्त विवाहित आहि, नंद-सुवन के रूपहि चाहि ।
विवस भईं पति परिहरि परिहरि, करत भईं व्रत हिय हरि धरि धरि ।
हिम रितु प्रथम मास अभिराम, देवी कात्यायनी जु नाम ।
तिहि पूजन जमुना-तट जाहिं, तहाँ न्हाइ हविषा कछु खाहिं ।

व्रत को पूर्व भाग कहत हैं

उठैं बड़े भोर चाइन चाइन, बोलत छवि सौं मधुरी भाइन ।

कछुक आगमोक्त भक्त तिन के नाम कहत हैं

प्रेमकला, विमला, रतिकला, कामकला, नवला चंचला ।
चंद्रकला, चंद्रावलि, चंदनि, जग-वदनि वृपभान की नंदनि ।
कामलता, ललिता, रतिवेलि, रूपलता, चंपकलता एलि ।
अवर अनेक नहिन कहि परै, चंचल नैन मैन-मन हरैं ।
सब मिलि मैं आवति छवि पावनि, नूतन मंगल गीतन गावति ।
इहि विधि जमुना-तट आवति, अतिसैं करि मन मोद बढ़ावति ।
करि संकल्प नदिन मैं जाइ, मौन धरे विधि सहित अन्हाइ ।
बहुरि कालिंदी कूलन परै, बारू की कर प्रतिमा करैं ।

'नंद' इकीस अध्याइ यह, ऐसैं सुनि चित चाहि ।
प्रिया-बचन जिमि पीय के, सुनियौ फल आहि ।।

द्वाविंश अध्याय

विवि बिंसत अध्याइ सुनि मित्र, वस्त्रहरन मनहरन पवित्र ।
नंद गोप ब्रज की दारिका, अद्भुत अद्भुत सुकुमारिका ।
जद्यपि समस्त विवाहित आहि, नंद-सुवन के रूपहि चाहि ।
विवस भई पति परिहरि परिहरि, करत भई ब्रत हिय हरि धरि धरि ।
हिम रितु प्रथम मास अभिराम, देवी कात्यायनी जु नाम ।
तिहि पूजन जमुना-तट जाहिं, तहाँ न्हाइ हविषा कछु खाहिं ।

ब्रत कौ पूर्व भाग कहत हैं

उठैं बड़े भोर चाइन चाइन, बोलत छवि सौं मधुरी भाइन ।

कछुक आगमोक्त भक्त तिन के नाम कहत हैं

प्रेमकला, विमला, रतिकला, कामकला, नवला चंचला ।
चंद्रकला, चंद्रावलि, चंदनि, जग-वंदनि वृषभान की नंदनि ।
कामलता, ललिता, रतिबेलि, रूपलता, चंपकलता एलि ।
अवर अनेक नहिन कहि परैं, चंचल नैन मैन-मन हरैं ।
सब मिलि नैं आवति छबि पावति, नूतन मंगल गीतन गावति ।
अस्नान विधि जमुना-तट आवति, अतिसैं करि मन मोद बढ़ावति ।
करि संकल्प मन्दिर मैं जाइ, मौन धरे विधि सहित अन्हाइ ।
बहुरि कालिंदी कूलन सरैं, बारु की करि प्रतिमा करैं ।

नंद-महरि के पूत रावरे, जानि बूझि जिनि होहु बावरे।
देहु बसन, बरि गई अति हँसी, सरनि हू सीत सलिल मैं धसी।
पुनि तिन मैं जे प्रौढ़ा आहि, ते बोली हँसि हरि तन चाहि।
हे सुंदर बर ! करहु न हांसी, हम तौ सबै तुम्हारी दासी।
जो तुम कहहु, सोइ हम करिहैं, देहु बसन, बिन काजहि मरिहैं।
जौ न देहुगौ स्याम लाड़ सौं, कहिहैं जाइ नंदराइ सौं।
तब बोले ब्रजराज दुलारे, मैं समझे संकल्प तिहारे।
इत आवहु, रंचक न लजाहु, ब्रत कौ फल लै लै घर जाहु।
नंद-सुवन कौ मन हो जैसैं, निकसीं सब रस-बिकसी तैसैं।
परम प्रेम के फंदन परी, नंद के नंदन खेल की करी।
पुनि बोले ब्रजराज दुलारे, पूर्न मनोरथ होहु तुम्हारे।
पै आत्यंतिक नाहिन ह्वैहै, मन-अभिलाष पाइ पुनि जैहै।
मेरे विषय जु मति अनुसरै, सु मति न बहुरि विषय संचरै।
भुंजित धान जगत मैं जैसै, बीज के काम न आवहि तैसै।
ऐसैं परि जो मो इच्छा होई, भूज्यौ बीज निपजि परै सोई।
आगामिनी जामिनी ऐहै, तिन मैं तुमहि बहुत सुख दैहै।
इहि बिधि बरहि पाइ छबि छई, कैसैं हूँ कैसैं ब्रज गई।
बसन पये, पै मन नहिं पये, मन मनमोहन मोहन गये।

ब्रजतिय कौं दै अपनौ, कृष्न कमल-दल-नैन।
सरदनिसा अपनी करन, चले अनुग्रह दैन॥

तिन के पति जु भक्ति-रति-हीन, कर्मन विषय निपट लवलीन।
तिन तन दृष्टि दियें नंदतात, बन के द्रुमन सराहत जात।

नंद-महरि के पूत रावरे, जानि बूझि जिनि होहु बावरे ।
देहु बसन, बरि गई अति हँसी, सरनि हूं सीत सलिल मैं धसी ।
पुनि तिन मैं जे प्रौढ़ा आहि, ते बोली हँसि हरि तन चाहि ।
हे सुंदर बर ! करहु न हांसी, हम तौ सबै तुम्हारी दासी ।
जो तुम कहहु, सोइ हम करिहैं, देहु बसन, बिन काजहि मरिहैं ।
जौं न देहौ रस भाइ सौं, कहिहैं जाइ नंदराइ सौं ।
तब बोले ब्रजराज दुलारे, मैं समझे सकल्प तिहारे ।
इत आवहु, रंचक न लजाहु, ब्रत कौ फल लै लै घर जाहु ।
नंद-सुवन कौ मन हो जैसे, निकसी सब रस-बिकसी तैसे ।
परम प्रेम के फंदन परी, नंद के नंदन खेल की करी ।
पुनि बोले ब्रजराज दुलारे, पूर्न मनोरथ होहु तुम्हारे ।
पै आत्यंतिक नाहिन ह्वैहै, मन-अभिलाष पाइ पुनि जैहै ।
और विषय जु मति अनुसरै, सु मति न बहुरि विषय सञ्चरै ।
भुंजित धान जगत मैं जैसे, बीज के काम न आवहि तैसे ।
ए पुनि जो मो इच्छा होई, भूज्यौ बीज निपजि परै सोई ।
आगामिनी जामिनी ऐहै, तिन मैं तुमहि बहुत सुख दैहै ।
इहि विधि बरहि पाइ छवि छई, कोनै हूँ कोनै ब्रज गई ।
बसन पये, पै मन नहिं पये, मन मनमोहन गोहन गये ।

ब्रजतिय कौं दै अपनपौ, कृष्ण कमल-दल-नैन ।
गर्वानिनौ अपनौ करन, चले अनुग्रह दैन ॥

तिन के पति जु भक्ति-रति-हीन, कर्मन विषय निपट लवलीन ।
तिन तन दृष्टि दिये मुसकात, बन के द्रुमन सराहत जात ।

जमुना निकट सुभग इक बाग, सब असोक तरु अति बड़भाग।
इक तरु तरे कुँवर घनस्याम, ठाढे कोटि काम अभिराम।
पीतबसन बनमाल रसाल, मोरचंद छवि छाजत भाल।
सखा अंस धरि भुज दिये, केलि-कमल उच्छिन कर किये।
अच्युत गुनगन सुनि हिय धरि धरि, रही हुती उत्कंठा भरि भरि।
सो साच्छात प्रगट रस भरे, अति रोचन लोचन-पथ परे।
दृग-रंध्रन करि अंतर लये, तहँ प्रभु कौं परिरंभन दये।
मुदित भई तिहि छिन सब ऐसैं, तुरिय अवस्था पाइ मुनि जैसैं।
तब बोले हरि हे बड़भागि! नीके आई भरि अनुराग।
प्रतिबंधक जे हुते तिहारे, ते तुम तिन से लघु करि डारे।
सो दरसन हित इत अनुसरी, उचित करी, अनुचित नहिं करी।
जे जन निपुन जथारथ वेदी, स्वारथ अरु परमारथ भेदी।
ते मो विषै भक्ति-रति करैं, फल न कछू रंचक चित धरैं।
हम सब ही के आतमा आहि, तत्ववेत्ता लेत हैं चाहि।
प्रान, बुद्धि, मन, इंद्री, देह, पुत्र, कलित्र, मित्र, धन, गेह।
जाके अध्यास तैं अचेत, प्रिय लागत अपनपै समेत।
सो तुम करि हम पाये सबै, धनि धनि धन्य भई तुम अबै।
अब तुम वेगि जजन प्रति जाहु, द्विज-जग्यन कौ करहु निवाहु।
तुम करि सब समापति कीन्हैं, अवर न कछू तनक मन धरिहैं।
कहत भईं तब सब द्विज तिया, सुनि यह बात धहकि गयौ हिया।
हे सुंदर वर सरसिज-नैन, जिनि बोल्हु अस करकस बैन।
अपनी प्रतिग्या तन किन चहौ, वेद-पुरानन मैं ज्यौं कही।

जमुना निकट सुभग इक बाग, सब असोक तरु अति बड़भाग ।
इक तरु तरे कुँवर घनस्याम, ठाढे कोटि काम अभिराम ।
पीतबसन वनमाल रसाल, मोरचंद छबि छाजत भाल ।
सखा अंस बाएँ भुज दिये, केलि-कमल दच्छिन कर किये ।
अच्युत गुनगन सुनि हिय धरि धरि, रही हुती उत्कंठा भरि भरि ।
सो साच्छात प्रगट रस भरे, अति रोचन लोचन-पथ परे ।
दृग-रंध्रन करि अंतर लये, तहँ प्रभु कौं परिरंभन दये ।
मुदित भई तिहि छिन सब ऐसैं, तुरिय अवस्था पाइ मुनि जैसें ।
तब बोले हरि हे बड़भागि ! नीके आई भरि अनुराग ।
प्रतिबंधक जे हुते तिहारे, ते तुम तिन से लघु करि डारे ।
सो दरसन हित इत अनुसरी, उचित करी, अनुचित नहिं करी ।
जे जन निपुन जथारथ वेदी, स्वारथ अरु परमारथ भेदी ।
ते मो विषै भक्ति-रति करैं, फल न कछू रंचक चित धरैं ।
हम सब ही के आत्मा आहि, तत्ववेत्ता लेत हैं चाहि ।
प्रान, बुद्धि, मन, इंद्री, देह, पुत्र, कलित्र, मित्र, धन, गेह ।
जाके अध्यास तैं अचेत, प्रिय लागत अपनपै समेत ।
सो तुम करि हम पाये सबै, धनि धनि धन्य भई तुम अबै ।
अब तुम देवि जजन प्रति जाहु, द्विज-जग्यन कौ करहु निबाहु ।
तुम करि सब समापति करिहैं, अवर न कछू तनक मन धरिहैं ।
कहत नारी तब सब द्विज तिया, सुनि यह बात बहकि गयौ हिया ।
हे सुंदर वर सरसिज-नैंन, जिनि बोलहु अस करकस बैंन ।
अपनी प्रतिग्या तुम किन चहौ, वेद-पुरानन मैं ज्यौं कही ।

जगपतिनिन जे व्यंजन आने, जाहि कै गोप-गोविंद अघाने।
द्विज जु कहावत जे अति बड़े, तियन की गतिहि देखि सब गड़े।

'नंद' जु गोविंद भक्ति बिन, बड़ौ कहावत कोइ।
बुझै जु दीपक ज्यौं बड़ौ, कहियत वह गति सोइ॥

तियन की गतिहि निरखि द्विज जिते, पश्चाताप करत भये तिते।
जो प्रभु निगम अगम करि गाये, जेंवन मिस ते हम पै आये।
धिग धिग हम, धिग धिग ये क्रिया, धिग धिग विप्र जन्म धिग जिया।
धिग बहुग्यता, धिग सब इपै, विमुख जु कृष्ण अधोक्षज विषै।
यह प्रभु की माया मोहनी, जोगीजन-मन की खोहनी।
जा करि हम द्विज ह्वै मद भरे, गुरु कहाइ सठ भठ मैं परे।
जिन के न कछु सोच आचार, गुरुकुल सेव न तत्त्व विचार।
नहिं जप, नहिं तप, नहिं सुभक्रिया, कर्कस, कुटिल, जटिल नित हिया।
तिन के भई भक्ति-रति जैसी, देखी-सुनी न कित हूँ ऐसी।
सम्यक द्विज कर्मन करि भरे, ते हम है झख मारत परे।
हम करि जदपि सुन्यौ अवतार, जदुकुल विषै हरन भू-भार।
पुनि आये इन करुना-कंद, जाचन पूरन परमानंद।
ओदन कहा चाहियै तिन के, कमला पाइ पलोटत जिन के।
सुमिरि सुमिरि ग्वालन की बात, करत मींजि सब द्विज पछितात।
पुनि यहै हम हूँ उत्तम भये, मन के सब संसय मिटि गये।
जिन की ऐसी तिय बड़भागि, तन-मन-भरी कृष्ण-अनुराग।
जिहि अनुराग हमारे हिये, चपरि कै कमल-नैन मैं किये।

जगपतिनिन जे व्यंजन आने, जाहि कै गोप-गोविंद अघाने ।
द्विज जु कहावत जे अति बड़े, तियन की गतिहि देखि सब गड़े ।

'नंद' जु गोविद भक्ति बिन, बड़ौ कहावत कोइ ।
बुझै जु दीपक ज्यौं बड़ौ, कहियत वह गति सोइ ॥

तियन की गतिहि निरखि द्विज जिते, पश्चाताप करत भये तिते ।
जो प्रभु निगम अगम करि गाये, जेंवन मिस ते हम पै आये ।
धिग धिग हम, धिग धिग ये क्रिया, धिग धिग विप्र जन्म धिग जिया ।
धिग बहुग्यता, धिग सब इपै, विमुख जु कृष्न अधोक्षज विषै ।
यह प्रभु की माया मोहनी, जोगीजन-मन की खोहनी ।
जा करि हम द्विज ह्वै मद भरे, गुरु कहाइ सठ भठ मैं परे ।
जिन के न कछु सोच आचार, गुरुकुल सेव न तत्त्व बिचार ।
नहिं जप, नहिं तप, नहिं सुभक्रिया, कर्कस, कुटिल, जटिल नित हिया ।
तिन के भई भक्ति-रति जैसी, देखी-सुनी न कित हूँ ऐसी ।
सम्यक द्विज कर्मन करि भरे, ते हम है झख मारत परे ।
हम करि जदपि सुन्यौ अवतार, जदुकुल विषै हरन भू-भार ।
पुनि आये इन करुना-कंद, जाचन पूरन परमानंद ।
ओदन कहा चाहियै तिन के, कमला पाइ पलोटत जिन के ।
सुमिरि सुमिरि ग्वालन की बात, करत मींजि सब द्विज पछितात ।
पुनि यहै हम हूँ उत्तम भये, मन के सब संसय मिटि गये ।
जिन की ऐसी तिय बड़भागि, तन-मन-भरी कृष्न-अनुराग ।
जिहि अनुराग हमारे हिये, चपरि कै कमल-नैन मैं किये ।

सो नर नहिं पावै कल्यान, कहत है वेद पुरान सुजान।
महानंद, उपनंद, सुनंद, निजानंद अरु बाबा नंद।
ऐसें करि जब सबहिन कह्यौ, सब के ईस्वर नाहिंन गह्यौ।
सुरपति अति श्रीमद करि छयी, महा गर्ब पर्बत चढ़ि गयी।
तहँ तें ना कहुँ डारयौ चहै, करम की गति लिये बातैं कहै।
ए परि नहि प्रमान ये तित ही, सुरपति मान-भंग के हित ही।
इंद्रहि निरि दिवाइ दंद सौं, बोले मंद मुसकि नंद सौं।
अहो तात वह देव न कोई, करम की गति जु होइ सो होई।
कर्महिं करि उपजत ये जंत, कर्महि करि पुनि सब कौ अंत।
कुसल-छेम, सुख-दुख, भै-अभै, होत है ये कर्मन करि सबै।
रज गुन करि उपजत है मेह, बरषत सब ठाँ नहिं संदेह।
ऊसर पर, पर्बत पर परै, ते सबै कहाँ जग्य है करै।
हमरे नहिं पुर-पट्टन ग्राम, बन, गिरि, नदी, निकट बिश्राम।
जहँ सुख तहँ हम बसहिं निसंक, करिहै कहा पुरंदर रंक।
एक करहु जग्यन कौ जिती, करि ते सुभ सामग्री तिती।
और कछू जिय मैं जिनि आनौ, मेरौ कह्यौ सत्य करि मानौ।
सुनतहि मोहन मुख की बानी, भले भले कहि सबहिन मानी।
कुल-मंडन सपूत सुख-दैना, सब के जीवन, सब के नैना।
रचहु बिबिधि परकार सु व्यंजन, सुभग, सुगंध, स्वच्छ, मनरंजन।
पूवा, सुहारी, मोदक भारी, सूफा, रस-सूफा, दधि न्यारी।
सिखरी मिश्रित पावन करौ, वर संजाव भाव बिस्तरौ।
सूपा दारी, घृत की थारी, रस के बाँदर सुंदर सारी।

सो नर नहिं पावै कल्यान, कहत हैं वेद पुरान सुजान।
महानंद, उपनंद, सुनंद, निजानंद अरु बाबा नंद।
ऐसे करि जब सबहिन कह्यौ, सब के ईस्वर नाहिन गह्यौ।
सुरपति अति श्रीमद करि छयौ, महा गर्ब पर्वत चढ़ि गयौ।
तहँ तें ना कहुँ डार्यौ चहै, करम की गति लिये बातैं कहैं।
ए परि नहिं प्रमान ये तिन हीं, सुरपति मान-भंग के हित हीं।
इंद्रहि निरखि दिवाइ दंद सौं, बोले मंद मुसकि नंद सौं।
अहो तात वह देव न कोई, करम की गति जु होइ सो होई।
कर्महि करि उपजत ये जंत, कर्महि करि पुनि सब कौ अंत।
कुसल-छेम, सुख-दुख, भै-अभै, होत है ये कर्मन करि सबै।
रज गुन करि उपजत है मेह, बरषत सब ठाँ नहिं संदेह।
ऊसर पर, पर्वत पर परै, ते सबै कहाँ जग्य है करै।
हमरे नहिं पुर-पट्टन ग्राम, बन, गिरि, नदी, निकट बिश्राम।
जहँ सुख तहँ हम बसहिं निसंक, करिहै कहा पुरंदर रंक।
एक करहु जग्यन कौ जितौ, करि तै सुभ सामग्री तितौ।
और कछू जिय मैं जिनि आनौ, मेरौ कह्यौ सत्य करि मानौ।
सुनतहि मोहन मुख की बानी, भले भले कहि सबहिन मानी।
कुल-मंडन सपूत सुख-दैना, सब के जीवन, सब के नैना।
रचहु बिबिधि परकार सु व्यंजन, सुभग, सुगंध, स्वच्छ, मनरंजन।
पूवा, सुहारी, मोदक भारी, गूझा, रस-गूझा, दधि न्यारी।
सिखरी मिश्रित पायस करी, बर संजाव भाव बिस्तरी।
सुरपा बारी, घृत की थारी, रस के बोंदर सुंदर सारी।

पंचविंश अध्याय

अब सुनि पंचविंस अध्याउ, पंचविंस निर्मल ह्वै जाउ।
सुनि कै इंद्र भर्‌यौ रिस भारी, लाग्यौ देन सबन कौ गारी।
बन-चर-अधम नंद कौ बेटा, सो भयो हमरे मख कौ मेटा।
ताके बल करि मो सों घाती, रहिहैं गोप कहौ किहि भाँती।
ज्यौं कोउ उरग पूँछि कर धारै, तर्‌यौ चहै सठ सिंधु अपारै।
झूठ की जौ कोउ नाउ बनावै, मूढ़ तहाँ लै कुटँब चढ़ावै।
ऐसे गोपन कृष्न भरोसे, महा बैर कीनो है मो से।
अब देखौ कैसी खिसलाऊँ, गोकुल गाँवहि खोदि बहाऊँ।
बोले मेघन के गन सोउ, जिन के जल जग परलै होइ।
परमातम पर पार के नाइक, कृष्न कमल-लोचन सुखदाइक।
जानत नाहिन कि तिन की कुटी, इंद्र मूढ़ की चारचौ फुटी।
'नंद' कहत श्रीमद सब ऐसे, सुनै न सुत कुबेर के जैसे।
उमगे घन-गन रिस भरि भारे, ताते, राते, पियरे कारे।
गड़गड़ाहिं गाजि बज्र ले परैं, घरहराहि घन ऊधम करै।
चलीं अतिबल बात अघात, उड़े जात कहि बनति न बात।
बरसन लगीं धारा बुँदवारी, मोटे थाँभन हू तै भारी।
तब ब्रजजन जित तित तैं धाये, संकट नंद-कुँवर पै आये।
पौरी पौरी धेनु सु ढौरी, कहौ बंदन के दुख बौरी।
बालन सु गोद, बच्छ उर लिये, छबिली छतिन लग बछरन लिये।
गोबिंद मैं कहि सकत न बात, पर श्री कहत कोमल गात।

पंचविंश अध्याय

अब सुनि पंचविंस अध्याउ, पचविंस निर्मल ह्वै जाउ ।
सुनि कै इंद्र भर्‍यौ रिस भारी, लाग्यौ देन सबन कौ गारी ।
वन-चर-नर नंद कौ बेटा, सो भयो हमरे मख कौ मेटा ।
ताके बल करि मो सौ घाती, रहिहैं गोप कहो किहि भाँती ।
ज्यौं कोउ उरग पूँछि कर धारै, तर्‍यौ चहै सठ सिंधु अपारै ।
झूठ की जो कोउ नाउ बनावै, मूढ़ तहाँ लै कुटँव चढ़ावै ।
ऐसे गोपन कृष्न भरोसे, महा बैर कीनौ है मो से ।
अब इन्हैं बेगी निगलाऊँ, गोकुल गाँवहि खोदि बहाऊँ ।
बोले मेघन के गन सोउ, जिन के जल जग परलै होइ ।
परमातम पर पार के नाइक, कृष्न कमल-लोचन सुखदाइक ।
जानत नाहिन कि तिन की कुटी, इंद्र मूढ़ की चारयौ फूटी ।
'नंद' कहत श्रीमद सब ऐसें, सुनै न सुत कुबेर के जैसे ।
उनचों घन-गन रिस भरि भारे, ताते, राते, पियरे कारे ।
गड़गड़ाहिं गाजि वज्र से परें, घहराहिं घन ऊधम करें ।
बर्षैं अखंड धार अघात, उड़े जात कहि बनति न बात ।
बरस लगी लाग्यौ बूँदधारी, मोटे थंभन ह्वै तैं भारी ।
तब ब्रजजन जिन तिन तैं धाये, सुंदर नंद-कुँवर पै आये ।
धौरी गोरी धेनु जु ढारी, कहाँ बंदन के दुख भारी ।
गोपिन सु गोद, कच्छ जल किये, छकिनी छतिन तर बछरन लिये ।
गोपिन मैं कहि सकत न बात, पर थर कंपत कोमल गात ।

सात दिवस अद्भुत भार ठान्यौ, ब्रजवासिन तनकौ नहिं जान्यौ ।
सुंदर वदन विलोकत आगैं, भूख प्यास उर कौं नहिं लागैं ।
निकसे तब जब गिरिवर भाख्यौ, गोवरधन फिरि तहँई राख्यौ ।
प्रेम-भरी वनिता जुरि आई, वारहिं अभरन लेति बलाई ।
चूमति वदन जसोमति मैया, इत घुरि रह्यौ बड़ौ बल भैया ।
नंद परम आनंदहि पाइ, पूतहि रह्यौ छती लपटाइ ।
मुनिवर, सुरवर, सिधवर जिते, बरषत कुसुम भरे मुद तिते ।
दुंदुभि-धुनि, सुर-धुनि हिय हरै, जै जै धुनि पुनि मुनिवर करैं ।
गावत गुन गंधर्व सु गाइन, नृतत अपछरा चाइन चाइन ।
तिन मधि यह अमरन की रानी, हाँ रानी पै निपट खिसानी ।
हरि दिसि तकि, अपनी दिसि तकै, सुरन मैं वदन दिखाइ न सकै ।
करत सौंडि पछितात हैं ऐसैं, सुरापान करि द्विजवर जैसैं ।
तदनंतर गोपी अरु गोप, ओपे परम ओप की ओप ।
गोकुल लैं निज लोकन चले, रगन रले, लगत अति भले ।
तिन मैं गोप-वधू सुख बरसैं, नूतन गीतन सरसन परसैं ।
तिन आगे हरि अरु बलराम, आवत कर जोरे छवि-धाम ।
अद्भुत कहत नंद के जिय हरते, पुहुपन पर पद-पंकज धरते ।
खेलत सौं खेलि कै इहि परकार, ब्रज आये ब्रजराज-कुमार ।

वर अनुजहि जु मनुज किये, जानैं जग मैं कोइ ।
अहो 'नंद' इहि इंद्र जिमि, दई बिगारै सोइ ॥
पचीसम अध्याइ यह, यौं हिय मैं धरि राखि ।
रसिक नवल विन आन सौं, 'नंद' न कवहूँ भाखि ॥

सात दिवस अद्भुत झर ठान्यौ, ब्रजवासिन तनकौ नहिं जान्यौ।
सुंदर वदन विलोकन आगै, भूख प्यास डर कौं नहि लागै।
निकसे तब जब गिरिवर भाख्यौ, गोवरधन फिरि तहँई राख्यौ।
प्रेम-भरी वनिता जुरि आई, वारहि अभरन लेति बलाई।
चूमति वदन जसोमति मैया, इत घुरि रह्यौ बड़ौ बल भैया।
नंद परम आनंदहि पाइ. पूतहि रह्यौ छती लपटाइ।
मुनिवर, सुरवर, सिधवर जिते, वरषत कुसुम भरे मुद तिते।
दुंदुभि-धुनि, सुर-धुनि हिय हरै, जै जै धुनि पुनि मुनिवर करै।
गावत गुन गंधर्व सु गाइन, नृतत अपछरा चाइन चाइन।
तिन मधि यह अमरन कौ रानौ, हौं रानौ पै निपट खिसानौ।
हरि दिसि तकि, अपनी दिसि तकै, सुरन मै वदन दिखाइ न सकै।
करत मौडि पछितात है ऐसै, सुरापान करि द्विजवर जैसै।
तदनंतर गोपी अरु गोप, ओपे परम ओप की ओप।
गोकुल नै निज लोकन चले. रगन रले, लगत अति भले।
तिन मैं गोप-वधू मुख वरसैं, ततन गीतन मरमन परसैं।
तिन आगे हरि अरु बलराम, आवत कर जोरे छवि-धाम।
अच्छुत कहत नंद के जिय हरते, पुहुपन पर पद-पंकज धरते।
खेलन सौं खेलि कै इहि परकार, व्रज आये ब्रजराज-कुमार।

जब अनुजहिं जु मनुज किये, जानै जग मैं कोइ।
अहो 'नंद' इहि इंद्र जिमि, दई विगारै सोइ॥
परचिन अध्याइ यह, यौं हिय मै धरि राखि।
रसिक जनन बिन आन सौं, 'नंद' न कबहूँ भाखि॥

बककर चौंच बिदारची कैसैं, चीरत कोउ पटेरहि जैसैं।
धेनुक खर अति बल बलसल्यौ, बलदाऊ कैसैं दलमल्यौ।
ताके बंधु डेल से डारे, ऊँचे फल तिनहूँ करि झारे।
गोप भेस करि असुर प्रलंब, कैसैं गयौ न लग्यौ बिलंब।
पसु अरु पसुप दवानल माहीं, चकित भये जित-कित लै जाहीं।
कैसैं राखि आपने लये, अगिनिहि तच्छन भच्छन करि गये।
अरु वह काली गरल विषाली, ताके फन पर चढ़ि बनमाली।
तांडव नृत्य नचे सो कैसैं, देखे-सुने न कितहूँ ऐसैं।
जमुना कैसैं निर्मल भई, मानौ बहुरि नई करि छई।
अहो नंद ! ब्रजजन हैं जिते, नर-नारी पसु-पंछी तिते।
तेरे सुत सौं सब की प्रीति, कोउ सुभाइ कछु ऐसिय रीति।
संका उपजत इहि तन चाहि, जैसैं सब कौ वेत्ता आहि।
सत यह सात बरस कौ सबैं, फूल सौं उचकि लियौ गिरि तबै।
यातैं संका उपजत महा, कहौ नंद सो कारन कहा।
तिन के समाधान ब्रजराइ, कहे गरग के बचन सुनाइ।
नामकरन सधि लच्छन लहे, अरथ-अरथ दै सो सौं कहे।
जाके चरित परम नहि बरने, हिय-हरने जग-मंगल-करने।
उज्ज्वल बरन और इक रीत, अब श्री कृष्ण सु परम पुनीत।
पूरब जनम कहूँ सुत तेरौ, पूत भयौ है बसुदेव केरौ।
तातैं बासुदेव इक नाम, पूरन करिहै सब के काम।
और बहुत नव सुत के नाम, सब गुन-धाम परम अभिराम।
रूप अनंत, गुन-कर्म अनंत, गनत गनत कोउ लहै न अंत।

बकासुर चोंच बिदारयौ कैसें, चीरत कोउ पटेरहि जैसें।
धेनुक खर अति बल कलमल्यौ, बलदाऊ कैसें दलमल्यौ।
ताके बंधु ढेल से डारे, ऊँचे फल तिनहूँ पारि झरे।
गोप भेस करि असुर प्रलंब, कैसें गयौ न लग्यौ बिलंब।
पसु अरु पसुप दवानल माहीं, चकित भये जित-कित लै जाहीं।
कैसें राखि आपने लये, अगिनिहि तच्छन भच्छन करि गये।
अरु वह काली गरल खिलारी, ताके फन पर चढ़ि बनमाली।
तांडव नृत्य नचे सो कैसें, देखे-सुने न कितहूँ ऐसें।
जमुना कैसें निर्मल भई, मानौ बहुरि नई करि छई।
अहो नंद ! ब्रजजन हैं जिते, नर-नारी पसु-पंछी तिते।
तेरे सुत सौं सब की प्रीति, कोउ सुभाइ कछु ऐसिय रीति।
संका उपजत इहि तन चाहि, जैसें सब कौ वेत्ता आहि।
सुत यह सात बरस कौ सबै, फूल सौं उचकि लियौ गिरि तबै।
यातें संका उपजत महा, कहौ नंद सो कारन कहा।
तिन के समाधान ब्रजराइ, कहे गरग के बचन सुनाइ।
नामकरन सधि लच्छन लहे, अलग-अलग दै मो सौं कहे।
जाके चरित परत नहिं बरने, हिय-हरने जग-मंगल-करने।
उज्जल अरुन और इक रीत, अब श्री कृस्न सु परम पुनीत।
पूरब जन्म कहूँ सुत तेरौ, पूत भयौ है बसुदेव केरौ।
तातें बासुदेव इक नाम, पूरन करिहै सब के काम।
और बहुत नंद सुत के नाम, सब गुन-धाम परम अभिराम।
रूप अनंत, गुन-कर्म अनंत, गनत गनत कोउ लहै न अंत।

हौ प्रभु सुद्ध तत्वमय रूप, एक रूप पुनि नित्य अनूप।
रज गुन, तम गुन, ये सब ढरैं, तुम कहँ दूरि परे तैं परे।
हम रज गुन, तम गुन करि भरे, अंध दुर्गंध गर्व-मद-भरे।
कहँ तुम निज आनँद-रस-भरे, कित हम लोह, मोह, मद-भरे।
दुष्ट-दमन तुम्हरौ अवतार, हे अद्भुत ब्रजराज-कुमार।
परम धरम रच्छा जु करत हौ, हम से खलन कौं दंड धरत हौ।

पूर्व पक्ष

जौ कहौ सक्तिवान अस कौन, तुम कौं दंड धरि सकै जौन।
तुम तौ त्रिभुवन-कारन, पालक, हम ब्रजजन गोपालक बालक।
तहाँ कहत हँसि सुरपति बैन, हौ श्रीकृष्ण कमल-दल-नैन।
जगत-जनक, गुरु-गुरु, तुम स्वामी, सब जंतुन के अंतरजामी।
तुम हौ महा दुरासद काल, धारे दंड प्रचंड कराल।
तुम तौ उचित दंड कौ धर्यौ, मो से उन्मद कौ मद हर्यौ।
जौ कहौ तुम्हरौ हम कहा कियौ, ब्रज अपनौ राखि है लियौ।
तहाँ कहत सुरपति हौ नाथ, तुम्हरे तनक खेल के साथ।
मो मन कौ जु महा अभिमान, मर्दन होत जानि-मनि जान।
नहिं जान्यौ तुम्हरौ परभाव, मत्त भयौ सुरराव कहाव।
मंद बुद्धि हौं निपट अगाध, छमा करहु मेरौ अपराध।
अब प्रभु मो पै ऐसैं ढरौ, ऐसी असत मति बहुरि न करौ।
श्रीमद करि जु अंध ह्वै गयौ, सत अंजन रंजन तुम दयौ।
तुम ईस्वर गुरु आतम अपने, और सबै रजनी के सपने।

हो प्रभु सुद्ध तत्वमय रूप, एक रूप पुनि नित्य अनूप।
रज गुन, तम गुन, ये सब उरैं, तुम कहँ दूरि परे तैं परैं।
हम रज गुन, तम गुन करि भरे, अंध दुर्गंध गर्व-मद-भरे।
कहँ तुम निज आनँद-रस-भरे, कित हम लोह, मोह, मद-भरे।
दुष्ट-दमन तुम्हरौ अवतार, हे अद्भुत ब्रजराज-कुमार।
परम धरम रच्छा जु करत हौ, हम से खलन कौ दंड धरत हौ।

पूर्व पक्ष

जो कहौ सक्तिवान अस कौन, तुम कौ दंड धरि सकै जौन।
तुम तौ त्रिभुवन-कारन, पालक, हम ब्रजजन गोपालक बालक।
तहां कहत हँसि सुरपति बैन, हो श्रीकृष्ण कमल-दल-नैन।
जगत-जनक, गुरु-गुरु, तुम स्वामी, सब जंतुन के अंतरजामी।
तुम हौ महा दुरासद काल, धारे दंड प्रचंड कराल।
तुम तौ उचित दंड कौ धर्‍यौ, मो से उन्मद कौ मद हर्‍यौ।
जो कहौ तुम्हरौ हम कहा कियौ, ब्रज अपनौ राखि है लियौ।
तहां कहत सुरपति हो नाथ, तुम्हरे तनक खेल के साथ।
मो मन कौ जु महा अभिमान, मर्दन होत जानि-मनि जान।
नहिं जान्यौ तुम्हरौ परभाव, मत्त भयौ सुरराव कहाव।
मंद बुद्धि हौ निपट अगाध, छमा करहु मेरौ अपराध।
अब प्रभु मो पै ऐसैं ढरौ, ऐसी असत मति बहुरि न करौ।
श्रीमद अगिनि जु अंध ह्वै गयौ, सत अंजन रंजन तुम दयौ।
तुम ईस्वर गुरु आतम अपने, और सबै रजनी के सपने।

नचन अप्सरा अति मुद भरी, जनु नग-जरी छटन की छरी।
अमर नगर तें बरपत फूल, सब के हिये समान न मूल।
होन लगे अभिषेक जु महा, तिहि छिन की छवि कहियै कहा।
कुटिल अलक तें चुवत जलकनी, बदन की दुति पुनि परति न गनी।
जनु अंबुज-रस अलि अनियारे, मुख भरि भरि डारत मतवारे।
धर्‍यो गोविंद नाम अभिराम, पूरन भये सबन के काम।
जब ही इंद्र भये गोविंद, ठा ठां उमगे परमानंद।
बूड़ि गई, कछु परति न बरनी, छाई रहति दूध करि धरनी।
सरितन की छवि जात न कही, उमगि उमगि सब रस भरि बही।
जंतु नयै अति हर्षित भये, सहज प्रसन्न दुरगति मिटि गये।
फूले फल रहत द्रुम जिते, मधुर मधुर मधु बरपत तिते।
अन्न अनेक भाँति ही नये, उपजत भये बिना ही बये।
नगन मध्य नग हुते जितेक, लै लै ऊपर बैठे तितेक।
समुद पुनि उत्तम मोती जिते, कढ़ि कढि बाहिर डारत तिते।
मंद सुगंध पवन नित सरसै, करकस ह्वै कहुँ तनकन परसै।
स्वर्ग तें सुंदर सुंदर फूल, बरप्यो करत सदा अनुकूल।
इंद्र-गोविंदहि दै अभिपेक, सुर, मुनिगन, गंधर्व जितेक।
आग्या पाइ चले निज ओक, सुखित भये तब ही सब लोक।

सप्तविंस अध्याइ यह, इंद्र भये गोविंद।
'नंद' नेक इहि गाइ धों, को है कलि-मल मंद।

नचत अप्सरा अति मुद भरी, जनु नग-जरी छटन की छरी ।
अमर नगर तें बरषत फूल, सब के हिये समान न मूल ।
होत नगे अभिषेक जु महा, तिहि छिन की छवि कहियै कहा ।
कुटिल अलक तें चुवत जलकनी, बदन की दुति पुनि परति न गनी ।
जनु अंबुज-रस अलि अनियारे, मुख भरि भरि डारत मतवारे ।
धर्‍यो गोविंद नाम अभिराम, पूरन भये सबन के काम ।
जब ही इंद्र भये गोविंद, ठा ठाँ उमगे परमानंद ।
बूड़ि गई, कछु परति न बरनी, छाई रहति दूध करि धरनी ।
सरितन की छवि जात न कही, उमगि उमगि सब रस भरि बही ।
जंतु गयँ अति हर्षित भये, सहज प्रसन्न दुरगति मिटि गये ।
फूलें फूल रहत द्रुम जिते, मधुर मधुर मधु बरषत तिते ।
अन्न अनेक भाँति ही नये, उपजत भये बिना ही बये ।
नगन मध्य नग हुते जितेक, लै लै ऊपर बैठे तितेक ।
समुद पुनि उत्तम मोती जिते, कढ़ि कढि बाहिर डारत तिते ।
मंद सुगंध पवन नित सरसै, करकस ह्वै कहुँ तनकन परसै ।
स्वर्ग तें सुंदर सुंदर फूल, बरष्यौ करत सदा अनुकूल ।
इंद्र-गोविंदहि दै अभिषेक, सुर, मुनिगन, गंधर्व जितेक ।
आग्या पाइ चले निज ओक, सुखित भये तब ही सब लोक ।

सप्तविंस अध्याइ यह, इंद्र भये गोविंद ।
'नंद' नेक इहि गाइ यौं, को है कलि-मल मंद ।

तुम अपने परमातम स्वामी, ब्रह्मरूप सब अंतरजामी।
तोरी सृष्टि निरजत यह माया, तुम तें दूरि गरमई काया।
हे सरवग्य, अग्य जन मेरे, जाने नाहिन धर्म प्रभु केरे।
तुम्हरे पितहि जु दूत ले आये, कछू भाये, कछु मोहि न भाये।
पुनि पुनि धरन पगन पर सीस, अति प्रसन्न कीने जगदीस।
छबिली भाँति अपने घर आये, ब्रज मैं घर घर मंगल गाये।
नंद जु जब बरुनालय गयौ, निरखि बिभूति चकृत अति भयौ।
पुनि जब सुत के पाइनि परयौ, तब ब्रजराज अचंभे भरयौ।
कहुन लग्यौ हिय मैं यह बात, ईस्वर है यह मेरौ तात।
स्वच्छ मुकति जो ब्रह्म है कोई, हम कौं सहजहि दैहै सोई।
ऐसैं जब बिस्मय करि लसे, तब गोबिंदचंद्र मृदु हँसे।
भक्त मनोरथ पूरन करने, जैसैं वेद-पुरानन बरने।
जिहि गति प्रेरे जोगीजन-मन, जात हैं क्रम क्रम करि तप कै पन।
सरागी-जन तहँ को गने, काम-कर्म जु अविद्या सने।
तिहि गति बैठे सब ब्रज लोइ, पूरन तरुन, किरनमय होइ।
प्रथमहि ब्रह्म बिषै अनुसरे, इहि न ब्रह्म घर ता मधि अरे।
देह नाहिन ब्रह्म देखन गये, तहँ के सुख ते सब अनभये।
तातें पुनि बैकुंठ सिधारे, तहँ के सुख नीके अवधारे।
मूरतिवंत जहँ चारौ वेद, बरनत प्रभु के नाना भेद।
अरु कौतुक जे कान्ह ब्रज करे, गिरिवर-धरन अवर रँग भरे।
ते सब गान करत श्रुति जहाँ, नंदादिक सुनि चकि रहे तहाँ।
परी कलबरी सब के मन मैं, कब देखैं इहि वृंदावन मैं।

तुम अपने परमातम स्वामी, ब्रह्मरूप सब अंतरजामी।
तोरि सृष्टि निरजत यह माया, तुम तैं दूरि मलमई काया।
हे सरवस्व, अग्य जन मेरे, जाने नाहिन धर्म प्रभु केरे।
तुम्हरे पितहि जु दूत ले आये, कछु भाये, कछु मोहि न भाये।
पुनि पुनि धरत पगन पर सीस, अति प्रसन्न कीने जगदीस।
छबिली भाँति अपने घर आये, ब्रज मै घर घर मंगल गाये।
नंद जु जब वरुनालय गयौ, निरखि विभूति चकृत अति भयौ।
पुनि जब सुत के पाइनि परयौ, तब ब्रजराज अचंभे भरयौ।
सकुन लग्यौ हिय मैं यह बात, ईस्वर है यह मेरौ तात।
स्वच्छ मुक्ति जो ब्रह्म है कोई, हम कौं सहजहि दैहै सोई।
ऐसैं जब बिस्मय करि लसे, तब गोविंदचंद्र मृदु हँसे।
भक्त मनोरथ पूरन करने, जैसैं वेद-पुरानन बरने।
जिहि गति प्रेरे जोगीजन-मन, जात हैं क्रम क्रम करि तप कै पन।
संसारी-जन तहँ को गने, काम-कर्म जु अविद्या सने।
तिहि गति बैठे सब ब्रज लोइ, पूरन तरुन, किरनमय होइ।
प्रथमहि ब्रह्म विषै अनुसरे, इहि न ब्रह्म घर ता मधि अरे।
देह नाहिन ब्रह्म देखन गये, तहँ के सुख ते सब अनभये।
तातें पुनि बैकुंठ सिधारे, तहँ के सुख नीके अवधारे।
मूर्तिवंत जहँ चारौ वेद, बरनत प्रभु के नाना भेद।
अरु कौतुक जे कान्ह ब्रज करे, गिरिवर-धरन अवर रँग भरे।
ते सब गान करत श्रुति जहाँ, नंदादिक सुनि चकि रहे तहाँ।
परी कलपटी सब के मन मैं, कब देखैं इहि वृंदावन मैं।

कोमल किरन अरुनिमा नई, कुंजनि कुंजनि प्रसरित भई।
हरिप्रिय-हिय-अनुराग जु भर्यौ, सोई जनु निकसि बाहिरें पर्यौ।
स्याम रंग सिंगार कौ, अरुन रंग अनुराग।
पीत रंग है प्रेम कौ, ओढ़ें कोउ बड़भाग॥
तब लीनी कर-कंजनि मुरली, खर्जादिक जु सप्त सुर जुरली।
सोइ जोग-माया गुन-भरी, लीला-हित हरि आश्रित करी।
निज मोहिनी जु वह मोहिनी, ता तें मुरली सरस सोहिनी।
बहुर्यौ अधर-सुधारस रली, मधुर मधुर धुनि ब्रज कहुँ चली।
सुनी सबन पै नेंकु आई, जे हरि मुरली मांझ बुलाई।
प्रेमरस-सूचक सब्द सुहायक, सुनतहि इतर राग बिसरायक।
तुरत चलीं जु जहाँ तजि चलीं, सिद्ध बस्तु तेऊ दलमली।
ना करि अर्थ, धर्म अरु काम, परिहरि चलति भई सब बाम।
मात-तात-भ्रातन करि बरजी, पतिन अनेक भाँति कै तरजी।
तदपि न रहीं सबै पचि रहे, जिन के मन मनमोहन गहे।
नैन-चिहन जु बिकल ब्रज-बहूँ, भूषन-बसन कहूँ के कहूँ।
धरे हुते जे परम सुहाये, जहाँ के तहाँ आप ही आये।
मन-बच-क्रम जु हरिहि अनुसरैं, कवन बिघन जु बिघन कौं करैं।
अलकनि मनि-कुंडल झलमले, बेगि चलन कहुँ जनु कलमले।
[illegible] [illegible] ढरे जु नैन, मैन कै मनहि देत नाहिं चैन।
एक जु निज घर में घिरि गई, बिकल भई, निकसन नाहिं पई।
देह-सुरति हुते हरि जैसैं, ध्यान धरे हिरदै म तैसैं।
[illegible] [illegible] तिहि छिन गुनमय देह, जाइ मिलीं करि परम सनेह।

कोमल किरन अरुनिमा नई, कुंजनि कुंजनि प्रसरित भई।
हरिप्रिय-हिय-अनुराग जु भर्‌यौ, सोई जनु निकसि बाहिरें पर्‌यौ।
स्याम रंग सिंगार कौ, अरुन रंग अनुराग।
पीत रंग है प्रेम कौ, ओढ़ै कोउ बड़भाग॥
तब लीनी कर-कंजनि मुरली, खर्जादिक जु सप्त सुर जुरली।
सोइ जोग-माया गुन-भरी, लीला-हित हरि आश्रित करी।
निज मोहिनी जु यह मोहिनी, वा तैं मुरली सरस सोहिनी।
बहुर्‌यौ अधर-सुधासव रली, मधुर मधुर गति ब्रज कहुँ चली।
सुनी सबन पै नेरैं आई, जे हरि मुरली माँझ बुलाई।
प्रेमरस-सूचक सब्द सुढारक, सुनतहि इतर राग बिस्मारक।
दुहत चली जु वहाँ तजि चली, सिद्ध वस्तु तेऊ दलमली।
ता करि अर्थ, धर्म अरु काम, परिहरि चलति भई सब बाम।
मात-तात-आनन करि बरजी, पतिन अनेक भाँति कै तरजी।
तदपि न रही सबै पचि रहे, जिन के मन मनमोहन गहे।
नैन-बिचल जु बिकल ब्रज-बहू, भूषन-बसन कहूँ के कहूँ।
धरे हुते जे परम सुहाये, जहाँ के तहाँ आप ही आये।
मन-बच-क्रम जु हरिहि अनुसरै, कवन बिघन जु बिघन कौ करै।
स्रवननि मनि-कुंडल झलमले, बेगि चलत कहुँ जनु कलमले।
सुन्दर अंजित बने जु नैन, मैन के मनहि देत नहिं चैन।
एक जु निज घर में घिरि गई, बिकल भई, निकसन नहिं पई।
बैठी-हुती हुती हरि जैसैं, ध्यान धरे हिरदै में तैसैं।
तजि नीके तिहि छिन गुनमय देह, जाइ मिली करि परम सनेह।

निरिखि सबै जब तब सब अंग, दृगन मैं भरे, रहे रस-रंग।
कुसुमन मैं निरखत मुख लसैं, चहुँ दिसि उदित चंदगन जैसैं।
आसपास आछी भईं आइ, ता छिन की छवि नहिं कहि जाइ।
ठाढ़ेहि येन, समसरथ सुदेस, ऊपर बनै जु बदन बिसेस।
कनक कोटि मान जनु करयौ, चंद कौ वृंद कँगूरनि धरयौ। ६०
छवि सौं चितये सबन की ओर, बोले नागर नंदकिसोर।
प्रथमहिं बचन धर्म नेम कौ, कहन लगे जु परम प्रेम कौ।
हे बड़भाग भले हौ आई, क्यौं आई कछु संभ्रम पाई।
ब्रज मैं कुसल-छेम तौ आहि, कारन कवन कहहु किन ताहि।
तब सब संग परस्पर हँसी, लाज-लपेटी अँखियाँ लसीं। ६५
ता छवि की कछु उपमा नहीं, लसी-बसी नित जहँ की तहीं।
पुनि बोले हँसि तिन की ओर, यह सजनी यह रजनी घोर।
निसिचर की नाहिन निकसनी बेर, बेग जाहु घर होति अबेर।
मात, तात, पति भ्रात तुम्हारे, ढूँढ़त ह्वैहैं बधु पियारे।
चटपटी परी होइहै सब ही, कहिहैं कित गई इत ही अब ही। ७०
तब कछु प्रनय-कोप-रस-पगी, छुभित ह्वै इत-उत चितवन लगी।
तब बोले तिन सौं मनमोहन, हौं जानी आई बन जोहन।
देखहु बन कुसुमित छवि छयौ, राका ससि करि रंजित भयौ।
अरु इत यह कलिंद-नंदिनी, बहति सरस आनंद-कंदिनी।
तट रुह कलित ललित की फूलनि, झूलि फूलि जमुना जल झूलनि। ७५
देख्यौ बन, अब गृह अनुसरौ, हे सति पतिन की सेवा करौ।
जौ तौ बन देखन नहिं आई, सौ हित करि आई मोहि भाई।

निरखि हरी जब तब सब अंग, दृगन मैं भरे, रहे रस-रंग।
कुसुमन मैं निकसत मृग लसैं, चहुँ दिसि उदित चंदगन जैसैं।
आनंदघन आवी भई साइ, ता छिन की छवि नहि कहि जाइ।
नागरि बेस, समरथ सुबेस, ऊपर बनै जु बदन बिसेस।
कनक कोटि कान्ह जनु कर्‌यौ, चंद कौ बृंद अँगुरनि धर्‌यौ।
छबि सौं चितये सबन की ओर, बोले नागर नंदकिसोर।
प्रथमहि बचन धर्म नेम कौ, कहन लगे जु परम प्रेम कौ।
हे बड़भाग भले हौ आई, क्यौं आई कछु संभ्रम पाई।
ब्रज मैं कुसल-खेम तौ आहि, कारन कवन कहहु किन ताहि।
सब मन मंद परस्पर हँसी, लाज-लपेटी अँखियाँ लसीं।
सो छबि की कछु उपमा नहीं, लसी-बसी नित जहँ की तहीं।
पुनि बोले दिसि तिन की ओर, यह सजनी यह रजनी घोर।
निसि कौं नाहिन निकसनी बेर, बेग जाहु घर होति अबेर।
मात, तात, पति भ्रात तुम्हारे, ढूँढत ह्वैहैं बंधु पियारे।
चहुँ फेरी परी होइहै सब ही, कहिहैं कित गई इत ही अब ही।
तब कछु प्रनय-कोप-रस-पगी, छुभित ह्वै इत-उत चितवन लगी।
तब बोले तिन सौं मनमोहन, हौं जाना आई बन जोहन।
देखहु बन कुसुमित छवि छयौ, राका ससि करि रंजित भयौ।
अरु इत यह कलिंद-नंदिनी, बहति सरस आनंद-कंदिनी।
तट रह नलिनि ललन की फूलनि, झूलि फूलि जमुना जल झूलनि।
देखौ बन, अब गृह अनुसरौ, हे सति पतिन की सेवा करौ।
अरु जौ बन देखन नहि आई, तौ हित करि आई मोहि भाई।

जिन तन कबहूँ नैंक न चहै, तिन तौ तुव पद-पंकज गहै ।
अरु यह सुन्दरी लछमी रस भरी, अनु छिन रहति पगन पर परी ।
याते तुम्हरे चरन सेइहैं, सुख देइहैं कछु न लेइहैं ।
अरु जो कहत कि जाहु ब्रज माहीं, जाहिं कहा पग कहूँ न जाहीं ।
जिन तो तुमहिं चोरि हूं लियो, चरन न चलै कहा धौं कियो ।
हियो नहीं अब हाथ हमारे, करिहैं कहा ब्रज जाइ तिहारे ।
हो पिय ! यह कल गान निहारी, महा अनिल के बान अनिवारी ।
अधर-अमृत करि काहे न सींचत, मुसकि मुसकि बलि क्यौं दृग मींचत ।
जो न सींचिहौ पिय ब्रजनाथ, तौ इह बिरह अगिनि के साथ ।
धरि धरि ध्यानहि जरि बरि अवै, ह्वैहै आनि कै दासी सवै ।
जो कहौ क्यों भई दासी हमारी, तजि तजि गृह ठकुराइन भारी ।
तहा कहत अहो पिय मनमोहन, आवत तुम जब गोगन गोहन ।
कदल-कमल परि घूंघर केस, देखि कै गोरज छुभित सुवेस ।
नैसई मनि-कुंडल छबि बढ़े, दुहुँ दिसि जात मीन से चढ़े ।
मृदुल मुकुर से लोल कपोल, मंद हसनि मिलि करत कलोल ।
अरु अधरन मधि मधु झलमली, दिखि दिखि उपजत हिय कलमली ।
अरु यह छबिली छती सांवरी, भुज रावरी रूप बावरी ।
इन करि सुधि बुधि गई हमारी, यातैं भई पिय दासी तुम्हारी ।
जौ रहौ उपपति-रस नहिं स्वच्छ, सब कोउ निंदत अरु अति तुच्छ ।
तऊ करनि है ब्रजभामिनी, लहलहाति जनु नव दामिनी ।
तुम्हरी यह कलवंशी सुनि पीय, त्रिभुवन मांझ कवन अस तीय ।
सुनतहि आरज-पथ नहिं तजै, सुंदर नंद-सुवन नहिं भजै ।

तिन तन कबहुँ नैंक न चहै, जिन सौं तुव पद-पंकज रहै ।
अरु यह तुलसी लसी रस भरी, जनु छिन रहति पगन पर परी ।
ताते तुम्हरे चरन सेवहैं, तुम देहै कछु न लेहैं ।
अरु जो कहत कि जाहु ब्रज माही, जाँहि कहा अरु कहुँ लै जाही ।
जिन सौं तुमहि चोरि हूँ लियो, चरन न चलै कहा धौं कियो ।
हियो नहीं अब हाथ हमारे, करिहै कहा ब्रज जाइ तिहारे ।
हो पिय ! यह कल गीत तिहारो, महा अनंग के बान अनियारो ।
अधर-अमृत करि काहे न सींचत, मुसकि मुसकि बनि क्यों दृग मीचत ।
जौ न सींचिहौ पिय ब्रजनाथ, तौ इह बिरह अगिनि के साथ ।
धरि धरि ध्यानहि जरि बरि अबै, ह्वैहै आनि कै दासी सबै ।
जौ कहौ क्यों भई दासी हमारी, तजि तजि गृह ठकुराइन भारी ।
तहाँ कहत अहो पिय मनमोहन, आवत तुम जब गोगन गोहन ।
वदन-कमल धरि घूंघर केस, देखि कै गोरज छुभित सुवेस ।
तैसेई मनि-कुंडल छबि बढ़े, दुहुँ दिसि जात मीन से चढ़े ।
मृदुल मुकुर से लोल कपोल, मंद हसनि मिलि करत कलोल ।
अरु अधरन मधि मधु झलमली, दिखि दिखि उपजत हिय कलमली ।
अरु यह छबिली छती सांवरी, भुज रावरी रूप बावरी ।
इन करि सुधि बुधि गई हमारी, याते भई पिय दासी तुम्हारी ।
जौ कहौ उचिति-रस नाहि स्वच्छ, सब कोउ निंदत अरु अति तुच्छ ।
तौ कहनि हैं ब्रजभामिनी, लहलहाति जनु नव दामिनी ।
तुम्हरी यह कलगी तजि पीय, त्रिभुवन माँझ कवन अस तीय ।
तुमहि लाज-बस नाहि तजै, सुंदर नंद-सुवन नहि भजै ।

कमल अमोद, कुमुद आमोद, सब परिमल जहँ देत विनोद ।
तहाँ बैठि भुज भुज गरमेलनि, परिरंभन, चुंबन, कल केलनि ।
कच-लट गहि वदनन कौ चूमनि, नख नाराचन घायल घूमनि ।
कुचन की परसनि, नीवी करसनि, सुमन की बरसनि मन की सरसनि ।
ताही के सकल सेन जब हर्यौ, दुखित भयौ घूमत जिमि मर्यौ ।
भस्म करहि जिनि इह डर डर्यौ, तब उठि प्रभु के पाइनि पर्यौ ।
कोटि अनंग अंग के भौन, इक अनंग जीतिवौ सु कौन ।
सिव सौं जीतत कैसेहुँ कैसे, दृढ़ वैराग्य जोग बल तैसे ।
ऐसे विस्व-विमोहन कामहि, को जीतहि बिन मोहन स्यामहि ।
अपने रस बस देखि सावरे, ह्वै गये तियन के मन बावरे ।
चाहनि भई भरि हिय अभिमान, हम सम तिय न तिहूँ पुर आन ।
तहँ मान चढ़ि सैल समान, ओट परि गये पिय भगवान ।
सुनै जो कोउ मन-क्रम-वचन, उनतीसौं अध्याइ ।
ध्वंसनि कलि-मल-वंस कहुँ, 'नंद' न अवर उपाइ ।।

कमल प्रमोद, कुमुद आमोद, सब परिमल जहँ देत विनोद ।
तहाँ बैठि भुज भुज गरमेलनि, परिरंभन, चुंबन, कल केलनि ।
कच-तट गहि बदनन की चूमनि, नख नाराचन घायल घूमनि ।
कुचन की परसनि, नीवी करसनि, सुखन की बरसनि मन की सरसनि ।
ताही के सकल सैन जब हत्यौ, दुखित भयौ घूमत जिमि मत्यौ ।
भस्म करहि जिनि इह डर डरयौ, तब उठि प्रभु के पाइनि परयौ ।
कोटि अनंग अंग के भौन, इक अनंग जीतिबौ सु कौन ।
सिव सौं जीतत कैसैहुँ कैसैं, दृढ़ बैराग्य जोग बल तैसैं ।
ऐसैं बिस्व-बिमोहन कामहि, को जीतहि बिन मोहन स्यामहि ।
अपने रस बस देखि सांवरे, ह्वै गये तियन के मन बावरे ।
कहनि भई भरि हिय अभिमान, हम सम तिय न तिहूँ पुर आन ।
गहैं मान चढ़ि सैल समान, ओट परि गये पिय भगवान ।

सुनै जो कोउ मन-क्रम-बचन, उनतीसौं अध्याइ ।
ध्वंसनि कलि-मल-वंस कहुँ, 'नंद' न अवर उपाइ ॥

कछुक नग, कुंकुम-रँग-रंजित, राजत रस के ऐना ।
कंजन पर खेलत मानौं खंजन, अंजनजुत बने नैना ॥
दमकत कंठ पदिक मनि कुंडल, नवल प्रेम-रँग बोरी ।
आतुर गति, मानौं चंद उदय भयौ, धावति तृषित चकोरी ॥
खसि खसि परत सुमन सीसन तैं, उपमा कौन बखानौं ।
चरन-चलन पर रीझि चिकुर वर, बरषत फूलन मानौं ॥
गावति गीत, पुनीत करति जग, जसुमति-मंदिर आई ।
बदन बिलोकि, बलैया लै लै, देत असीस सुहाई ॥
ता पाछे गन गोप ओप सों, आये अतिसय सोहैं ।
परमानंद-कंद रस भीने, निकर पुरंदर को हैं ॥
मंगल कलस निकट दीपावलि, ठां ठां दिखि मन भूल्यौ ।
मानौं आगम नंद-सुवन के, सुबन फूल बन फूल्यौ ॥
आनँद-घन ज्यौं गाजत, राजत, बाजत दुंदुभि भेरी ।
राग-रागिनी गावत हरषत, बरषत सुख की ढेरी ॥
परम धाम, जगधाम, स्याम अभिराम श्री गोकुल आये ।
मिटि गये दुंद 'नंददासन' के भये मनोरथ भाये ॥

श्री गोपाल लाल गोकुल चले, हौं बलि बलि तिहि काल ।
सीस धरे बसुदेव गोद लै, अखिल लोक प्रतिपाल ॥
तरनि तेज जैसें तम फूटत, खुलि गये कुटिल कपाट ।
सरिता वेग बल छाँड़ि आपनौ, दीनौ श्री जमुना बाट ॥
सोय गये कुमुदिनि ज्यौं सुंदर, कंसादिक भये मोहे ।
संत जनन के मन अंबुज बनि, फूले डहडहे सोहे ॥

कजरौं मग, कुंकुम-रँग-रंजित, राजत रस के ऐना ।
खंजन पर खेलत मानौं खंजन, अंजनजुत बने नैना ॥
चमकत कंठ पदिक मनि कुंडल, नवल प्रेम-रँग बोरी ।
आतुर गति, मानौं चंद उदय भयौ, धावति तृषित चकोरी ॥
खसि खसि परत सुमन सीसन तैं, उपमा कौन बखानौं ।
चरन-चलन पर रीझि चिकुर वर, बरषत फूलन मानौं ॥
गावति गीत, पुनीत करति जग, जसुमति-मंदिर आईं ।
बदन बिलोकि, बलैया लै लै, देत असीस सुहाईं ॥
ता पाछे गन गोप ओप सों, आये अतिसय सोहैं ।
परमानंद-कंद रस भीने, निकर पुरंदर को हैं ॥
मंगल कलस निकट दीपावलि, ठाँ ठाँ दिखि मन भूल्यौ ।
मानों आगम नंद-सुवन के, सुवन फूल ब्रज फूल्यौ ॥
आनँद-घन ज्यों गाजत, राजत, बाजत दुंदुभि भेरी ।
राग-रागिनी गावत हरषत, बरषत सुख की ढेरी ॥
परम धाम, जगधाम, स्याम अभिराम श्री गोकुल आये ।
मिटि गये द्वंद 'नंददासन' के भये मनोरथ भाये ॥

श्री गोपाल लाल गोकुल चले, हौं बलि बलि तिहि काल ।
सोऊ भरे बसुदेव गोद लै, अखिल लोक प्रतिपाल ॥
तरनि नैन जैसें तम फूटत, खुलि गये कुटिल कपाट ।
सत्रु देव बल छाँड़ि आपनौ, दीनौ श्री जमुना बाट ॥
भोर भये कुमुदिनि ज्यौं मुँदत, कंसादिक भये मोहे ।
संत जनन के मन अंबुज बनि, फूल डहडहे सोहे ॥

बालकृष्ण

बिहँग चुहचुहानी, सुनि चकई की बानी,
कहति जसोदा रानी, जागो मेरे लाला।
रवि की किरन जानी, कुमुदिनी सकुचानी,
कमलन बिकसानी, दधि मथै बाला॥
सुबल श्रीदामा, तोक उज्जल बसन पहिरे,
द्वारे ठाढ़े हेरत हैं बाल गोपाला।
'नंददास' बलिहारी, उठि बैठी गिरिधारी,
सब कोउ देख्यौ चाहैं लोचन बिसाला॥

आज सिंगार स्यामसुंदर कौ देखे ही बनि आवै।
स्याम पाग अरु स्वेत चोलना छूटे बंद सुहावै॥
मोतिन माल हार उर ऊपर, कर मुरली जु बजावै।
'नंददास' प्रभु रसिक कुँवर कौ लै उछंग हुलरावै॥

बाल गोपाल ललन कौं, मोद भरी जसुमति हुलरावति।
सुख सरसनि, देखति सुंदर तन, आनँद भरि भरि गावति॥
कबहुँक पलना मेलि झुलावति, कबहुँक अस्तन पान करावति।
'नंददास' प्रभु गिरिवर कौ रानी निरखि निरखि सुख पावति॥

ऐसो तौ सौं नंद-लाड़िले झगरूँगी।
मेरे संग की दूरि जाति हैं, मटुकी पटकि डगरूँगी।
भोर ही डाटी, चल गरौ मौ कौं, तुम्हें जानि कछु कानि न करूँगी।
तुम्हरे संग ग्वालन के देखत, अबहीं लाट उतारि धरूँगी।

बालकृष्ण

बिहंग चहचुहानी, सुनि चकई की बानी,
कहति जसोदा रानी, जागो मेरे लाला ।
रवि की किरन जानी, कुमुदिनी सकुचानी,
कमलन बिकसानी, दधि मथै बाला ॥
सुबल श्रीदामा, तोक उज्जल बसन पहिरे,
द्वारें ठाढ़े हेरत हैं बाल गोपाला ।
'नंददास' बलिहारी, उठि बैठी गिरिधारी,
सब कोउ देख्यौ चाहै लोचन बिसाला ॥

आज सिंगार स्यामसुंदर कौ देखें ही बनि आवै ।
स्याम पाग अरु स्वेत चोलना छूटे बंद सुहावै ॥
मोतिन माल हार उर ऊपर, कर मुरली जु बजावै ।
'नंददास' प्रभु रसिक कुँवर कौं लै उछंग हुलरावै ॥

बाल गोपाल ललन कौं, मोद भरी जसुमति हुलरावति ।
सुख सरसति, देखति सुंदर तन, आनँद भरि भरि गावति ॥
कबहुँक पलना मेलि झुलावति, कबहुँक अस्तन पान करावति ।
'नंददास' प्रभु गिरिधर कौं रानी निरखि निरखि सुख पावति ॥

ऐसें तो सौं नँदलाडिले झगरूँगी ।
मेरे संग की दूरि जाति हैं, मटुकी पटकि डगरूँगी ।
और हौं छोटी, तन नहीं मो कौं, तुम्हैं जानि कछु कानि न करूँगी ।
तुम्हरे संग सखान के देखत, अबहीं लाट उतारि धरूँगी ।

गोवर्द्धन-धारण

अब नैंक हमहिं देहु कान्ह गिरिवर ।
तुम्हें लियें बड़ी बार भई है, दुखि चल्यौ ह्वैहै कोमल कर ॥
सखनि ढिग परे, कहै सब ब्रजजन, भर्यौ है हाथ पर अति भर ।
तब ऐसौ यह बदन देखिहै, तातैं जीय मैं बढी यहे डर ॥
जानि सखन कौ हेत मनोहर, दियौ नवाइ नैंक अपनौ कर ।
'नंददास' प्रभु भुजा लटकि गई, तब हँसे नागर नगधर वर ॥

झूला

हिंडोरे माई झूलत गिरिधर लाल ।
संग राजत वृषभान नंदिनी, अँग अँग रूप रसाल ॥
मोरमुकुट मकराकृत कुंडल, उर मुक्ता वनमाल ।
लचकि लचकि झूलत पिय प्यारी, सुख बरसत तिहिं काल ॥
हँसत परस्पर इत-उत चितवन, चंचल नैन बिसाल ।
'नंददास' प्रभु की छवि निरखत, बिबस भई ब्रजबाल ॥

झूलत मोहन रंग भरे, गोपवधू चहुँ ओर ।
जमुना पुलिन सुहावनौ, वृंदावन सुभ ठौर ॥
ललिता जु करैं किलकारी, ज्यौं गरजत घनघोर ।
ता पाछे सब गोप-सुंदरी, मिलि जु करति है सोर ॥
तैसेई रटत पपैया, चातक, बोलत दादुर मोर ।
'नंददास' आनंद भरे निरखत, जै जै जुगलकिसोर ॥

गोवर्द्धन-धारण

अब नैंक हमहिं देहु कान्ह गिरिवर ।
तुम्हें लियें बड़ी बार भई है, दुखि चल्यौ ह्वैहै कोमल कर ॥
सुनि डिग परे, छवै सब ब्रजजन, भयौ है हाथ पर अति भर ।
तब ऐसे वह बदन देखिहैं, तातैं जीय मैं बड़ौ यहै डर ॥
जानि सखन कौ हेत मनोहर, दियौ नवाइ नैंक अपनौ कर ।
'नंददास' प्रभु भुजा लटकि गई, तब हँसे नागर नगधर वर ॥

झूला

हिंडोरे माई झूलत गिरिधर लाल ।
संग राजत वृषभान नंदिनी, अँग अँग रूप रसाल ॥
मोरमुकुट मकराकृत कुंडल, उर मुक्ता बनमाल ।
लचकि लचकि झूलत पिय प्यारी, सुख बरसत तिहि काल ॥
हँसत परस्पर इत-उत चितवत, चंचल नैन बिसाल ।
'नंददास' प्रभु की छवि निरखत, बिवस भई ब्रजबाल ॥

झूलत मोहन रंग भरे, गोपबधू चहुँ ओर ।
जमुना पुलिन सुहावनौ, वृंदावन सुभ ठौर ॥
राधा जू करैं किलकारी, ज्यौं गरजत घनघोर ।
ता पाछे सब गोप-सुंदरी, मिलि जु करति हैं सोर ॥
तैसेई रटत पपैया, चातक, बोलत दादुर मोर ।
'नंददास' आनँद भरे निरखत, जै जै जुगलकिसोर ॥

आई [illegible] अगाधा गाथा, छबि बरनी नहि जाइ।
नवल किसोर अमल चंदै मानों मिली है चंद्रिका आइ॥
खेलत सख्यौ ब्रज बीथिनि बीथिनि, बरषत परम अनंद।
दमकत भाल गुलाल भरे, मानो चंदन भरची चंद॥
केसर रंग पिचकारिन भरि भरि, छिरकत हरि तन तीय।
कुटिल कटाच्छ प्रेम रँग भरि भरि, भरति पीय को हीय॥
दूरि दूरि भरति, बचावति छबि सौं, बाढ्यौ रंग अपार।
गंध मृगी सी डोलति डोलति, पग नूपुर झनकार॥
सिद्ध सनकादिक नारद सारद बोलत जै जै जै।
'नंददास' अपने ठाकुर की जीवै बलैया ले॥

हो हो हो हो होरी बोलै, नंद-कुँवर ब्रज बीथिन डोलै।
सखन सँगीनी सखा सँग लीने, राजत अंग अँग सब रँग भीने।
रँगीली भाँति रँगीलौ निकस्यौ जहाँ, चोवा-चंदन कीच मचै तहाँ।
ताल, मृदंग मुरज, डफ बाजै, ढोल दमक नव घन ज्यों गाजै।
सुनि ब्रज-बधू आनंद अति बाढ़ी, निकसि निकसि सब पौरिन ठाढ़ी।
केसरी नबीन छूटत छबि पावै, पंकज मनौं पराग उड़ावै।
पिचकारिन रँग उछटत भारी, उड़ि गुलाल रँग अटा-अटारी।
जब लगि लाल लसत पिचकारी, तब लगि भामिनि भाँति भरी।
[illegible] गहल बधू भरि भागी, रँगीली लाल ताके मोहन लागी।
[illegible] छबीली, जैसे गाहि बनै सबै रंग रँगीली।
[illegible] नंदनंदन [illegible], घेरि लेत, कर तारी देत सब।

आई [illegible] [illegible] गाया, छबि बरनी नहिं जाइ ।
नवल किसोर अमल चंदै मानों मिली है चंद्रिका आइ ॥
गेंद मच्यौ ब्रज बीथिनि बीथिनि, बरषत परम अनंद ।
दमकत भाल गुलाल भरे, मानो चढ़त सरकौ चंद ॥
केसर रंग पिचकारिन भरि भरि, छिरकत हरि तन तीय ।
कुटिल कटाच्छ प्रेम रँग भरि भरि, भरति पीय को हीय ॥
दुरि दुरि भरनि, बचावनि छबि सों, बाढ़्यौ रंग अपार ।
[illegible] [illegible] सों बोलति डोलति, पग नूपुर झनकार ॥
सिव सनकादिक नारद सारद बोलत जै जै जै ।
'नंददास' अपने ठाकुर की जीवें बलैया लै ॥

हो हो हो हो होरी बोलैं, नंद-कुँवर ब्रज बीथिन डोलैं ।
[illegible] रँगीली सखा सँग लीने, राजत अंग अँग सब रँग भीने ।
रँगीली भाँति रँगीलौ निकस्यौ जहाँ, चोवा-चंदन कीच मचै तहाँ ।
ताल, मृदंग, मुरज, डफ बाजैं, ढोल दमक नव घन ज्यौं गाजैं ।
सुनि ब्रज-बधू आनंद अति बाढ़ी, निकसि निकसि सब पौरिन ठाढ़ी ।
[illegible] [illegible] छुटत छबि पावैं, पंकज मनौं पराग उड़ावैं ।
पिचकारिन रँग उछटत भारी, उड़ि गुलाल रँग अटा-अटारी ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पिचकारी, तब लगि भामिनि भाँति भरी ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भरि भारी, [illegible] [illegible] ताके [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छबीली, जैसें जाहि बनै तसें रँग रँगीली ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], बीरि लेत, कर नारी देत तब ।

नृतनि धरें अनंग, गावत तान-तरंग,
ताल मृदंग मिलि बजावैं बीन-बेनु रसाला ।
नंददास प्रभु-प्यारी के खेलत रंग रह्यौ,
छबि बाढ़ी, छूटी हैं अलक, टूटी है माला ॥

ए री रागी निरखे मोहनलाल, खेलत ब्रज में फाग री ।
उमड्यौ है अबीर गुलाल, मानौं उनयौ अनुराग री ॥
सोभित मदनगोपाल, कटि बाँधे पट मोहनी ।
काछिनि काछे लाल, लाल निचोय रँगी मनी ॥
मोरमुकुट छबि देत, चक दृगन हँसि देखनी ।
सब ही को हियौ हरि लेत, ऐन मैन मानौं पेखनी ॥
घट आवज सुर बीन, अनाघात गति गाजही ।
ताल मृदंग, उपंग, रुंज, मुरज, डफ बाजही ॥
मिलि आईं ब्रजनारि, मृगनयनी, गजगामिनी ।
घेरे हैं मदनगोपाल, घन घेर्यौ मानौं दामिनी ॥
छिरकत पिय नँदनंद, तिय पट-ओट बचावहीं ।
मानौं घन दुर्यौ चंद, दुरे निकसि पुनि आवहीं ॥
बने हैं तियन के अंग, छिरकि छींट छबि छैल की ।
मानौं ढुरी रँग रंग, ललित लता जनु प्रेम की ॥
बढ़्यौ है परस्पर रंग, उमगि उमगि रस भरन में ।
निरखि भईं मति पंग, पीतांबर फहरनि में ॥
रस बाढ़ि रसाल भरे, मोहन मूरति साँवरे ।
हँसें हँसें हरि हँसि रहे मुनि-मन ह्वै गये बावरे ॥

नृत्ति करें अनंग, गावत तान-तरंग,
ताल मृदंग मिलि बजावें बीन-बेनु रसाला ।
नंददास प्रभु-प्यारी के खेलत रंग रह्यौ,
छबि बाढ़ी, छूटी हैं अलक, टूटी है माला ॥

ए री रागी निरखे मोहनलाल, खेलत ब्रज में फाग री ।
उमड्यौ है अबीर गुलाल, मानौं उनयौ अनुराग री ॥
सोभित मदनगोपाल, कटि बाँधे पट मोहनी ।
काछिनि काछे लाल, लाल निचोय रँगी मनी ॥
मोरमुकुट छबि देत, चक दृगन हँसि देखनी ।
सब ही को हियो हरि लेत, ऐन मैन मानौं पेखनी ॥
घट आवज सुर बीन, अनाघात गति गाजही ।
ताल मृदंग, उपंग, रुंज, मुरज, डफ बाजही ॥
निरखि आईं ब्रजनारि, मृगनयनी, गजगामिनी ।
घेरे हैं मदनगोपाल, घन घेर्यौ मानौं दामिनी ॥
छिरकत पिय नँदनंद, तिय पट-ओट बचावही ।
मानौं घन पूर्यौ चंद, दुरे निकसि पुनि आवही ॥
बने हैं तिनके अंग, छिरकि छींट छबि छैल की ।
मानौं फूली रैन रंग, ललित लता जनु प्रेम की ॥
बढ्यौ है रसभर रंग, उमगि उमगि रस भरन मैं ।
निरखि भईं सति पग, पीतांबर फहरनि मैं ॥
रस भरि रसन भरे, मोहन मुरलि सौंधरे ।
हरें हरें हरि हँसि रहे मुनि-मन ह्वै गये बावरे ॥

अद्भुत लीला के गहिरे ताल पाट के तीरे ।
'नंददास' चाहत तन-मन-धन निछावर अंगन तीरे ॥

नाम-महिमा

कृष्ण-नाम जब तें स्रवन सुन्यो री आली,
भूली री भवन हौं तो बावरी भई री ।
भरि भरि आवै नैन, चित हू न परै चैन,
तन की दसा कछु औरै भई री ॥
जेतिक नेम-धर्म-व्रत कीने री मैं बहु विधि,
अंग अंग भई मैं तो स्रवनमई री ।
'नंददास' जाके स्रवन सुने ऐसी गति,
माधुरी मूरति कैधौं कैसी दई री ॥

गुरु

प्रात समै श्री वल्लभ सुत को उठतहि रसना लीजै नाम ।
आनंदकारी, मंगलकारी, अशुभहरन, जन पूरन काम ॥
इहि लोक परलोक के बंधु, को कहि सकै तिहारे गुन-ग्राम ।
'नंददास' प्रभु रसिक सिरोमनि, राज करौ गोकुल सुखधाम ॥

प्रात समै श्री वल्लभ-सुत के उदित-कमल-मुख दरसन कीजै ।
तीनि लोक वंदित पुरुषोत्तम, उपमा को पटतर कौ दीजै ॥
श्री वल्लभ-सुत उदित चन्द्रमा, मुख सुधा नैन-चकोरन पीजै ।

अद्भुत लीला के गहिरे नाम याद के गोहे ।
'हरिचंद' चाहत तन-मन-धन निछावर श्रीपद माँहि ॥

नाम-महिमा

गुरु-नाम जब ते श्रवन सुनी री आली,
        भूली री मगन ह्वै मैं बावरी भई री ।
भरि भरि आवैं नैन, छिन हू न परै चैन,
        तन की दसा कछु और भई री ॥
नेमिन नेम-धर्म-व्रत कीने री मैं बहु विधि,
        अंग अंग भई मैं तो अवनतई री ।
'हरिचंद' जाके श्रवन सुने ऐसी गति,
        साँवरी मूरति मेरी कैसी दई री ॥

गुरु

जय जय श्री वल्लभ सुत को उठतहि रसना लीजै नाम ।
आनंदकारी, मंगलकारी, दुखहरन, जन पूरन काम ॥
इह लोक परलोक के बंधु, को कहि सकै तिहारे गुन-ग्राम ।
'हरिचंद' सब गनिन सिरोमनि, राज करौ गोकुल सुखधाम ॥

जय जय श्री वल्लभ-सुत के चरन-कमल को दरसन कीजै ।
[illegible] सीस धरि [illegible], रसना को [illegible] लीजै ॥
श्री वल्लभ-सुत बदन चंद्रमा, तह सुधा नैन-चकोरन पीजै ।
'हरिचंद' श्रीवल्लभ-सुत पर तन-मन-धन न्यौछावर कीजै ॥

परिशिष्ट

परिशिष्ट

१ संदिग्ध तथा असंपादित सामग्री

(क) 'मानमंजरी नाममाला' के संदिग्ध दोहे

'अ' प्रति से उद्धृत

नाम रूप गुन भेद के सो प्रगटित सब ठौर ।
ता बिन तत्त्व जु आन कहु कहै सो अति बड़ बोर ॥१॥

[illegible]

पुन्य निर्मोहित अंतरित गूढ दुरूह निलीय ।
[illegible] के नाकि [illegible] कैसी इह विधि नाय ॥२॥

[illegible]

रक्त शोण आरक्त पुनि लोहित राते गात ।
तुव आगम आनंद ते जनु अनुराग चुचात ॥३॥

[illegible]

[illegible] [illegible] आखंडल सुरपत्त ।
सुनासीर [illegible] [illegible] दिविपत्त ॥४॥
[illegible] मदन वृषा जृंभभेदि हरि होइ ।
[illegible] वृत्रहनो मेघवाहनो सोइ ॥५॥

[illegible]

[illegible] सदा उर पिय के निरखि आपनी छाय ।
मान [illegible] [illegible] जीव मे प्रान तिया के जाय ॥६॥

[illegible]

[illegible] [illegible] पुनि [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥७॥

१ संदिग्ध तथा असंपादित सामग्री

(क) 'मानमंजरी नाममाला' के संदिग्ध दोहे

'अ' प्रति से उद्धृत

[illegible] [illegible] गुन भेद ते सो प्रगटित सब ठौर ।
ता बिन नन्द जु आन [illegible] कहै सो प्रति बट बोर ॥१॥

[illegible]

[illegible] तिरोहित अंतरित गूढ दुरूह निलीय ।
[illegible] के [illegible] [illegible] ऐसी इह विधि नांय ॥२॥

[illegible]

[illegible] श्रोन आच्छन्न पुनि लोहित राते रान ।
[illegible] [illegible] आनंद ते जनु अनुराग चुचात ॥३॥

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥४॥
[illegible] मदन [illegible] जूभ [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥५॥

[illegible]

[illegible] [illegible] उर [illegible] के [illegible] आपनी [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मे [illegible] [illegible] के [illegible] ॥६॥

[illegible]

[illegible] [illegible] पुनि [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥७॥

मंदिर सदन आयतन बसति निकाय अस्थान ।
भवन भरे वृषभान के गई सहचरी जान ॥१७॥

पतिव्रता

साध्वी सती सतस्विनी सुचरित्रा सुचि होय ।
पतिव्रता तुव नाम लै होत जगत में सोय ॥१८॥

पान

ताम्बूल अहिबेलिदल द्विज सुख मंडन पान ।
तहिन खानि अनखानि अति भरे जो रही मन मान ॥१९॥

मनोहर

मंजुल मंजु मनोज्ञ मधु मधुर चारु सुकुमार ।
ललित उदार सुनंद को सब बृज को आधार ॥२०॥

महादेव

उग्र कपर्दी भूतपति पसुपति मृड ईसान ।
नीलकंठ सितकंठ सिव मृत्युंजय कल्यान ॥२१॥

मेघ

धाराधर जलधर जलद · जगजीवन जीमूत ।
मुदिर बलाहक तडितपति कामुक धूम-सपूत ॥२२॥
तोयद घोरद अभ्रवह वारिद जलमुक नांउ ।
घन बिछुरी बिजुरी मनो इति देखन चलि जाउ ॥२३॥

रस

मारन्द मधु सुनि पुष्प-रस कुसुम-सार मकरन्द ।
रस के लालन हार जन सुनि पैहैं सुख कंद ॥२४॥

[illegible]

[illegible] सर्वा [illegible] पाँति [illegible] भाट ।
[illegible] उन ते [illegible] देखी नीकी [illegible] ॥२५॥

मंदिर मंडप आयतन बसति निकाय अस्थान ।
भवन भूप वृषभान कै गई सहचरी जान ॥१७॥

पतिव्रता

साध्वी सती सतस्त्रिनी सुचरित्रा सुचि होय ।
पतिव्रता तुव नाम लै होत जगत मैं सोय ॥१८॥

पान

ताम्बूल अहिवेलिदल द्विज मुख मंडन पान ।
ललित खानि अनखानि अति भर जो रही मन मान ॥१९॥

मनोहर

मंजुल मंजु मनोज्ञ मधु मधुर चारु सुकुमार ।
ललित उदार सुनंद को सब वृज को आधार ॥२०॥

महादेव

उग्र कपर्दी भूतपति पसुपति मृड ईसान ।
नीलकंठ सितिकंठ सिव मृत्युंजय कल्यान ॥२१॥

मेघ

धाराधर जलधर जलद · जगजीवन जीमूत ।
मुदिर बलाहक तडितपति कामुक धूम-सपूत ॥२२॥
नीरद छीरद अब्रवह वारिद जलमुक नांउ ।
घन बिछुरी बिजुरी मनौ इनि देखत बलि जाउ ॥२३॥

रस

सारद मधु पुनि पुष्प-रस कुसुम-सार मकरंद ।
रस के लालन हार जन सुनि पैहै सुख कंद ॥२४॥

[illegible]

नारी स्वकीया [illegible] प्रीति रहि भाइ ।
[illegible] देखी [illegible] ॥२५॥

उन के उन जे नारि थारि हमरी जिय प्राना ।
हम सब कियो प्रना (न ?) गमन हरि संग विनाना ॥१६॥
निरखि रजनि कमनीय जु निरवचनीय निकाई ।
रीझि सामरे रसिक रास खेलन मनु आई ॥१७॥

(पंक्ति १६४ के बाद)

जिनकी वृधि श्री कृष्न विषै सो शुक मुनि वरनी ।
अवधि प्रेम आवेस मोहनी की वस करनी ॥१८॥

(पंक्ति १६८ के बाद)

मानहु मनसिज कोटि पुञ्ज रस भरयौ सुहायौ ।
वदन आगरे चंद रास्त गोपिन विच आयौ ॥१९॥
मोहन मूरति एक भरी सी प्रेम लगाई ।
जानि पृछ कै धर्म कथा सामरे चलाई ॥२०॥

(पंक्ति १७४ के बाद)

कुशल छेम व्रज रवन गवन सभ्रम सी पाई ।
रात्न कौन जु भौन तजि कैसै तुम आई ॥२१॥

(पंक्ति १७६ के बाद)

पुनि बोले तिहि ओर चाहि गोविंद रसाला ।
हो सजनी रजनी सज्या नहि निकसन वाला ॥२२॥
अब यह जानौं मन भायौ पैहू दुख सब प्यारे ।
मात तात सुत वधु कंत ढूढतु जु तुम्हारे ॥२३॥
सखी हौंहि चटपटी अटपटी सब के मन सै ।
पलौ गई सब ही सब हुती सदन मै ॥२४॥
स्याम वचन सुनि श्री मुनि पुनि मन मै छकित भई सब ।
लवक सीके (?) दिस्स चोर पसी चितवनि जु सखी सब ॥२५॥

उन के उर जे नारि धारि हमरी जिय आसा ।
हम सब कियो अरा (न ?) रास हरि संग विलासा ॥१६॥
निरखि रजनि कमनीय जु निरवचनीय निकाई ।
रीझि सामरे रसिक रास खेलन मनु आई ॥१७॥

(पंक्ति १६४ के बाद)

जितरी अवधि श्री कृस्न विरै सो शुक मुनि बरनी ।
अवधि प्रेम आवेस मोहनी की बस करनी ॥१८॥

(पंक्ति १६८ के बाद)

मानहु मनमिज कोटि पुरट रस भरयौ सुहायौ ।
वदन सामरे चंद सारस गोपिन विच आयौ ॥१९॥
मोहन मूरति एक करी सी प्रेम लगाई ।
जानि वृच्छ कौ धर्म कथा सामरे चलाई ॥२०॥

(पंक्ति १७४ के बाद)

सुनहु छेम व्रज रवन गवन सभ्रम सी पाई ।
सारस कौन जु भाँत तजि कैसै तुम आई ॥२१॥

(पंक्ति १७६ के बाद)

पुनि बोले तिहि ओर चाहि गोविंद रसाला ।
हौं सजनी रजनी मज्ञा नहि निकसन वाला ॥२२॥
जद यह सावौं मन भायौ पैहै दुख सब प्यारे ।
मात तात सुत बंधु कंत ढूढतु जु तुम्हारे ॥२३॥
सो हैंहैं चटपटी अटपटी सब के मन सै ।
रहौ गहै सब ही सब हुती सदन मैं ॥२४॥
सुनत स्रवन मुनि श्री मुनि धुनि मन मैं छकित भई सब ।
स्याम गोंदे (?) ति स्याम अंग पगी चितवनि जु लगी तब ॥२५॥

(पंक्ति २३८ के बाद)

जाहि कुंद केवरा केतकी गंध बंध हित ।
माध बेलि छत अमल बेलि मृग मदका बेलि हित ॥३७॥

(पंक्ति ३०६ के बाद)

कोऊ श्रीदामा ह्वै बाम चढ़नि कान्हर के कांधै ।
कोऊ जसुमति ह्वै ललित लाल ऊखल सौं बांधै ॥३८॥

(पंक्ति ३१२ के बाद)

जमलार्जुन भंजन फनी फन गंजन सब कौ ।
कोऊ कहै मूंदौ लोचन हौं मोचौं दावानल कौ ॥३९॥

जदपि परम सुखधाम स्याम सुंदर लीला रस ।
तदपि तिनहि अवलोकनि बिन अकुलाय अस ॥४०॥

ज्यौं चंदन औ चंद तप्त कौं सीतल करहीं ।
बिरही जन जे लोग तिनहि लगि अग्नि बितरहीं ॥४१॥

(पंक्ति ३२२ के बाद)

पुनि जगमग खोज मनोज के चोज बढावनि ।
लहन लगीं रस पगी जगी छवि अति मन भावनि ॥४२॥

रूप भरी सो गावन गावत तहाँ अकथ कहानी ।
तब इक सखी लखी जिय की सो बोली मृदु बानी ॥४३॥

निरखि सुवन बर ऊंच मंच तिय मन मैं ठानी ॥
तिय तिय कंध चढाय सु छवि नही परत बखानी ॥४४॥

भयौ भार ते बाम कंध लयौ तब सरकानी ।
तातैं नीचौं परयौ अवनि उलटी इतरानी ॥४५॥

(पंक्ति २३८ के बाद)

तिनहि कुंद केवरा केतकी गंध बंध हित ।
गंध बेलि इत अमल बेलि मृग मदका बेलि हित ॥३७॥

(पंक्ति ३०६ के बाद)

कोऊ श्रीदामा ह्वै वाम चढ़नि कान्हर के कांधै ।
कोऊ जसुमति ह्वै ललित लाल ऊखल सों बांधै ॥३८॥

(पंक्ति ३१२ के बाद)

जमलार्जुन भंजन फनी फन गंजन सब कौ ।
कोऊ कहै मूंदौ लोचन हौं मोचौ दावानल कौ ॥३९॥

जदपि परम सुखधाम स्याम सुंदर लीला रस ।
तदपि तिनहि अवलोकनि बिन अकुलाय अस ॥४०॥

ज्यों चंदन श्री चंद तप्त कौं सीतल करहीं ।
बिरही जन जे लोग तिनहि लगि अग्नि बिनरहीं ॥४१॥

(पंक्ति ३२२ के बाद)

पुनि जगमग खोज मनोज के चोज बढावनि ।
चहुन लगी रस पगी जगी छवि प्रति मन भामिनि ॥४२॥

इक भयो नेह गरल परत नहीं अकथ कहानी ।
तब इक सखी लखी जिय की सो बोली मृदु बानी ॥४३॥

निरखि सुघर वर अंग सुरत प्रिय मन मैं ठानी ॥
प्रिय प्रिय कंध चढाय सु छवि नहीं परत बखानी ॥४४॥

भयो भार ते भार कंध गयो रस सरसानी ।
तातैं नीचौं परयौ अवनि उनकी इतरानी ॥४५॥

कुहुकि सरस सुरामैं गावैं ताननि तामैं ।
कोकिल की गति जति अति नति करत ऊ भ्रमावै ॥५५॥
जगमग जगमग करत रमणी सकल सोभा ।
लोक बरनि सब छकित लाग मग निरखत लोभा ॥५६॥
रसमत्त निरखत लाल लाडली प्रेम बढ़ावै ।
वहि छवि उपमा देन उरझि सुरसनि नहि पावै ॥५७॥

(पंक्ति ५१२ के बाद)

सुघर राग रागनी मंडल ढिग गुन गन गावत ।
अपने अपने गुन गनहि सब प्रघट दिखावत ॥५८॥

(छंद १२ के बाद[1])

कोई श्यामल नै धनी लसी पिय अति रति मानी ।
कोऊ पट गहि कटि गहि छवि नृ पानी मैं आनी ॥५९॥

(पंक्ति ५७६ के बाद)

इह लीला गोपाल लाल की परम रास विधि ।
शिव सुक सारद नारद नित कौन महा निधि ॥६०॥

(पंक्ति ५९४ के बाद)

यह वृंदावन रंग महल गिरधर प्यारी कौ ।
रैनाथ्याई राम रजनि अति उजियारी कौ ॥६१॥
जिन के हिय बसैं दंपति संपति जीवनि सोई ।
सब संसार असार छार करि जारैं सोई ॥६२॥

---

[1] दे. पृष्ठ ३५०

उरझि सरस सुनामैं गावैं मालनि नामै ।
बोलन की गति जति अति नति करन ऊ भमावै ॥५५॥
जगमग जगमग करत रसवती मंडल सोभा ।
लोक वनित नव छकित लाग सब निरखत लोभा ॥५६॥
सखन्ह निरखत लाल लाडली प्रेम बढ़ामै ।
कहि छबि उपमा देन उरझि सुरसति नहि पामै ॥५७॥

(पंक्ति ५१२ के बाद)

सुघर राग रागनी मंडल छिग गुन गन गावत ।
अपने अपने गुन गनहि नव प्रघट दिखावत ॥५८॥

(छंद १२ के बाद[1])

कोई मावत मैं थकी लसी पिय अति रति मानी ।
सोऊ पट गहि कटि गहि छबि तृ पानी मैं आनी ॥५९॥

(पंक्ति ५७६ के बाद)

यह लीला गोपाल लाल की परम बास विधि ।
शिव सुक सारद नारद नित कौन महा निधि ॥६०॥

(पंक्ति ५९४ के बाद)

यह वृंदावन रंग महल गिरधर प्यारी कौ ।
मैनाप्याई राग रजनि अति उजियारी कौ ॥६१॥
जिन के हिय बसै रंगनि नंपनि जंपनि सोई ।
सब संसार असार छाड करि तारै सोई ॥६२॥

[1] दे. पृष्ठ ३५०

(छंद २६ के बाद[1])

छिन बैठत छिन उठत लोटते निसि रज माहीं।
थोरे जल ज्यों मीन दीन आतुर अकुलाहीं ॥३०॥

[illegible] भय सैं तजत [illegible] [illegible] तिहारे।
[illegible] पद जैहैं नाथ नगर फिर छुवत हमारे ॥३१॥

[illegible] [illegible] मंगलदायक [illegible] और न होहिं।
[illegible] नन्द निरखे बिन और सहाय न कोहिं ॥३२॥

(पंक्ति ४८६ के बाद)

[illegible] पुञ्ज ह्वै देह मधुर मुरलि रस भीने।
कोटि [illegible] [illegible] जलनि मनोरथ पूरन कीने ॥३३॥

(पंक्ति ५८० के बाद)

नव विटपन संग लता लिपटि फूली झूली जल।
गुंजत मधुकर हंस आन विगसित अंबुज दल ॥३४॥

(पंक्ति ५९० के बाद)

नैन हीन जो नायक ताको तन नागरि जस।
अंध [illegible] नु कटाक्ष [illegible] कहा वह जाने रस ॥३५॥

'ज' प्रति से उद्धृत

(पंक्ति ८० के बाद)

श्री गुरु [illegible] अनूप हो, क्यों बरनै कवि नन्द।
[illegible] वृन्दावन बरनिहों जहँ वृंदावन चन्द ॥३६॥

---

[1] दे. पृष्ठ ३५२

(छंद २६ के बाद[1])

छिन बैठत छिन उठत लोटते निसि रंग माहीं ।
थोरे जल ज्यों मीन दीन आतुर अकुलाहीं ॥३०॥

मंगल मय मे समय करत कर-कमल निहारे ।
[illegible] [illegible] जैहै नाथ सपथ सिर छुवत हमारे ॥३१॥

[illegible] [illegible] मंगलदायक सब और न होहिं ।
मोहन सब निरखे बिन और सहाय न कोहि ॥३२॥

(पंक्ति ४८६ के बाद)

मृदु पुष्प ह्वै देह सपूर सुगनि रंग भीने ।
कोटि सुर बस जसनि अलौकिक पूरन कीने ॥३३॥

(पंक्ति ५८० के बाद)

नव विटपन संग लता लिपटि फूली फूली जल ।
गुंजत मातेत हंस आन बिगसित अंबुज दल ॥३४॥

(पंक्ति ५९० के बाद)

नैन हीन ज्यों नायक ताको सब नागरि जस ।
अंध हसत नु कटाक्ष ललनि कहा वह जाने रस ॥३५॥

'ज' प्रति से उद्धृत

(पंक्ति ८० के बाद)

श्री गुरु रस अनूप हौ, ज्यों बरनै कवि नन्द ।
[illegible] वृन्दावन बरनिहौं जहँ वृंदावन चन्द ॥३६॥

---

[1] दे. पृष्ठ ३५२

(ग) पदावली

'क' प्रति से प्राप्त पद

वर्षोत्सव

(१)

भादों की अष्टमी आधी रात मे कान्ह भयो सब के मन भायो ।
जोरि करोरि धरयो धन गोरी मे गोरी जसोदा जु लुटायो ॥
मोद सो गोद लिये हुलरावत प्रान पियारे को प्रान सो पायो ।
रोहनी मे भयो सोहनी मूरति नंददास लखि हियो सिरायो ॥१॥

(२)

पूत भयो है आज श्री व्रजराज के ।
प्रगट कल्याननि करन हो हो पुष्टि मारग रस रूप ।
भूतल प्रगट भये नाथ के हो श्री गोकुल के भूप ॥
श्री व्रजराज को दूर गये दुख आज ॥ श्री व्रजराज के ॥
व्रजवासी सब सुनतहीं हो आवत चहुँ दिस धाय ।
ले माखन दधि दूध की हो तन की सुधि बिसराय ॥ श्री ॥
लिये छाछ दिये घर लाज ॥ श्री ॥
हरद दूध दधि चंदन कुमकुम देत परस्पर सींच ।
सीस भई सब द्वार मे हो, उमगत मानो कीच ॥ श्री ॥
लिये सजी सौंज सौ साज ॥ श्री ॥
गाइ बजाय सब नचावहीं हो देह दसा गये भूल ।
नंददास न्यौछावर करावहीं तन धन जनम को मूल ॥
सुन सज्जनन के सिरताज ॥ श्री ॥

(ग) पदावली

'क' प्रति से प्राप्त पद

वर्षोत्सव

(१)

भादौं की अष्टमी आधी रात मे कान्ह भयो सब के मन भायो ।
जोरि बटोरि धर्यो धन गोपी मे सोरी जसोदा जु लुटायो ॥
मोद सों गोद लिये वृन्दावन प्रान पियारे को प्रान सो पायो ।
रोहनी में भयो मोहनी मूरति नंदलाल लखि हियो सिरायो ॥१॥

(२)

मंगल भयो है आज श्री व्रजराज के ।
प्रथम [illegible] हो श्री पुष्टि मारग रूप ।
भूतल प्रगट भये नाथ के हो श्री गोकुल के भूप ॥
श्री व्रजराज को दूर गये दुख आज ॥ श्री व्रजराज के ॥
व्रजवासी सब सुनतहीं हो आवत चहुँ दिस धाय ।
ले माखन दधि दूध की हो तन की सुधि बिसराय ॥ श्री ॥
[illegible] छांडि दिये घर काज ॥ श्री ॥
हरद दूब दधि चंदन कुमकुम देत परस्पर सींच ।
[illegible] आँगन मे हो, [illegible] मची कीच ॥ श्री ॥
[illegible] की लाज ॥ श्री ॥
नंद [illegible] हो देत [illegible] भूप ।
[illegible] मन [illegible] की सूद ॥
सुत [illegible] के [illegible] ॥ श्री ॥

[illegible] बढ़ी जस [illegible] ठाढो गावै महिमा
[illegible] मनोहर भावन [illegible] ॥२॥

([illegible])

[illegible] लागी प्रकटे कृष्ण मुरारि,
घर घर घर आनंद भयो दधि जमो आंगन नन्द के ।
[illegible] बाजत ताल मृदंग और बाजे सब भाँति के ।
[illegible] ब्रजनारि पूत भयो ब्रजराज के ॥
घोष घोष ते धाम बगनन गनि गनि के गई ।
[illegible] महा बड़ भागि आदर दै भीतर लई ॥
किंकिन के झनकार गलिन गलिन प्रति ह्वै रहे ।
[illegible] उर पर [illegible] च्वै रहे ॥
[illegible] गोपिका जात [illegible] भरि रह्यो ।
[illegible] न नात [illegible] को भागि उघरि रह्यो ॥
जहाँ ब्रजरानी आप सेन कीयो ढोटा भये ।
[illegible] कुतूहल होत मिलि जुवती जूथन गये ॥
निरखि बालक संग चारु आनन्द मय मूरति भई ।
[illegible] अंचल पट छोर मन भाई [illegible] दई ॥
[illegible] चोल मे फेरि छिरकत दधि हरदी मेलि ।
[illegible] के ग्वाल बोल लेत भुज भुजन पेलि ॥
[illegible] नवला नाट अगनित गिने नहीं जात है ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible] बसौ जग द्वार [illegible] ठाढ़ो गावै महिमा
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥३॥

([illegible])

ग, मैं [illegible] प्रकटे कृष्ण मुरारि,
घर घर घर आनंद भयो [illegible] आंगन नन्द के ।
[illegible] बाजन ताल मृदंग और बाजे सब लागि के ।
[illegible] और व्रजनारि पून भयो व्रजराज के ॥
[illegible] [illegible] ते [illegible] [illegible] गलि गलि के [illegible] ।
[illegible] महा बड भागि आदर दे भीतर लई ॥
किंकिन के झनकार गलिन गलिन प्रति ह्वै रहे ।
[illegible] [illegible] [illegible] उर पर अमाल च्वै रहे ॥
[illegible] गोपिन [illegible] [illegible] [illegible] भरि रह्यौ ।
[illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] को भागि उमगि रह्यो ॥
जहाँ व्रजरानी आप सैन कीयो ढोटा भये ।
[illegible] कुतूहल होन मिलि जुवती जूथन गये ॥
निरखि [illegible] [illegible] [illegible] आनद मय मूरति भई ।
[illegible] अंचल पट छोर मन भाई [illegible] दई ॥
[illegible] चोल कै घेरि छिरकत दधि हरदी मेलि ।
[illegible] [illegible] के ग्वाल बोल लेत भुज भजन पेलि ॥
[illegible] [illegible] [illegible] अनगिन गिने नहीं जात है ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

[illegible] मंदर छाय महल पांच दस आयो ।
[illegible] हंसि रोहिनी आप ब्रज तरनी पहरायो ॥
घर घर दुन्द निसान कही न जात [illegible] जिय की ।
मंगलमय व्रजदेस फिरत दुहाई राज की ॥
ब्रज दसा को रूप कहा कहु गनी या समै ।
निरखि निरखि नंददास नृत्य करत हैं ता समै ॥४॥

(५)

आई री बाजत आज बधाई श्री गोकुलराज के धाम ।
रानी जसुमति ढोटा जायो है मोहन सुंदर स्याम ॥
सुनि नंद गोप धाय के बानी चले वर बसन बनाय ।
मानुष को मरगद ब्रज वीथनि भीर न निकस्यो जाय ॥
आई सब गोप वधू मिलि साथन हाथन कंचन थार ।
सुभग बदन मद वर्षा कमला की झलकत कुंडल हार ॥
माखन ग्वाल करत कुतूहल दधि घृत ढारें गात ।
देत लुटाय बसन पट भूषण फूले अंग न समात ॥
जो जाके मन हुती कामना सो पुजाई नंदराय ।
नंददास को दई कृपा करि अपने चरनन की बनाय ॥५॥

(६)

श्री नंदराय के आंगन बाजत रंग बधाई,
[illegible] ॥
[illegible] अविनासी [illegible],
[illegible] नंद कुमार ॥
[illegible]
[illegible] ॥

गगनन्न अंबर छाय सहस्र पांच दस आन्यो ।
हंसि हंसि रोहिनी आप व्रज तरनी पहिरायो ॥
उन पर तुरत निछावर कही न जात सहवे जिय की ।
मंगलमय ध्वजदेन फिरत दुहाई राज की ॥
व्रज बना की रूप कला कछु बरनी या समै ।
निरखि निरखि नंददास नृत्य करत हैं ता समै ॥४॥

(५)

आई री बाजत आज सुहाई श्री गोकुलराज के धाम ।
रानी जसुमति ढोटा जायो है सोहन सुंदर स्याम ॥
सुनि नंद गोप धाय के धाये चले धर बसन बनाय ।
नागर को मगन व्रज वीथनि भीर न निकस्यो जाय ॥
आई सब गोप बधू मिलि साथन हाथन कंचन थार ।
कमल बदन मद दर्पी कमला की झलकत कुंडल हार ॥
माखन ग्वाल करत कुतूहल दधि घृत ढोरें गात ।
देत असीस बसन पट भूषण फूले अंग न समात ॥
जो जाके मन हुती कामना सो पुजाई नंदराय ।
नंददास को दई कृपा करि अपने नन्दन की बलाय ॥५॥

(६)

श्री वल्लभ के भवन बाजत रंग बधाइ,
[illegible] ॥
[illegible] बड़भागी,
[illegible] नंद कुमार ॥
[illegible]
[illegible] ॥

[illegible] सुख [illegible] गलिन गलिन देखौ [illegible] [illegible] हो ।
निरखौ जसोदा रानी सुत कौ बदन मोद बढ़ावै हो ॥
सुनि सुनि गोपि गोपि, ब्रजपति अति आनंद उर न समावे हो ।
[illegible] [illegible] पर [illegible] न्योछावर डाडनि कों पहिरावे हो ॥
देत असीस चली मंदिर ब्रजरानी नेग चुकावे हो ।
बारबार बिलोकौ लालन मुख नंददास मन भावे हो ॥९॥

(१०)

सुनत जन्म सुनि अपने पति सों डाढ़िन यों बोली जू ।
[illegible] जाउ तुम नंद नृपति के द्वार कोठरी खोली जू ॥
सुनत निकसौ बागो बीडा और दक्षणा भरि झोली ।
हुलसी लैयौ नव निज गहनौ जेहरि सहित एक जोरी ॥
नवो कर जुगति सों लैयौ हय चढ़िवे को डोली ।
बूढ़ी सौं सेव सुवन गोपन की टहल करन को बोली ॥
साज सहित एक घुटिया लैयौ गैया दुध अमोली ।
[illegible] सौ एक हर्नी लैयौ हरिजन संग अमोली ॥
सिखा सहित एक [illegible] लैयौ और पानन की डोरी ।
[illegible] [illegible] [illegible] सोहि मचावै लैयौ संग सनोली ॥
[illegible] [illegible] महा [illegible] नाच्यो जिहि नहीं नाचो कोली ।
नंददास नंदलाल सौं डाढी भयौ ब्रजाधिप डोली ॥१०॥

(११)

[illegible] ढिठौना ।
[illegible] छौना ॥
[illegible] नयना ।
[illegible] ॥११॥

[illegible] मुख मेलति गहति पानि देखी करी किलकावे हो ।
निरखौ जसोदा तेरो सुत यों कही मोद बढ़ावे हो ॥
सुनि सुनि रीझि रीझि व्रजपति अति आनंद उर न समावे हो ।
[illegible] लाल पर वारि न्योछावर डाढ़नि कों पहुँचावे हो ॥
रंग रलित चन्दी मंदिर व्रजनारी नेग चुकावे हो ।
बार बार बिलोकि ललन मुख नंददास मन भावे हो ॥९॥

(१०)

कृष्ण जन्म सुनि अपने पति सों डाढ़िन यों बोली जू ।
जाइ जाउ तुम नंद नृपति के बान कोठरी खोली जू ॥
कुलही लियो वागो बीरा और दक्षणा भरि झोरी ।
झगुली लैयौ नख सिख गहनो जेहरि सहित एक जोरी ॥
लीजो कर जुगति सों लैयौ हम चढ़िवे को डोली ।
कुंडी सों सेन सुवन सोभित की टहल करन को गोली ॥
गाऊ सहित एक पुड़िया लेयौ गैया दूध अमोली ।
[illegible] सों एक हम्मी लेयौ हरिजन संग अमोली ॥
सिखा सहित एक डुलिया लैयो और पानन की डारी ।
[illegible] पति कहि सोहि [illegible] लैयौ संग सहेली ॥
[illegible] कहा कहौं जान्यौ [illegible] नहीं नाडो खोली ।
नंददास [illegible] सों ढाढ़ी भयौ अजाचिक डोली ॥१०॥

(११)

[illegible] मुकुट [illegible] कुंडल [illegible] बिछौना ।
[illegible] मुरली [illegible] सुन्दर छवि [illegible] छौना ॥
[illegible] कटुका [illegible] नयना ।
[illegible] ॥११॥

नंद के लरिका सब बनि ठनि आये यों कहें केती है तेरी मान रे लाला ॥
ज्यों ही गहत गाय बैयाँ मोहन करत कैयाँ कैसा
नंददास बलि जाय रे लाला ॥१५॥

(१६)

ऐसो को है जो छुवै मेरी मटुकी अछूती दहेंडी जमी ।
बिन मांगे दियो न जाय मांगे ते गारी खाउ केतेई करो उपाय
उनके डरत नहिं मेरे तो गोरस की कहा धों कमी ॥
और को दह्यो छिनछिलो लागत मे ओट जमायो भर के नमी ।
नंददास प्रभु दईडे खवैया मेरे तो गोरस मे बहुत असी ॥ ॥१६॥

(१७)

लाल तुम परे हमारे ख्याल, स्याम लाल दान ही दान भई लकवानी ।
जब हम यहि व्योपार छाडी देहे दूध दही को तब लेहे काहे के दानी ॥
तिहारी चितवनी सुनी हो लाडीले नीके हम पहिचानी ।
नंददास प्रभु ऐसे तुम ब्योनियो जैसी हम ब्योमानी ॥१७॥

(१८)

पहो जू दान लेहो कैसे हम तो देव गोवर्द्धन पूजन आई ।
कोउ दह्यौ कोऊ मह्यौ माखन जोरि जोरि आछो अछूतो लाई ॥
तुम्हें पहले कैसे दीजे कान्हर जू तुम तो सबे कवी करन मन भाई ।
नन्ददास प्रभु तुमही परमेश्वर भये अब कछु नई ये चाल चलाई ॥१८॥

(१९)

काहे न आय आज देखो रानी जू अपने सुत के कर्म ।
केतन में भाजन एक न रह्यो कहे ते हंसि रानी सो को जाने वाको मर्म ॥

गंग के नविकुत नद बनि ठनि आये यों कहेंगे केसी है तेरी मात रे लाला ॥
अगोहन गहत नाय वैयां मोहन कहत कन्हैया कन्हैया
नंददास बलि जाय रे लाला ॥१५॥

(१६)

ऐसो को है जो छुवै मेरी मटुकी अछूती दही जमी ।
बिन माखे दियो न जाय माखे ते गारी बाढ़ै केतेई करो उपाय
उपाये उतरत नहिं मेरे तो गोरस की कहा थो कमी ॥
और को दह्यो छिलछिलो लागत मैं ओंट जमायो भर के नमी ।
नंददास प्रभु दईई खवैया मेरे तो गोरस में बहुत अमी ॥ ॥१६॥

(१७)

लाल तुम परे हमारे ख्याल, स्याम लाल दान ही दान भए नकवानी ।
जब हम यहि ब्योपार छाडी देहें दूध दहीं को तब ल्हे हे काहे के दानी ॥
निहारी चितवनी सुनी हो लाडीले नीके हम पहीचानी ।
नंददास प्रभु ऐसे तुम ब्योनेयो जैसी हम ब्योसानी ॥१७॥

(१८)

कहो जु दान लैहो कैसे हम तो देव गोवर्द्धन पूजन आई ।
कोउ दह्यो कोऊ मह्यो माखन जोरि जोरि आछो अछूतो लाई ॥
तुम्हें पहले कैसे दीजे कान्हर जु तुम तो नये कबी करन मन भाई ।
नन्ददास प्रभु तुमही परमेश्वर भये अब कछू नई ये चाल चलाई ॥१८॥

(१९)

काहे न आय आय देखो रानी जु अपने सुत के कर्म ।
केसन में माखन घृत न रह्यो कहे ते हनि दही को को जाने वाको मर्म ॥

(२३)

हरि चरची सीय सुधि सो पुनि पावन तन लटकि कै ।
लिय सो गटक विकट ताको चोगों अंस पटकि कै ॥
रन सों रथ भटन सों भट लटपटी सी चटक कै ।
आरि कै गढ़ लंक विकट रावण मुकुट झटक कै ॥
निसिक छंद तंदुल से छुरे लै लै मूसल मटक कै ।
गिरि सो गज गेंद सी गहि डार्यो भूमि भटक कै ॥
गुरु आनंद उमग उर सो आंट अटक कै ।
रघुनाथ पहुँचे नट ज्यों उलट काछ्यो समुद्र नटक कै ॥२३॥

(२४)

इस विधि पार पहोंच्यो पवन पूत दूत श्री रघुनाथ को ।
छूट्यो जनो धनुष ते सर परम सुभट हाथ को ॥
सर थर जहा कनक मीच पुरी राजधानी ।
ढन सिंह लंक अंक कपि न संका मानी ॥
घर मंदिर गिनि कदर नूतन मणिगाई ।
भवन रनवास ढूढ्यो कहू न सीय पाई ॥
तब लो यह जैतिक नगरी नगरी उचक लीजे ।
ले जाय रामहि जानकी दुह दीजे ॥
दसकंध अंत जनाई के मारो ।
रघुवीर आगे दास निर्वहि डारो ॥
विधि आतम जिय मांह ।
प्रभु की सोहि पुनी आज्ञा नाही ॥२४॥

(२३)

गहि धरती सीस सुधि लो पुनि पावन तन लटकि कैं ।
सिय को गदक विकट ताको चोगों अंस पटकि कै ॥
रन सों रथ भटन सों भट नटपटी सी चटक कै ।
आनि कै गढ लंक विकट रावण मुकुट झटक कै ॥
निसंक छैल लंगूल ते छरे लै लै मूसल मटक कै ।
गिरि सो गज गेंद सी गहि डार्यौ भूमि भटक कै ॥
गुरु हुन आनंद उमग उर सो आंट अटक कै ।
नवनीत चहुर्यौ नट ज्यो उलट काढ्यो समुद्र मटक कै ॥२३॥

(२४)

एक दिन पार पंहोच्यो पवन पूत दूत श्री रघुनाथ को ।
छूटत जनों धनुष ते सर परम सुभट हाथ को ॥
जहँ धर जहा वरन मीत्र एसी राजधानी ।
पैठत निहि संक बंक कपि न जंका मानी ॥
घर मंदिर गिनि कवर मृदर मणिगाई ।
सब्बा रनवास ढूढ्यो कहु न सीय पाई ॥
नव लो यह जैनिक नगरी नगरी उचक दीजे ।
बारि ले जाय नासहि जानकी दृढ दीजे ॥
निसा वस्कंध ग्रंथ लराई ले मारो ।
ऐसे रघुबीर आगे जाय निबाह डारो ॥
कर छिति जन आना दपि सोचन जिय मांह ।
नवनीत प्रभु की सौंह एसी ठाना नांही ॥२४॥

प्रातें है निकट जात रीझि कै गलबाह
चाह चाव देख देख नुपुरी तें बजाय ।
मनमोहन अंग लिए आनन्द बोरी लाय
ललिक खिलखिल प्यारी लाल पगी मुसकाय ॥२७॥

(२८)

केलि करे प्यारी पिय पौढे लाल चादर मे
नेह सो लगे गये जोबन के जोस के ।
अंगिया उदक गई मानो प्रान देखबे को
चाय काढि चकवाक काम तन रोस मे ॥
चादर सो मोती छाइ दौड दून गहे
पिय लति के खीलौना मानो ढांपि दीये ओस मे ।
रूप के सरोवर मे नंदलाल देख अली
चकोर के छौना बैठे कंचन के कोस मे ॥२८॥

(२९)

रैन बीती ही प्यारे हरि को नाम देख
याही ते अधिक घट गई गेन ।
लाज न करत हरि लव किसोही रही
एकटक आछे लखन नयन ॥
छबि सो कुटल मानो छिन छिन तारे हीन के
आभूषण पर वार डारो जग गुन ।
सेवा हू ललित भयो देख के [illegible]
रह्यो है देख कै परम चैन ॥

प्रानँ है, [illegible] [illegible] रीझि, [illegible] [illegible]

बार बार देख देख मुरली [illegible] बजाय ।

[illegible] [illegible] सिय प्रगल्भ बीरी लाय

ननिक त्रिनारिन प्यारी [illegible] परी मुसकाय ॥२७॥

(२८)

केलि करे प्यारी पिय पौढे [illegible] चादर मे

नेह सो लग गये जोवन के जोस के ।

अंगिया [illegible] [illegible] मानो प्रान देखवे को

नाच [illegible] चकवाक काम [illegible] रोस मे ॥

चादर सो मोती झाड़ दौड [illegible] गहे

पिय नैनि के खौलोना मानो ढांपि दीये ओस मे ।

रूप के सरोवर मे चकवान देख अली

चकोर के छौना बैठे कन्चन के कोस मे ॥२८॥

(२९)

रैन बीती हो प्यारे हरि को नाम लेव

याही ते अधिक घट गई गेन ।

[illegible] न [illegible] हरि [illegible] किसोरी [illegible]

[illegible] आछे [illegible] नयन ॥

छवि सो [illegible] मानो छिन्न छिन्न तारे हीरा के

आभूषण पर [illegible] [illegible] जग [illegible] ।

[illegible] हू [illegible] भयो देख के [illegible]

[illegible] हूँ देख कैं परम चैन ॥

देत असीस सकल गोपीजन बरखा को जल अमित अपार ।
नंददास [illegible] गिरिधर की [illegible] के [illegible] ॥३२॥

(३३)

गाजे गिरिराज आज बाज [illegible] गोप
[illegible] बानिक बनै नरै भेष नटवर ।
सिरों है उटाम [illegible] के [illegible] पर
[illegible] धरम नाच्यो मुरली की फूंक पर ॥
[illegible] मदन के [illegible] न जान काहू पे बखानी
[illegible] हू ने [illegible] भारी [illegible] है नर नर ।
नारद के [illegible] सुर चातक चकोर मोर
[illegible] न काहू के लागि भयौ है कौतुक भर ॥
[illegible] की [illegible] की [illegible]
सुनि [illegible] हेर हेर हरि [illegible] हर हर ।
नन्ददास प्रभु गिरिधारी जू की [illegible]
[illegible] को गर्व गयो भये हैं [illegible] घर ॥३३॥

(३४)

[illegible] नाथ [illegible] गिरिधर ।
[illegible] फेर [illegible] ॥
[illegible] ॥
नंददास [illegible] ॥३४॥

(३५)

देत असीस सकल गोपीजन जसुदा को सुत चिरजिव भार ।
जीति महामुख जनक गिरिधर को सदयान के दुख हरे ॥३२॥

(३३)

नाचे गिरिधर आज नाच गोप नारि संग
नेक सो बानिक बने गरे भेष नटवर ।
निरखो है उदास ब्रजराज के कुँवर नेक
तरुना थकन लागी मुरली की फूक पर ॥
थाके सकल है पानी न जात ताहू पै बखानी
कहत हू ने गति भारी दूखत है नर नर ।
नारद के संग सुर चातक चकोर मोर
यह न काहू के लागि भयो है कौतुक भर ॥
रस ज की रसमाई देहु की सदाई
सुनि उर हेर हेर हरि रो हर हुर ।
सदान प्रभु गिरिधारी जू की हासी गेल
ब्रज को बड़ो नयो भयो है हर घर ॥३३॥

(३४)

रैनि रैनि साथ खगर गिरिधर ।
गोकुल कुमके साज [illegible] सन चलेया फेर कर ॥
[illegible] ॥
[illegible] ॥३४॥

(३५)

[illegible] ।
[illegible] ॥

(४८)

[illegible] आज बधाई ।
[illegible] प्रगट [illegible] श्री [illegible] सुखदाई ॥
[illegible] सकल [illegible] आनंद न समाई ।
[illegible] बंदीजन [illegible] बेद पढ़ाई ॥
[illegible] दधि [illegible] आंगन कीच मचाई ।
[illegible] माला [illegible] सीतल चौक पुराई ॥
[illegible] छिन [illegible] देत हैं पट भूषण पहराई ।
[illegible] गये [illegible] नंददास के मन बाछित फल पाई ॥४८॥

(४९)

[illegible] मध [illegible] परी है कंचन थारी ।
[illegible] अनुमति सहचारी ॥
[illegible] अंग अंग [illegible] लागत है सुखकारी ।
नंददास [illegible] ॥४९॥

(५०)

[illegible] पीत [illegible] बंदन ।
[illegible] सुघर नंद नंदन ॥
[illegible] जो बंदन ।
नंददास [illegible] दुख कंदन ॥५०॥

(५१)

(४८)

[illegible] आनंद आज बधाई ।
[illegible] प्रगट [illegible] सुखदाई ॥
[illegible] आनंद न समाई ।
[illegible] बिना [illegible] ॥
[illegible] नाचि [illegible] ।
[illegible] माला [illegible] मोतिन चौक पुराई ॥
[illegible] हित [illegible] हैं पट भूषण पहराई ।
[illegible] गावे [illegible] मन वाञ्छित फल पाई ॥४८॥

(४९)

[illegible] मध्य [illegible] नारी है [illegible] धारी ।
[illegible] अनुमति सहनारी ॥
[illegible] लागत है सुखकारी ।
[illegible] कारी ॥४९॥

(५०)

[illegible] पीव [illegible] ।
[illegible] नारी [illegible] सुघर नंद नंदन ॥
[illegible] जो वंदन ।
[illegible] सुख [illegible] कंदन ॥५०॥

(५१)

[illegible] हो ।
[illegible] हो ॥

(५५)

[illegible] समै [illegible] गवरी तिना के रह्यो महरि लाले दीजे जगाय ।
तुम्हीं [illegible] कछु [illegible] [illegible] बालक जात उराय ॥
जसुमति [illegible] [illegible] अनारा करि [illegible] निरखि घर काज ।
दधि मथन बैठि लायो दूध दह्यो खात बदन ब्रजराज ॥
[illegible] और बलभद्र जगाऊं दुहि दुहि लावत है सब गाय ।
नंददास लाल जगाय तिहिं छिन लीनो अंक जसोदा माय ॥५५॥

(५६)

जागन उठारे बैठ करोहो कलेऊ लाल भवन अंधेरी है रे दोऊ भैया ।
[illegible] [illegible] बड़ो [illegible] [illegible] फिर ने छाड़ [illegible] [illegible] [illegible] दोऊ धैया ॥
माखन मिश्री और औट्यों पय ल्यावत मथ मथ दुधकी धैया ।
एसो सुख देख नंददास प्रभु की पुन पुन लेत बलैया ॥५६॥

(५७)

आज सखी सावन नीर सुहावे ।
[illegible] [illegible] [illegible] वृंदावन घोर घोर घन आवें ॥
नन्ही नन्ही बूंदन बरसन लाग्यो ब्रज मंडल में छावें ।
नंददास प्रभु संग राधा लिये कुंजन मुरलि बजावें ॥५७॥

(५८)

[illegible] [illegible] भई मैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आली मनभावन ।
[illegible] [illegible] [illegible] बुंदन [illegible] [illegible] [illegible] फूली है लाज ॥
[illegible] ।
[illegible] लिखना करे [illegible] ॥५८॥

(५५)

तब लौं कहे लालन नागरी निसा के रहो सकुचि लाले दीजे जगाय ।
छाँड़ि निंदु कहुँ तरसै अचानक बालक जान उराय ॥
किंकिनि कि नद चहान जननि कर पलनौं निरखरि घर काज ।
दधि मथन बैठि लावो तुम कहौ घोस चढन ब्रजराज ॥
कछुन और बलभद्र जगाऊं दुहि दुहि लावत है सब गाय ।
नंददास लाल जगाय निहिं छिन लीनो अंक जसोदा माय ॥५५॥

(५६)

जागन उठारे बैठ करीहो कलेउ लाल मदन अंधेरो है रे दोउ भैया ।
पुनहीं जन चला साट नहि विन ने छाड़ हमल नटे गाठे दोउ धैया ॥
माखन मिस्री और औटचो पय प्यावन मथ मथ दुधकी धैया ।
एनी सुर देव नंददास प्रभु की पुन पुन लेत बलैया ॥५६॥

(५७)

आजु नहीं दीसत मोर सुहावे ।
सघन लता लाल वृंदावन घोर घोर घन आवें ॥
नैन्हीं नैन्हीं बूंदन बरषन लाग्यो ब्रज मंडल में छावें ।
नंददास प्रभु संग सखा लिये सुजन मुरलि बजावें ॥५७॥

(५८)

[illegible] नट नवल धवल नवेल ग्वालिनी आली सनमान ।
[illegible] दुकल लियोवे [illegible] फूलो है साज ॥
[illegible] ।
[illegible] निरखना [illegible] ॥५८॥

जहीं जहीं करि कर कंकन की शोभा बाढ़ी
पचरंग रंग बिछौना बिछायो ॥
बाजे किंकिनी सोर तैसिहि झनक नेर
सजीली गावन की मिल धुनि मचुरायो ।
नंददास प्रभु नंदनंद की आज्ञाकारी
यौं सुकुमारी हमकहनी मन भायो ॥६१॥

(६२)

नव केलि रंग राग जहाँ बैठे कुंवर लाल नु चल चतुर रंगीली गावे ।
अति विचित्र लियो साज तो सो रंग रहेगो राग
नेवरि अंकुर मोर पपीहा फूले फल द्रुम बाग ॥
नव रंग राग गावै पहेर लहरी सारी
ता पर रीझ लाल दीने बीन नौवे बाग ।
झूले के लाल सुन उठ चलि पिय पें
यह छबि निरख गावें नंददास बड़ भाग ॥६२॥

(६३)

कमल हाथ पालन की छलना कोउ छोंप उना पर दीजे हो ।
सुन्दर नन्दलाल स्याम जिन जसी हो तिन आगे ह्वै लीजे हो ॥
लाल सखी सब ठाली ठाढ़त मन [illegible] क्यों कीजे हो ।
नंददास प्रभु फिर न रहाइ रूप की अंजन रस भीजे हो ॥६३॥

(६४)

[illegible] सब कुंजन में आये भौंर ।
[illegible] नंदलाल [illegible] नाचे [illegible] भौंर ॥

जहाँ तहाँ अति रुचि कुंजन की सोभा बाढ़ी
अनंग रंग हिंडोरा बिछायो ॥
नाचैं विविध मोर गर्जहिं सघन घोर
सरोवरी सावन की मिल पति सचुपायो ।
सूरदास प्रभु नंदनंद की आज्ञाकारी
गोप कुमारी ब्रजनारी मन भायो ॥६१॥

(६२)

नव केसर रंग बाग जहाँ बैठे कुंवर भान सु चतुर चतुर रंगीली गावे ।
अति विचित्र लियो साज को सो रंग रहेगो राज
मौरि अंकुर मोर पपीहा फूले फल द्रुम बाग ॥
नव रंग राग गावें पहेर कसुंबी सारी
ता पर रीझ लाल बीच बीच सोंधे बाग ।
ब्रज के रसाल सुन उठ चलि पिय पें
यह छबि निरख गावे नंददास बड़ भाग ॥६२॥

(६३)

नवल हरि पावस की छलना कोउ डारि उला पर दीजे हो ।
सुनु सजनी स्याम जित जावें तो तित आगे ह्वै लीजे हो ॥
सघन कसौटी बैठ गावौं ठाकुर सब सयान क्यों कीजे हो ।
नंददास प्रभु फिर न रहत रस को अंजन रस भीजे हो ॥६३॥

(६४)

सावन मास सुहावन आये मोर ।
मोर पपीहा बोलत सावन की आयो बदरा घोर ॥

(६८)

मोहन करी लाल नीकी निसि सो मदन कुंज की माह ।
[illegible] प्रबल [illegible] हम जान्यो नांह ॥
[illegible] कंद [illegible] बन माह ।
नंददास प्रभु तुम चिरंजीयो हम निरख [illegible] माह ॥६८॥

(६९)

झूले झुलहिं कुंवर किशोरि झूले प्रथम समागम अहो गठ जोरे ।
[illegible] जोडी चारु [illegible] हुलसे दोउ ओरे ॥
[illegible] नैन पटली [illegible] बाढ्यो [illegible] प्राची ओरे ।
नंददास प्रभु रस बरसत अहो नवघन दामिनि के अनुहोरे ॥६९॥

(७०)

[illegible] प्रीतम संग जान न पावत दीन जामीनी ।
[illegible] बरसत मानो घन दामीनी ॥
नवल [illegible] मोहन मिल [illegible] बसन
प्रीतम संग [illegible] कामीनी ।
[illegible] पिय प्यारी अहो नंददास वारो तहां
गरब गोपाल संग स्यामा गजगामीनी ॥७०॥

(७१)

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥

(६८)

भोजन कर्यो लाल नीकी निसि सो सघन कुंज की माह ।
गगन गगन घन बरस्यो प्रबल गति चन्द्र हम जान्यो नाह ॥
तब रसबस कर देखी कुल गोसा कदंब तरे बन माह ।
नंददास प्रभु तुम निरजांयो हम निरख जुहन माह ॥६८॥

(६९)

रूरे कुमकित सुरग हिंडोरें झूलें प्रथम समागम अहो गठ जोरें ।
चलत रत्न भूल कलिकाल ठाडी चाल कनकलकार रमक हुलसे दोउ ओरे ॥
सुभग सेज पटली सुर बाढ्यो मन्दा बेलन प्राची ओरे ।
नंददास प्रभु रस बरसत जहा नवघन दामिनि के अनुहोरे ॥६९॥

(७०)

झूलत प्रीतम संग जान न पन्न दीन जामीनी ।
गोपी सब चहुँ ओर झुलावत थोरे थोरे रंग बरसत मानो घन दामीनी ॥
नवल कसुंबी लहेंगा मोहन सिर लहेंगा पन्नोटी बसन
प्रीतम संग कनक कामीनी ।
यह छबि निरख प्यारी जहा नंददास वारी तहा
गरब गोपाल संग स्यामा गजगामीनी ॥७०॥

(७१)

[illegible] ।
[illegible] गोरी ॥
[illegible] ।
[illegible] दामिनी [illegible] ॥

(७५)

[illegible] झूलें [illegible] की ।
[illegible] मानो [illegible] की ॥
[illegible]
मोहै [illegible] कोटि काम छबीले बदन की ।
[illegible] मोहैं सुर नर मुनि
[illegible] ने महायोगी नारी छूटी तिनकी ॥
[illegible] जहाँ [illegible] झूलें तहाँ
[illegible] गावें [illegible] गाथा के [illegible] की ।
[illegible] प्रभु [illegible] ललिता [illegible] तहाँ
[illegible] सिन्धु शोभा [illegible] श्याम घन की ॥७५॥

(७६)

[illegible] सुन्दर [illegible] व्रज बाल
कालिन्दी के तीर [illegible] रच्यो है हिंडोरनां ।
[illegible] चहुँ ओर
[illegible] मधुर ध्वनि [illegible] घन घोरनां ॥
[illegible] के [illegible]
अलि [illegible] गुंजे [illegible] के [illegible] ।
[illegible] प्रभु [illegible] जोरी अद्भुत भारी
[illegible] जैसे चंद्र को चकोरनां ॥७६॥

(७७)

[illegible] यमुना ।
[illegible]
[illegible] ॥

(७५)

[illegible] की ।
[illegible] मानो [illegible] के [illegible] ॥
[illegible] मधुरे बैन
[illegible] कोटि काम छबीले बदन की ।
[illegible] ध्वनि [illegible]
[illegible] महायोगी नारी छूटी [illegible] ॥
[illegible] झूले तहाँ
[illegible] के रवन की ।
[illegible] प्रभु [illegible] ललिता झुलावै तहाँ
[illegible] सिंधु सोभा [illegible] स्याम घन की ॥७५॥

(७६)

आई झूलन [illegible] ब्रज बाल
कालिंदी के तीर [illegible] रच्यो है हिंडोरना ।
[illegible] ओर
[illegible] मधुर ध्वनि [illegible] घन घोरना ॥
[illegible] मन के [illegible]
अलि गन गुंजे [illegible] के [illegible] ।
[illegible] प्रभु [illegible] जोरी अद्भुत भारी
[illegible] जैसे चंद्र को चकोरना ॥७६॥

(७७)

[illegible] यमुना ।
[illegible]
[illegible] देखना ॥

मोहन के गालनि पर बीरी रंग भरे
निरखी छवि नंददास बल तृन तोरे ॥७९॥

(८०)

नागरी खेलत नवल स्याम कर ।
रोरि लगत छिन छिन मानिक तिन बिच मुकुतन भर ॥
नंदीशा के नंद फागुन गावत असीस देत गुनजन सब द्विजवर ।
नंददास प्रभु जियौ नंद कौ ज्यौं लौं चंद सूरज मानसर ॥८०॥

(८१)

सब जग छाँड़े लागी नीको कन्यौ बान ।
बीना अबिर कलाजा छिरकत सेन गोरी कान्ह ॥
नार भरे कनक पिचकारी भरि भरि देत सुजान ।
सुर नर मुनि जन कौतुक भूले जब नव अकुलन भान ॥
नाम रसिकन बेन बाँसुरी नाग नागिनी नाग ।
नंददास चित्रावलि बनित नहीं उपमा को स्थान ॥८१॥

(८२)

कुंज महीर सिधि जमुना तीर खेलत होरी रंग भरे अहीर ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥८२॥

मोहन के पटपीत पवन बीच रस भरे

निरखी छबि नंददास बन तृन तोरे ॥७९॥

(८०)

नाची आवत नवी स्याम तन ।

हीरा रतन खचित नित मानिक तिन बिच मुकतन सर ॥

नटिवा भेष नंद नन्दलाल अलीन देत गुन्जन सब द्विजवर ।

नंददास प्रभु जियो तन तो ज्यों लौं चंद सूरज मानसर ॥८०॥

(८१)

नव रंग छींटे लागी नीको बन्यो बान ।

बाना अपार रूपगता ब्रिन्दन सेवत गोपी कान्ह ॥

नाच करें कनक पिचकारी भरि भरि देत सुजान ।

सुर नर मुनि जन कौतुक भूले जब तब अकुलान भान ॥

ताल मृदंग बेन बांसुरी नाच रागिनी तान ।

नंददास ब्रिन्दावन बरनि नहीं उपमा को नाम ॥८१॥

(८२)

फूल रहीं तिहि जमुना तीर बेलन डोली रस भरे अहीर ।

कुंज तीर [illegible] धीर नहि कुछ तीर नदनिन की भीर ॥

[illegible] बन सरीर [illegible] मंजीर ।

[illegible] द्विजन्न है चीर ॥

[illegible] अबीर ।

नंददास [illegible] ॥८२॥

लाल भाँति अवनि भई लाज ललक सौं गोरी ।
जो रसभानि बोर भोर झलकन निकसी चोरी ॥
सोहिल सुर देखन के काज गाढ़ दूहन की जोरी ।
निरखन कलियाँ ने सबै छवि न कही कछु थोरी ॥
मोड़ फेर छवीले लाले छिरकन रंग अमोल ।
और रसगल गल लै पराग पल्लवन रुचिकर कपोल ॥
लखे हैं पिया के कमल लोचन जब गहि आजे अंजन ।
मानो अनुराग कमल मंडल में फंदन फँदे युग खंजन ॥
देखि विकल वृषभानु घरनि हँसन हँसत तहाँ आई ।
बरजी बात नवल वधू भुज भरि लिये कन्हाई ॥
पोंछत मुख अपने अंचल पुनि पलि नैन बनाय ।
मनहि मनहि छोलन मुसकात छवि बरनी नहीं जाय ॥
छोड़न न देहीं नवल वधू मांगे कुँवर पै फाग ।
मो पै फगुआ दियो न जाय प्यारी राधा के पाय लाग ॥
और कहाँ लगि बरनिये बढ्यो सुख सिंधु अपार ।
प्रेम कलोल हलोलन में किनहूँ रह्यो न सभार ॥
रंग रँगीली ब्रज वधू रँगीले गिरिधर पीय ।
यह रस भीने नित बसो नंददास के हीय ॥८४॥

(८५)

ब्रज में खेले री धमार मोहन प्यारो री नंद को ।
संग बनी रस भीनी गोरी राख्यो न परत कछु
बाढ्यो या सुख सिंधु उछंद को ॥
लाल गाल गुलाल लिलाट उर बाढ्यो सुख आनंद को ।
नंददास प्रभु प्यारे कौतुक देखत और
मोहन गिरिधर मैन फंद को ॥८५॥

लाल भाँति अरुझिन भई लाज ललन सों गोरी।
भरी उमाहनि जोर भीर भभकन निकसी चोरी॥
लहलहाल मुख देखन के काज गाठ दुहुन की जोरी।
निरखि सखियाँ ने रचे छवि न बढ़ी कछु थोरी॥
मोड़ मौर छबीले लालें झिलमिल रंग अमोल।
और गुलाल गर ले पराग परगन रुचिकर कपोल॥
लसे हैं पिया के नवल लोचन जब गहि आजे अंजन।
मानों अनुराग कमल मंडल में फंदन फँदे युग खंजन॥
देखि विथल वृषभान घरनि हँसन हँसन तहाँ आई।
बरनी जात नवल बधु भुज भरि लिये कन्हाई॥
पोंछत मुख अपने अंचल पुनि पनि नेन बलाय।
मनहिं मनहिं डोलत मुगाट छवि बरनी नहीं जाय॥
छोड़त न देही नवल बधू मागे कुंवर पे फाग।
तो पे फगुआ दियो न जाय प्यारी राधा के पाय लाग॥
और कहाँ लगि बरनिये बढ्यो सुख सिंधु अपार।
प्रेम कलोल हिलोलन में किनहूँ रह्यो न सभार॥
रंग रंगीली बज बधू रसीले गिरिधर पीय।
यह रस भीनें निन बसो नंददास के हीय॥८४॥

(८५)

ब्रज में होरी री मचाय मोहन प्यारो री नंद को।
सब जनी रस बोरी गोरी रह्यो न फन्द कछु
बाढ्यो या सुख सिंधु उड़ुचंद को॥
ताल बाजे मृदंग किलकिलि उछर बाढ्यो सुख आनंद को।
नंददास प्रभु अपने कौतुक देखन और
सोभा गिरिधर मेन फंद को॥८५॥

[illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भो है ।
[illegible] भई [illegible] [illegible] [illegible] भयो है ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छटा री ।
[illegible] भरी [illegible] मोहि [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] लियो है ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रंग लियो है ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हेली ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बेली ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नुपुर सलोनी ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] श्री वृषभान कुमारी ।
[illegible] [illegible] [illegible] बेनी [illegible] सवारी ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सवारी ।
[illegible] [illegible] [illegible] की [illegible] हो ने प्यारी ॥
[illegible] [illegible] सीमंत [illegible] [illegible] दीनो ।
[illegible] [illegible] [illegible] अंजन कीनो ॥
[illegible] [illegible] [illegible] करी [illegible] लीनी ।
[illegible] मे [illegible] [illegible] [illegible] को [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ॥
[illegible] [illegible] [illegible] त्रिभुवन छवि [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

[illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भरे है ।
[illegible] भई [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] छटा री ।
[illegible] भरी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दियो है ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] रंग लियो है ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] हेली ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बेली ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सुघर सलोनो ।
[illegible] [illegible] [illegible] श्रीनिधि [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] श्री वृषभानु कुमारी ।
[illegible] [illegible] [illegible] बेनी [illegible] सवारी ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सवारी ।
[illegible] भरी [illegible] की पहिचान हौ ले प्यारी ॥
[illegible] [illegible] [illegible] किशोरी ग्रापन दीनो ।
[illegible] [illegible] [illegible] अदल कीनो ॥
[illegible] [illegible] [illegible] करी [illegible] लीनी ।
[illegible] मे [illegible] [illegible] सिय की टीगी ॥
[illegible] [illegible] [illegible] निरखांगी है ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नीकी है ॥
[illegible] [illegible] [illegible] त्रिभुवन छवि [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भई है ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] है ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

[illegible] । [illegible] जो अंगों मनोज जीगो आदि गुनि॥
[illegible] मृदंग बजावें । सकल सदन मानों मंगल बनावें ॥
[illegible] । राधे आगे लिए मानों बदरन छाए ॥
[illegible] । मानों पीठ पर मार मार टाक लीनों ॥
[illegible] रंग रंगा । चरण पलोटत नाचे तनगा ॥
[illegible] भारी । इत हरि उत वृषभान दुलारी ॥
[illegible] भई भारी । छवि सों छूटत मानों सेत फूलवारी ॥
[illegible] प्यारी दिया गाल। रंग बरसे मानों नीतन पल ॥
[illegible] । कंचन छरी जराय जरी छवि सों है ॥
[illegible] । आतुर उमही मानों प्रेम नवेली ॥
[illegible] । मानों प्रेमरवि अब चाहत उगन ॥
[illegible] । दामिनी निकर मानों नवघन जैसे ॥
[illegible] अंग सोहे सब ऐसी । सिंगार कल्पतरु छविलता जैसी ॥
[illegible] चंद्रावलि उत गई । लाल सों कहत हो निहारी कित भई ॥
[illegible] किशोरी । नारीदिके हंसी है सब बोले हो हो होरी॥
[illegible] । ऐसी कछू साँवरे पिय पै न बाजी ॥
[illegible] प्यारी [illegible] बुलाये । हँसत हँसत लाल अकेले ही आये ॥
[illegible] निहारी । रिझवनो प्यारो लाल अटल विहारी॥
[illegible] बहुत जो दीनो । सब सखी प्रेम प्रीत साथे मान लीनो ॥
[illegible] । विविध कह्यो है ऐसे जाने सोई जाने ॥९४॥

(९५)

[illegible] मोहन मदन गोपाला ।
[illegible] निहि रासा ॥
[illegible] छाय ।
[illegible] न जाय ॥

नचत ग्वार बारी सँग डोलि । हर जो आगे मनोज जोगी जाहि गुनि ॥
बाज ढप ताल मृदंग सुहायें । मदन नदन मानों मंगल बजाये ॥
मोर मुकुट लटु लटु कुंडल झलाए । आधे आधे चिन्ह मानों बदन छाए ॥
कटि किंकिनि नूपुर बाजे रंग भीनों । मानों ढीठ उर मार मार टाक लीनों ॥
झलके श्याम के गोरन भीगे रंग रंगा । तरुण पलोटन लागे अनंगा ॥
सखियाँ ललित मिल गिन मन्नो भारी । उत हरि उत वृषभान दुलारी ॥
लाल रंग मदन मिल सोभा भई भारी । छवि सो छलत मानों मैन फुलवारी ॥
पिचकारी छूटे आग प्यारी छिपा गाल । रंग बरसे मानों सीतल घन ॥
ललित के संग रंग रूप गुण सोहे । कंचन छरी जराय जरी छवि सो है ॥
डारें रंग की धार नागर को मेली । आतुर उलही मानों प्रेम नवेली ॥
गर्वीर गुलाल मच्य मदित गगन । मानों प्रेमरवि अब चाहत उगन ॥
भामिनी झुंडन श्याम घेर लिये ऐसे । दामिनी निकर मानो नवघन जैसे ॥
मकरंद सावरे अंग सोहें सब ऐसी । सिंगार कलानिधि छविलता जैसी ॥
नैनन सैनन चंद्रावलि उत गई । लाल सो कहत हो निहारी दिखनई ॥
सखियाँ लिवाय लई छल सो किशोरी । नारीदेवे हँसि कहें सब बोले हो हो होरी ॥
लाल जु अधर धरी बाँसुरी बिराजी । ऐसी कछु सावरे पिय पे न बाजी ॥
सखियन मिस प्यारी राधिका बुलाये । हँसत हँसत लाल अकेले ही आये ॥
सावल ब्रज की बधू कौतुकि निहारी । निरजीनी प्यारो लाल अटल बिहारी ॥
फगवा जीवन आनंद बहुत जो दीनो । सब सखी प्रेम प्रीत साथे मान लीनो ॥
नन्दलाल यह सुख सब सो बखाने । विविध कह्यो है ऐसे जाने सोई जाने ॥९४॥

(९५)

[illegible] दिन अब तक ठाढो गया किन मोहन मदन गोपाला ।
[illegible] छूटि जो [illegible] न [illegible] नित्हि बाला ॥
[illegible] किन [illegible] छाय ।
[illegible] न जाय ॥

(९७)

[illegible] की माला [illegible]
[illegible] ठाढ़ी नवनी [illegible] की ।
[illegible] के [illegible]
[illegible] ठाढ़ी मानों पुतरी कनक की ॥
[illegible] कोमल गात
[illegible] ही प्रतिज्ञा पिय के धनक की ।
[illegible] आन्यों नृप [illegible] तोर्यो नाहीं
बांस के धनैया जैसे बालक के करकी ॥२॥

(९८)

[illegible] ढोरों [illegible] रही
[illegible] ऐसे कौन पै जु कहै हो ।
[illegible] के [illegible] कौन [illegible]
[illegible] कर गहे ॥
[illegible] में उर्वीदि [illegible]
[illegible] कहौ [illegible] में [illegible] रहे ।
[illegible] के उर्वीदि आवे
[illegible] प्रान [illegible] कहा रहे ॥३॥

(९९)

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥४॥

(९७)

[illegible] की माला [illegible] फूलन [illegible] मोती [illegible]
भ्रान्त फरीला ठाढ़ी नवनी जनक की ।
[illegible] [illegible] की लाला सीस के [illegible] सोना
[illegible] ठाढ़ी मानो पुतरी कनक की ॥
निरखी [illegible] बाल कमल कोमल गात
गात ही प्रतिज्ञा निय के धनक की ।
[illegible] [illegible] जान्यो भूप कल नोयो नाहीं
बांस के धनैया जैसे बालक के करकी ॥२॥

(९८)

टेरे टेरे मन धन्न हेरों बाग टन्क रह्यो
टये नेहि फिरन ऐसे कान पे जु दहे हो ।
गाढे गो हीय के पीय पैनी गाढी गोन नीय
गाढे गाढे भुजन बीच गाढे कर गहे ॥
[illegible] [illegible] नैनन में उनीदि लाग लाग जात
नाची कहा आगमनि में तो लाल लहे ।
[illegible] प्रभु हिन लिन के उनीदे आये
भये प्रात दरो बाल नात कहा रहे ॥३॥

(९९)

[illegible] हमारे ।
[illegible] कुमारे ॥
[illegible] कौन निजारे ।
[illegible] ॥४॥

(१०४)

[illegible] री [illegible] मोहन [illegible] ।
[illegible] दिन दिन [illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ने [illegible] ने [illegible] हो
[illegible] ॥९॥

(१०५)

नद लाल दीखौ [illegible] री ।
[illegible] मनो [illegible] मधुर ध्वनि [illegible] री ॥
[illegible] जोरी [illegible] जिनके मोहन [illegible] री ।
[illegible] गिरिधर ने [illegible] री ॥
[illegible] सुरेन्द्र महामुनि [illegible] पार नहीं [illegible] री ।
[illegible] गिरिधर देखे मन जागन री ॥१०॥

(१०६)

[illegible] बधावन
[illegible] ।
[illegible] की छवि [illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] दिन [illegible] है [illegible] ।

(१०४)

[illegible] गायन री और नाहिं मोहन [illegible] न [illegible] गाऊं ।
[illegible] द्विज द्विज कछु पाऊं ॥
[illegible] देव दुर्लभ [illegible] ।
[illegible] ने जिवाय ले [illegible] नागन हौं
[illegible] ॥९॥

(१०५)

[illegible] नागन री ।
[illegible] मधुर ध्वनि गावत री ॥
[illegible] जिनके मोहन [illegible] नागन री ।
[illegible] गिरिधर ने [illegible] री ॥
[illegible] महामुनि [illegible] पद नहीं त्यागत री ।
[illegible] गिरिधर देवे मन जागत री ॥१०॥

(१०६)

[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥११॥

[illegible]
[illegible] कहाँ तुम [illegible] हौ ॥
[illegible]
ऐसी होय [illegible] कौन पै रीझत हौ ।
[illegible] मैं [illegible]
देखौ फेरि आज बध कौन पै [illegible] हौ ॥१५॥

(१११)

गोकुल की ग्वालिनी [illegible]
बड़े बड़े नयना [illegible] ।
[illegible] नारी अंग [illegible] छवि भारी
गोरी गोरी बहियन में मोतिन के गजरा ॥
[illegible] संग लिये [illegible]
[illegible] की सुधि भूली सीस धरे गगरा ।
[illegible]
[illegible] की नैन में भूल गई [illegible] ॥१६॥

(११२)

[illegible]
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥१७॥

(११३)

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] कहाँ तुम [illegible] हो ॥

[illegible]

ऐसी [illegible] कौन पै रीझत हो ।

[illegible] मैं [illegible]

[illegible] आज [illegible] कौन पै [illegible] हो ॥१५॥

(१११)

गोकुल [illegible]

[illegible] तामे [illegible] कजरा ।

पहिरे [illegible] सारी अंग [illegible] छवि भारी

गोरी गोरी बहियन में मोतिन के गजरा ॥

[illegible] लिये [illegible]

[illegible] की सुधि भूली सीस धरे गगरा ।

नंददास [illegible] मिले गिरिधारी

[illegible] की सैन में भूल गई डगरा ॥१६॥

(११२)

[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] ॥१७॥

(११३)

[illegible] ।

[illegible] ॥

(११७)

[illegible] कहो लाल [illegible] कि उठावे, पठायौ ग्वाल छाक लै आवे ।
मिल [illegible] माढ न जानी कौन कौन की मैया
कमल [illegible] [illegible] पायस पन्के पठावे ॥
[illegible] [illegible] न बिसरै मेरे [illegible] पर
धार धौरन धेना न नगावै ।
[illegible] श्री स्याम [illegible] पद [illegible] लाल
दान्ह ने जु गावर सर किकर बुलावै ॥२२॥

(११८)

[illegible] ब्रज गार्यो नहीं नक ताक ।
[illegible] [illegible] माठ [illegible] मर्यादि ने छन को [illegible] जब छाक ॥
मद मैना [illegible] मिठाई घर घर ते ले निकसी थाप ।
[illegible] प्रभु को यह भावत प्रेम प्रीति के पाक ॥२३॥

(११९)

[illegible] [illegible] मे [illegible] मंडल मध्य मोहन छाक खात ।
[illegible] [illegible] संग धरे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गोविन्द के पात ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] गोद [illegible] दर जात ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बात ॥२४॥

(१२०)

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥

(११७)

[illegible] ते उठावें, पठावो ग्वाल छाक लै आवे ।
मिलि बैठे साथ न जानो कौन कौन की मैया
[illegible] पठावे ॥
[illegible] न बिसारे मेरे [illegible] पर
धार भोजन वेला न लगावे ।
[illegible] ऐसी श्याम [illegible] पद [illegible]
[illegible] ने जू [illegible] बुलावे ॥२२॥

(११८)

[illegible] ।
[illegible] को [illegible] ॥
[illegible] मेवा पकवान मिठाई घर घर ते ले निकसी [illegible] ।
[illegible] प्रभु को यह भावन प्रेम प्रीति के पाक ॥२३॥

(११९)

[illegible] में बिराजें मंडल मध्य मोहन छाक खात ।
[illegible] के पात ॥
[illegible] गोद [illegible] जात ।
[illegible]
[illegible] ॥२४॥

(१२०)

[illegible] ।
[illegible] ॥

सोहत [illegible] सुमनों पर [illegible] में [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] लाख्यो [illegible] [illegible] [illegible] फल बानी ॥
[illegible] ने [illegible] यौ सौतन नारिन में हरि राग बिरानो ।
[illegible] प्रभु की मन मिल्यो ज्यों सागर में पानी ॥२८॥

(१०४)

[illegible] नट नद निकुंज क्रम नव [illegible] पतीप पुंज
गद्दा रची नागर दर गादी उसीर की ।
[illegible] घनसार घोर पकज दल नीर खीर
चन्दन चहुँ ओर चर्चो पकज पाटीर की ॥
सोभित तन गौर स्याम सुरंग [illegible] सुखधाम
[illegible] [illegible] सुगंध मंदगति समीर की ।
[illegible] प्रिय प्यारी निरख सखी [illegible] ओट
श्रवन धुनि सुन किंकिणी मंजीर की ॥२९॥

(१०५)

[illegible] [illegible] आज [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] उसीर [illegible] छीरक [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] छवि जोबन [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नीर [illegible]
[illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥३०॥

सोहत [illegible] सुमनों पर [illegible] मांहि [illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] हरि [illegible] ।
[illegible] मिल्यो ज्यों सागर में पानी ॥२८॥

(१०४)

जमुना तट [illegible] निकुंज द्रुम [illegible] पराग पुंज
[illegible] गावती [illegible] की ।
[illegible] पंकज [illegible]
[illegible] चहुँ ओर [illegible] पाटीर की ॥
[illegible] स्याम [illegible]
[illegible] सुगंध मदगति समीर की ।
[illegible] निरख [illegible]
[illegible] धुनि सुन किंकिणी मंजीर की ॥२९॥

(१०५)

[illegible]
[illegible] छबीली ।
[illegible]
[illegible] छवि जोबन [illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥३०॥

(१०४)

[illegible] भई [illegible] [illegible] सहार्यो [illegible] जी ।
[illegible]
[illegible] जी ॥
[illegible]
[illegible] भई [illegible] [illegible] जी ।
[illegible] ऐसी प्रीति [illegible]
[illegible] जी ॥५०॥

(१६६)

जब नाचौ री गात मेरे ऐसी रीति बाढ़ आवै
ठगन नदन नौकि देखन न दीने ।
[illegible] आगन मागन मे भेट भई
सकुच रही उन लोगन के सीने ॥
[illegible] जब [illegible] री निरखे हू
अंचल की ओट दे दे कोटि श्रम कीने ।
[illegible] प्रभु प्यारी या दिन ते मेरे नयना
उनहीं के अंग अंग रंग रंग भीने ॥५१॥

(१६७)

[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥

(१५५)

[illegible] जी।
[illegible]
[illegible] जी॥
[illegible]
पनघट भई और सुध न [illegible] जी।
नंददास प्रभु की ऐसी प्रीत बाढ़ी
बाढ़ी प्रेम [illegible] जी॥५०॥

(१५६)

[illegible] ऐसी [illegible] आवे
[illegible] नैन देखन न दीने।
[illegible] मानस में भेंट भई
[illegible] उन लोगन के नीने॥
[illegible] ओट दे दे कोटि श्रम कीने।
नंददास प्रभु [illegible] जिन ने मेरे नयना
उनहीं के अंग अंग रंग रंग भीने॥५१॥

(१५७)

[illegible]
[illegible]।
[illegible]
[illegible]॥

(१५१)

[illegible] जाय ।
[illegible] के कुसुम गावटी छिरको गुलाब नीर नैनन को फल पाय ॥
[illegible] नीचा ता मधि बाध्यो रुचे हैं मदन [illegible] कदम की छांय ।
[illegible] श्रियाश्रीतम [illegible] कबहुक [illegible]
कबहुक हँसि उठ जाय ॥५६॥

(१५२)

[illegible] सिंहासनी [illegible] के मधि कुसुम गावटी गाजे ।
[illegible] के [illegible] छबि छाय रही
फूलन के आभूषन नव फूलन सिंगार सब साजे ॥
[illegible] में त्रिविध समीर [illegible]
चंदन के बाग मधि मदन महल छाजे ।
[illegible] श्रिया श्रियतम [illegible] जोरी
विधना [illegible] बनाय श्री ब्रजराज विराजे ॥५७॥

(१५३)

[illegible] बाग बन्यो नव निकुंज मध्य
विविध पक्षी जहां गुंजार करत री ।
[illegible] बैठे श्रिया श्रियतम
[illegible] हँसन [illegible] री ॥
[illegible] ज्यों [illegible]
उमगि उठी [illegible] मदन अनुसरत री ।
[illegible] श्याम [illegible] सों
[illegible] नहिं [illegible] री ॥५८॥

(१५१)

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जाय ।
उझकि [illegible] के कुसुम गवटी छिपायो गुलाब बीर नैनन को फल पाय ॥
[illegible] तौ ता मधि बाल्यो [illegible] मदन [illegible] छांय ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] केलि
[illegible] हँसि [illegible] जात ॥५६॥

(१५२)

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के मधि कुसुम गवटी [illegible] ।
[illegible] के [illegible] [illegible] छवि [illegible] [illegible]
[illegible] के [illegible] [illegible] फूलन सिंगार सब साजे ॥
[illegible] [illegible] में [illegible] [illegible] [illegible]
चंदन के बाग मधि [illegible] महल छाजे ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] बनाय श्री ब्रजराज विराजे ॥५७॥

(१५३)

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
विविध पक्षी तहां गुंजार [illegible] री ।
[illegible] [illegible] [illegible] बैठे [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] री ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ज्यों [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] मदन [illegible] री ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] री ॥५८॥

सिगरी श्याम लागे अमल बैठे तख्तराज
उड्डुगन सारा नारांद पर्यंकदा ।
नन्दलाल प्रभु ऐसी रात री नीरे बन
जाली मन वसे न मिलन हुए हंसा ॥९१॥

(१५७)

देखे री सखाये ने लाल मीरी लालन
जोन्हीं नहीं आगी नी लों लाल ने आऊ ।
नैनी नी नहाई प्यारी श्रोर की हवनो
नौर सुन्द नौरिंद कला जो पून्यो चंद बन जाऊं ॥
[illegible] न [illegible] न [illegible]
ऐसी नौसा फिर पाऊं पे न पाऊं ।
नन्दलाल [illegible] बिना कठिन भई
देखो कर्म कियो लाल ने आऊं ॥९२॥

(१५८)

लाल [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्यारी न [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
नन्दलाल प्रभु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महाराज ॥९३॥

(१५९)

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ।

किलकें छाह नाचें उमक बैठे तरुवरान
प्रफुल्ल शाखा मारंद परोंदवा।
महाराज प्रभु ऐसी राते जो नहीं [illegible]
जाती मन कमे में मिलन हुन हंता ॥६१॥

(१५७)

ऐसे मैं बनाये ने नाम नीति नागन
जोन्हीं नहीं आगी नी नीं नाल ने आऊं।
नैनी नी नवाई प्यारी और को हनतो
नौन सुन्दर गोविंद कला जो पून्यो चंद बन जाऊं॥
[illegible] न [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible]
ऐसी सोभा फिर पाऊं के न पाऊं।
नरुवान [illegible] बिना [illegible] [illegible]
दैवो [illegible] कैसे नाम ने आऊं ॥६२॥

(१५८)

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible]।
[illegible] जो [illegible] [illegible] [illegible] प्यारी न [illegible] [illegible]॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महाराज।
[illegible] प्रभु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] महाराज ॥६३॥

(१५९)

[illegible]।
[illegible]॥
[illegible]
[illegible]।

[illegible] ॥६७॥

(१६३)

प्यारी [illegible] ।
[illegible] जागत ब्रज को लोग
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ।
[illegible] प्यारी [illegible]
[illegible] ॥६८॥

(१६४)

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥६९॥

(१६५)

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥७०॥

[illegible] अनिमिष [illegible]

[illegible] ॥६७॥

(१६३)

[illegible] ।

[illegible]

[illegible] ॥

[illegible]

[illegible] ।

[illegible]

[illegible] ॥६८॥

(१६४)

[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] ॥६९॥

(१६५)

[illegible] ।

[illegible] ॥

[illegible] ।

[illegible] ॥७०॥

[illegible] है [illegible] किये [illegible] [illegible] ।
[illegible] न मुनि न पुनी संतनि सपने ॥
[illegible] [illegible] [illegible] पाछे छूटे [illegible] [illegible] ।
मानहु [illegible] चमर बिराजें ॥
[illegible] [illegible] [illegible] जगमग जोती ।
मानों [illegible] सुधा [illegible] [illegible] मोती ॥
[illegible] मोती हार चारु उर [illegible] [illegible] ।
[illegible] लता में मानों उदय होत [illegible] ॥
[illegible] सुन्दरी [illegible] मोतिन के हारा ।
रोमावलि मिली मानों यमुना की धारा ॥
[illegible] [illegible] सोहैं [illegible] [illegible] ।
[illegible] पायन देखी मदन नवेनी ॥
[illegible] [illegible] छवि कहिये कवन ।
[illegible] दीप शिखा मानों परसी पवन ॥
[illegible] सोहैं निज [illegible] मोहनी जे कोटि ।
प्यारी के पायन [illegible] [illegible] परे लोटि ॥
[illegible] और छवि [illegible] को कहिये ।
[illegible] [illegible] [illegible] हो [illegible] [illegible] [illegible] ॥३८॥

(१७०)

[illegible] की [illegible] [illegible] [illegible] पै है प्यारी नहीं मानत ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥३५॥

[illegible] है [illegible] किये [illegible] [illegible] ।
देखि न सुनि न ऐसी [illegible] सपने ॥
[illegible] [illegible] [illegible] पाछे छूटे [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] बिराजे ॥
[illegible] [illegible] [illegible] जगमग जोती ।
[illegible] [illegible] सुधा [illegible] [illegible] मोती ॥
आगें मोती हार [illegible] उर [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] ने मानों [illegible] हीन [illegible] ॥
[illegible] सुन्दरी [illegible] मोतिन के हारा ।
रोमावलि मिली मानों यमुना की धारा ॥
[illegible] [illegible] सोहै [illegible] ऐनी ।
[illegible] [illegible] देनी मदन नवेनी ॥
[illegible] [illegible] छवि कहिये कवन ।
[illegible] दीप शिखा मानों परसी पवन ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मोहनी [illegible] कोर्टि ।
प्यारी के पायंन [illegible] आन परे [illegible] ॥
[illegible] [illegible] छवि [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥३८॥

(१७०)

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पे [illegible] [illegible] नहीं [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥३९॥

(१७५)

[illegible] [illegible] त्रिकुटी मैं जानौ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] भौंए ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उदधि मानौ मीन महावर धोए ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मानौ जगाय [illegible] प्रेम पाट पोए ।
नन्ददास प्रभु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] निस नेक न सोए ॥८०॥

(१७६)

[illegible] मधुबन [illegible] मोहन संग निस दिन [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] भयौ मोहन को [illegible] [illegible] हरी ॥
[illegible] [illegible] [illegible] को [illegible] प्रफुल्लित [illegible] [illegible] नागरी ।
नन्ददास प्रभु के [illegible] जाए ते जीवन [illegible] [illegible] ॥८१॥

(१७७)

जौ न [illegible] [illegible] निरख निरख [illegible] सों तो मैं जानी री माई ।
[illegible] [illegible] [illegible] रसीले नैनन प्राण प्यारे कि माधुरी [illegible] नाहीं बनाई ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सो पै कछु कहे न आवै [illegible] की [illegible] ।
नन्ददास प्रभु [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बिलोके जु [illegible] [illegible] [illegible] आई ॥८२॥

(१७८)

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥८३॥

(१७५)

[illegible] [illegible] त्रिकुमारी मे जानी [illegible] देन मैना [illegible] मोए ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] उदधि मानो मीन महावर घोए ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मानो जगाय लीये प्रेम पाट पोए ।
[illegible] प्रभु [illegible] के [illegible] [illegible] [illegible] हो निस नेक न सोए ॥८०॥

(१७६)

[illegible] [illegible] की मोहन संग निस दिन [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] मोहन को [illegible] [illegible] हरी ॥
[illegible] [illegible] [illegible] को [illegible] प्रफुल्लित [illegible] [illegible] नागरी ।
[illegible] प्रभु के [illegible] [illegible] ते जीवन [illegible] परी ॥८१॥

(१७७)

[illegible] न [illegible] मे [illegible] [illegible] [illegible] सो तो मे जानी री माई ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्राण प्यारे कि माधुरी [illegible] नाची बधाई ॥
[illegible] तो [illegible] [illegible] [illegible] तो पे कछु कहे न आवे [illegible] की [illegible] ।
[illegible] प्रभु [illegible] [illegible] [illegible] सोहि [illegible] [illegible] थी केसी बन आई ॥८२॥

(१७८)

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible] ॥८३॥

[illegible] मैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नवीनी ।
[illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] [illegible]
[illegible] के [illegible] [illegible] कीनी ॥८६॥

(१८२)

[illegible] तुम मागत दान [illegible] ।
छाँड़ो [illegible] हम [illegible] [illegible] [illegible] हो [illegible] [illegible] ॥
[illegible] की को [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] कहा [illegible] जु [illegible] ।
[illegible] प्रभु गिरिधर [illegible] क्यों [illegible] [illegible] [illegible] ॥८७॥

(१८३)

[illegible] [illegible] [illegible] मैं [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] तुम [illegible] [illegible] हौ छीन छीन [illegible] नाहिं ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अपनी [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मैं [illegible] [illegible] [illegible] ॥८८॥

'ख' प्रति में प्राप्त पद

(१८४)

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥१॥

[illegible] मैं [illegible] [illegible] सद्गुरी [illegible] कीनी
आनी [illegible] कीनी गाट [illegible] नवीनी ।
[illegible] [illegible] अन्जों न मानी [illegible]
नानी मैं निहारी [illegible] कीनी ॥८६॥

(१८२)

ललन तुम मानत नाहिं कह्यो ।
छाँड़ौ हाट हम कैहै मोहन रोकत हौ मग गह्यो ॥
[illegible] की सौ [illegible] तुम्हैं बनी देखी कहा रहौ जु तैसी ।
नंददास प्रभु गिरिधर गुन क्यों बोलत बोल बनैगी ॥८७॥

(१८३)

ऐसे मेरे भागनि मैं कब आई ।
[illegible] [illegible] तुम दैके [illegible] हौ छीन छीन [illegible] माहि ॥
[illegible] [illegible] नो मेरी [illegible] नहीं अपनी समझाई ।
नंददास प्रभु नागर कृष्ण मैं निपट [illegible] [illegible] ॥८८॥

'ख' प्रति से प्राप्त पद

(१८४)

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥१॥

(१८९)

[illegible] कृष्ण [illegible] [illegible] [illegible] ।
के [illegible] [illegible] धरे वे [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जोर ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] के [illegible] नंदकिशोर ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] निरखत [illegible] ।
नंददास प्रभु प्रगट तजि भजिये जैसे निरत चन्दु चकोर ॥६॥

(१९०)

[illegible] [illegible] [illegible] कृपा यमुना ऐसी ।
छांड़ि निज धाम विश्राम भूतल नियो न प्रकट लीला दिखाई जो तैसी ॥
[illegible] [illegible] करत है पतिन को [illegible] अद्भुत देत श्याम जैसी ।
नंददास जो जानि दृढ़ चरण गहै एक रसना कहा कहूं वैसी ॥७॥

(१९१)

[illegible] [illegible] यमुना प्रगट आई ।
[illegible] की निज वृत्ति [illegible] जानहीं नाहिने अति ही आतुर जो धाई ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] इच्छा नाहि तैसी साथ जो पुजाई ।
नंददास प्रभु [illegible] पाहि [illegible] [illegible] यमुना जू के गुण जो गाई ॥८॥

(१९२)

[illegible] मैं [illegible] [illegible] जो गायो ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] नाहि पायो ॥
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बार भुक्ति [illegible] आयो ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥९॥

(१८९)

[illegible] कुंज [illegible] निसि भोर ।
[illegible] धरे वे बन जोबन [illegible] ॥
[illegible] छत्र [illegible] भक्त [illegible] जोर ।
[illegible] सरद [illegible] पावन के नव नंदकिसोर ॥
[illegible] निरखत [illegible] ।
नंददास प्रभु प्रगट लखि भजिये जैसे निरखत चन्द्र चकोर ॥६॥

(१९०)

[illegible] कृपा यमुना [illegible] ।
[illegible] निज दास विश्वास [illegible] प्रगट लीला दिखाई जो नैनी ॥
[illegible] है पतितन को [illegible] अद्भुत देत भाग [illegible] ।
नंददास जी जानि दृढ़ [illegible] एक रसना कहा कहूं बैनी ॥७॥

(१९१)

[illegible] यमुना [illegible] ।
[illegible] की निज [illegible] नाहिंन अति ही आतुर जो धाई ॥
[illegible] इच्छा नाहि नैनी साथ जो पुजाई ।
[illegible] नाथ पाहि [illegible] यमुना जू के गुण जो गाई ॥८॥

(१९२)

[illegible] जो गावैं ।
[illegible] बिन [illegible] नाहि पावैं ॥
[illegible] भुजि [illegible] आवैं ।
[illegible] ॥९॥

(१९७)

प्रात समय श्री वल्लभ सुत को पुण्य पवित्र विमल जस गाऊं ।
सुंदर सुभग वदन गिरिधर को निरखि निरखि दृग दुखन मिटाऊं ॥
मोहन मधुर वचन श्रीमुख के श्रवण सुनि सुनि हृदय बसाऊं ।
तन मन प्राण निवेदि वेद विधि यह स्वपनो हो सुफल कराऊं ॥
रहौं सदा चरणन के आगे महाप्रसाद उच्छिष्ट पाऊं ।
नंददास यह मांगत हौं श्री वल्लभकुल को दास कहाऊं ॥१८॥

(१९८)

आलस उनींदे नयन सलोने निहारे कहा तुम रैन बिताए ।
पीक कपोल देखियत है प्रिय अधरनि अंजन लगाए ॥
जावक भाल उर बिन गुण माल हृदय नख चिन्ह दिखाए ।
नंददास प्रभु चोर निसा के भोर होत उठि धाए ॥१५॥

(१९९)

नंदलाल जू के द्वारे भोरहि उठि पठाउ ।
निरखि आनंद सूरति निरखि नैन सिराउ ॥
उज्ज्वल तन धोती पीरी नाना अम्बर सोहै ।
मानहु कमल निरखि पूरण चंद की छबि को है ॥
[illegible] नवीन सुत कर अंगुरिया लागी ।
[illegible] निरखनि लोचन फल पायो ॥
[illegible] लागि फिरै ।
[illegible] फिरावनि फिरै ॥
[illegible] सुनाइ ।
[illegible] गाइ ॥१६॥

(१९७)

प्रात समय श्री वल्लभ सुत को पुण्य पवित्र विमल जस गाऊं ।
सुंदर सुभग वदन गिरिधर को निरखि निरखि दृग दुखन मिटाऊं ॥
मोहन मधुर वचन श्रीमुख के श्रवण सुनत सुनि हृदय बसाऊं ।
तन मन प्राण निवेदि वेद विधि यह स्वपनो हो सुफल कराऊं ॥
रहौं सदा चरणन के आगे महाप्रसाद उच्छिष्ट पाऊं ।
नंददास यह मांगत हौं श्री वल्लभकुल को दास कहाऊं ॥१४॥

(१९८)

आलस उनींदे नयन लाल निहारे कहा तुम रैन बिताए ।
पीक कपोल देखियत है प्रिय अधरनि अंजन लगाए ॥
जावक भाल उर बिन गुण माल हृदय नख चिन्ह दिखाए ।
नंददास प्रभु चोर निसा के भोर होत उठि धाए ॥१५॥

(१९९)

नंदलाल तू कै हारे सोवहि उठि प्यारे ।
निरखि सखा सूरति निरखि नैन निहारे ॥
उठत तन पौढ़ी पीढ़ि नाना अम्बर सोहे ।
मानहु मनो निरखि पूरन चंद की छबि को है ॥
[illegible] सोहत तू कर अंगुरिया नायो ।
[illegible] नयन निरखनि लोचन फल पायो ॥
[illegible] सखिन [illegible] लागि फिरै ।
[illegible] सिरानि [illegible] ॥
[illegible] सुनाऊ ।
[illegible] गाऊ ॥१६॥

निसि मैं कारी गहनि दई । सु० । फिरै तू नहि और । अहो ॥
गरुड़ नागन गरे धरे । सु० । विसम विष भरे नाग । अहो ॥
सो सहि है नीकुन दरे । सु० । चढे नद पर साल । अहो ॥
वृंदावन सिरि लाल भयौ । सु० । नव कुसुमाकर चाह । अहो ॥
ज्यौं तून मंडल जुवति के । सु० । मंडित मंजुल हार । अहो ॥
मनोन मुकुट मनि थान नू । सु० । लाल नलिक मनि माथ । अहो ॥
लीजै मगन चरन मनौ । सु० । पहनौ पिय, सो जाउ । अहो ॥
जिन्ह न लाल गपाल को । सु० । छुवत निहारे पाउ । अहो ॥
मोन छांडि मोहन मिल्यौ । नंददास बलि जाउ ॥१॥

(२०१)

कजरौरी होरी मचावै री ।
ज्यौं मैं चूनरि झटकि नावरौ कजरौरी ॥
स सा (?) लाल कन्हैया कर गहि लीनौ जु य ना यें दस्त चलावै ।
बोहनौ मुरलि मोहनी सरनि रंग भयौ धूम मचावै ।
नंददास प्रभु तुम कहु नायक, निरिनिरि कंठ लगावै री ॥२॥

'ड' प्रति से प्राप्त पद

(२०२)

[illegible] । [illegible] नागरी [illegible] अनूप ।
[illegible] । [illegible] मोहन [illegible] ।
[illegible] । [illegible] ।
[illegible] । [illegible] प्रतिबिंब ।

तिनि मैं कचोरी कहानि दई । सु० । पूरै तू नहि और । अहो ॥
गड़ुअ गंगाजल भरि धरे । सु० । बिसम बिष भरे नाग । अहो ॥
सो मनिहि नीकन धरे । सु० । चटे चंद पर नाग । अहो ॥
बृंदावन सिंगि रूच्छ भयौ । सु० । नव कुसुमाकर नाह । अहो ॥
ज्यौं कुल मंडल जुवति के । सु० । मंडित मंजुल हार । अहो ॥
नवनि मुकुट मनि थान तू । सु० । लाल रसिक मनि राय । अहो ॥
कीजै मंगल बसंत सबै । सु० । पहलै पिय सो जाउ । अहो ॥
सिन्धु न लाल गुपाल कौ । सु० । छुवत निहारे पाउ । अहो ॥
मान छांडि मोहन मिलौ । नंददास बलि जाउ ॥१॥

(२०१)

बनाओरी होरी मनावै री ।
ऐसी मैंनी चूनरि झटकि नावरी बनाओरी ॥
म जा(?)[illegible] कन्हैया [illegible] लीनी [illegible] चलावे ।
मोहनी मूरति मोहनी सरनि रंग भरी धूम मचावै ।
नंददास प्रभु तुम बहु नायक रिनिझिनि कंठ लगावै री ॥२॥

'ङ' प्रति से प्राप्त पद

(२०२)

[illegible] । [illegible] नागरी [illegible] अनूप ।
[illegible] । [illegible] मोहन [illegible] ।
[illegible] । [illegible] अंग ।
[illegible] । [illegible] अभिराम ।

[illegible] ।
[illegible] ॥३॥

(२०६)

[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥४॥

(२०७)

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥५॥

[illegible] मानों कन्हैया ।
[illegible] कन्हैया ॥३॥

(२०६)

[illegible]
[illegible] बनि दोनें ।
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
त्रिभुवन [illegible] ॥४॥

(२०७)

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] प्यारी ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥५॥

बिन्दावन खेली गली गोकुल की कहि न परै छवि भारी ।
ठौर ठौर किसोर बृन्दा बंदन रंगि गये सब अटारी ॥
ग्वालनि सहित सखा सांवरे सुन्दर अति आतुर ह्वै आये ।
मानों खंजन अवलाग विवस ह्वै अति लंपट उठि धाये ॥
पहिलें कान्ह कुंवर मनमोहन पिचका उन पर मेली ।
मानहु सीस सुधा करि सींची नवल प्रेम की बेली ॥
मुरि मुरि भजनि बचावनि छवि सों आवनि उलटनि सोहें ।
उमड्यौ अबीर गुलाल गगन में जो देखें सो मोहें ॥
हरि कर पिचका निरखि प्रियन के नैना छवि सों डराहीं ।
अंचल में उठि चलें मनहुं पुनि ढरकि मीन ह्वै जाहीं ॥
पिय के अंग प्रियनि के लोचन लपटे छवि लोभा ।
मानहु मुरि कमलनि करि पूजे भई है अनोपम सोभा ॥
छिन छिन छूटत कटाछ कुटिल सर उचटि उचटि चहुं लागी ।
मुरछित परयो तहां मैन महाभट रति भुज भरि ले भागी ॥
और कहां सों कहि आवे छवि जो कछु भई तिहि काला ।
नंददास प्रभु सब सुख बरषत ब्रजजन पर नंदलाला ॥७॥

(२१८)

जय बलि नागर श्री गिरधर लाल ।
आज भाग गोविन्द जू की कृपा मोहन परम रसाल ॥
रति पति बलि जायो छिपकली तुरंग अर्द्धरंग भाल ।
सो रस की गोपिन सब संहती नव नव नव गति चाल ॥
उपजै तट सुचार बाग धरि इहि विधि नंद व्रज लाल ।
नंददास स्वामी आनन्द निरखत लीला निहाल ॥८॥

बिंद्रावन सखी मानौ गोकुल की कहि न परै छबि भारी ।
छीटि छीटि किनार कुसुम बंदन रंगि गये सब अटारी ॥
गारनि सहित सखि गावैं सुंदर अति आतुर के आगें ।
मानौं कंचन खगजाल बिछल ह्वै अलि लंपट उठि धावैं ॥
पहिरैं कान्ह कुँवर मनमोहन पिचका उन पर मेली ।
मानहु सीस सुधा करि सींची नवल प्रेम की बेली ॥
घुरि घुरि अरगनि बजावनि छबि सों आवनि उलटनि सोहैं ।
घुमड्यो अबीर गुलाल गगन में जो देखे सो मोहै ॥
हरि कर पिचका निरखि त्रियन के नैना छबि सों डराहीं ।
अंचल मैं उठि चलैं मनहुं पुनि डरकि मीन ह्वै जाहीं ॥
पिय के अंग त्रियनि के लोचन लपटैं छबि लोभा ।
मानहु रुचि कमलनि करि पूजे भर्ठे हैं अलिगन सोभा ॥
खिन खिन छूटन कटाछ कुटिल सर उचटि उचटि चहुं लागी ।
मुरछि परयौ तहाँ मैन महाभट रति भुज भरि लै भागी ॥
और कहाँ लौं कहि आवै छबि जो कछु बनी तिहि काला ।
नंददास प्रभु सब सुख बरषत ब्रजजन पर नंदलाला ॥७॥

(२१०)

रंग बाढ़ि नागर श्री गिरधर लाल ।
संग लाड़ कीरति जू की कन्या मोहन परम रसाल ॥
तीन घरि नंदि लाड़ो छिरकनी कुसुंभ अरु रंग लाल ।
सब रंग सों भिजोई ब्रज सुंदरी गावत नव नव गति ख्याल ॥
उलहै उर अनुराग लोग पुनि इहि बिधि सब ब्रज लाल ।
नंददास स्वामी आनन्द निरखत होत निहाल ॥८॥

'ङ' प्रति से प्राप्त पद

(२१७)

प्रात समें पंछी बोलत हैं, छाँड़ौ हरि ! अंगन घर जाऊँ ।
ऐसी करौ जो कोउ न बूझै निस-दै-निस बहुरयौ फिर आऊँ ।
हठ करें होइ उजियारौ पंथ में, गमन समें लोगन की लाज ।
तुम तौ अपने भवन बिराजौ, मोहि कठिन लोगन सौं काज ।
चतुराई चतुरन ने सीखी, पर नारिन सों नाहिन जोर ।
नेह बिना कोउ पास न आवै, तनक बिचारौ नंदकिसोर ।
रसिक रसीले रस की ठानौं बिरस किऐं कछु रहै न स्वाद ।
नंददास प्रभु दुरजन बैरी, बिना बिचारें मिथ्या बाद ॥१॥

(२१८)

तुम कत नैं सीखे हौ लालन या लगन कौं जानन ।
सोवत नाहिं रैन दिन लगी रहै आसरें, कबहूँ हँस बोलत नाहिं आनन ।
ध्यान धरत पुनि अंक भरत हौ, गाइ उठत कबौं वाके गुन गानन ।
साँची कहत हौं बदन बिलोक्यौ भामिनी—
भेद बतायौ, कटाच्छन, नंददास पाइन परे त्रिन दै पानन ॥२॥

(२१९)

स्याम [illegible] आए सजनी, फिर पाछें कहूँ भागे ।
सोच परी मन में ऐसे [illegible] नन त्यागे ।
डरी नैन [illegible] , [illegible] न हिँग, तुम पागे ।
नंददास [illegible] हैं [illegible], [illegible] लागे ॥३॥

'ङ' प्रति से प्राप्त पद

(२१७)

प्रात समैं पंछी बोलत हैं, छाँड़ौ हरि ! अंतर घर जाऊँ ।
ऐसी करौ जो कोउ न बूझै निस-ही-निस बहुर्यौ फिर आऊँ ।
हठ करैं होइ उजियारौ पंथ में, गमन समैं लोगन की लाज ।
तुम तौ अपने भवन बिराजौ, मोहि कठिन लोगन सौं काज ।
चतुराई चतुरन ने सीखी, पर नारिन सों नाहिन जोर ।
नेह बिना कोउ पास न आवै, तनक बिचारौ नंदकिसोर ।
रसिक रसीले रस की ठानों बिरस किएँ कछु रहै न स्वाद ।
नंददास प्रभु दुरजन बैरी, बिना बिचारें मिथ्या बाद ॥१॥

(२१८)

तुम कब तैं सीखे हो लालन या लगन कों जानन ।
सोवत नाहिं रैन दिन लगी रहै आसरें, कबहूँ हँस बोलत नाहिं आनन ।
ध्यान धरत पुनि अंक भरत हो, गाइ उठत कबौं वाके गुन गानन ।
सांची कहत हौं बदन बिलोक्यौ भामिनी—
भेंट जनायौ, कटाच्छन, नंददास पाइन परे त्रिन लै पानन ॥२॥

(२१९)

स्याम स्यामसुंदर आए सजनी, फिर पाछें कहूँ भागे ।
नींद परी सपने में देखे बिलग्यौ बसन तन त्यागे ।
[illegible] नैन भर नैना [illegible], [illegible] न छिँग, दुख पागे ।
नंददास [illegible] कैसे जीवे, पंथ चलन डर लागे ॥३॥

[illegible] लाज डर मान कौ, मात पिता की कान ।
सो मोहन तैं छाँड़ि सबै, और भयो जिय आन ॥
कहत गई पिय रैन है, कहत जु तमचुर भोर ।
बाज उठन लाग्यौ भयौ, रह्यौ रैन अब थोर ॥
मैंन मूँद, कर जोर कें, विनवौं आली ओट ।
[illegible] की यह टेर है, परियो तमचुर चोट ॥
तमचुर तू मर जाइयो, विधना को कर दोस ।
तीन मास सिर पर छयौ, कातिक, मगसिर, पौस ॥
मोंहि जन मन कलप करि, छिन न वियोग सुहाइ ।
दोउ चकवाँ, का करैं, मन मन देव मनाइ ॥
कोकिल और पपीहरा, चक बोलौ बन मोर ।
नंददास याँ याव न बोलै, कहियतु है चितचोर ॥६॥

(२२३)

आओ री [illegible] माई कौन को किसोर ।
सोंधे बरन, मन हरन, बंसीधरन, काम करन सी गति जोर ॥
पवन चलनि गात लगत होत [illegible] बिथुरे पट की चटकीली छोर ।
सुन सोंधी छोटी [illegible] में निकसि आई,
के छबीली छटा कौ जैसो छबीली ओर ॥
पूँछति चाहती [illegible] हाहा ही भोरी
कहा गाउँ को है चित चित चोर ।
नंददास [illegible] [illegible],
[illegible] ओर ॥७॥

(२२४)

[illegible] ।
[illegible] ॥

[illegible] लाज डर मान कौ, मात पिता कौ कान ।
सो मोहन मैं छांडि चले, और भयौ निज आन ॥
[illegible] कहाँ पिय रैन है, कपट सु नन्दकुमार चोर ।
मान दुहुन समयौ भयौ, रह्यौ रैन अब भोर ॥
नैन मुंद, कर जोर कै, बिनवौं ओली ओट ।
[illegible] की यह टेर है, परियो तमचुर चोट ॥
तमचुर तू मर जाइयौ, बिधना को पर दोस ।
मोहि काल सिर पर छयौ, कातिक, मगसिर, पौस ॥
मोरी तन मन कलप करि, छिन न बियोग सुहाइ ।
दोउ पखानौं, का करैं, मन मन दैव मनाइ ॥
कोकिल और पपीहरा, बक बोली बन मोर ।
[illegible] नहीं आज न बोलै, कहियतु है चितचोर ॥६॥

(२२३)

आजौ री [illegible] माई कौन कौ किसोर ।
[illegible] बदन, नव भूषन, बनीठन, [illegible] कैसी भांति जोर ॥
पवन परसि [illegible] होत [illegible] बिखरे पट कौ चटकीली छोर ।
[illegible] छोटी पटा मैं निकसि आई,
कै छबीली छटा कौ जैसो छबीली ओर ॥
[illegible] हुता ह्वै [illegible]
[illegible] की है चित बिन चोर ।
[illegible],
[illegible] री [illegible] रजनी भोर ॥७॥

(२२४)

[illegible] ।
[illegible] ॥

कोउ कछु कहति, कोउ कछु गावति, कोउ बजावति तारी ।
नंददास प्रभु मोहनलाल के, अब ह्वै बैठे पारी ॥११॥

(२२८)

लगन लाग्यौ तरनि परत अति घाम मैया, यहूँ छाँह सीतल जित देखौ ।
भोजन कौ भई अबार, लागी है भूख भारी, मेरी ओर तुम पेखौ ॥
ब्रज की छैयाँ कुंजन की बिरियाँ, मैयाँ सिमिटि इहाँ आवै ।
नंददास प्रभु कहत सखन सौं, यहै ठौर मेरे जिय भावै ॥१२॥

(२२९)

जहाँ हरि भोजन कीने, आई छाक इक बार ।
ये बैठी छबिहारी कदम तर, रूप रसिक सुकुमार ॥
उमग्यौ घन, घटा चहुँ दिस ते, लागी परन फुहार ।
उमहि चली नदि नीर स्यामिनी, करति नमनि बलिहार ॥
गार, कर ऊँची बाँह वृन्दावन, चल आए सब ग्वार ।
नंददास प्रभु की मंडली, बैठे नंदकुमार ॥१३॥

(२३०)

लाल कुंवर बिपिन कुंज बसन्त नई ।
नूतन नौतन सुगन्ध, स्याम सोभित जहाँ,
माधुरी मधुर अति पीत कुसुम छई ॥
त्रिविध बयारी मंद सुगंध सु जु बहै,
मधुप गुंजार, सुर कोकिला धुनि ठई ।
जहँ रसिक श्री वृषभानु की लाड़िली लली—,
नंददास हिय हरखी सोभा भई ॥

कोउ कछु कहति, कोऊ कछु गावति, कोऊ बजावति तारी ।
नंददास प्रभु मोहनलाल के, सब ह्वाँ बैठे पारी ॥११॥

(२२८)

तपन लाग्यौ तरनि पवन अति घाम भैरा, कहूँ छाँह सीतल जिन देखी ।
मोहन कों भई अवार, लागी है भूख भारी, मेरी ओर तुम पेखौ ॥
बर की छैयाँ कुँवर की छिरियाँ, गैयाँ सिमिटि इहाँ आवैं ।
नंददास प्रभु कहत सखन सौं, यहै ठौर मेरे जिय भावै ॥१२॥

(२२९)

अहो हरि भोजन कीजै, आई छाक इक बार ।
तै बैठी छबिहारी कदमतर , रस रसिक सुकुमार ॥
उमगी घटा, घटा चहुँ दिस ते, लागी पवन फुहार ।
उलहि चली नदि नीर कालिन्दी, करति नमनि बलिहार ॥
टेर, कर ऊँची बाँह वृन्दावन, चल्न आए सब ग्वार ।
नंददास प्रभु की मंडली, बैठे नंदकुमार ॥१३॥

(२३०)

लाल वृंदा बिपिन कुंज अद्भुत नई ।
परम सीतल सुखद, स्याम सोभित तहाँ,
माधुरी मधुर अति पीत फूलन छई ॥
विविध फूली सेज कुसुमन कुसुम रचे,
भ्रमर गुंजार, सुर कोकिला धुनि ठई ।
तहाँ राधिका श्री वृषभानु की लाड़िली बनी—,
नंददास हित कुल्हौ सोभा नई ॥

तन कनुकार किंकिनि नूपुर की, परिपूरन रस प्रेम पगैगो ।
नंददास करन है पीछे, बाँसी नेह लगैगो ॥१८॥

(२३५)

ठाढ़ सजन झाँकी सियकी ।
गाढ़ रंग किन्न बैठि गावे, अंचल ख्याल करत सिय पिय के ॥
कल्हौंक नौर देनि श्री कुंज में नाद मनोहर अपने हिय के ।
नंददास प्रभु रंग मंदिर में प्रान पियारी अपने पिय के ॥१९॥

(२३६)

आली री नवल कुंज पहुप पुंज उर्मि की लावटी,
नारंगि गजल पीतम प्यारी ।
संगत धार नागि नाई ब्रज बाम,
जिमादन प्रग निर्वाहू गूंथन हार निवारी ॥
कोऊ बिजना कर गहूँ, कोऊ पगतत पिय कों,
कोऊ जलाजा पनि लावत, फलन की कंचुकि सारी ।
नैंगत न्हाना न्हान, देखि नजानें गोद गाम,
नंददास नहां पें जाउ बलिहारी ॥२०॥

(२३७)

ठाढ़े ललन कदम्ब न्हाम ऐसी घटा न्हान कुंज न्हाम देखत मन ।
ललन बैठ निकुंजन, आनन्द अब नाद न न्हान पूर्वी बरी पन छुन ॥
न्हानन प्रतिन्हानन न्हान छुरु छाँदि भूरि भाग, धनि धनि कहूँ गोपीजन ।
नंददास प्रभु पै दूँ कुंज ठाढ़ नाद कैसों अवलोकी नन मन धन ॥२१॥

[illegible] कौं, परिपूरन [illegible] प्रेम [illegible] ।
नंददास [illegible] पीजै, [illegible] ॥१८॥

(२३५)

[illegible] झाँकी [illegible] ।
[illegible] गाढ़े, अंचल [illegible] हिय पिय के ॥
[illegible] देखि श्री मुख में नाद मनोहर अपने हिय के ।
नंददास प्रभु रंग महल में प्रान पियारी अपने पिय के ॥१९॥

(२३६)

आली री नवल कुंज पुहुप पुंज ज्योति की नगरी,
नागरि नागर पीतम प्यारी ।
अंचल धार नागरि मांहि ब्रज धाम,
[illegible] प्रान निर्वाहि गुंथत हार निचारी ॥
कोऊ [illegible] कर गहैं, कोऊ पकरत पिय कों,
कोऊ [illegible] पनि गावत, फूलन की कंचुकि नारी ।
[illegible], देखि लजाने कोटि काम,
नंददास तहाँ पै जाइ बलिहारी ॥२०॥

(२३७)

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
नंददास प्रभु [illegible] ॥२१॥

सुधा में मधुर कियौ, ओंठ ओट मुरत कियौ,
तन मन के फेरि लियौ नंद घर कों गयौ ।
नंददास प्रभु प्यारी, तदपि न कछु बस्य सरयौ,
फेरि आइ चमक परयौ, विधि बूझत न दयौ ॥२५॥

(२८२)

प्यारी तेरौ बदन चंद देखत, बस भए कुंजबिहारी ।
उझकि झरोखन में नी मग निरखत (निरखन?) वारंवार सँभारी ॥
तो बिन रहि न सकत लालन प्रान प्यारी,
ऐसी निठुराई तू जुनि री कुमारी ।
नंददास प्रभु प्यारी रूप गुन उजियारी,
ऐसे प्रानपति सों मान करत, तू चल लाज निवारी ॥२६॥

(२८३)

सुनरि सयानी दूती, जाँनि पीतम पें गई है जगाइ ।
वे तौ नहिं मानत, कोट जतनन किये,
हौं पचिहारी बहुत मनाइ ॥
आप ही मनाइ लीजै, मो सों ऐसें कह्यौ,
सुनौ अब कहा कीजै आन दूसरौ उपाइ ।
नंददास प्रभु ऐसी सुन आतुरी पधारे,
तब पीहे अपनी प्यारी कों उर लाइ ॥२७॥

'ग' प्रति से प्राप्त पद

(२८४)

जिते जिते चाहें हमा लगाइ तन छिन वेई बन्योंटी पान ।
जिते उपहन करनन कौं तट ससुदिन मन अकुलान ॥

सुन्दर मैं तसवीर लिखी, छाँड़ चोट सुरत लिखी,
तन मन के फेरि लिखी तन धन कैं गयो ।
सेवकजन प्रभु प्यारी, तदपि न कछू कहत सख्यौ,
फेरि आइ समुझ परयौ, विधि वूझन न दयौ ॥२५॥

(२८२)

प्यारी तेरो बदन चंद देखत, बस भए कुंजबिहारी ।
उरोज मंडल में नो नख निरखत (निरखन?) वारंवार सँभारी ॥
तो बिन रहि न सकत मनमोहन प्रान प्यारी,
ऐसी निठुराई तू सुनि री कुमारी ।
सेवकजन प्रभु प्यारी रूप गुन उजियारी,
ऐसे प्रसादीन सो मान करत, तू चल लाज निवारी ॥२६॥

(२८३)

कुंजनि मानवती हुती, जानि पीतम पै गई है जनाइ ।
वे तौ नहिं मानति, कोट जतनन किएँ,
हौं पचिहारी बहुत मनाइ ॥
आपु ही मनाइ लीजै, मो सौं ऐसैं कह्यौ,
सुनौ अब कहा कीजै लाल दूसरौ उपाइ ।
सेवकजन प्रभु ऐसी सुन आतुरी पधारे,
तब दीन्हें अपनी प्यारी कों उर लाइ ॥२७॥

'ग' प्रति से प्राप्त पद

(२८४)

जिते जिते चारौं रूपा लपटि नव छिन बैठे बनमांटी पान ।
जिते उपवन सघन कौं मद समुदित मन अनुमान ॥

(२५७)

[illegible] गुआर ।
[illegible] हार ॥
[illegible] सुनाति ।
सेनापति प्रभु [illegible] तो किन हू न पायो पार ॥४॥

(२५८)

[illegible] मेरे जीय मैं बसति
[illegible] न [illegible] ।
सेनापति ऐसे प्रगट [illegible]
जैसे [illegible] नयन ॥
[illegible] छिपाई न छिपत [illegible]
[illegible] ।
सेनापति प्रभु प्यारी [illegible]
[illegible] नयन ॥५॥

(च) सुदामा चरित

[illegible] सुदामा नामा, [illegible] द्वारिका [illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] न [illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।

([illegible])

[illegible] ।
[illegible] ॥
[illegible] ।
[illegible] ॥४॥

([illegible])

[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥
[illegible]
[illegible] ।
[illegible]
[illegible] ॥५॥

(च) सुदामा चरित

[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।
[illegible] ।

गही चंदन, सारंग मनि आई, श्री सुन्दरि, सखनि सति धाई ।
भवन स्याम कों सोहित सबही, सोभा रहति पौरिया सब ही ।
आये भयो द्वारि पै द्विज-वर, एकु पौरिया आइ गयौ घर ।
ये गयौ जहँ रुक्मिनि कौ मंदिर, बैठे जहँ जदुनायक सुन्दर ।
पौरि खरो ब्राह्मन है आयौ, हिय सुख निरखति अति रति बाढ़ी ।
सर्वसि सहसा-सम जानी जाहीं, प्रेम-विवस तन देति न सकहीं ।
दौरि परे द्विज पर नहँ गवही, अकवाइ हरि दौरे तबही ।
भरे मिले, कहि अति मृदु बानी, मंदिर भरि आए दृग पानी ।
पकरे आसन द्विज बैठारे, निज कर-कंजनि चरन पखारे ।
पोंछत चरन पग जग-नायक, अपने दिये पट सुखदायक ।
सकल साहि पट अटक रहत तब, रमा सुन्दरी मुसकि परत तब ।
सुन्दर भोजन विविध प्रकारी, आनि धरे भरि कंचन थारी ।
जो भावै कबहूँ नहिं करयौ, आंगनि मनमा निज कर परसै ।
नाहिं खाइ द्विज सुख नहिं मान्यौ, परमानंद कंद तन सान्यौ ।
तै बैठे पुनि श्री जदुनाथा, सुधि कीनी गुरुकुल की गाथा ।
कहै मित्र ! जब ईंधन कानन, गुरु पतनी पठए हम कानन ।
घोरन ईंधन जब लिदि आए, अति अंधिर सौं जल बरसाए ।
बरसत बरसत पल नहिं रजनी, तिन्ह नगर कौ डगर सु न जनी ।
भूखे फिरे सैन नहिं सकरी, तऊ न गुरु की पाई नगरी ।
भयो समान तब गुरु पै आए, करि ईंधन तहँ सीस नवाए ।
ते दिन भले हुते अबहूँ तब लौं, रहे गयो ठौर ठौर मिल ब्रज लौं ।
कहौ भाई भिलि तिन्हहि तुम्हारौ, सानी कछू दियौ है हमकौं ।
ल्हिरमा छोरि नीर में भीजे, पर मूँठी निज-मुख में दीन्हे ।
तिसरी देन मनुहि बाल दीन्हे, गहि कर रमा ! रुक्मिन गहि लीन्हे ।
रात बात बैठे द्विज साथी, स्याम बात करि नाना भाँती ।
सोय रहे तिन सेज बिछाये, सबै सोहि बहुबक पुनि हारे ।

गयौ मंदिर, नन्द सुनि आऐ, सो सुन्दरि, नगनि गति धाऐ ।
सुमन स्याम कौं सोहित सबही, रोयौ चहति पीनिया सब ही ।
आयौ भयौ ठाढ़ि पै द्विज-वर, एकु पनिया आइ गह्यौ कर ।
लै गयौ जहँ रुक्मिनि कौ मंदिर, बैठे जहँ जदुनायक सुन्दर ।
मंदिर चारु कंचन है जाही, दिव गुन निरखति अति रति बाढ़ी ।
सरिस महा-रत बानी जाहीं, प्रेम-विवस रत देखि न सकहीं ।
दृष्टि परे द्विज वर जहँ तबही, अकुलाइ हरि दौरे तबही ।
भरे मिलें, कहि अति मृदु बानी, भेंटनि भरि आए दृग पानी ।
पलंग आसन द्विज बैठारे, निज कर-कंजनि चरन पखारे ।
पोंछे रुक्मिनि पग जग-नायक, अपनें दियरे पट सुखदायक ।
चरन माहिं पट अटक रहत तब, रमा सुन्दरी मुसकि परत तब ।
सुन्दर भोजन विविध प्रकारी, आनि धरे भरि कंचन थारी ।
जो भाये कबहूँ नहिं चखे, श्रीपति तनता निज कर परसे ।
नाहिं तात द्विज रूप नहिं मान्यौ, परमानंद कंद रस सान्यौ ।
लै बैठे पुनि श्री जदुनाथा, सुधि कीनी गुरुकुल की गाथा ।
कहे मित्र ! जब ईंधन आनन, गुरु पतनी पठए सब कानन ।
लेन ईंधन बन दिसि आए, अतिहि जोर सों जल बरसाए ।
कम्पत बरसत घर नहिं जानी, तिनहू नगर कौ डगर सु न जानी ।
भूले फिरे रैन नहँ भागी, तऊ न गुरु की पाई नगरी ।
भयौ प्रभात सब गुरु पै आए, करि ईंधन गहे सीस नवाए ।
द्विज भले तुम मेरे सब सौं, सब घरी ठौर ठौर बिन इक तौं ।
सुमिरि कहे विविध तिनहिं दुखानी, काली कछु लियौ है हमनी ।
[illegible] छोरि पौर लै छीने, कर मुट्ठी निज-मुख मैं दीने ।
[illegible] [illegible] बहुरि [illegible] कीने, [illegible] ! [illegible] नहिं लीने ।
[illegible] [illegible] देखे [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] करि [illegible] भोगी ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दिखाये, [illegible] नाहिं [illegible] पुनि हारे ।

नासिकेत पुराण (उद्धरण)

(१)

[illegible] ब्राह्मणी विषै रह्यो है। सो एक दिन गन्ध नगर का [illegible] [illegible] दिन नाग की बंबई पूजिबे नूं चली है। जब पुंडरीक नाग [illegible] कन्या कू पूछित भयौ। तुम कहां जात हौ। जब कन्या [illegible] नागहि नौ नाग पूजिबे कूं जात हैं। जब पुंडरीक नाग बोल्यौ [illegible] कन्या हूं तोसु एक गुझ की बात कहूं। जो तो कहूं तै [illegible] [illegible] नाहीं। [illegible] ब्राह्मण की कन्या [illegible]। [illegible] ही हूं। [illegible] [illegible] कहूं तो सो कूं [illegible]। [illegible] भागि जु तुम सो [illegible] गुझ की बात कहत हौ। न (कि ?) पुंडरीक बोल्यौ है। पुंडरीक उवाच। तू हमारी [illegible] है अरु बहुत प्यारी है। तेरे घर हूं नाग [illegible] घरै हूं आऊंगो। तू [illegible]। घर ही विषै नाग [illegible] नौ बांबी [illegible] कू [illegible]। पुंडरीक नाग ब्राह्मण के घर आयौ है। अपनों [illegible] नाग को [illegible] है। [illegible] भयौ है। अरु [illegible] को पीहोद है। अरु [illegible] को [illegible] है। जब वह कन्या। नाग कौ पूजा करी है। विधि [illegible] करी है। तब [illegible] की [illegible] देखि के अचरज भई है। हे देव [illegible] है। नाग की [illegible] जब वह कन्या पूजि करि परक्रमा [illegible] [illegible] नूं [illegible]। वह नाग मेरो [illegible] है। तब माता [illegible] नाग है। नूं [illegible] है। [illegible] [illegible] नाहीं। [illegible] वह [illegible] है तू [illegible] नाहीं। [illegible] भी [illegible]। अरु [illegible] पुंडरीक तू [illegible] सुनि करि मन मैं [illegible] भयौ। [illegible] कू [illegible] नाहि। [illegible] कूं [illegible] है। [illegible] है। [illegible] है। तब [illegible] है। [illegible] नू [illegible]। [illegible]

नासिकेत पुराण (उद्धरण)

(१)

[illegible] बानारसी विषैं रहतौ है। सो एक दिन [illegible]
[illegible] दिन नाग की बेवई पूजिबे कुं चली है। जब पुंडरीक नाग
[illegible] कन्या कूं पूछत भयौ। तुम कहां जात हौ। जब कन्या
[illegible] कह्यौ मैं नाग पूजिबे कुं जात हौं। जब पुंडरीक नाग बोल्यौ
[illegible] कन्या हूं तोसुं एक बात कहूं। जो तो कहूं नै [illegible]
[illegible] कहूं नाहीं। यदि ब्राह्मण की कन्या कहाँ। तुमाहि सौ हूं।
तुम्हारौ [illegible] कहूं तो सौ कुं मोहिहै। मेरौ वडौ भाग्य जु तुम सौ
[illegible] एक की बात कहत हौ। न (नि ?) पुंडरीक बोल्यौ है।
पुंडरीक उवाच। तू हमारी बाली है अरु बहुत प्यारी है। तेरे घर हूं नाग
को बेहौ धरै है आऊंगौ। तू ध्रपै मति। घर ही विषैं नाग होइ सौ वाकी
[illegible] हूं करवै। पुंडरीक नाग ब्राह्मण के घर आयौ है। अपनौ नाग
नाग कौ [illegible] है। [illegible] भयौ है। अरु कन्या की पीहोद है। अरु
[illegible] की पांव है। जब वह कन्या। नाग की पूजा करी है। विधि
[illegible] करी है। तब वाही की माता देखि के अचरज भई है। हे देव
[illegible] है। नाग की [illegible] देखी जब वह कन्या पूजि करि परक्रमा
करी [illegible] नाग नूं कहौ। यह नाग मेरौ भरतार है। तब माता
[illegible] यहु तौ नाग है। तूं [illegible] है। तोहि याहि जोगि नाहीं।
[illegible] वह [illegible] है तू जानै नाहीं। [illegible] भी बारं। अरु
[illegible] सौ बारि तब पुंडरीक तू [illegible] मन मैं [illegible] भयौ।
[illegible] नाग [illegible] कहिबे नाहि। [illegible] हूं [illegible] है।
[illegible] है। [illegible] है। तब [illegible] ने
[illegible] है। तब वही [illegible] भरतार न करौ। जा विधि पूजा

गमन कर्यो है। तब गरुड़ जी पुंडरीक नैं पकरी नागिन लै चल्यो ऐसा कही
बीन जतन कर्यो है। तब विज्ञापन कियौ है तब गरुड़ जी बोल्यौ है। कहौ
पुंडरीक कौन कथा कौ गौन करना कह्यौ। काहि तुम्हारी काल है। तब
पुंडरीक भय कंपन भयौ है। तब बोल्यो है। गुसांई जी आगैं एक धी
आन [illegible] नहीं। तब ब्राह्मन की कन्या। नागपतिनी बोल्यौ
कहि है। तब तुम्हारे ही। कन्या ब्राह्मन की नागपतिनी मन में कही।
गरुड़ जी आपना पुत्र सु पुंडरीक पर कीयो है। अबै नाग पतिनी गुरु धरम
की इच्छा मनन भई है। अब ध्यान कौ मारनौ (मर्ना ?) कही दैगी।
गरुड़ जी श्लोक कहि कै कहत है। श्लोक। एकाक्षर प्रदातारं यो गुरुं
नाभिमन्यते। श्वानयोनिशतं गत्वा चाण्डालेष्वभिजायते॥ वार्ता।
तब गरुड़ जी कहत है मेरे तुम गुरु हौ। तुम वचन करि मन माँहि [illegible]
[illegible] कह्यौ। निरभै रहौ। तुम अब मैं ब्राह्मन को रूप धरि करि वेद
कौ उच्चार [illegible] तुम कु छोडौंगो। अब हूं [illegible] भयो। अब
तब एक ब्राह्मन [illegible] की अस्तुति करि कु चाल्यो है। सूधौ महाराज
की [illegible] करि [illegible] पै चाल्यो है। दोनो एक नगर में भिक्षा करन
गए है। भिक्षा काहू नै घाली नाहीं तब ए दोनों के प्रान छूटन लागे।
[illegible] दुर्दिन के [illegible]। तब एक हाथी के थान महाजन के पास आए
है। तब महाजन हाथी का जूठा चना दीना है। तब दोनों जूठे चना
खाये है। [illegible] की [illegible] गांठि बांधि लाई है। दोनों के प्रान भयो
है। ए दोनों [illegible] चले है। तब [illegible] पूछत है
[illegible] तब ब्राह्मन बोल्यो है चना [illegible] ए चना
[illegible] पूं [illegible] होत है। ए महाख्यान है। तब [illegible] बोल्यो है
[illegible] की [illegible] नहीं [illegible] जात है। तब ब्राह्मन
बोल्यो है। [illegible] महाराजा। जो [illegible] करिये तो
[illegible] चाहिये। [illegible] करीये। [illegible] चना खाते
है . . .

गमन कर्यौ है। तब गरुड़ जी पुंडरीक नें पकरी नागिन लै चल्यौ एसा कहौ सौंप उलट कर्यौ है। तब विचार कियौ है जब गरुड़ जी बोल्यौ है। यहाँ पुंडरीक सौंहि कथा कौ गोस करना नहीं। क्योंकि तुम्हारी काल है। जब पुंडरीक भय कंपित भयौ है। तब बोल्यौ है। गसाईं जी आगें एक पी ब्राह्मन पीछैं मोकौ छाँड़ि नहीं। तब ब्राह्मन नें गरुड़ा। नागपतिनी छोड़ीन पति हौ। तब तुम्हारा हौ। कल्पा ब्राह्मन जी नागपतिनी मन में कह्यौ। गरुड़ जी आज्ञा एक सु पुंडरीक पर कीनी है। यहै नाग पतिनी सुन धरम कौ इच्छा मनन भई है। अब ब्यान कौ मानत (नर्मा ?) कही हैगी। गरुड़ जी पुंडरीक कहि कैं कहत है। श्लोक। एकाक्षर प्रदातारं यो गुरुं नाभिमन्यते। श्वानयोनिशतं गत्वा चाण्डालेष्वभिजायते ॥ व्याख्या। जब गरुड़ जी कहत है मेरे तुम गुरु हौ। गुरु बचन करि मन मोहि मोनु मानि करौ। निरमै रहौ। तुम अब मैं ब्राह्मन कौ सरन धरि करि वेद कौ उच्चार कीजियौ तातैं तुम कु छोड़ौंगौ। अब हूं नागौ भयौ। अब तब एक ब्राह्मन राजा कौ अस्तुति करि कै चल्यौ है। भूपी महाराज की आज्ञा करि राजा पै चल्यौ है। दोनो एक नगर में भिक्षा करन गए है। भिक्षा लेइ कै चाल्यौ नाहीं तब ए दोनों के प्रान छूटन लागे। कल्पौ पुंडरीक के देन लिया। तब एक हाथी दे चाल महाराज के पास आए हैं। तब महाराज हाथी का जूठा जल दीना है। तब दोनों भूखे प्यासा चाल्यौ है। कल्पौं नो हाथनी गांठि बाँधि धरै है। होंग मैं प्रान भयौ है। ए दोनों जरि गए हैं। तब कल्पौ पुंडरीक पर अपन ग्रहन है महाराज एसो पाप भया है। तब ब्राह्मन बोल्यौ है तब जानि कै ए, पापा करत पापनि हूं नाहीं होत है। ए महाअज्ञान है। तब कल्पौ बोल्यौ है पुराई मारि कौ नरक भया नहीं आज कैसे नरक जात है। तब ब्राह्मन बोल्यौ है। नरकनौं महाराजौ। जो आपनौं प्रान दान करियै तौ पाप सारौं नाहियै। ज्योति ए नाहिन करियै। तातैं काहि जना जातै है....

(६)

"॥श्री राम जी॥ श्री गणेशायनमः ॥ अथ नासकेत पुराण लिख्यते ॥ अथ नासकेत महात्मा कथा लिख्यते ॥ नासकेत पुराण भाषा करि नंददास जी ब्राह्मण मिश्र सै कहत है। सो याह कथा कैसी है ॥ या कथा महाभारत पुराण वैसंपायन रिषि राजा परीक्षित को पुत्र जनमेजय की कथा कही है ॥ और जनमेजय या कथा सुणी परम गति की प्राप्ति भयौ है। और सर्व पाप गये है। और स्वामी नंददास जी ब्राह्मण मिश्र सै भाषा करि कहत है। मिश्र कुन्दन है गुसाईं जी मेरै अभिलाषा नासकेत पुराण सुणिवा की इच्छा कहत है सोनै भाषा वाच्या कहौ। संस्कृत मै समझौ नही। तदै नंददास जी कहत है मिश्र सौ और वैसंपायन रिषि राजा जनमेजय सौ कह्यौ है। रिषि कहत है राजा परीक्षित को सराप भयौ है, तक्षक की [illegible] श्रृंगि रिषि [illegible] रिषि का पुत्र को सराप भयो है तक्षक डसिगे सो जब राजा जनमेजय पिता का वैर निमित्त जग्य रच्यौ है सरप होमि सर्व निमित्त जग्य को आरंभ कीयौ है। जग्य पूरण करिवे रच्यौ है और वेद मंत्र की सक्ति सै सरप आवत भयौ है तब तक्षक नाग भाज्यौ है आय इन्द्र सरण को सरण धर्यो है नाग की भी देह धरै अरु मनुष्य की भी देह धरै। मनुष्य है सो ब्रिह्म को जीव है तोक्षकी नाग है और सेस नाग भागि है सो इन्द्र के सरणै जाय रह्यो है और सगर प्रथ्वी को भार फन पे धर्यो है। जे [illegible] इंद्राय स्वाहा नी इंद्र आदि सबनि मै आय पर्यो ॥ [illegible] वेद मंत्र [illegible]। और पुंडरीक नाग भागो है। सो [illegible] जाय पर्यौ है। और पुंडरीक नर देही धरी है ॥ और [illegible] है और वेदान्त [illegible] और [illegible] मै [illegible] है। इह प्रकार पुंडरीक नाग [illegible] रह्यौ है। एक दिन [illegible] की [illegible] की दिन नाग [illegible] पुजिवा चाल्यौ है तब पुंडरीक नाग एक ब्राह्मण की कन्या.... ।"

(३)

"।श्री राम जी।। श्री गणेशाय नमः ।। अथ नासकेत पुराण लिख्यते ।। आदि संस्कृत महाभाषा सोर लिख्यो है ।। नासकेत पुराण भाषा करि सदानंद जी स्वामी शिष्य के कहत है । सो याह कथा जैसी है ।। या कथा महाभारथ पुराण वैसंपायन रिषि राजा परीछित को पुत्र जनमेजय को कथा कही है ।। और जनमेजय या कथा सुणी परम गति को प्राप्ति भयो है । और सर्व पाप गये है । और स्वामी सदानंद जी आपण सिष्यनि भाषा करि कहतु है । सिष्य पूछत है गुसाई जी मेरे अभिलाषा नासकेत पुराण सुणिबा की इच्छा करत है सो ते भाषा बारता कहो । संस्कृत मैं समझौ नही । तदै सदानंद जी कहत है सिष्य सो और वैसंपायन रिषि राजा जनमेजय सो कहो है । रिषि कहत है राजा परीछित को सराप भयो है सृंगी की मारी सोहि तक्षिक सर्प डस्यो सोगी रिषि का पुत्र को सराप भयो है तत्पर हस्तिनापुर को जब राजा जनमेजय पिता का वैर निमित जग्य रच्यो है सरप होमि सर्व निमित जग्य को आरंभ कीयो है । जग्य पूर के लिये रच्यो है और वेद मंत्र की सकति ते सरप आवत भयो है तब तापी नाग भाग्यो है आप पति स्वार को सरन पर्यो है नाग की भी देह धरे अर मनुष की भी देह धरे । सरप है सो छिपि को जीव है तोपली नाग है और सेस नाग भागे है सो इन्द्र के सरनै जाय रह्यो है और सकल पृथ्वी को भार फन सो धर्यो है । जै विसारूप बनी कहे इंद्राय स्वाहा सो इंद्र आदि सरनि मैं आय पर्यौ है ।। पाँति वेद मंत्र उजागर लिखना । और पुंडरीक नाग भाग्यो है । सो बानारसी बिषै जाय पर्यो है । और पुंडरीक नर देही धरी है ।। और महाविद्वान है और वेदान्त ग्रंथ सकल पढ्यो और सबद बाणी मैं प्रवीण है । इह प्रकार पुंडरीक नाग बानारसी विषै रह्यो है । एक दिन सुन्दर सरूपी सो बनारसी विष्णु पार्वती दिन नाग को संबंध पूछिवा चाली है तब पुंडरीक नाग एक ब्राह्मण की कन्या.... ।"

मानस ललनानी कमल अरुनाई अनुराग ।
ऐ मुकुर पारस मनो मनरंजन सो बिराग ॥८॥

अँगुरी

अँगुरी सुम पल्लव सरस कल्पलता पंचाग ।
नखमनि कैधौं कपों अधि अल पुनि करीये फाग ॥९॥

जोबन

जोबन भानुप अजब कहु बरनन सुकवि प्रवीन ।
कनुका सोंधन मध्य प्रभु सोंधन मानस दीन ॥१०॥

कुच

कनक उर्ध उमाल नव बनी बिसाल सुआनि ।
चंद उठ्यो जैसें मनों उदर नाप्यो तानि ॥११॥

कपोल

गंड कपोल मुगाल नैं क उदर्द नी करै नीय ।
स्याम जु लट छूटी मनों ज्योति मकान सो दीप ॥१२॥

जंघ

उपमा मध्य जंघ गुन बैसन्धर कह नाग ।
कहु मानिन ताव नृप या जंघ पूर्व कहु भाग ॥१३॥

जानु

कदली जानु आलाय पुनि मीन-निरोधा मंध ।
जोबन की उनमान नै कह कोविद नव कोय ॥१४॥

हिन्डा

नूपुर सुबेनी नवल कहि बसना धारी नाह ।
हिन्डा कौलिंद बरनरी कविता मढे निन्दाह ॥१५॥

नख-शिखा

बरनि कुची संजन मढै कठिन माल मनि हीन ।
निरखि सिर लख कलस पलों निरखत मनि के तीर ॥१६॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
कै सुन्दर [illegible] [illegible] [illegible] सो दिखात ॥८॥

कँगूरी

कँगूरी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पंचरंग ।
[illegible] जोती [illegible] [illegible] [illegible] पुनि [illegible] [illegible] ॥९॥

झरोखा

झरोखा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] सुकवि प्रवीन ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] दीन ॥१०॥

छज्जा

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बनी वितान सुजानि ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] तानि ॥११॥

कपोत

[illegible] कपोत सुगाल नैं [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] जु [illegible] [illegible] मनो [illegible] [illegible] सो [illegible] ॥१२॥

खम्भ

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पुंज [illegible] [illegible] ॥१३॥

जाल

[illegible] जाल [illegible] पुनि मीन-निसोथा नाँव ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥१४॥

हिरना

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥१५॥

[illegible]

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] ॥१६॥

कलविंक

कलविंक कहिये चिरा, कलविंक सीस कलिंग ।
कलविंक श्याम चमर मह, जाको कहूं न अंत ॥२॥

कलि

कलि कानन कलि माहु पुनि, कलि इक पासक नाम ।
कलि कालौ गिर पर ननौ, नटवर वपु घनस्याम ॥३॥

कांतार

कांतार कानन कह्यौ, पुनि कानन कांतार ।
कांतार दुर्भिच्छ पुनि, ऊखि कहिये कांतार ॥४॥

काष्ठ

काष्ठा काल विशेष इक, काष्ठ दिसा जो आठ ।
काष्ठ बहुरि बासंधना, बुद्धहीन नर काठ ॥५॥

कुंत

कुंत सलिल औ कुंत कुच, कुंत अनल नभ काल ।
कुंत कलन कवि कमल सौ, कुंत जु चन्द्र कपाल ॥६॥

कुंतल

कुनकार कुंतल कह्यौ, कुंतल पवरी बेन ।
[illegible] पानि कुंतल बहुरि, कुंतल कहिये केस ॥७॥

कुंभ

कुंभ कोस्या कुंभ कोट पुनि, कर्ण बहुरि कुंभ होइ ।
[illegible] मिस कुंभ, कुंभ कहि कंचन होइ ॥८॥

कुल्हा

कुल्हा [illegible] कह्यौ, कुल्हा पीयनि होइ ।
कुल्हा [illegible] [illegible], हुनि [illegible] अंबर गोह ॥९॥

अनंत

अनंत कहिये शेषना, अनंत नील कहंत ।
अनंत कहत बलराम नह, जाको कहुँ न अंत ॥२॥

अहि

अहि बासर अहि राहु पुनि, अहि इक दानव नाम ।
अहि कालो सिर पर नच्यौ, नटवर वपु घनस्याम ॥३॥

कांतार

कांतार कानन कह्यौ, पुनि कानन कांतार ।
कांतार दुर्भिच्छ पुनि, सुनि कहिये कांतार ॥४॥

काष्ठ

काष्ठा काल विशेष इक, काष्ठ दिसा जो आठ ।
काष्ठ कहहि आसंधना, बुद्धिहीन नर काठ ॥५॥

कुंत

कुंत सलिल सों कुंत कुल, कुंत अनल नभ पवन ।
कुंत करत कवि कमल सों, कुंत जु मन्नु करन ॥६॥

कुंतल

सुकुमार कुंतल कह्यौ, कुंतल पगरी बेन ।
चन्नु पानि कुंतल कहहि, कुंतल कहिये केस ॥७॥

कूट

कूट कोश कूट कोट पुनि, कर्म कहहि कूट होइ ।
आकस्माहि चित्र कूट, कूट कहि कंचन होइ ॥८॥

कृष्णा

कृष्णा कालिंदी नदी, कृष्णा पीपरि होइ ।
कृष्णा कहत्यौ द्रौपदी, हरि रवि अंबर गोट ॥९॥

द्रोन

द्रोन कहिय जिन डोल पुनि, द्रोन कलै गुरु पौन ।
द्रोन नाम इक द्रोन गिरि, कुंभ आयतन द्रोन ॥१८॥

नंदन

नंदन नन्दन कौ कहत, नंदन कहियै तात ।
नंदन बन पुनि इंद्र कौ, नंदनंदन बिख्यात ॥१९॥

नेत्र

नेत्र नयन पुनि नेत्र पट, मृग मद नेत्र कहंत ।
नेत्र नाम जग जानमें, नेत्र सुकै भगवंत ॥२०॥

पवित्र

पवित्र पवन जल रूप नदी, पवित्र कुस नहिं सेप ।
पवित्र वस्त्र पर्वत पवित्र, पवित्र सौं नरम बिसेष ॥२१॥

पलास

हरित वर्न पालास पुनि, राक्षस कहहिं पलास ।
कुसुम कल सत्थल पल्लास हैं, बहुरौ डाल पलास ॥२२॥

पुंडरीक

पुंडरीक सायक कहैं, पुंडरीक आकास ।
पुंडरीक पुनि कमल कहैं, कमला को निज बास ॥२३॥

रम्भा

रम्भा रंभा अपसरा रम्भा, रम्भा औषधी होइ ।
रम्भा कंपन्न कदलिकौ, जेहि जानै सब कोइ ॥२४॥

बलि

बलि पुजा बलि असुर पुनि, बलि सिर की कवि भाग ।
बलि कहिये पुनि नरकुसी, जाके सदा सुहाग ॥२५॥

द्रोन

द्रोन कहिय जिमि द्रोन पुनि, द्रोन कहै गुरु नाम ।
द्रोन नामक एक द्रोन गिरि, कुंभ आख्यान द्रोन ॥१८॥

नंदन

नंदन नन्दन को कहत, नंदन कहिये तात ।
नंदन बन पुनि इंद्र को, नंदनंदन विख्यात ॥१९॥

नेत्र

नेत्र नयन पुनि नेत्र पट, मृग मद नेत्र कहंत ।
नेत्र नाम जग जननी, नेत्र गुरु भगवंत ॥२०॥

पवित्र

पवित्र पवन जल गंग नदी, पवित्र सूर ससि सेष ।
पवित्र वस्त्र पर्वत पवित्र, पवित्र गौ नन्द विसेष ॥२१॥

पलास

हरित वर्न पलास पुनि, राक्षस बहुरि पलास ।
द्रुम ढाक पलास है, बहुरौ ढाल पलास ॥२२॥

पुंडरीक

पुंडरीक नागन कहै, पुंडरीक आकास ।
पुंडरीक पुनि कमल कहैं, कमला को निज बास ॥२३॥

रम्भा

रम्भा कदलि रमनुका रम्भा, रम्भा अपछरी होइ ।
रम्भा नंदनन्द सखि कहौं, जेहि आगे सब कोइ ॥२४॥

बलि

बलि पूजा बलि असुर पुनि, बलि निज को बलि भाग ।
बलि कहिये पुनि बलि कहौं, जाकी कथा पुरान ॥२५॥

हरिन्द्रा

पाप हरिन्द्रा दम भगी, मिला हरिन्द्रा होइ।
चाहि हरिन्द्रा मंगली, हरद हरिन्द्रा मोइ ॥६४॥

हार

हार मुकुत को फूल को, हार छेद विस्तार।
हार छिद्र जो पोलियो, मारग कहियत हार ॥६५॥

सारंग

पोखर खिल विस्तार सर, रितु बसंत छवि नीर।
पै सारंग नव परम पद, परम रंग रघुबीर ॥६६॥

मित्र

मित्र सकल नहि अमीत सौं, मित्र जो प्रीतम होइ।
मित्र सरल आचार्य कौं, मित्र निरत जो मोह ॥६७॥

कुन्ती

कुन्ती वनिता पवन की, घन नहि ताहु सकून।
पावक छिन घन चतुर निमि, मृग संताप अकन्ज ॥६८॥

हरिद्रा

पाप हरिद्रा नव धनी, शिला हरिद्रा होइ।
जड़ित हरिद्रा संगनी, द्रव्य हरिद्रा नीद ॥६४॥

हार

हार सुमन को फूल को, हार छेद विस्तार।
हार बिन्दु को पोतियो, मारग कहियत हार ॥६५॥

सारंग

सारंग खिग विस्तार सर, रितु वसंत छवि नीर।
ये सारंग नव परस पद, परस रंग रघुवीर ॥६६॥

मित्र

मित्र वसुन रवि अर्जुन को, मित्र जो प्रीतम होइ।
मित्र सखा आचार्य कों, मित्र निपत जो मोट ॥६७॥

तुरी

तुरी अनिला पवन पी, मन नाड़ि ताड़ सबूत।
पावक बिन घन चतुर निसि, तुरग संग्राम अकूत ॥६८॥

४६ फूलन सौं फुलवारी—फूलन फूलन वारी (क) ।

४७ उन हीं फूल मालन छवि भारी (क) (ग) (न) ।

४८ गगन—गगन (क) ।

५१ ना कहिँ....सिगाईँ—कहा कहिँ यह सार सिगाईँ (क) (ग) ; छाईँ—पाईँ (क) (ग) ।

५३ मानीय. मुँहने—मानीयन जैसे (क) (ग) ।

५६ जनु मानखानि—जानेउ मानन (क), जनु ना कलनि (ग) ।

५८ धर्मसीस नहिं कर—धर्मसीस करत (क), धर्मसहिं नाम करत (ग), धर्मसीस तिहि कर (ग) ।

६० जब आवहिं....दुआरा—जुनि आवैं सब नाज दुवारा (क) ।

६३ लिग—लिग (ख) ।

६६ सांभिन पुनि बेला सुकुमारी, हिम गिरिवर जनु ही मतवारी (क) ।

६७ भूमन पाईं—भूपन नाईं (क) ।

६८ जीगी—जीगी (क) (ग) ।

७१ दीन म....सांझ—उलय न वारे सांझ (क) ।

७४ न्याय...बखानें—बार बार नम वाल बखानें (क) (ग) ।

७६ छूटी—छूटी ; काम-कलन....जरी—काम कला जानी दुनिया जरी (क) ।

८३ सुन्दर—सुन्दर (क) (ग) (ग) ।

८७ सुन्दर....अहि—सुन्दर हिन अहि हेन (क) ।

९५ इस के बाद 'क' में यह पंक्ति भी है—

नाह करे कर सुन्दर कोई, मृग पर अंग गाठ जो होई ।

१०० गुन—गन (क) ; नन—नव (क), नर (ग) ।

१०३ दैदुरपंथि....पावैं—दैदु रचन नम बैठन पावैं (क) (ग)।

१०८ सौंहैं—सांहें (क) ।

११३ पन्नी....कुल-नाम—पन्नी जगमनी को अधिकार (क) ।

३६ फूलन सौं फुलवारी—फूलन फूलन वारी (क) ।

४७ जन हौं फूल मालन छबि भारी (क) (ख) (ग) ।

४८ मनु—जनु (क) ।

५१ गा कहिबैं....निरखाईं—कहा कहिबे यह भाव निरखाईं (क) (ख) ; छुटै—पाटै (क) (ख) ।

५३ मालीन, फूलैं—मालिनिकु जैसैं (क) (ख) ।

५६ जनु मनवानि—जानेन गावन (क), जनु ना करनि (ख) ।

५८ धर्मधीर नाहीं मन—धर्मधीर कहत (क), धर्महि नाम कहत (ख), धर्मधीर निहु मन (ग) ।

६० सब श्यावहि....दुखाना—गुनि श्यावे सब नाग दुखाना (क) ।

६३ दिन—दिन (ख) ।

६६ गोविन्द ऐसे बेरा पुहुपारी, हिम गिरिवर जनु हौं मतवारी (क) ।

६७ भूषन पाई—भूषण नाई (क) ।

६८ जोनी—जोनी (क) (ख) ।

७१ दीन न....मोल—उबल न बारे साज (क) ।

७४ व्याप...बखानैं—बार बार नाम बाल बखाने (क) (ख) ।

७६ छूटी—छूटी ; काम-कलश....उर्मी—काम कला जानी दुनिया उर्मी (क) ।

८३ [illegible]—[illegible] (क) (ख) (ग) ।

८७ सुन्दर....अहिं—सुन्दर हिन अहिं देन (क) ।

९५ इस के बाद 'क' में यह पंक्ति और है—

गाढ़ करे तन जनुर कोई, भूप पर अंत गाढ़ सो होई ।

१०० पु—पर (क) ; मन—नाह (क), नर (ख) ।

१०७ देहुपवन....पावै—देहु पवन नय देवन पावै (क) (ख)।

१०८ पीहैं—पाछे (क) ।

१११ कन्यौ....कुलदान—कन्यो जननी को अधिकार (क) ।

१५८ पाँइ, पाइँ—पाँ परहुँ परै (क), पा परहुँ परहुँ (ग) ।

१७१ दिगन्त—दिगन्त (क) ।

१७३ चलैं—चलै (क) ।

१८३ सो नन्दकुमार....देखै—सो कुंज में तब ही लखि पावै (क) ।

१८४ पै सो नरन—पै तब (क) (ख), पै नीच (ग) ।

१८६ लज्जा हू के पुंज—लज्जा के पुंज हीं (क) ।

१८९ जिन्ह—जो (क) (ग) ।

१९४ सखिन्हि घरि—सखीं ढुर (क) ।

२०५ सखिन नुकली—सखी यों सुकल (क) ; गोद लुठि—ढुर ढुर (क) ।

२०६ कहु—सो (क) ।

२०९ कोट—बाग (क) (ख) ।

२१२ नखुन—नखन (क) ।

२१५ थान अस थाने—थान अस ताने (ग) ।

२१६ बेनी—बेनि की (ङ) ।

२१८ द्रुत—तनु (ङ) ।

२२९ जगि—जुनि (क) ।

२३५ पैसत—पाई (ङ) ; या—है (क) ; नयन—प्रेम (क) ।

२३६ काके—काहे (ङ) ।

२४० हू—सो (क) (ग) ।

२४१ एक....अली—एक हुती युवति उन्हा मेरी आली (ग) ।

२४३ बूझि बूझि—बूझि बूझि (क) ।

२५३ सब्दन सब....कीनो—सब्दन सखि निर्बोध सब कीनो (क) ।

२५७ दवानल—दवानल (ख), दवानिल (ख) ।

२६१ जतन जू को करि—जतनी जो करि (ङ) ।

२६४ सर्वै—सौर (क) (ख) ।

१६९ पोंछि गहै—पौं गहे गहै (क), ता कहुं चहै (ग)।

१७१ मैनन—मैनुन (क)।

१७३ करौं—करौं (क)।

१८३ सो सनमुख....पैवै—सो मुख में तब ही लखि पावै (क)।

१८४ मैं सो तर—मैं तब (क) (ख), मैं तौल (ग)।

१८६ ललना हू के गुन—ललना के गुन हीं (क)।

१८९ निज—जो (क) (ख)।

१९४ सगिनहि धुरि—सगौ हुर (क)।

२०५ नलिन मुकली—नली यों मुकल (क) ; मोद लुठि—हर हुर (क)।

२०६ कछु—सौ (क)।

२०९ आंट—बासर (क) (ख)।

२१२ नयन—नयान (क)।

२१५ थान अम थाने—थान अम ताने (ग)।

२१६ बैनी—बैनि की (ग)।

२१८ रूप—नागू (ग)।

२२९ लगि—जुनि (क)।

२३५ पिवत—गाढ़ै (ग) ; या—है (क) ; नयन—प्रेम (क)।

२३६ वाके—ताहि (ग)।

२४० हू—सो (क) (ख)।

२४१ इक....अली—इक हुती सुघरि उन्हा मेरी आली (ग)।

२४६ बूझि बूझि—बूझि पूछि (क)।

२५६ सरसत सम....कीनी—सरसत सखि निचोय रस लीनी (क)।

२५७ हृदाकार—हृदयाकार (ख), हृदयाकृत (ख)।

२६१ लालन सू सों सनि—ललनी सों सनि (ग)।

२६६ सरै—दौर (क) (ख)।

५०६ [illegible]....किना—[illegible] पिय प्यारे किना (छ)।

५०८ गहि—गहि (छ)।

५१७ [illegible] बिदाला—[illegible] बिदाला (क)।

५१८ [illegible] परहि पी [illegible]—[illegible] (क)।

५१९ [illegible]नि—[illegible] (क)।

५२० मंडल....[illegible]—मंडल पर मंडल [illegible] (क) (ख)।

५२३ [illegible]—[illegible] (छ)।

५२६ [illegible]—[illegible] (छ)।

५३७ [illegible]—[illegible] (क) ; [illegible]नि—[illegible] (क)।

५४६ [illegible]—× (छ) ; [illegible]—[illegible] (छ)।

५५० [illegible] [illegible]—[illegible] नहि माला (ग)।

५५१ [illegible] [illegible] [illegible] जिन [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पत्न न [illegible] (क)।

५५३ [illegible]—[illegible] (छ)।

५५५ [illegible] [illegible]—[illegible] पै (क) (छ) ; पिय [illegible]—[illegible] (क) (छ)।

इसके पश्चात 'छ' में यह छंद पाया जाता है—

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बिहंग [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] जपियं [illegible]॥

५५७ [illegible]—[illegible] (छ)।

५७६ [illegible]....बिसाला—[illegible] [illegible] [illegible] बिसाला (क)।

५९५ [illegible] [illegible]—[illegible] के (क) (ग)।

५९८ [illegible]—[illegible] (छ) ; [illegible]—[illegible] (छ)।

५९९—६०० इन पंक्तियों के स्थान पर 'ख' ने निम्नांकित पद्यांश दिया है—

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥

[illegible] [illegible] [illegible] पिय पै [illegible]। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]॥

५.०६ सों....किना—सर्हु साह सिर प्यारे किना (ङ) ।

५.०८ नहिं—नहीं (ङ) ।

५.१३ नैन बिसाला—नाग बिसाला (क) ।

५.१८ सु कन्हि पी गाई—सो कंपी उगाई (क) ।

५.१६ उगति—उगत (क) ।

५.२० चंदन....उगाईं—चंदन पर चंदन चन्नाईं (क) (ख) ।

५.२३ सोंहँ—सोहैं (ङ) ।

५.२६ ढूँढ़ि—ढूँढ़ (ङ) ।

५.३७ सहित—हैत (क) ; नायकनि—नायकन (क) ।

५.४६ न—× (ङ) ; कौ यह—के इक (ङ) ।

५.५० उरनि ज्वाला—उर माहिं ज्वाला (ग) ।

५.५१ सोहत भुज सिंधे जिम अहे, ए, पर दुत नर, पन्न न पहे (क) ।

५.५३ संकुर—संतर (ङ) ।

५.५५ पों मनों—पीन पै (क) (ङ) ; पिय की—मालो (क) (ङ) ।

इसके पश्चात् 'ङ' में यह छंद पाया जाता है—

[illegible] ।
[illegible] ॥

५.५७ सिद्दे—सीनाप (ङ) ।

५.७६ नैनि....बिसाला—नैनि उवास हुलास बिसाला (क) ।

५.९५ रुचि कंचन—कंचन के (क) (ग) ।

५.९८ नै—नै (ङ) ; हूँतों—होतों (ङ) ।

५.९९–५.१०० इन पंक्तियों के स्थान पर 'ख' ने निम्नांकित पद्यांश दिया है—

[illegible]

सत सुकृत भरहिं अनंत सम जहा । तान वृन्दावन सोभित नहिं तहाँ ॥
कल्पवृक्ष फूलि फलहिं जहाँ नहिं । गोलोक, सुभाग, परम जहँ नाहिं ॥
सुगम सुखकंदिर हरि-हृदयहि । लौह लौह जनु बोलहि जाने ॥
सुनि न सदि मूर्छा हरि मोहन । राग सदै पं प्रेम सहैं पन ॥
निरखत सदै सम्पदा सुख दैनी । कल्पलतिकादि स्याम निरैनी ॥
सौं सब बरनि प्रेम उदारा । सौ सब बरनि कविन कौ पारा ॥

सो बरन कोटिहि अनंत भरि, रसना नाहि अनंत ।
वृन्दावन गुन कमल कौ, तोऊ न पहुँचै अंत ॥

नाद वृन्दावन कुंजन छाहीं । देखी गोकुल-भूमि सुहाहीं ॥
सहज सौंदर्य नैन सदै अति सोहै । रमा, उमा की हू छवि को है ॥
इन्दुमती सनान सब कीन्हों । वे हू हेमि कविर अब नाहि लीन्हों ॥
पहिरि भूषन नू नों में सबहीं । रूपमंजरी की जनु सबहीं ॥
इन्दुमती अब हरि कछु सुनी । उसनि परी निरखा रस-सुनी ॥
सब करिहैं हम भाग बड़ाई । जानै न वृन्दावन ध्याई ॥

इहि बन वृन्दावन आयो, इन्दुमती सुनि बान ।
जागी अंतर रस-नायक, प्रेम मैं मन, धनि जान ॥

पूछनि अति व्याकुल भइ सबी । चित है देव ! रूप-मंजरी ॥
तब हंसि दीनी अपनी सबी । सो निकट मैं निहि थो सबी ॥
सुनहीं महल-महल नहे नैं लीनौं । कर नैं इन्दुमती कर दीनौं ॥
मनहिं भूलि भाँति कुंजन रहौ । सो सब सो पै जात न कह्यौ ॥
सब मन तहँ यह सखी सुहाई । चितवनि नाद मंडल में जाई ॥
मधु कुंजन सनिकट महै सबरी । अनहद्दरी छवि परम न बरनी ॥
पदमनि पदमनि सम हद्य सबै । त्रिभुवन कै सखी सम्पति ना परै ॥
प्रेम-मई सुख हिय नहै भेदा । हरि छवि सब सुख सुभेदा ॥
सोहै सबी सकल तन सारा । सुनिये धनि मनोहर सारा ॥
सोहै चंद-कुंज निज भाँति । वै वृषभानु सुता सुख दाही ॥

[illegible] । [illegible] नहिं [illegible] ॥
[illegible] पूरि [illegible] । [illegible], मृगया, [illegible] तहँ तहँ ॥
[illegible] । ठौर ठौर जनु [illegible] बाजे ॥
सुधि न रही [illegible] मोहन । [illegible] प्रेम [illegible] ॥
निरखि करै [illegible] । कलप-किनारी [illegible] निरंतरी ॥
[illegible] । सो सब बरनि [illegible] पार ॥

जो शत शेषहि अनंत मुख, रसना नाहि अनंत ।
वृन्दावन गुण गावन कों, तोऊ न पहुँचे अंत ॥

नव वृन्दावन [illegible] छांहीं । ऐसी शोभा-भूमि सुहांहीं ॥
[illegible] मणिन [illegible] अति सोहीं । रमा, उमा की हू छवि को है ॥
[illegible] समान [illegible] कीन्हीं । ये हू ठौनि [illegible] लीन्हीं ॥
[illegible] न [illegible] । [illegible] की जनु [illegible] ॥
[illegible] सुनी । उपजि परी निरखा तन-सुधी ॥
[illegible] । जानें न वृन्दावन [illegible] ॥

इहि बन वृन्दावन आयौ, [illegible] सुनि [illegible] ।
[illegible] जान ॥

पूछन अति आतुर [illegible] । किन है देव ! [illegible] ॥
[illegible] । सो निरखि नैं निरखि ठां [illegible] ॥
[illegible] नै [illegible] । [illegible] ॥
[illegible] । सो [illegible] पै जान न [illegible] ॥
[illegible] सुहाई । निरखि नागर मंडल में [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] छवि [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] ॥
प्रेम-[illegible] । [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] मनोहर [illegible] ॥
[illegible] । [illegible] वृषभानु सुता [illegible] ॥

१६ चलित होति—चलित भऐ (च) ।

१७ नव—नम (ट) ; बिहरति—बिरहत (ग) (च) : बिहरति . . . .अगाधा—बिहरति जिय सँग रस अगाधा (क) ।

१८ यह इक. . . . आई—जहू इक वहुर अंस की आई (क), कछू नु अंस महली पौंछ आई (छ) ।

१९ मैं—सो (छ) (च) ; रचौ—रचे (घ), परे (च) ।

२० कुमुद—उदय (क) (ग) ।

२२ ललना प्रान—प्रान नाथ (क) ।

२५ मिली—मली (क) (छ), निती (घ) (च) ।

२८ मिले है—मिलैगी (ग) ।

२९ हित—इक (क) (घ) (च) ।

५५ तिहि—तिनि (छ) ।

५६ पीनप्रान—पीन प्रान (क) ।

६१ नीर मैं—नीर में (क) ।

७६ नंदन नन्दन जिनकौं सिवरे, तिनकों नंद नुवन पद नियरे (च) ।

८१ सो दुख नाम—सो दुखित न (क) ।

८३ निसि—निवन (क) ।

८६ जाहीं—जहै (क), रहै (च) ।

९३ मदन दले—मदन दलैत (छ) ।

९४ ऐसी—ऐसि (छ) ।

९७ परोसन—परोसनि (छ) ; चाहि—जाहि (क) ।

९९ जासे नाहि. . . .मदन—जासे नाहि मदन मदन (च) ।

१०० सभी पोथियों ने "मदन की हाला" पाठ दिया है । केवल 'क' तथा 'ग' में इसके स्थान पर "मदन के ज्वाला" पाठ पाया जाता है ।

१०४ तिय के—तियनि के (छ) ।

११३ मन हर—मन हर (क) (च) ।

१६ चरित्र ढोरि—चरित भये (च) ।

१७ नव—नग (ट) ; विहरति—विरहत (ग) (च) ; विहरति.. ..अगाधा—विहरति नित सँग रंग अगाधा (क) ।

१८ कछु इक....आई—कछु इक लहर प्रेम की आई (ग), कछु न् सँग लहरी फोक आई (ट) ।

२० मैं—सों (ट) (च) ; रचौ—रचे (घ), परे (च) ।

३० फुलक—उलक (क) (ग) ।

३३ तनक प्रान—प्रान मान (क) ।

३५ छिती—मती (क) (छ), निती (घ) (च) ।

३८ मिले हैं—मिलैंगे (ग) ।

३९ छुवि—छक (क) (घ) (च) ।

५५ तिहि—तिनि (ट) ।

५६ पाँनप्रान—पाँन प्रान (क) ।

६५ नीर नै—नीर नें (क) ।

७६ नंदन नन्दन जिनकौं लियरे, तिनकों नंद सुवन पद नियरे (च) ।

८१ सो कुल नाम—सो कुलिन न (क) ।

८३ बिबिन—बिपन (क) ।

८६ चाहौं—कहै (क), रहै (च) ।

९६ सघना बने—सघन बनत (छ) ।

९७ सैंती—श्रीनि (छ) ।

९८ परोसत—सरोसति (ख) ; चाहि—जाहि (क) ।

९९ जाये नाँहि....कवन—जाये नाहि पावत कवन (च) ।

१०० सभी पोथियों ने "मदन की ज्वाला" पाठ दिया है । केवल 'क' तथा 'च' में इसके स्थान पर "मदन के ज्वाला" पाठ पाया जाता है ।

१०५ निज के—निजनि के (छ) ।

११३ तन हर—तन अह (ग) (ख) ।

५ ठन्यौ—ठन्यो (क), ठन्यौ (ख) ।

७ जहँ—जहँ (ग) ; सब तामें—सब तिन में (क) (ख) (ग), तितिना मैं (ग) ; तहँ—तहँ (ग) ।

८ तुम मैं....माँहि—तुम्हरी माया सब जग माँहि (ग) ।

१३ नहिं सकल—नहि सु सबै (ग) ।

१४ जानौं—जानै (ग) (घ) ; प्रेम न तत्व—प्रेम तत्व न (ग) ; पिछानौं—पिछानैं (ग) (घ) ।

१६ मधुरिपु—मधुप (क) ।

१९ देख्यौ—चाख्यौ (ग) ।

२० अब—तब (ग), तब (ङ) ; मोहत—मोहित (क) (ग) (ङ) ।

२१ ता कहुँ कर—ताहि करत (क), ताही करि (ङ) ।

२७ छन्द के स्थान पर 'ग' ने यह दोहा दिया है—

सु सुनि नैं नव मंजरी, भरी प्रेम प्रमोद ।
कुंज भवन अलिगन रसिक, करैं नन्द विनोद ॥

२८ अनुसारि कैं—अनुसार कै (क) (ख) (ग) ।

३१ पूरि—बहुरि (क) (ख) ।

३२ पुनि—तब (ग) ।

३३ कृष्ण....गनी—तहां कृष्ण दुविधा करि गनी (ग) ; उतार उतार ज्यों—ज्यों उतार उतार (क) (ख) (ङ) ।

३५ स्याम....मंदुरै—तिन्यो न पिय छिन पलनि टरै (ग) ; इस पंक्ति के बाद 'ग' ने यह पंक्ति दी है—आनँ आकार मन मूर्छी, बोल त्रिलोकनि मैं नाहिं कूर्यौ ।

३६ सुन्दर....नाची—भीरी निपट अवस्था नाची (ग) ।

३७ निपट—अति (ग) ; नैन—नैन (ग) ।

३८ कह—कर (क) (ख) ।

३९ मिल नाट—नाट मेक (क) (ख) ।

४ जन्यौ—जन्यो (क), कन्यौ (ख) ।

७ कहैं—कहूँ (ग) ; सब लागैं—सब मिल में (क) (ख) (ग), ललिता मैं (ग) ; रहैं—रहूँ (ग) ।

८ तुम में....मोहिं—तुम्हरी माया सब जग मोहिं (ग) ।

१३ नींद नींद—नीति जु सबैं (ग) ।

१४ जानै—आनै (ग) (घ) ; प्रेम न तत्त्व—प्रेम तत्त्व न (ग) ; पिछानैं—पिछानैं (ग) (घ) ।

१६ मधुलिह—मधुप (क) ।

१८ देख्यौ—चाख्यौ (ग) ।

२० अब—जब (ग), तब (ङ) ; मोहत—मोहित (क) (ग) (ङ) ।

२१ ना चहूँ कर—नाहि चलत (क), नाही करि (ङ) ।

२७ इस के स्थान पर 'ग' ने यह दोहा दिया है—

तू सुनि लै रस मंजरी, भरी प्रेम प्रमोद ।
कृष्ण ललन अभिराम ललित, नाचैं नन्द विनोद ॥

२८ अनुसारि कै—अनुसार कै (क) (ख) (ग) ।

३१ पूरि—बहुरि (क) (ख) ।

३२ पुनि—तब (ग) ।

३३ कृष्ण....गनौ—जहां कृष्ण दुविधा करि गनौ (ग) ; उतार उतार क्यौं—क्यौं उतार उतार (क) (ख) (ङ) ।

३४ [illegible]....मंडुकै—जिन्हों न पिय हिय पल्लवनि ठर्दै (ग) ; इस पंक्ति के बाद 'ग' ने यह पंक्ति दी है—जानैं आकाश सम सूधी, [illegible] नहिं सूधी ।

३६ [illegible]....[illegible]—[illegible] निरद अवस्था [illegible] (ग) ।

३७ [illegible]—[illegible] (ग) ; [illegible]—[illegible] (ग) ।

३८ [illegible]—[illegible] (क) (ख) ।

४१ [illegible]—[illegible] (क) (ख) ।

८४ नगनगि—नगनानि (क) ; चहुँ—नहुँ (ग) ।

८५ लग नैनी—नाल गयनी (ग), नव नैनी (घ); नो....देनी—सा नव थोड़ा थोड़ा रचनी (ग) ।

८६ फरकत—थरकत (ग) ।

८९ अगनि—अगनन (क), जगत (घ) ; प्रमित—प्रमित (क) ।

९१ लिखि—बनि (घ) ।

९२ आंचन कहूँ—आंचन करै (क) ; लिन—रस (क) (ग) ।

९३–९४ लिखि अविलि रूपन लिन जानैं, कहूँ पीय नौं नागर जानैं । रसोकंत अहो गंध पियारे, मोहन सोहन नाथ हमारे । नव अनुराग चतुर नंदलाला, नव किसोर चित चोर रसाला (ग) ।

९६ नोहि—जो है (ग) ; मोहि—जो है (ग) ।

९८ अनुनय—विनय जु (घ) ।

९९ सुधा सी—सुधा सी (क) ; रूप सी—रूप सी (घ) ।

१०० नैन न....मोरी—नैन नचनि लाज जिय भोरी (क), नैन नाल लजनि क्यों मोरी (घ) ।

१०१ अरुठि....चहियै—नचि नन चोर चरति ज्यौं चहियै (ग) ।
न के बाद 'ग' ने यह पंक्ति दी है—सुंदर प्रिय कोहु नागर जानि, जनावै जनावै मोहनि तानि ।

१०४ सुनि....निवारै—सुनि पंकज नै कोपु निवारै (ख) (ग) ।

१०६ रसीनै—रसीनै (क), रसीनी (ग) ।

१०८ लिख-रूप—रूप लिख (क) (ग) ।

१०९ रहि....चहिये—रहु नन लिए कछु अवहि चहिये (घ) ।

११० तन जहां—है जहां (घ) ।

११८ रट—रस (ख) ; नागर—नागरि (ग) ।

१२० रसपुट....पाई—नयन लिख्यु नाम जो स्वनि पाई (क) ।

१२१ लिख—रस (क) (ग) (घ) ।

[illegible] [illegible]—[illegible]नि (क) ; [illegible]हैं—[illegible]हैं (ग) ।

८२ [illegible] पैंनी—[illegible] नयनी (ग), [illegible] पैनी (घ); नो....देनी —[illegible] [illegible] थोड़ा थोड़ा रहनी (ग) ।

८३ [illegible]—[illegible] (ग) ।

८४ अनत—अनन्त (क), अनत (घ) ; प्रमित—अमित (क) ।

९१ मिलि—बनि (घ) ।

९२ आँखिन कहैं—आँख कहैं (क) ; निज—रत (क) (ग) ।

९३–९४ मिलि आँखिनि जनन जिन मानैं, कहैं पीय नीं सागर जानैं । स्यामल अहो कंत पियारे, मोहन सोहन नाथ हमारे । नव अनुराग मधुर मंजुलाला, नव किसोर चित चोर रसाला (ग) ।

९६ जोहै—जो है (ग) ; मोहै—मो है (ग) ।

९८ अनुनय—विनय सु (घ) ।

९९ सुधा सी—सुधा सी (क) ; रूप की—रूप सी (घ) ।

१०० नैन न....भोरी—नैन नवनि लाज जिय भोरी (क), नैन नाल लजनि भर्यो भोरी (घ) ।

१०१ अरुझि....चहिये—जागि नन कोर फानति ज्यों चहिये (ग) ।
न कि प्रति 'ग' में यह पंक्ति दी है—सुंदर प्रिय कीन्ह सागर जानि, [illegible] [illegible] सोहनि तानि ।

१०४ पुनि....निवारैं—पुनि पंकज मैं कौतु निवारैं (ख) (ग) ।

१०६ लजौनैं—लजौनैं (क), लजौनी (ग) ।

१०८ मिल-रत—रत मिल (क) (ग) ।

१०९ [illegible]....चहिये—कछु नन किछु कछु अधिक चहिये (घ) ।

११० [illegible]—है [illegible] (घ) ।

११८ [illegible]—[illegible] (ग) ; [illegible]—[illegible] (ग) ।

१२० [illegible]....पाईं—[illegible] किन्नु [illegible] जो [illegible] पाईं (क) ।

१२१ [illegible]—[illegible] (क) (ग) (घ) ।

१६८ गन—जन (घ) ; गंठनि [illegible]—गंठन [illegible] (क)।
१७० कुरों....गरेई—कुरी गन पारि नैनन गारे (ख)।
१७३ लौं—लव (ख)।
१७६ पुरि—परि (क)।
१८५ मैं—मो (ख)।
१८७ उनी प्रविष्ट—प्रलिख दृष्ट (क) (ख)।
१८६ गरले गुर—गुर वै जे (क)।
१६० नीति....विरहाई—त्यों त्यों सहचरी सों फिर जाई (क) (ख)।
१६१ सम—नारि (घ)।
१६२ उरमानै—अरमानै (घ) ; विकूलयै—प्रतिकूलहि (क) (ख)।
१६४ गाउ—काव (क) (ख)।
१६७ आरति करि—अरति कंप (घ) ; जुराई—जनाई (क) (ख)।
१६८ नु है—यहै (क) (ख)।
१६६ लन हूँ—लिय नु (घ)।
२०० मन मों मन—मन ई मन (घ) ; सूकै—सूकै (क), सूकै (ख)।
२०५ परसौं—परे (क); घूम....नयानी—घूमति फिरै पछु कहति न जानी (ख)।
२०८ चहिन—नहि (क) (ख)।
२१२ बाहिर....नियों—बाहिर बाहिर चहिवो नियो (क)।
२१३ छिद—छत (क) (ख)।
२१७ नहै—नहै (क)।
२२३ नहै—नहै (घ)।
२३५ इसके बाद 'क' में यह पंक्ति भी है—कुरो कुसुम बंधना बाँधे, [illegible]।
२३७ [illegible] (क) (ख)।
२४८ [illegible]—[illegible] (ख)।

१६८ तन—तद (घ) ; मंडनि अंग-नग—मंडन अंग के नग (क) ।
१७० छुटीं....तारैं—छुटी नग छाडि नैनन तारे (ख) ।
१७७ जी—जब (घ) ।
१७६ धुरि—धरि (क) ।
१८५ मैं—सो (घ) ।
१८७ नर्ची अभिष्ट—अनिष्ट दृष्ट (क) (ख) ।
१८९ गरवे गुर—गुरु वे जे (क) ।
१९० नीति....बिरराईं—त्यों त्यों सहचरी सों फिर नाईं (क) (ख) ।
१९१ सम—नहि (घ) ।
१९२ अपमानै—अपमानै (घ) ; विकुलवै—प्रतिकूलहि (क) (ख) ।
१९४ गाउ—काव (क) (ख) ।
१९७ आरति करि—आरति कंप (घ) ; जुराई—जनाई (क) (ख) ।
१९८ सु हैं—यहि (क) (ख) ।
१९९ अब हैं—दिय सु (घ) ।
२०० मन सौं मन—मन ई मन (घ) ; सूकैं—सूकै (क), सूकैं (ख) ।
२०५ परसौं—परे (क); घूम....सयानी—घूमति फिरै पछु कहति न आनी (ख) ।
२०८ वहिन—बनहि (क) (ख) ।
२१२ बाहिर....लियौ—बाहिर बाहिर वहिबो लियो (क) ।
२१३ छिद्र—छल (क) (ख) ।
२१७ नरै—नई (क) ।
२२३ गहै—गहे (घ) ।
२३५ इसके बाद 'क' ने यह पंक्ति दी है—छुटी कुंकुम बंदना बीनें, [illegible] ।
२३७ [illegible] (क) (ख) ।
२४३ [illegible]—[illegible] (घ) ।

३१६ पत्नींसहु—पत्नीक ही (क)।
३२५ गाजत आवला—गाजत बाजना (क) (ग) ; तन को—तन के (क)।
३२७ जुगति—जुवति (क) ; तौहि—तौ ही (क)।
३३५ इस के बाद 'घ' ने यह पंक्ति दी है—जो पिय रजक कछु कहलावै, गाढ़ो करै पत्नी तिहि पावै।
३३७ भाल भाल में तिलक बनावै, गुहि गुहि फूल माल पहिरावै (क) (ख) (घ)।
३४० चन्द—मित्र (क) (ग)।
३४५ मीतर....नहैं—मध्य के कुंच कुंच अंतर लहै (क)।
३५२ रे मन ! मन—रेन गगन (क)।
३५५ मोढ़—आही (क), आढ़ै (घ) ; नोढ़—ताही (क)।
३७४ तन....जनावै—हिय कंप वैवर्न जनावै (ग)।
३७५ इस के बाद 'ग' ने निम्नांकित पद्यांश दिया है—

हूती बरनौं चारि प्रकारि, तिय पिय प्रेम बढ़ावनि हारि।
अवलहिं पुष्टु निकृष्ट नु अस्था, पुनि बरनौ तातैं अमितस्था।
तिनहिं पत्र हारनी गुनीं, चौथी स्वयंदूतिका गुनीं।
सबलहिं मन कौं भाव बिचारैं, बुद्धि आपुनी पुनि अवधारै।
तब अति कुशल मदीनों देइ, भार सबै अपने सिर लेइ।
कुलिहिं सुनि सु आनि मिलावै, इनि निकृष्टि अधिक कहलावै।
नारि अनेक कुरहि चातुरी, जनि पावहिं पिय की आतुरी।
कुमन डीठि मैं नाहिन टरै, दृगअंजन दै तहँ संचरै।
जन कछु जानैं यहैं बनाईं, पिय हि मैन-मद फरै सुहाईं।
तुरतहि आन मिलावै सोई, अमितार्थी कहावति सोई।
जो कछु सौंपै दै मैन-मंडन, माला फूल सुगंध, सु चंदन।
दै आवै, सहूँ मैं नै आवै, पत्र हारिनी इनि कहावै।

३१६ पल्लोंपहु—पल्लोंक हो (क) ।
३२५ गगन गाजना—गगन गाजना (क) (ग) ; तन को—तन कै (क) ।
३२७ जुगति—जुवति (क) ; तोहि—जो हो (क) ।
३३५ इस के बाद 'घ' ने यह पंक्ति दी है—जो पिय रूसक कछु कहावै, ताही करै रत्यो तिहि पावै ।
३३७ भाल भाल मैं तिलक बनावै, गुहि गुहि फूल माल पहिरावै (क) (ख) (घ) ।
३४० यन्त्र—मित्र (क) (ग) ।
३४५ भीतर....लहै—सब के सुख सुख अंतर लहै (क) ।
३५२ हे नाथ ! सब—रैन गगन (क) ।
३५५ चोहि—चाही (क), चाहै (घ) ; तोहि—ताही (क) ।
३७४ तन....जनावै—हिरदय पंथ बैवर्न जनावै (ग) ।
३७५ इस के बाद 'घ' ने निम्नांकित पद्यांश दिया है—

दूजी बरनी जानि अजारि, तिय पिय प्रेम बढ़ावनि हारि ।
अवनहि पुछ निपुष्ट नु अस्था, पुनि बरनी तातें अभिलष्या ।
तिसरी पत्र हारनी गुनी, चौथी स्वयंदूतिका सुनी ।
सबनहि पन कों भाव विचारै, दूति आपुनी पुनि अवधारै ।
नख अति कुहुत सदीनों देह, भार नवै अपनें सिर नेह ।
जुलिहि भुनि त्र आनि मिलावै, दूति निपुष्टि अधिक कहावै ।
नाहिं अनेप कुमहि चातुरी, लगि पावहि पिय की आतुरी ।
जगत डौरि मैं नाहिन डरै, दुखभंजन दै तनैं संचरै ।
जब कछु बातें कहैं बनाई, तिय हि चैन-सब करै सुहाई ।
तुम्हहि जाय मिलावै सोई, अभिलाषी कहावति सोई ।
जो कछु रहिहैं ई चैन-चंदन, माला फूल सुगंध, नु चंदन ।
ई जावै, नहीं मैं मैं जावै, पन स्वामिनी दूति कहावै ।

३५ व्याघ्र हरि जद्य केसरी पैरी व्याघ्र गजारि (ए) ।

३६ हीरी—हरी (अ) ; सेर सूर भनि सारदूल पन्नगधा सिंघ मृगारि (ए) ।

४६ जगजग—जगमग (अ) (आ) (उ) ।

४७ वे सु....करि—अष्टसिद्धि जो कष्ट करि (अ) ; लहैं—लहत (आ) ।

४८ सों—तैं (आ) (ए) ।

५१ या—जे (ए) ।

५२ ते नव वल्लभदास के—तेई श्री वृ भान के (ए) ।

५३ मुक्ति—मोद (अ) ।

५४ पद—सुख (आ) (उ) ।

५६ वृषभान की पौरि कुंडि—वृषभान के पौरि पर (अ) ।

५७ महीपति—परिमती (आ) (उ) ; प्रभुपति—प्रजापति (ए) ।

५८ बनि, बैठे—तहँ बैठी (अ) ।

६६ ताँहि, जहँ—जहँ तहँ (आ) (उ) ।

६९ पुनि—जन (अ) ।

८० बिहँसन—बिहँसै (इ) (ए) ।

८२ वा दो—आहे (अ) (आ) (इ) (उ) ।

८३ हेरि—नाम (इ) ।

८४ बने जु गज मोती सकल मनहु सुक की दाम (इ) ।

९१ करि—करहि (आ) ; वंदन अभिनय प्रनति पति अभिवंदन करि करहि (इ) ।

९५ जिमि....अति—सकुल सनी थानं सनी (अ) ; उर—बुधि (आ) ।

९८ सनी—सनी (अ) (आ) (उ) ।

९९ अंकुर मोट उर्लोर—अंकुर मोटे छोर (आ) (उ) ।

३५ व्यापक हरि जस केसरी पैरी व्याघ्र गजारि (ए) ।

३६ हींसी—हूसी (अ) ; सेर सुर मनि सारदूल पन्नगा सिंघ मृगारि (ए) ।

४६ अनकाग—अनगन (अ) (आ) (उ) ।

४७ से जु....करि—अष्टसिद्धि जो कष्ट करि (अ) ; लहँ—लहत (आ) ।

४८ तो—तें (आ) (ए) ।

५१ या—जे (ए) ।

५२ ते सब वल्लभराइ के—तेई श्री वृ भान के (ए) ।

५३ मुक्ति—मोक्ष (अ) ।

५४ पद—सुत (आ) (उ) ।

५६ वृषभान की पौरि कृति—वृषभान के पौरि पर (अ) ।

५७ महीपति—परिखरी (आ) (उ) ; प्रभुपति—प्रजापति (ए) ।

५८ धनि, बैठे—तहँ बैठो (अ) ।

६६ तहँ, जहँ—जहँ तहँ (आ) (उ) ।

६९ पुनि—जन (अ) ।

८० बिहँसन—बिहँसि (इ) (ए) ।

८२ वा डों—आहे (अ) (आ) (इ) (उ) ।

८३ हँद—नाम (इ) ।

८४ बने जु गज मोती भवन मनहु शुक की दाम (इ) ।

८६ करि—गहि (आ) ; बंदन अभिनय प्रनमि पनि अभिवंदन करि नाँहि (इ) ।

९० जहाँ....धनि—गद्गुन धनी थाके धनी (अ) ; कर—बुधि (आ) ।

९४ धनी—धनी (अ) (आ) (उ) ।

९६ पंकुज मंद छाँह—पंकज मोर्द छौर (आ) (उ) ।

१३३ कान्ह—कान्ह (ए) ।

१३४ नैन कमल मैं कीर जनु कनकन मोर सरीर (अ) ।

१३७ गु चोंच—सुरुर जिर (आ) ।

१३८ कि-मूरति....बैनि—नैननि में पिय मानहि लानि बहुर वानि, तिरि बैन (अ) ।

१४० कहुनौ—नन्जाति (अ) ।

१४१ ताम्बूल अहिबेनिजन किन सुन्दर मंडन पान (अ) ।

१४२ नहिन जानि अनजानि अति भर सौं न्हौ मन मान (अ) ।

१४३ मानव—मानिन (आ) ।

१४४ बड़ौ बैर मानि जन किते संकत बोली बात (अ), बड़ौ बैर सौं कहुनदौ वेसी बात रसाल (न) ।

१४५ अंबु—अंबु (अ) ।

१४६ पानानि—वा पानि (अ) ।

१४८ कोट—कोट (अ), कूट (आ) ।

१४९ कै—सुन (आ) (उ) ।

१५१ नत—मिलन (क) (ए) ; यौं—त्यौं (अ) ; तिहि विनि—बेलत नांहि (अ), तो विनि (आ) ।

१५८ छैन....निरनि—छैल बनी कुंदनि नन्दी (अ), छैल बनी तिन कों निरनि (ए) ।

१६१ नैहा—नन्दी (ए) ।

१६५ आनुद—नहमद (आ), आहुन (ए) ; थान—नाम (आ) (उ) ।

१६६ तर बरन तिहि—तुर बरन ने (अ) ; नै—नै (अ) ।

१७१ नर....निरा—निरा रूपवनु बानन्दू (उ) (क) ; दियमा—बेन (आ) ।

१७५ नहि—छन (ए), छन (ए) ।

१३३ [illegible]—[illegible] (ए) ।

१३४ नैन कमल में नीर जनु [illegible] गोर सरीर (अ) ।

१३७ जु [illegible]—[illegible] लिए (आ) ।

१३८ [illegible]....[illegible]—नैननि में [illegible] [illegible] लगि [illegible] [illegible] [illegible] नैन (अ) ।

१४० [illegible]—[illegible] (अ) ।

१४१ [illegible] [illegible] [illegible] मुख मंडन पान (अ) ।

१४२ [illegible] [illegible] [illegible] अलि भर सों [illegible] मन मान (अ) ।

१४३ [illegible]—[illegible] (आ) ।

१४४ बड़ी बेर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] बोली बाल (अ), बड़ी बेर लौं [illegible] [illegible] बाल [illegible] (ए) ।

१४५ [illegible]—[illegible] (अ) ।

१४६ [illegible]—[illegible] पानि (अ) ।

१४८ [illegible]—[illegible] (अ), [illegible] (आ) ।

१४९ [illegible]—[illegible] (आ) (उ) ।

१५१ [illegible]—[illegible] (इ) (ए) ; [illegible]—त्यों (अ) ; तिहिं [illegible]—[illegible] [illegible] (इ), [illegible] [illegible] (आ) ।

१५८ [illegible]....[illegible]—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (अ), [illegible] [illegible] [illegible] कों [illegible] (ए) ।

१६१ [illegible]—[illegible] (ए) ।

१६२ [illegible]—[illegible] (आ), [illegible] (ए) ; [illegible]—नाम (आ) (उ) ।

१६६ [illegible] [illegible] [illegible]—[illegible] [illegible] है (अ) ; [illegible]—[illegible] (अ) ।

१७१ [illegible]....[illegible]—[illegible] [illegible] [illegible] (इ) (क) ; [illegible]—[illegible] (आ) ।

१७५ [illegible]—[illegible] (ए), [illegible] (इ) ।

२२६ अँतमा—अलपनी (उ) (च), अलकनि (ए) ।

२२७ जिन्नी—बन्नी (अ) ।

२३० पै—पौ (आ) (उ) ।

२३३ पुनि—पुनु (ए) ।

२३४ घनि—घन (अ) ।

२३८ सो सुख पिय पद—हरि पद पंकज (ए) : नाहिं सु बैन—नाहिंन बैन (ए) ।

२४५ नग—नाग (आ) ।

२४८ संकल—सिन्ह (आ) (उ) (ए) ।

२५१ नारँग—सुरंग (अ) ।

२५२ मृग, कुरंग से—मृग सिसु कैसे (अ) ; उनचाहि—अनचाहि (आ) ।

२५३ नानीन, मनि—अमोघ पुनि (ए) ।

२५५ कहत-उत—कहन उत (अ) (उ) ।

२६१ श्रौनिन....पुनि—श्रौनिन स्वनकनि पुनि (आ) (ए), श्रौ-निन स्वन कोप्यप जु पुनि (ऊ) ।

२६४ निसाचरा—निसाचर जु (आ), निसाचर न (ए) ।

२६८ रेनु पौं—रेनुका (अ) ।

२७६ करन....नाहिं—अंजन नव संसार (अ) ।

२८० सो प्रानन फरनी लियो जग जाने आधार (अ) ।

२८४ होइ गौ—होत है (अ) (उ) ।

२८६ लिन नाम नृपि नयन हूँ निय चंद छिन आट (ए) ।

२९१ कौस्तुभ-प्रवधि—कुन्तन अवधि (अ) ।

२९३ सुंदर—सौहृद (ऊ) ; पीछ—नाद (अ) ।

२९४ लिहि—किमि (अ) : नीद—नन (अ) ।

२९६ उरपात सैंदी नामपर अनंपकन नग नैन (ए) ।

२२६ ओंग्सा—अगयनी (उ) (न), अगनगनि (ए) ।

२२७ छिन्नौ—छन्नौ (अ) ।

२३० पै—पौ (आ) (उ) ।

२३३ पुनि—सुनु (ए) ।

२३४ गनि—गन (अ) ।

२३८ नौ मुख पिय पद—हृति पद पंकज (ए) : नाहिं जु बैन—नाहिंन बैन (ए) ।

२४६ नग—नात (आ) ।

२४८ बेचक—सिद्ध (आ) (उ) (ए) ।

२५१ नारँग—सुरँग (अ) ।

२५२ मृग, कुरंग सैं—मृग सिसु सैंनें (अ) ; उतराति—अनपाहि (आ) ।

२५३ नागीन, मनि—अगीव पुनि (ए) ।

२५५ कहन्नच—कथन कद (अ) (उ) ।

२६१ ओनित....पुनि—ओनित स्वनकौनि पुनि (आ) (ए), ओनित स्वन कोस्थन जु पुनि (ऊ) ।

२६४ निसानन्द—निसानन्द जु (आ), निसानन्द न (ए) ।

२६८ रैनु गौ—रैनुका (अ) ।

२७९ कहन....माहि—अंटन तम संसार (अ) ।

२८० मैं प्रानन रूपहीं लियौ जग जागे आधार (अ) ।

२८४ होत गौ—होत है (अ) (उ) ।

२८६ पिन नाम नहिं मदन ह्वै मिल चंद छिन घाट (ए) ।

२९१ कौस्तुभ-प्रभवि—सुन्दर छवि (अ) ।

२९३ मोहन—मोहन (क) ; मोद—नाद (अ) ।

२९४ मिहि—हिनि (अ) : मोद—घन (अ) ।

२९९ कपूरा कैसी सागरन सर्पंकत तन चैन (ए) ।

३८९ मंग तिलक झलकाय तन ज्यात कुहर नीहार (ए) ।

३९० निसिर मिटो मग मोक्ष की वदन चंद उजियार (अ) ।

३९३ नहैं—नग (अ) ।

३९४ छनन—अहै (ए) ; तव—नव (अ) ।

३९६ अन—नैं (अ) ।

३९७ हूँगि—नग (अ) ।

४०४ फिरि—ग्रनि (अ) ; नोग—नोग (अ) ।

४०७ जनंन—निनंन (ए) ।

४१३ संकट सुवन वहन—अक झून तुव गहन (आ) (ए) ; पुनि—
अब (अ) ।

४१६ गयो जैहैं वनि सोइ रहु जैहैं उठि परभात (अ) ।

४१७ बन्न सु तेरे—बच्च सु तुरे (अ), उलचा तेरी (ए) ।

४१८ परे—नयी (ए) ; थाम—तीनि (आ), बब्र (ए) ।

४२० सिगहि मिदि—पीय पे (ए) ; न—कि (अ) ।

४२३ जु निय—सुंदरि (अ) ।

४२४ सौमित....ते—उज्जल जलधर ते मनों (अ), महल चोह-
हर तें मनों (ए) ।

४२६ सोन्ह....तैं—सोन्ह कुसल परसत पवन (अ) ।

४२८ गोट—नो (ए), नर (अ) ।

४३० मिटि—नदि (अ) ।

४३३ नसैं—छिन छिन (अ) ।

४३५ रहे—नह (अ) ।

४३६ सूर [illegible] आर्दै सदु [illegible] परसपर यात (आ) ।

४४० [illegible]—[illegible] (आ) (ए) (न) ।

४४५ [illegible]—[illegible] (आ) ।

४५० [illegible] सजनी सोनि पी सँ सुख संतन उपहार (अ) ।

३८६ मोर तिमिर अनकाय तन ध्यान कुमार नीहार (ए) ।

३९० निमिर मिटो मग नोक को बदन चंद उजियार (अ) ।

३९३ गहै—गन (अ) ।

३९५ हलन—बहै (ए) ; तरु—तव (अ) ।

३९६ अम—मैं (अ) ।

३९७ हूरि—मव (अ) ।

४०४ फिरि—अनि (अ) ; लोग—सोग (अ) ।

४०७ लगीन—निनीन (ए) ।

४१३ लंगट तुरत छहत—अब हुत तुव गहत (आ) (ए) ; पुनि—अब (अ) ।

४१६ गयो जैहै बनि सोहि रहु जैहै उठि परभात (अ) ।

४१७ जन्म सु तेरे—जन्म सु तुरे (अ), उलफा तेरी (ए) ।

४१८ परे—परयो (ए) ; धाम—सीस (आ), वज्र (ए) ।

४२० सियहि मिलि—पीय पै (ए) ; न—कि (अ) ।

४२३ जु निय—कुँवरि (अ) ।

४२४ मोहिन....तै—उज्जल अम्बर तै मनों (अ), महल चीह-हुर तैं मनों (ए) ।

४२६ जोन्ह....तैं—जोन्ह कुसल परसत चलन (अ) ।

४२८ नाहि—नो (ए), नर (अ) ।

४३० दिति—नदि (अ) ।

४३२ नहीं—छिन छिन (अ) ।

४३५ रैन—सद (अ) ।

४३६ तुव नायक आनंद मनु चन्द परकासर यात (आ) ।

४४० नेहनरम—नेहनरम (आ) (ए) (न) ।

४४५ गुनगुन—गुनगुन (आ) ।

४५० नन सजनी सनि पाँ वहै तुव नंदन उपहार (अ) ।

५.१० सब....रंग—सब सुन को अधरंग (अ) ।
५.१६ ससु—ससि (अ) ; पस्नति—पसरति (ए) ।
५.१८ नीर नीर—दिग दिग (अ) ।
५.२० तन—तनि (अ), तहां (ए) ; जहँ बैठे—बैठे हैं (ए) ।

अनेकार्थमंजरी

१ जु प्रभु....जगत-मय—जो प्रभु जोति जु जगत मय (इ) (उ) ।
२ बिपन—असुभ (आ) ; सुभ—सुख (इ) (उ) ।
४ तैं—सौं (अ) ।
५ अक....अनमर्थ—समुभन कों असमर्थ (इ), अर्थ ग्यान अ-समर्थ (आ) ।
६ मान्यौ 'अनेक अर्थ'—नायानेकार्थं (इ), भाखि अनेक जु अर्थ (आ), रचत अनेक अर्थ (छ) ।
८ सर—नर (छ) ।
१० सुरभी चान—सुरभि नराचन (छ) ; सुरभी चंपक बन कहै जो जन कनता पंन (उ) ।
११ [illegible] नैन—[illegible] नैन (आ) ।
१४ गहें पथर—लै मीर (इ), निहि मीर (न) (उ), महि मीर (प) ।
१५ [illegible] [illegible]—[illegible] (आ) ।
१८ अर्जुन....धनंजय—अर्जुन धनंजय अर्जुनहि (न) ।
१६ [illegible]—[illegible] (उ) (न) ।
२० [illegible]—[illegible] (आ) ।
२१ [illegible]—[illegible] (आ) ।
२३ [illegible]....[illegible]—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (आ) ।
२४ [illegible]....[illegible]—[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] (अ) ।

५.१० सब....रोष—सब सुन को अवरोष (अ) ।
५.१६ जनु—जनि (अ) ; परसति—सरसति (ए) ।
५.१८ नीर नीर—हिग हिग (अ) ।
५.२० तह—तनि (अ), तहां (ए) ; जहँ बैठे—बैठे हैं (ए) ।

अनेकार्थमंजरी

१ जु प्रभु....जगत-मय—जो प्रभु जोति सु जगत मय (इ) (उ) ।
२ विपन—अनुप (आ) ; सुभ—सुख (इ) (उ) ।
४ तैं—तौ (अ) ।
५ अति....असमर्थ—समुझत कों असमर्थ (इ), अर्थ ग्यान अ-समर्थ (आ) ।
६ भाष्यौ 'अनेक अर्थ'—भाषानेकारथं (इ), भाखि अनेक जु अर्थ (आ), रचत अनेक अर्थ (छ) ।
८ हर—नर (छ) ।
१० सुरभी कानन—सुरभि नरावन (छ) ; सुरभी चंपक बन कहे जो जन करता फेन (उ) ।
११ मधु मैन—मद मैन (आ) ।
१४ नहिं धवर—तें धौर (इ), निहि धौर (ग) (उ), नहि धौर (प) ।
१७ [illegible]—कौन रूक (आ) ।
१८ अर्जुन....धनंजय—अर्जुन धनंजय अर्जुनहि (ग) ।
१९ [illegible]—सुन्दर (अ) (ग) ।
२० [illegible]—[illegible] (आ) ।
२१ [illegible] (आ) ।
२३ कोउ....मिन—उडि उडि मिलिनै मिन (आ) ।
२४ [illegible]....सिरि—[illegible] चित्त सिव (अ) ।

८५ कहावैं—तुच्छ फल (आ) ; आहि पुनि —ए पल्लनी (आ) ।

९३ आन निकुर अहिकांग तुर जग सिसु मूक जु बान (आ) ।

९५ आन गन—नीप गण (आ) ।

९६ छिति न....नँद-नंद—निरखि भूलि जनि नंद (इ) ।

१०४ जलज....फिरावते—जलज कमल कर फेरते (इ) ।

१०८ उर धरि—उर वर (ख) (छ) (ञ) ।

१११ जाग—नाम (आ) (च) ।

११२ आवत मदन गुपाल—बनि आवत घन स्याम (आ) (च) ।

११७ कहावैं—नहि अस (आ) ; पोत जु पद—करट पात्र (आ) ।

११८ जग—जग (आ) ।

१२० भयौ—भए (इ) ।

१२१ चहुँत कवि— पुनि मदन (आ) ।

१२३ कौ कहत कवि—उपमान कहत (अ) ।

१२८ उड्डप चंद उडुपन गरुड़ श्री गरुड़ध्वज बाहु (अ) ।

१३९ मंद मलय सनि अलस ग्लन रोगी पाप स्वछंद (आ) ।

१४३ स्यंदन....कहि—स्यंदन तुरग जल तरु निगम (आ) ।

१४४ ग्रहि—लिहि (इ) (छ) ।

१४५ संधी मदन—संधियौ मदन (आ) ; संधी ग्राह—छिनधार ग्राह (आ) ।

१४६ लिहि....छंद—हरि कीने विधि छंद (आ), गो हरि कियौ छिनछंद (इ) ।

१५३ संकर धनुष—आनन्द धनुष (आ) ।

१५५ कोकिल—कौकिल (अ) ; तन—तन (अ) (आ) (ग) (च) ।

१५७ [illegible]....[illegible]—[illegible] कहि कहि हुत नवि [illegible] (आ) ।

१५९ [illegible] नाग—जैहुत (आ) ; नाग हुट—नागी हुट (आ) ।

१६३ [illegible]—[illegible] (आ) ।

८२ कहावैं—कुच्छ फल (आ) ; आहि पुनि —क चलनौ (आ) ।

८३ बाल निहुर अहिलोन तुर मन सिसु मूक जु बाल (आ) ।

८५ नाम गन—नीप गण (आ) ।

९६ दिसि न....नँद-नंद—निरखि भूलि जनि नंद (इ) ।

१०४ जलज....फिरावते—जलज कमल कर फेरती (इ) ।

१०८ उर धरि—उर धर (ख) (छ) (ज) ।

१११ जाम—नाम (आ) (च) ।

११२ आवत मदन गुपाल—वनि आवत घन स्याम (आ) (च) ।

११७ कहावैं—मेह अग (आ) ; पोत जु पद—करट पात (आ) ।

११८ जग—जन (आ) ।

१२० भयौ—भए (इ) ।

१२१ पहुँच कवि— पुनि मदन (आ) ।

१२३ कौ कहत कवि—उपमन कहत (अ) ।

१३८ उदुत चंद उदुपन गरुड़ औ गरुड़ध्वज बाहु (अ) ।

१३९ मंद मतन मनि अल्प नग रोगी पाप स्वछंद (आ) ।

१४३ स्यंदन....कवि—स्यंदन नृप जल तरु निगम (आ) ।

१४४ जहि—जिहि (इ) (छ) ।

१४५ मेघौ मदन—मधियौ मदन (आ) ; मंथौ ग्राह—दिनचार ग्राह (आ) ।

१४६ जिहि....संट—हनि कीने विधि संट (आ), जो हनि कियौ किरीट (इ) ।

१५३ संकर धनुष—आनंद धनुष (आ) ।

१५५ गोकुल—गोकुल (अ) ; नन—नन (अ) (आ) (ग) (च) ।

१५७ कम....कम मनन—मा कहि कहि हुन नदि मनन (आ) ।

१५८ जन नाम—नीरज (आ) ; नाम कुट—कमी कुट (आ) ।

१६३ नाम—प्रनाम (आ) ।

२३५ कुंडल—कुंडल (अ) ।
२३६ रूप—रूप (आ) ; अग रस नीर—रस अग नीर (इ) ।
२३७ जो....अर्था—जो पहि अनेका अर्थ पौं (आ), जोइ अनेगा अनन्य को (इ) ।
२३८ जो....कहूँ—ताकौं अनेक अर्थ बुधि (अ) ।

स्यामसगाई

१ नंद—स्याम (अ) ।
३ महरि—राय (ग) (ङ) (च) (छ) ; कह्यौ—चह्यौ (अ) (ख) ।
४ मो—मेरे (ग) (ङ) (च) (छ) (ज) ; गोविंद—श्री गोविंद (घ), जी गोविंद (ङ) ।
५ मोहनी—सोहनी (अ) (ख) (ज) ।
६ एक—रुक्मिनि (छ) ; द्विज—व्रज (क) (ङ) (च) (छ) ।
७ मदन—प्रेम (च) ।
८ करियौ बहु—बहुत करौ (क) (च) ।
१० सोहनी—अधिक है (ग) (ज) ।
११ बेगि—सौरि (अ), सौनि (ख), तुरत (छ) ।
१२ तहँ—कै (ग) (घ) (च) (छ) ; बैठि....चलाई—मदन कौ बात चलाई (ङ) ।
१३ तिन—तौ (अ) (क) (ख), हम (ग), उन (घ) (च), नें (ज) ।
१४ कहुनहि सौंपि मनसा—तुम सुनौ बीनती नाम (ख) ।
१५ मेरी पनि—उन मेरी (घ) (च) ।
१६ [illegible]—[illegible] (अ) (क) ; तू तौ नहि यशौ—नाहि ते तुम [illegible] (ग) । नाहि हम [illegible] (च) ।

२३५ कुंडल—कुंडल (अ) ।
२३६ मद—रस (आ) ; अग रस नीर—रस अग नीर (इ) ।
२३७ जो....अथा—जो एहि अनेका अर्थ पौ (आ), जोइ अनेगा अरथ पो (इ) ।
२३८ जो....नहुँ—ताकौं अनेक अर्थ बुधि (अ) ।

स्यामसगाई

१ नंद—स्याम (अ) ।
३ महरि—राय (ग) (ङ) (च) (छ) ; कह्यौ—चह्यौ (अ) (ख) ।
४ मो—मेरे (ग) (ङ) (च) (छ) (ज) ; गोविंद—श्री गोविंद (घ), जी गोविंद (ङ) ।
५ मोहनी—सोहनी (अ) (ख) (ज) ।
६ एक—रहनि (छ) ; द्विज—ब्रज (क) (ङ) (च) (छ) ।
७ मदन—प्रेम (च) ।
८ करिहौं बहु—बहुत करौं (क) (च) ।
१० सोहनी—अधिक है (ग) (ज) ।
११ बेगि—गौरि (अ), गौरि (ख), तुरत (छ) ।
१२ तहँ—तै (ग) (घ) (च) (छ) ; बैठि....चलाई—मदन सौं बात चलाई (छ) ।
१३ तिन—तौ (अ) (क) (ख), हम (ग), उन (घ) (च), मैं (ज) ।
१४ कहुनाहिं [illegible]—तुम सुनौ बीननी नाम (च) ।
१५ मेरी पनि—उन मेरी (घ) (च) ।
१६ [illegible]—[illegible] (ख) (ग) ; [illegible] नहिं [illegible]—नाहिं ने हम [illegible] (ग) । नाहिं हम [illegible] (च) ।

८८ ग्वालिन....कैं—लखि गुपाल आवत लगे (अ) (ख), देखि सखी सूवन लगे (छ) ।

८९ कही....आइ—कौन गांव सौं आइ (ख), कौन गाम तैं आय (क) (क) ; ए री नारि गँवारि हुं, मति बहकि तू माइ (अ) ।

९० गोकुल हूं सौं कहौ (क) ।

९१ तेरी....बलाई—तेरी हौं लेहु बलैया (अ) (ख), मैं तेरी लेहु बलैया (ज) ।

९२ ग्वालिनी तित तैं आई—ए तित तैं आई मैया (अ), ए तित तैं आई मैया (ख) ।

९५ लाल जम लीजियै (क) ।

९६ तुमैं—कहत (क), तुमे (अ) ; ताहि—कहौ (क) ; कौन बाबरौ....बतायौ—मैया मैं गारुड़ किनि तुम्हैं कह्यौ कि मोहि सिखायौ (च), मैया सु मनियताय कही जब नंदकुमारे (छ) ।

९७ पराचिनि तुम ग्वालि—तुम ग्वालिनि परपंच (च) (ब) ; सखी कौने कीए गारुड़ कौने मंत्र सिखाए (छ) ।

१०६ गयौ सुकत्त कौ नाहीं—साँवरे कुँवर कन्हाई (अ) ।

१०७ कुँवरि जीवैगी नाहीं—कुँवरि जीवन की नाईं (अ), कुँवरि बचने की नाहीं (च) ।

१०८ सब—सौ (ज), सिर (च), सकि (छ) ।

१०९ वृंदावन मैं साँवरे—तुम ही वृंदावन मैं आगरे (च), मथुरा मैं हरि नागरे (ज) ।

११२ मोहि गये—मोह कुँवरि (अ) ।

११८ मोहि—मोहि (च) ।

११९ उतारन—सारन (क) ।

१२१ नाहीं—नाहीं (ज) (च) ।

१२३ कुंद—नंद (ग) (क) (ब) ; निज—हरि (च) (क) ।

८८ ग्वालिन....कै—लखि गुपाल भागन लगे (अ) (ख), देखि सखी भूलन लगे (छ)।

८९ कहौ....आइ—कौन गांव सौं आइ (ख), कौन गाम तै आय (ग) (क) ; ए गो नारि गँवारि है, मति बहिकें तू माइ (ञ)।

९० भोले हमसौं कहौ (क)।

९१ तेरी....बलाई—तेरी हौं लेहु बलैया (अ) (ख), मैं तेरी लेहु बलैया (ज)।

९२ ग्वालिनी तित तै आई—ए तित तैं आई मैया (अ), ए तित तैं आई मैया (ख)।

९५ लाल जल लीजियै (क)।

९६ सुनैं—कहत (क), सुनें (अ) ; ताहि—कहो (क) ; कौन आयौ....बतायौ—मैया मैं गारुड़ किनि सुन्यौ कह्यौ कि मोहि सिखायौ (च), मैया सु मनिपढाय कही जन नंददुलारे (छ)।

९७ पनाचिनि तुम ग्वालि—तुम ग्वालिनि परपंच (च) (ज) ; सखी कौनै कीए गारुड़ कौनै मंत्र सिखाए (छ)।

१०६ गयौ मूकरन कौ नाहीं—सांवरे कुंवर कन्हाई (अ)।

१०७ कुंवरि जीवैगी नाहीं—कुंवरि जीवन की नाहि (अ), कुंवरि बचने की नाहीं (च)।

१०८ मन—जौ (ज), जिन (च), जनि (छ)।

१०९ वृंदावन मैं सांवरे—तुम थौ वृंदावन मैं आगरे (च), मथुरा मैं हरि नागरे (ज)।

११२ मोहि राधे—मोह कुंवरि (अ)।

११८ भौने—भीने (च)।

११९ सतफुन—सतन (क)।

१२१ नाहिं—नाहिं (ज) (च)।

१२३ कूद—कौन (ग) (क) (ज) ; मिल—हरि (च) (क)।

१६ धाँन—धूरि (ट) (ठ) ।

१८ बिहँसित—बिहँसत (ख) (ग) (झ) (ट) (ठ) ।

२३ मावौं—ठव्वौं (ख) (घ) (च) ।

२४ जिनि जिय—तुम जिनि (क) (घ) (च) ।

२७ अमल—कमल (ट) (ठ) ।

२८ धरनी—धरती (झ) ।

२९ प्रबोधहौं—प्रबोधियो (च), प्रबोद कौं (छ) (झ) ; बात बनाइ—बैन सुनाय (छ) (ठ) ।

३२ बहु नव रूप—रूप नव उनहिं (ट) (ठ); निर्विकार निज रूप ध्यान अपने हिय पेखौ (च) ।

३३ माँहि—महि (ट) (ठ) ।

३४ बरनत—बर्नन (क) (ग) (ङ) (छ) (ज) (झ) ।

३८ श्रुति, नासिका—नैन घ्रान मैं (ग) (छ) ; दिखाइ—दिखाय (ट) (ठ) ।

४१ बहु नव सगुन—नवगुन नये (ख) (घ) (च) (ज) ।

४४ हैं—सो (झ), हौ (ट) (ठ) ।

४७ यौं बन बन —बन बन यौं (क) (च) (ज) (ट) (ठ) ।

४९ हैं—है (क) (घ) (ङ) (च), है (ट) (ठ) ।

५२ मैं—मै (क) (च) (छ) (ठ), मों (ट) ।

५३ सन—सौं (घ) (च) (ज) ; अवतारि कै—अवतार है (घ) (च) (ज), अवतार ह्वै (ट) (ठ) ।

५४ सुर—सर (घ) (च) (ङ), पद (घ) (ज) (झ) ।

५६ लावौं—लावैं (घ) (ठ), लावौ (ट) ।

५७ गावौं—गावैं (च), गावौ (ट), गावैं (ठ) ।

६६ [illegible]—[illegible] (क) (ग) (छ) (ट) (ठ) ।

६९ [illegible]—[illegible] (ट) (ठ) ।

१६ झाँन—ब्रुरि (ट) (ठ)।

१८ बिहसिन—बिहसन (ख) (ग) (झ) (ट) (ठ)।

२३ मारी—गरवी (ख) (घ) (च)।

२४ जिनि जिय—तुम जिनि (ग) (घ) (च)।

२७ [illegible]—[illegible] (ट) (ठ)।

२८ धन्नी—धरती (झ)।

२९ अनोधिद्दौ—अनोधियो (च), प्रमाद सों (छ) (झ); बात [illegible]—बैन सुनाय (छ) (ठ)।

३२ बहु नव रूप—रूप नव उनहिं (ट) (ठ); निर्विकार निज रूप ज्ञान अपने हिय पेखौ (च)।

३३ माहि—महि (ट) (ठ)।

३४ [illegible]—वर्धन (क) (ग) (ङ) (छ) (ज) (झ)।

३८ श्रुति, नासिका—स्रत ग्रान सै (ग) (छ); दिखाइ—[illegible] (ट) (ठ)।

४१ नह नव सगुन—सगुन नवे (च) (घ) (च) (ज)।

४४ है—सो (क), सो (ट) (ठ)।

४७ सो वन वन —वन वन सो (क) (च) (ज) (ट) (ठ)।

४९ है—है (क) (घ) (ङ) (च), है (ट) (ठ)।

५२ नै—नै (क) (च) (छ) (ठ), नों (ट)।

५३ गल—सों (घ) (च) (ज); अवतारि कै—अवतार है (घ) (च) (ज), अवतार है (ट) (ठ)।

५४ [illegible]—[illegible] (ग) (च) (ङ), पद (घ) (ज) (झ)।

५६ [illegible]—[illegible] (घ) (ठ), गावों (ट)।

५७ गावों—गावे (च), गावों (ट), गावै (ठ)।

६१ [illegible]—[illegible] (क) (ग) (छ) (ट) (ठ)।

६६ [illegible]—[illegible] (ट) (ठ)।

काल (ख) (घ) (च) (ज), तरल अपार अगाग (ग) (ङ) (झ) ; तेजमय—तें जामैं (क) (ग) (घ) (च) (ट) (ण), में जामैं (छ), तें जगपुर (ज) ।

१२० किन्न कुंचि ही भली रूप यह देखी जाई (ग) (च) (छ) (ज) (झ) ।

१२१ जब—जो (घ); हु—है (ग) (छ); तामैं—या मैं (ट), जामैं (ठ) ।

१२२ मैं—जानैं (ट) (ठ) ।

१२३ कारन....किये—कारन कारन पार ही किये (झ), कारन कारन ही किये मैं (ट), काम कम कर्म सबहि किये (ठ) ।

१२४ है—करि (क) (ख) (ट) (च) (ज) (झ) ।

१२६ है—यों (ट) (ठ) ; कर्म....आवै—कर्म यों बंदन, आय पै यै (च) ।

१३१ आवैं—आवै (क) (ख) (घ) (ङ) ; नस्वर है—नाहिं ईस्वर (ट) (ठ) ।

१३४ तिन कौं—जिन को (ख) ।

१४१ ऐसें मैं—एक समैं (ग), येते ही मैं (ग) ।

१४२ धनै बौरें जल—घनी बौरी जग (ग), घनी पिपिरें जग (घ), लखे उर पिलरे (ट) ।

१४३ कहूँ—जहि (ग) (च) ; तिन....बात—कहत जु नानी बात (च), कहत तिनहिं संग बात (ट), बैठि नकुल कहू बात (ठ) ।

१४४ सुजान—सुजान (ट) (ठ) ।

१५४ बहुत तरह—बीहितादिनि (क) (ग) (झ), बहुत भांति (च) (छ) (च) (ज) (ट) ।

१५८ मद [illegible]—मद चलत (ग) (च) (छ) (झ), चलत (ट) (ठ) ।

१५९ चन्द्रकिन सौं बीन—चैतन्यपुर सौं बीन (ज), गहिरे नद सौं बीन (ट) (ठ) ।

कारन (ख) (घ) (च) (ज), तस्व प्रकार प्रगास (ग) (छ) (झ) ; तेजमय—तें जामें (क) (ग) (घ) (च) (ठ) (ण), मैं जामें (ख), तें जगपुर (ज) ।

१२० दिव्य दृष्टि ही भली रूप वह देख्यो जाई (ग) (च) (छ) (ज) (झ) ।

१२१ जब—जो (घ); हु—हैं (ग) (छ); तामें—या में (ट), जामें (ठ) ।

१२२ मैं—जानें (ट) (ठ) ।

१२३ कारन....किये—कारन कारन पार ही किये (झ), कारन कारन ही लिये मैं (ट), काम काम कर्म सबहि किये (ठ) ।

१२४ ह्वै—करि (क) (ख) (ग) (च) (ज) (झ) ।

१२५ ह्वै—गयो (ट) (ठ) ; कर्म....आवै—कर्म गयो बंधन, आय पै वे (च) ।

१३१ आवै—आवै (क) (ख) (घ) (ङ) ; नस्वर है—नाहि ईस्वर (ट) (ठ) ।

१३४ तिन कौं—जिन को (ख) ।

१४१ ऐसैं मैं—एक समैं (ग), येते ही मैं (ग) ।

१४२ बने बीरे जग—बनी बीरी जग (ग), बन्यो पिपिरे जग (घ), लगे उर पिपरे (ट) ।

१४३ कहूँ—कहि (ग) (च) ; तिन....बात—कहत जु नाना बात (च), कहन तिन्हिं संग बात (ट), बैठि सकुच कहु बात (ठ) ।

१४४ सुजान—सुजान (ट) (ठ) ।

१५४ फूल फल—बीजादिनि (क) (ग) (झ), बहुत भांति (ख) (घ) (च) (ज) (ट) ।

१५८ रस रूप—रस रूपन (ग) (च) (छ) (झ), रूपवन (ट) (ठ) ।

१५९ ध्यानीन को मौन—ध्यानपुर को मौन (ज), गहिरे ज्ञान को मौन (ट) (ठ) ।

२७४ यह....बधू—हँसि बोली ब्रजबासनी (घ), ऐसैं बोरी ब्रज बासिनी (झ), यह बोरी ब्रजबासिनी (ट) (ठ)।

२७८ निर्गुन भए अलीन के सगुन नकल जग माहिं (क) (ख) (ट) (ठ)।

२८३ कुबरीनाथ—कूबरीदास (ख) (छ) (झ)।

२८४ ऊधव या बोल कौं (क) (ख) (ङ)।

२८५ कौंहि जो ज्ञान है (ग) (च) (ज)।

२८८ मोहन....होहि—मोहन निर्गुन होइ गहे (ट), मोहन निर्गुन को गहे (ठ)।

२९६ गति—रहत (ग) (घ) (ट) (ठ)।

२९८ रोहैं—रहित (ग), रोहैं (ट)।

३०१ नैन....धारहिं—अंग लैं धन की धारनि (क), अनु लोचन की धारनि (ख), सिंधु लैं तन की धारनि (ट) (ठ)।

३०२ भूल धन अबला जाति कंचुकी भूषन हारहिं (ग) (च) (ज), अजानति उलटे गात कंचुकी भूषन धारन (घ); बहुगुन—भूषन (ट) (ठ)।

३०३ प्रेम-पयोधि—प्रेम श्री बंध (क), अन चिह्न (ग) (घ) (ज); ज्यौं बनै बहाइ—और न कछू सुहाय (ग) (ज)।

३१३ हौं कहौं—हौं नौ कहि (ट); कौं—सौं (ठ); रोपि—रूप (क) (ख) (घ) (ङ)।

३१४ है—है (क) (ख) (ग) (च), हैं (ठ)।

३१७ प्रेम-पदवी—प्रेम पद की (ठ)।

३१८ स्वच्छ—स्वस्त (छ) (झ)।

३२१ उर....व्याप—उर मैं पटी हौं व्याप (ख), उर मैं रह्यो व्यापि (ट), उर मध रह्यो छाय (ठ); व्याप—व्यापि (ग) (ज) (झ)।

३२५ नँद-नंदन—नँद सुन्दर (घ) (ट) (ठ)।

२५४ गह....बधू—हसि बोली ब्रजबासनी (घ), ऐसें बोरी ब्रज बासिनी (झ), बह बोरी ब्रजबासिनी (ट) (ठ)।

२७८ निर्गुन भए अतीत के सगुन सकल जग माहिं (क) (ख) (ट) (ठ)।

२८३ कुबरीनाथ—कूबरीदास (ख) (छ) (झ)।

२८४ कुब्ज या बोल कौं (क) (ख) (ङ)।

२८५ कौहि जो ब्यान है (ग) (च) (ज)।

२८८ मोहन....होंहि—मोहन निर्गुन होइ गहे (ट), मोहन निर्गुन कौ गहे (ठ)।

२९६ गति—रहत (ग) (घ) (ट) (ठ)।

२९८ रहें—रहित (ग), रहें (ट)।

३०१ नैन....धारहिं—अंग लै घन की धारनि (क), अनु लोचन की धारनि (ख), सिधु लैं तन की धारनि (ट) (ठ)।

३०२ भुज धन अबला जाति कंचुकी भूषन हारहिं (ग) (च) (ज), अबलानि उमटे गात कंचुकी भूषन धारन (घ); बहुगुन—भूषन (ट) (ठ)।

३०३ प्रेम-पयोधि—प्रेम श्री बंध (क), अन चिह्न (ग) (घ) (ज); ऊधौ बनै बहाइ—और न कछू सुहाय (ग) (ज)।

३१३ हौं कह्यौ—हौं नी कहि (ट); कौ—सौं (ठ); रोपि—रूप (क) (ख) (घ) (ङ)।

३१४ है—है (क) (ख) (ग) (च), है (ठ)।

३१५ प्रेम-पदवी—प्रेम पद की (ठ)।

३१८ सब—सन (छ) (झ)।

३३३ उर....बाघ—उर के परी हो बाघ (ख), उर में रह्यो ब्याधि (ट), उर मध रह्यो उपाय (ठ); बाघ—आधि (ग) (ज) (झ)।

३३७ कौतुक-काज—कौतुक सुन्दर (घ) (ट) (ठ)।

२५ चितत—झंपत (क) (ख), जपत ही (ग)।

२७ छाजत—राजत (घ) ; ह्वै गई कछुक विवरन छीन तन यों छवि छायो (ग)।

३० कन-कंपन....आहीं—कर कँगना द्रग जलकन ह्वै जाही (ग)।

३१ टप टप....तें—टपक टपक छबी नेनेन सों (क) टप टप, टप टप टपकि नैन सों (ख)।

३२ दल तें भल—दल पर ते (क), दल तिन तें (घ)।

३३ कबहुँक—कबहू (ग)।

३४ पीय—कंत (ग)।

३५ अवा-उर—अवा तन (ख), अवा जिम (घ)।

३६ लाल—लाज (ग), लाच (घ)।

३७ अब यों—दई अब (घ)।

३९ हठ—हट (ख)।

४० मठ—मट (क)।

४५ तिन—जिन (क) (ख); अज से—अजहूँ (क)।

४६ सिय—सुक (घ)।

४८ नाना—नकसनि (क) (ख)।

४९ बात—नात (ग) (घ)।

५० पिया—पीय (ग)।

५१ नाथ-हाथ....तुम—नाथ हाथ लै तुम ही (क)।

५२ पुर्ती—पूतनी (ग) (घ)।

५५ माधुरी—छवि दुरी (ग), छवि पुरी (घ) ; चाहि कै.... चित—चित्र ह्वै रह्यौ चकित चित (क)।

५६ छबि—छिन (क)।

५८ अमृत फलन सौं फूले फूलें सुर मुन लेवैं (क), अमृत फलन सौं फलें करैं सुर नर मन लेवैं (ख)।

२५ चितत—झंपत (क) (ख), जपत ही (ग)।

२७ छाजत—राजत (घ) ; ह्वै गई कछुक विवरन छीन तन यों छवि छायौ (ग)।

३० कर-कंकन....आहीं—कर कँगना द्रग जलकन ह्वै जाहीं (ग)।

३१ टप टप....तैं—टपक टपक छवी नेनेन सों (क) टप टप, टप टप टपकि नैन सों (ख)।

३२ दल तैं भल—दल पर ते (क), दल तिन तें (घ)।

३३ कबहुँक—कबहू (ग)।

३४ पीय—कंत (ग)।

३५ अवा-उर—अवा तन (ख), अवा जिम (घ)।

३६ लाल—लाज (ग), लाच (घ)।

३७ अब यौं—दई अब (घ)।

३९ हट—हट (ख)।

४० नठ—नट (क)।

४५ तिन—जिन (क) (ख); अज से—अजहूँ (क)।

४६ सिख—सुक (घ)।

४८ नाना—एकमति (क) (ख)।

४९ बात—बाद (ग) (घ)।

५० जिया—जीय (ग)।

५१ नाथ-हाथ....तुम—नाथ हाथ लै तुम ही (क)।

५२ दुनी—दूनी (ग) (घ)।

५५ माधुरी—छवि दुरी (ग), छवि पुरी (घ) ; चाहि कै.... चित—छिप्र है रह्यौ चकित चित (क)।

५६ इति—छिन (क)।

५८ मधुर फलन सौं फूले फूलें सुर सुन लेवैं (क), अमृत फलन सौं फलें फलें सुर पर मन लेवैं (ख)।

१२० भाये—भाय (ख) ; अमृत—अमी (ग) ।
१२२ हौं—हम (क) ; नाथ तुम भये—नाथ भये नाथ (ग) (घ) ।
१२३ अब अनहित नाहिन करचौ बरचौ त्रिभुवन मन सुंदर (ग) ।
१२४ नित्य परम अभिराम स्याम सुख धाम पुरंदर (ग) ।
१२५ भरे, वरे—भरै वरै (क), भरे सरे (ग) ।
१२६ कोल—कूटि (क), कूट (ख) ; परे—धरे (ग), मरे (घ) ; छिन ही....तंतर—छिन छिन परतंतर (ग), छिन छिनही निरंतर (घ) ।
१२७ पानिप—पानिय (ख) ; बोरे—डोरे (ग) (घ) ।
१२८ हार—हरिहि (ख) ।
१२९ सठ—सट (ख) ।
१३० चट तैं मठ—चठ ते मठ (क), चट तैं मट (ख) ।
१३१ करत....मरियैं—मरियैं लाज यहैं तो (ग) ।
१३२ बारन बृंदा बिदारन बल गोमाय यहैं तो (ग) ।
१३३ जू बलहि—निज मनस (ग), निज संस (घ); बिचारी—बिचारै (ग) (घ) ।
१३४ बिहारी—जुहारै (ग) (घ) ।
१३५ देखत याकौं—देखि तिया कौं (ख), निरखत याको (ग) (घ) ।
१३६ तुम सब बिधि लायक अछित छिपै सिसुपाल छिया कौ (ख), तुम तौ सब विधि लाइक अछित छुवौ न छिया कौ (ग) ।
१३७ नागर नगधर नंद कुंवर मोहि करिहौ न दासी (क) ।
१३८ परि—पर (क) ; तन कौ—तन तिन (क), तन तृन (घ) ; तौ पर हरि पावक जरहौं मरहौं तन तिन कासी (ग) ।
१४० स्याल....कर—छुवै सिसुपाल स्याल कर (क) ।
१४२ तैं—तै (ख) ।
१४४ ग्रन्त—कहन (क) (ख) ; थात—हस्त (क) (ख) ।

१२० भाये—भाय (ख) ; अमृत—अमी (ग) ।

१२२ हौं—हम (क) ; नाथ तुम भये—नाथ गये नाय (ग) (घ) ।

१२३ अब अनहित नाहिन करयौ बरयौ त्रिभुवन मन सुंदर (ग) ।

१२४ नित्य परम अभिराम स्याम सुख धाम पुरंदर (ग) ।

१२५ भरे, बरे—भरै बरै (क), भरे सरे (ग) ।

१२६ कोल—कूटि (क), कूट (ख) ; परे—धरे (ग), मरे (घ) ; छिन ही....तंतर—छिन छिन परतंतर (ग), छिन छिनही निरंतर (घ) ।

१२७ पानिप—पानिय (ख) ; धोरें—डोरे (ग) (घ) ।

१२८ हार—हरिहि (ख) ।

१२९ सठ—सट (ख) ।

१३० चट तें मठ—चठ ते मठ (क), चट तें मट (ख) ।

१३१ करत....मरियै—मरियै लाज यहै तो (ग) ।

१३२ वारन वृंदा विदारन बल गोमाय यहै तो (ग) ।

१३३ जू बलहि—निज मनस (ग), निज संस (घ) ; विचारी—विचारै (ग) (घ) ।

१३४ विहारी—जुहारै (ग) (घ) ।

१३५ देखन याकौं—देखि तिया कौं (ख), निरखत याको (ग) (घ) ।

१३६ तुम सब विधि लायक अछिन छिपे सिसुपाल छिया कौ (ख), तुम तौ सब विधि लाइक अछिन छुवौ न छिया कौ (ग) ।

१३७ नागर नगधर नंद कुवर मोहि करिहौ न दासी (क) ।

१३८ परि—पर (क) ; तन कौ—तन तिन (क), तन तृन (घ) ; तौ पर हरि पावक जरहौं करहौं तन तिन कानी (ग) ।

१४० स्याल....कर—छूवे सिसुपाल स्याल कर (क) ।

१४२ सैं—मैं (ख) ।

१४५ कहत—कहत (क) (ख) ; बात—हनत (क) (ख) ।

१८६ गाही बरहैं—आई बरहैं (क), यें ही बरिहैं (ख)।
१९० परहैं—परी है (क), जु परि है (ख)।
१९२ परे—कर (ग); ओज उवारे—ओज उचारे (ख), ज्यों अंगारे (ग)।
१९३ उन—इन (क) (ख); बतायौ—बुलायौ (क)।
१९५ ऊगन—उज्जल (क)।
१९६ मंदर—मंदिर (ख), मंडल (घ); कंदर घन ज्यौं—कंचन नव घन (क), गगन में नभ घन (ख), किंकिनी नव घन (घ)।
१९८ सब—सो (क) (ख), सुर (घ)।
२१२ चलें तिन सौं—झक तिन सों (ग), झत्ते तीन सौं (घ)।
२१४ बीन—बैन (क) (ख)।
२१५ अवनि....उनमानी—अव परें यों अनुमाने (ग)।
२१६ अपनी—अवनी (ग); जानी—जाने (ग)।
२१७ देखति छवि सौं छली अपन-वर आरत उलही (ख), ये सब छवि छल अपनी हरि को अर्पन उलही (घ)।
२२१ छवि राजत—झिलमिलत (ग), अक्षत छवि (घ)।
२२२ बदन—बदरि (ख); दमकत दामिनि अंकुर अरुन कमल में जैसें (ग)।
२२३ अवननि—छुटकी (क) (ख)।
२२५ दिये—लिये (क), लियें (ख)।
२२७ मुरझि—मुरसि (ख); उरझि उरेझा—उरसि उरेसा (ख)।
२२८ झेझा—बेला (ख)।
२३३ छवि सौं स्यहि चलाइ आंन रुकमिन जब आई (ग)।
२३५ रुद्ध—इम (ख)।
२४४ तूप—पूप (ख), लूप (ग); लागे ब्रज मारें—लारे ब्रज-मारे (ग)।

१८६ याही बरहै—आई बरहै (क), ये ही बरिहैं (ख)।
१६० परहै—परी है (क), जु परि है (ख)।
१६२ पर—कर (ग); ओज उवारे—ओज उचारे (ख), ज्यों अंगारे (ग)।
१६३ उन—इन (क) (ख); बतायौ—बुलायौ (क)।
१६५ ऊगन—उज्जल (क)।
१६७ मंदर—मंदिर (ख), मंडल (घ); कंदर घन ज्यौं—कंचन नव घन (क), गगन में नभ घन (ख), किंकिनी नव घन (घ)।
१६८ सव—सो (क) (ख), सुर (घ)।
२१२ चलै तिन सौं—झक तिन सों (ग), झलै तीन सौं (घ)।
२१४ वीन—वैन (क) (ख)।
२१५ अवनि....उनमानी—अव परें यों अनुमाने (ग)।
२१६ अपनी—अवनी (ग); जानी—जाने (ग)।
२१७ देखति छवि सौं छली अपन-वर आरत उलही (ख), ये सव छवि छल अपनी हरि को अर्पन उलही (घ)।
२२१ छवि राजत—झिलमिलत (ग), अक्षत छवि (घ)।
२२५ बदन—बदरि (ख); दमकत दामिनि अंकुर अरुन कमल में जैसें (ग)।
२२३ अवननि—छुटकी (क) (ख)।
२२५ दिये—लिये (क), लियें (ख)।
२२७ मुरकि—मुरसि (ख); उरकि उरेझा—उरसि उरेसा (ख)।
२२८ देझा—वेसा (ख)।
२३३ छवि सौं रयहि चलाइ आंन रुकमिन जब आई (ग)।
२३५ छूटू—छूम (ख)।
२४४ तूप—पूप (ग), लूप (ख); लागे वज मारे—लागे ब्रज-मारे (ग)।

३९ जिन—तिन (ख) (ग) (छ) (ज) (ञ), यह (क) (च)।

४० तातें मैं—ताही ते (ख) (छ) (ज) (ञ)।

४५ बिरुध—बिरुधी (छ) (ज) (झ); तृन—तन (ख) (छ) (ज) (झ) (ञ)।

४६ प्रभाउ—प्रभा (क) (ख) (घ) (च); परत न काल प्रभाव सदा सोभित हैं ते ते (ञ)।

४९ संत बसंत—संतत बसत (क) (च)।

५१ ज्यौं—जो (छ) (ज) (ञ)।

५२ भू—भ्रू (छ) (ज) (ञ); जगत—ज्योति (घ); तित—कित (ङ)।

६५ अति सुही—सुही ज्यौं (छ) (ञ)।

७० घर—घर (छ) (ज) (ञ) (ङ)।

७३ तट—नित (ख) (ङ) (ज)।

७४ दौरि जनु—दूरि लौं (छ) (ञ); मनि मंडित दोऊ तीर उठैं छवि भरि अति लहरी (ङ), मणि मंदिर दोउ तीर उठत छवि अद्भुत भारी (ज)।

७५ तहाँ इक मणिमय सिंह पीठ सोभित सुन्दर अति (छ) (ज)।

८० रुचिर....जस—रुचिर निविड़ मध्य लागत उड़पति जस (छ), रुचिर निविड़ उर लागत पति जस (ज)।

८५ आक्रांत—रुचि लिए (ज)।

९० मधुर हँसि—मदत बस (छ) (ञ), मधुर हरि (ज)।

१०० बिहँसति—बिलसति (छ) (ञ), वहसन (ज)।

१०३ अरुनिमा, बन मैं—अरुन वा बन मे (घ) (झ), अरुन नभ बन मैं (छ) (ञ), अरुन मनो बन व्याप (ज)।

११० चतुर—तु घट (च); अधरासव—अधरा सुर (ङ), अधरा रस (ठ)।

३९ जिन—तिन (ख) (ग) (छ) (ज) (ञ), यह (क) (च) ।

४० तातें में—ताही ते (ख) (छ) (ज) (ञ) ।

४५ बिरथ—बिरथी (छ) (ज) (झ) ; तृन—तन (ख) (छ) (ज) (झ) (ञ) ।

४६ प्रभाउ—प्रभा (क) (ख) (घ) (च) ; परत न काल प्रभाव सदा सोभित हैं ते ते (ञ) ।

४९ संत बसंत—संतत बसत (क) (च) ।

५१ ज्यों—जो (छ) (ज) (ञ) ।

५२ भू—भ्रू (छ) (ज) (ञ) ; जगत—ज्योति (घ) ; तित—कित (ङ) ।

६५ अति सुही—सुही ज्यौं (छ) (ञ) ।

७० घर—घर (छ) (ज) (ञ) (ङ) ।

७३ तट—नित (ख) (ङ) (ज) ।

७४ दौरि जनु—दूरि लौं (छ) (ञ) ; मनि मंडित दोऊ तीर उठैं छवि भरि अति लहरी (ङ), मणि मंदिर दोउ तीर उठत छवि अद्भुत भारी (ज) ।

७५ तहाँ इक मणिमय सिंह पीठ सोभित सुन्दर अति (छ) (ज) ।

८० रुचिर....जस—रुचिर निविड़ मध्य लागत उड़पति जस (छ), रुचिर निविड़ उर लागत पति जस (ज) ।

८५ आक्रांत—रुचि लिए (ज) ।

९० मधुर हँसि—मरुत बस (छ) (ञ), मधुर हरि (ज) ।

१०० बिहँसति—बिलसति (छ) (ञ), बहसन (ज) ।

१०३ अरुनिमा, बन में—अरुन वा वन मे (घ) (झ), अरुन नभ वन मैं (छ) (ञ), अरुन मनो वन व्याप (ज) ।

११० चतुर—सु घट (च) ; अधरासव—अधरा सुर (ङ), अधरा रस (ठ) ।

१८७ दुख के बोझ—दुख सौं दवि (छ) (ज) (ञ); नै—लै (छ) (ज) (ञ)।

१९९ कितहिं—कत कौं (क), केतीक (ख), कतक (च) (छ) (ज)।

२०० घरमन की तुम धर्म भर्म फिर आगे को है (छ), घर में को तिय भरमैं, धरमैं या आगै कोहै (ञ)।

२०३ नग खग और मृगन को कैसो धर्म्म रह्यो है (ज), नग, खग और मृगन हूँ नाहिन धरम रह्यो है (ञ)।

२०४ छाने ह्वै रही पिया अब न कछु जात कह्यो है (छ) (ज) (ञ)।

२०५ अरु—के (ख) (ज)।

२०८ लाल, नैंन चंचल जु—चपल नेन मानो मीन (ख), नैंन चपल मनु मधुप (व), चपल नयन पिया मीन (ज), चपल-नैंन ह्वै मीन (ञ)।

२१४ कूदि परि—गिरि परि (ज), परि-परि (ञ)।

२१७ प्रेम-पगे सुनि वचन, आँच-सी लगी आइ जिय (ञ); लागी जिय—लगी तबहि हिय (ङ)।

२१८ नव-नीत मीत नवनीत-सदृस—नवनीत मीत सुन्दर मोहन (छ) (ज) (ञ)।

२२२ तन—नव (ख), है (छ) (ज), चित (झ) (ञ)।

२२६ पुनि—छवि (ञ); लुठति—गिरत (छ) (ज)।

२२७ गन—मन (ख) (छ) (ज) (ञ)।

२२८ घन—संग (क) (ङ)।

२३३ कुंज, छवि पुंजन—कुंज पुंजनि छवि (च)।

२३६ उत— त (क) (ख) (ग) (घ) (ङ) (च)।

२३९ लपटैं—पूटैं (ञ)।

२४० गोद....दपटैं—गोद भरि-भरि मुख लूटैं (छ) (ज) (ञ)।

२४२ सुधाव्रत—सुधा बर (छ) (ज) (ञ)।

१८७ दुख के बोझ—दुख सों दबि (छ) (ज) (ञ); नै—लै (छ) (ज) (ञ)।

१९९ कितहि—कत कों (क), केतीक (ख), कतक (च) (छ) (ज)।

२०० घरमन की तुम धर्म भर्म फिर आगे को है (छ), घर में को तिय भरमैं, धरमैं या आगै कोहै (ञ)।

२०३ नग खग और मृगन को कैसो धर्म्म रह्यो है (ज), नग, खग और मृगन हूँ नाहिन धरम रह्यौ है (ञ)।

२०४ छाने ह्वै रही पिया अब न कछु जात कह्यो है (छ) (ज) (ञ)।

२०५ अरा—के (ख) (ज)।

२०८ लाल, नैंन चंचल जु—चपल नेन मानो मीन (ख), नैंन चपल मनु मधुप (घ), चपल नयन पिया मीन (ज), चपल-नैंन ह्वै मीन (ञ)।

२१४ कूदि परि—गिरि परि (ज), परि-परि (ञ)।

२१७ प्रेम-पगे सुनि वचन, आँच-सी लगी आइ जिय (ञ); लागी जिय—लगी तबहि हिय (ङ)।

२१८ नव-नीत मीत नवनीत-सदृस—नवनीत मीत सुन्दर मोहन (छ) (ज) (ञ)।

२२२ तन—नव (ख), है (छ) (ज), चित (झ) (ञ)।

२२६ पुनि—छवि (ञ); लुठति—गिरत (छ) (ज)।

२२७ गन—मन (ख) (छ) (ज) (ञ)।

२२८ धन—संग (क) (ङ)।

२३३ कुंज, छवि पुंजन—कुंज पुंजनि छवि (च)।

२३६ रत— त (क) (ख) (ग) (घ) (ङ) (च)।

२३९ लपटैं—पूटैं (ञ)।

२४० गोद....लपटैं—गोद भरि-भरि सुख लूटैं (छ) (ज) (ञ)।

२४२ सुधावत—सुधा वर (छ) (ज) (ञ)।

३२६ मरयौ—यस (ङ) (ञ)।

३२७ कह्यौ—श्रह्यो (ख) (घ), पहु (छ)।

३२८ तिन मैं तिन के हिय की जानत ऊन उत्तर दीनो (ख), तिन में कोऊ तिनके हित की जिनि उत्तर दीनो (घ), तिन मधि हिय की जानि, कोऊ यह उत्तर दीन्हौ (ञ)।

३४१ मानिनि-तन—मानो नीतन (ख)।

३४८ ज्यौं, ग्रति—तौ कछु (ग) (घ) (ञ)।

३५९ निहारी—ग्रटारी (ख), विहारी (छ) (ज) (ञ)।

३६० यँ—यह (ख)।

३६१ अस्त्र—शास्त्र (क) (ख) (च); हाँसी-फाँसी—हाँसी हाँसी (क) (ख) (च) (झ) (ठ) (ड)।

३६२ मोल—मान (ड)।

३६३ विष....ग्रनल तैं—विष तैं, जल तैं, व्याल-ग्रनल तैं (ञ)।

३६५ जव....सुवन—जनु जसुधा सुत न (क) (च), जनु तुम जसोदा सुवन (ख) (ग), जसुदा सुत जनु तुम न (ज), जनु जसुधा तैं प्रगट (ञ)।

३६६ विधि नैं—विवुध (ङ), विधना (छ) (ज) (ञ), विधिहि (ठ)।

३६८ जौ—को (ख) (घ) (ङ) (छ) (ज); मरिहौ—मारिहौ (क), मारि (छ) (ज) (ञ); करिहौ—करहु (ञ)।

३७४ खचैं—खैंचि (घ) (ङ)।

३८३ जिहि यह प्रेम सुधाधर मोहन मुख देख्यो पिय (ज), जिन यह प्रेम-सुधाधर-तुम्हरो-मुख निरख्यौ पिय (ञ)।

३८६ तौ—कौ (ख)।

३९० कूर्म—कूप (ङ), कर्म (ड)।

३९८ उजगत—जागहि (क) (च), जगति (ञ), उजगहि (ठ)।

३२६ मर्यो—यस (ङ) (ञ)।

३२७ कह्यो—अह्यो (ख) (घ), पह्यो (छ)।

३२८ तिन में तिन के हिय की जानत ऊन उत्तर दीनो (ख), तिन में कोऊ तिनके हित की जिनि उत्तर दीनो (घ), तिन मधि हिय की जानि, कोऊ यह उत्तर दीन्हों (ञ)।

३४१ मानिनि-तन—मानो नीतन (ख)।

३४८ ज्यौं, अति—ती कछु (ग) (घ) (ञ)।

३५९ निहारी—अटारी (ख), विहारी (छ) (ज) (ञ)।

३६० यें—यह (ख)।

३६१ अस्त्र—शास्त्र (क) (ख) (च) ; हाँसी-फाँसी—हाँसी हाँसी (क) (ख) (च) (झ) (ठ) (ड)।

३६२ मोल—मान (ड)।

३६३ विष....अनल तैं—बिष तैं, जल तैं, व्याल-अनल तैं (ञ)।

३६५ जव....सुवन—जनु जसुधा सुत न (क) (च), जनु तुम जसोदा सुवन (ख) (ग), जसुदा सुत जनु तुम न (ज), जनु जसुधा तें प्रगट (ञ)।

३६६ विधि नें—विबुध (ङ), बिधना (छ) (ज) (ञ), बिधिहि (ठ)।

३६८ जो—को (ख) (घ) (ङ) (छ) (ज) ; मरिहो—मारिहो (क), मारि (छ) (ज) (ञ) ; करिहो—करहु (ञ)।

३७४ सर्चें—सेंचि (घ) (ङ)।

३८३ जिहि यह प्रेम सुधाधर मोहन मुख देख्यो पिय (ज), जिन यह प्रेम-सुधाधर-तुम्हरो-मुख निरख्यौ पिय (ञ)।

३८९ तों—को (ख)।

३९० कूर्म—कूप (ङ), कर्म (ड)।

३९८ उकसत—जागहिं (क) (च), जगति (ञ), उजगहि (ठ)।

४६० प्रतिबिंब चंद्र जन—बहु प्रतिबिंब बधु जस (ख), बहु प्रतिबिंब चन्द्र जस (छ) (ज), बहु प्रतिबिंब होइ जस (ञ)।

४६७ तार—ताल (ग) (छ) (ज) (ञ)।

४६८ की—कै (ञ)।

४७३ छबिली—चपल (ञ)।

४७७ तिरप—तिर्प (क) (च), निरपि (ख), चक्र (ङ); कोउ सखि... बाँधि—कोउ सखी उरप तिरप बाँधति (घ), कोऊ सखी उरप तिरप करि (ङ), कोउ सखी कर पकरत (ज), कोऊ सखि कर-पकर जु (ञ); छबिली—यों छबिली (ज), या छवि सौं (ञ)।

४७८ मानों करतल फिरत देखि नट लटू होत पिय (छ) (ज)।

४८० गावति....जस—अरु गावति पिय के जस (छ) (ज) (ञ)।

४८१ तव—नव (क) (घ) (च)।

४८२ बिलास—बिसाल (क) (च)।

४८४ अबर....रहत—अबर तिहि बन रहत (ग), अंबर तिहि छन बनत (छ) (ज), जहँ के तहँ बनि रहत (ञ)।

४८५ सुर-रली—संग जुरली (ख), सुर लीन (घ), रस बली (ज), सुर जुरली (ञ)।

४८८ दै तँबोल—देत बोर (क) (च), देत बौल (ख), बोर देत (ङ)।

४८९ नृत्य—रीत (ख) (छ) (ज) (ञ)।

४९० निगम—गवन (ख), रमण (घ), गमन (छ) (ज), गान (ञ)।

४९६ कह निर्तनि—कर निरतत (ग), मुरि निरतत (छ) (ज) (ञ), कापै....गति—कहि आवै कापै गति (च)।

४९८ मंजुलता....बोलनि—ता ता थेई थेई बोलनि (ङ), मंजुल ता थेई बोलनि (छ) (ज) (ञ)।

४९९ कोउ उन तें अलि गावत सुर लय लेत तान नइ (ज), कोउ गावत सुर-लैलौं लै फरि तान नई नई (ञ)।

४६० प्रतिबिंब चंद्र जल—बहु प्रतिबिंब बधु जल (ख), बहु प्रतिबिंब बधू जल (छ) (ज), बहु प्रतिबिंब होइ जल (ब)।

४६७ तार—ताल (ग) (छ) (ज) (ञ)।

४६८ की—के (ञ)।

४७३ छबिली—चपल (ञ)।

४७७ तिरप—तिर्प (क) (च), तिरपि (ख), चप्र (ङ); कोउ सखि.... बाँधि—कोउ सखी उरप तिरप बाँधति (घ), कोऊ सखी उरप तिरप करि (ङ), कोउ सखी कर पकरत (ज), कोऊ सखि कर-पकर जु (ञ); छबिली—यों छबिली (ज), या छवि सौं (ञ)।

४७८ मानों करतल फिरत देखि नट लटू होत पिय (छ) (ज)।

४८० गावति....जस—अरु गावति पिय के जस (छ) (ज) (ञ)।

४८१ तव—नव (क) (घ) (च)।

४८२ बिलास—बिसाल (क) (च)।

४८४ अवर....रहत—अवर तिहि वन रहत (ग), अंबर तिहि छन बनत (छ) (ज), जहँ के तहँ बनि रहत (ञ)।

४८५ सुर-रली—संग जुरली (ख), सुर लीन (घ), रस रली (ज), सुर जुरली (ञ)।

४८८ दै तँबोल—देत बीर (क) (च), देत बीरा (ख), बीर देत (ङ)।

४८९ नृत्य—रीत (ख) (छ) (ज) (ञ)।

४९० निगम—गवन (ख), रमण (घ), गमन (छ) (ज), गान (ञ)।

४९६ रह निर्तनि—रह निरतत (ग), मुरि निरतत (छ) (ज) (ञ), कापै....गति—कहि आवे कापै गति (च)।

४९८ मँजुलता....बोलनि—ता ता थेई थेई बोलनि (ङ), मंजुल ता थेई बोलनि (छ) (ज) (ञ)।

४९९ कोउ ....गावत सुर लय लेत तान नइ (ज), कोउ गावत सुर-लीनी लै फलि तान नई नई (ञ)।

५६८ जग में जे मोहनी तिनकी मोहनी ब्रज वहू (घ), जगत-मोहिनी जिती तिती ब्रज-तिय मोहनि सब (ञ)।

५७२ मानी—जानी (छ) (ज) (ञ)।

५८२ सो तनकहु नाहिं—सो न नेक हू (ञ)।

सिद्धांत पंचाध्यायी

४ प्रभु को—प्रभुक (क) (ख), प्रभुहि (ग)।

१३ पट....बरन—निर्गुन अरु अवतार धर्म (घ)।

१७ कहैं—कहै (क), कहे (ग) ; रहैं—रहै (क), रहे (ग)।

१८ अपन निज—आप निज (घ)।

१९ मोहिनी....मोहे—मोहनी मोह रूप धरि मोह्यो (घ)।

२२ गिरि तैं गिरि—गिरि तो (घ) ; मूरि—पूरि (घ)।

२४ करयो—कियो (ग) (घ)।

२६ निरतास—नितान (ख), निर्जास (घ)।

२८ रसवारी—रस रीति (घ)।

३० तिन में—तिन तन (घ)।

३४ कीटांत—की अंत (ग), कीटादि (घ) ; सर्वांतरजामी—सब अन्तर जामी (ग) (घ)।

३६ करुना....नंदन—करुनानिधान प्रगट नंदनंदन (घ)।

४० स्मृति—गान (ख) (घ)।

४२ सब....आजै—सब रजनी आजै (घ)।

५५ इक पहिलैंई गमन मन सुन्दरि घन मूरति हरि (क), इक पहली जु मगन मनहिं सुंदर घन मूरति हरि (घ)।

६१ दै—देहु (ख) (घ)।

६३ बाढ़त—बाढ़ै (ख) (ग)।

५६८ जग मैं जे मोहिनी तिनकी मोहनी ब्रज बहू (घ), जगत-मोहिनी जिती तिती ब्रज-तिय मोहिनि सब (ञ)।

५७२ मानी—जानी (छ) (ज) (ञ)।

५८२ सो तनकहु नाहिं—सो न नैंक हू (ञ)।

सिद्धांत पंचाध्यायी

४ प्रभु की—प्रभुक (क) (ख), प्रभुहि (ग)।

१३ पद....बरन—निर्गुन अरु अवतार धर्म (घ)।

१७ कहैं—कहै (क), कहे (ग) ; रहैं—रहै (क), रहे (ग)।

१८ अपन निज—आप निज (घ)।

१९ मोहिनी....मोहे—मोहनी मोह रूप धरि मोह्यो (घ)।

२२ गिरि तें गिरि—गिरि तो (घ) ; भूरि—पूरि (घ)।

२४ करयो—कियो (ग) (घ)।

२६ निरतास—नितांत (ख), निर्जास (घ)।

२८ रसवारी—रस रीति (घ)।

३० तिन में—तिन तन (घ)।

३४ कीटांत—की जंत (ग), कीटादि (घ) ; सर्वांतरजामी—सब अन्तर जामी (ग) (घ)।

३६ करुना....नंदन—करुनानिधान प्रगट नंदनंदन (घ)।

४० स्मृति—गान (ख) (घ)।

४२ सब....आजै—सब रजनी आजै (घ)।

५५ इक पैहिलैंई गवन मन सुन्दरि घन मूरति हरि (क), इक पहली जु मगन मनहिं सुंदर घन मूरति हरि (घ)।

६१ पै—तऊ (ख) (घ)।

६३ बाढ़त—बाढ़ै (ख) (ग)।

२२६ बहुरि का....ते—बहुरि या बहु कानन ते (ग), फिरि बहुरि कहा कारते ते (घ)।

दशम स्कंध

प्रथम अध्याय

१ जो—ज्यों (क) (ख) (ग)।
४ कही—कहि (क) (ख), कह्यौ (ग)।
१२ हीं को— को है (क)।
२५ काजै—कारन (ङ)।
२६ कवि जान—जंजांन (क) (ग)।
२७ भक्त—भक्ति (क) (ख)।
३० नृपन—नपनि (क); सो ईसान....जया—सोई सात कथा है जया (क)।
३४ सो आश्रय इहि दशम स्कंध, प्रगटित मोचन लोचन ग्रंथ (ख)।
४३ ईस्वरता....ताके—सो ईस्वरता फुरे न ताके (क)।
५१ परीच्छत लह्यौ—परीक्षक लह्यौ (क)।
७५ हमरे....देव—हमरे तो हैं हरि कुल देव (ख)।
११९ इहि....कही—इहि विधि विविध वचन सों कही (क)।
१२२ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
सम्यक शास्त्र दिष्ट जे लहैं, आतम द्वै प्रकार ते कहैं।
एक जीव एक भक्त आतमा, जों नित पाइ पलोटत रमा।
१३० नव....गुन भरी—नवं देव नव नव गुन भरी (ख)।
१३१ दुति—द्युति (ख) (ग)।
१३७ छिम्यान—सैंधान (क)।

२२६ बहुरि का....ते—बहुरि का बहु कानन ते (ग), फिरि बहुरि कहा कानन ते (घ)।

दशम स्कंध

प्रथम अध्याय

१ जो—ज्यों (क) (ख) (ग)।

४ कही—कहि (क) (ख), कह्यो (ग)।

१२ हाँ को— को है (क)।

२५ कार्ज—कारन (क)।

२६ कवि जान—जंजान (क) (ग)।

२७ भक्त—भक्ति (क) (ख)।

३० नृपन—नपनि (क); सो ईसान....जथा—सोई सात कथा है जथा (क)।

३४ सो आश्रय इहि दशम स्कंध, प्रगटित मोचन लोचन ग्रंथ (ख)।

४२ ईस्वरता....ताके—सो ईस्वरता फुरे न ताके (क)।

५१ परीच्छन लह्यौ—परीक्षक लह्यो (क)।

७५ हमरे....देव—हमरे तो हैं हरि कुल देव (ख)।

११६ इहि....कही—इहि विधि विविध वचन सों कही (क)।

१२२ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—

सम्यक शास्त्र दिष्ट जे लहै, आतम है प्रकार ते कहै।

एक जीव एक भक्त आनन्दा, जो नित पाइ पलोटत नन्दा।

१३० नन्द....गुन भरी—नंद देव नव नव गुन भरी (ख)।

१३१ दुति—छबि (ख) (ग)।

१३३ निध्यान—सैंधान (क)।

५६ जानैं—जांनी (क) ।
६० जथा....तितौ—जथा वकासुर हत है तितौ (क) ।
६७ नैं नाहि—नै सुत (ग) ।
७४-७७ इन पंक्तियों के स्थान पर 'ख' में केवल दो पंक्तियां हैं—
आनंद भरि अंबुद घिरि आए, फुई फूल बरषते सुहाए ।
नै नाहि सक्यो न सेवक सेस, करि लियो फननि को छत्र सुदेस ।
७८ जस—सब (क), छवि (ग) ।

चतुर्थ अध्याय

२ चंडिका—चंडिवे (घ) । इस दोहे के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियां दी हैं—
अब चतुर्थ अध्याय सुनि मित्र, जामें चंडी वचन विचित्रि ।
सुनि के कंस महा डर डरिहैं, उठि कैं प्रात बात विस्तरिहैं ।
७ उगटत—अग्टुटत (क), अघुरत (ख) ।
८ छविमई—सुन मई (क) ।
१२ नीचन....सुभाउ—नीचनि के कंसों हृदभाव (क), नीचनि के कानों हृदभाव (ख) ।
१७ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
रे रे मंद कछू न विचारत, हम सी कृपननि कत कहु मारत ।
उपजो है तुव मारन हारो, अरे निप्ट जिन करि जिय गारो ।
२५ सौनक—सूनक (घ) ।
२६ जिनि....अनुराग—सोच न करो सिसुन के राग (ख) ।
३१ इस के पश्चात् 'ख' ने यह अतिरिक्त सोरठा दिया है—
बुरो करे जो कोइ, साध न तऊ मानें बुरो ।
खरो उजेरो हो, छार लगायें मुकुर जिम ॥
३२ करी कंस—करी कंस (घ) ।

५६ जानैं—जांनी (क)।
६० जथा....तितौ—जथा वकासुर हत है तितौ (क)।
६७ नैं नहि—लै सुत (ग)।
७४-७७ इन पंक्तियों के स्थान पर 'ख' में केवल दो पंक्तियां हैं—
आनंद भरि अंबुद घिरि आए, फुई फूल बरषते सुहाए।
तै गहि गयो न सेवक गेस, करि लियो फननि को छत्र सुदेस।
७८ जस—सब (क), छवि (ग)।

चतुर्थ अध्याय

२ चंडिका—चंडिवे (घ)। इस दोहे के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियां दी हैं—
अब चतुर्थ अध्याय सुनि मित्र, जामें चंडी वचन विचित्र।
सुनि के कंस महा डर डरिहै, उठि कै प्रात वात विस्तरिहै।
७ उमटत—अलुटत (क), अपुरत (ख)।
८ छविमई—गुन मई (क)।
१२ नीचन....सुभाउ—नीचनि के कंसों हृदभाव (क), नीचनि के कानों हृदभाव (ख)।
१७ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियां दी हैं—
रे रे मंद कछू न विचारत, हम सी कृपननि कत कहु मारत।
उपजो है तुव मारन हारो, अरे निष्ट जिन करि जिय गारो।
२५ सौनक—सूनक (क)।
२६ जिनि....अनुराग—नीच न करो सिसुन के राग (ख)।
३१ इस के पश्चात् 'ख' ने यह अतिरिक्त सोरठा दिया है—
बुरो करै जो कोइ, साव न तऊ मानें बुरो।
खरो उजेरो हो, छार लगायें मुकुर जिम॥
३२ तरी कंस—परी कंस (घ)।

इत ए, राग रागिनी गावत, नृत्तत नटी जटी छवि पावत।
इत मागध बंदी जन रहैं, इत ए सूत पुराननि पढ़ैं।
तेंसेंहिं सुरवर सम्पति फूलनि, डारत दिव्य दुकूल अमूलनि।
उपर्युक्त पद्यांश के बाद 'ख' ने पंक्ति ४४, ४५ देकर इस प्रकार पाठ रक्खा है—
ता दिन ब्रज छवि कहूं बनें न, सबनि के ह्वै गए कंचन अंन।
पंक्ति ४१, ४२, तथा ४३
तिन पर चपल पताका चमकें, बिनु घन जनु कि दामिनी दमकें।
जितीक ब्रज बछ बाछि गांई, कंचन माल सबनि पहिराई।
पंक्ति ५२
जदपि नित्य किसोर ब्रज, राजत अंबुज नैंन।
प्रगट भये पुनि नंद घर, सबैं बयस सुप दैंन॥
पंक्ति ५४, ५६
सोवत रैंन नंद अकुलाई, उठि कें प्रात पूत ढिग जाई।
बदन उघारें छबिहिं निहारैं, बार बार आपुनपौ बारैं।
पंक्ति ५५, ५३
जसुमति के सुप की को कहै, बार ही बार बदन छवि चहै।
कुटिला तिथि भई देवकी, विधु दिपियें जिमि नंद।
पून्यों सी जसुमति लसी, पूरन जहां ब्रजचंद॥
श्री नंदजू के प्रेम की उपमा कहत हैं—
रंक महानिधि पाइ, ज्यों रहैं छतीपर लाय।
तैसें नंद महर अहिर, सुंदर सुत कों पाय॥
ज्यों मनि उजियारें मणी, विहरत करत अनंद।
त्यों सुत सुप कंदहिं निरषि, विचरत ब्रज में नंद॥
पंक्ति ५७ (इस के बाद 'ख' का पाठ मूल पाठ से मिलता जुलता है।)
५७ सत—सब (क) (ख)।

इत ए राग रागिनी गावत, नृत्तत नटी जटी छवि पावत।
उत मागध बंदी जन रढ़ैं, इत ए सूत पुराननि पढ़ैं।
बरषैं सुरवर सम्पति फूलनि, डारत दिव्य दुकूल अमूलनि।

उपर्युक्त पद्यांश के बाद 'ख' ने पंक्ति ४४, ४५ देकर इस प्रकार पाठ रखा है—

ता दिन ब्रज छवि कहूँ बनैं न, सबनि के ह्वै गए कंचन ऐन।

पंक्ति ४१, ४२, तथा ४३

तिन पर चपल पताका चमकैं, बिनु घन जनु कि दामिनी दमकैं।
जितीक ब्रज बछ बाछि गाईं, कंचन माल सबनि पहिराईं।

पंक्ति ५२

जदपि नित्य किसोर ब्रज, राजत अंबुज नैंन।
प्रगट भये पुनि नंद घर, सबै बयस सुख दैंन॥

पंक्ति ५४, ५६

सोवत रैंन नंद अकुलाई, उठि कें प्रात पूत ढिग जाई।
बदन उघारें छबिहि निहारै, बार बार आपुनपौ वारै।

पंक्ति ५५, ५३

जसुमति के सुख कौ को कहै, बार ही बार बदन छबि चहै।
दुतिया तिथि भई देवकी, बिधु दिपियै जिमि नंद।
पून्यौ सौ जसुमति लसी, पूरन जहां ब्रजचंद॥

श्री नंदजू के प्रेम की उपमा कहत हैं—

रंक महानिधि पाइ, ज्यौं रहै छतीयर लाय।
तैसें नंद महर अहिर, सुंदर सुत कौं पाय॥
ज्यौं मनि उजियारैं मणी, विहरत करत अनंद।
त्यौं सुत सुख कंदहि निरखि, विचरत ब्रज मैं चंद॥

पंक्ति ५७ (इस के बाद 'ख' का पाठ मूल पाठ से मिलता जुलता है।)

५८ अस—अब (क) (ख)।

सप्तम अध्याय

२ अब सप्तम अध्याय सुनि मित्र, जामें अद्भुत बाल चरित्र (ख)।
३ इसके स्थान पर 'ख' ने दो पंक्तियाँ दी हैं—
सकट विकट उच्चाटन करिहै, तृणावर्त अघ डारिन दरिहै।
सुनि कै यह पूतना चरित्र, बाल भाव रस सिंधु पवित्र।
४ काजा—साजा (ग) ; मगन भयो नृप गदगद गरें, पुन शुक मुनि सों विनती करैं (ख)।
१४ चावल—चावरी (ख), चवाँर (ग)।
१६ जब—तब (क) ; तब—कछु (क)।
२१ अभिचार—अविचार (ग)।
२३ तनक चरन ऊँचे उचकाई, उड गयो उड़नि में दयो रराई (ख)।
३० कूट—कूल (ङ)।
३७ तब....धर्यो—तब धरनी धरनी पर धरयो (ख)।
४२ कित—किन (ख)।
५० डरपि घुरि—डर्यो लपटि (ख)।
७२ इस के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
माया किधों किधों यह सपनों, किधों बुद्धि भ्रम है यह अपनों।
बहुरि कहत यह सपना न होइ, नहि माया नहि छाया कोइ।
७३ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
विश्वहि करे हरे संहरै, ऊर्न नाभ लों पुनि विस्तरे।

अष्टम अध्याय

११ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
अपनो कछु प्रयोजन आहि, श्री ब्रजराज कहति है ताहि।
२५ अद्भुत....धाम—पूरनकाम सकल गुनधाम (ख)।
३० कहत कहा कहियै हो नंद, द्वै है तुम को परमानंद (ख)।

सप्तम अध्याय

२ अब सप्तम अध्याय सुनि मित्र, जामें अद्भुत बाल चरित्र (ख)।
३ इसके स्थान पर 'ख' ने दो पंक्तियाँ दी हैं—
सकट विकट उच्चाटन करिहैं, तृणावर्त अघ टारिन टरिहैं।
सुनि कैं यह पूतना चरित्र, बाल भाव रस सिंधु पवित्र।
४ काजा—साजा (ग) ; मगन भयो नृप गदगद गरैं, पुन शुक मुनि सों विनती करैं (ख)।
१४ चावल—चावरी (ख), चवाँर (ग)।
१६ जब—तब (क) ; तब—कछु (क)।
२१ अभिचार—अविचार (ग)।
२३ तनक चरन ऊँचे उचकाई, उड गयो उड़नि में दयो रराई (ख)।
३० फूट—फूल (ङ)।
३७ तब....धर्यौ—तब धरनी धरनी पर धर्यो (ख)।
४२ कित—किन (ख)।
५० उरपि घुरि—उर्यो लपटि (ख)।
७२ इन के स्थान पर 'ख' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—
माया किधौं किधों यह सपनों, किधौं बुद्धि भ्रम है यह अपनों।
बहुरि कहत यह सपना न होइ, नहि माया नहि छाया कोइ।
७३ इन के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
विश्वहि करे हरे संहरे, ऊर्न नाभ लों पुनि विस्तरे।

अष्टम अध्याय

११ इन के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
अपनौ कछु प्रयोजन आहि, श्री ब्रजराज कहति हैं ताहि।
२५ अद्भुत....धाम—पूरनकाम सकल गुनधाम (ख)।
३० बहुत कहा कहिये हो नंद, दै है तुम को परमानंद (ख)।

९३ इन के बाद 'ख' ने दो अतिरिक्त पंक्तियाँ दी हैं—

अरे पूत पूतना निपातनि, तो सों इक कहि सकत न बातनि।

रहत जु निपट धूरि में सन्यौ, पूरब जनम सूकर में गन्यौ।

१०३ हित....मात—आन्यौं पकरि आपनौं तात (क), हित सों पिजी जसोमति मात (ख)।

१०५ अनिवार्ई—अनुपाई (ख)।

१०६ यह....मेरी—यह न झूठ बोलैं बलि मेरी (ख)।

१११ कहति तौ इतै लाइ धौं, देषौं रदन बदन बाइ धौं (ख)।

११२-१२० 'ख' ने इन पंक्तियों का पाठ इस प्रकार दिया है—

जगत मथन मधु मथन मुरारि, जारि कैं दीनों बदन पसारि।

जसुमति जहां चितै चकि रही, थिर चर ठंवर अंबर मही।

पावक पवन चंद रवि तारक, सत रज तम गुन तिन के धारक।

ज्योति चक्र जल तेज अनंत, इंद्रियगन मन मूरतिवंत।

शब्द स्पर्श रूप रस गंध, काल स्वभाव कर्म जिय बंधु।

जीव बुद्धि अरु लिंग शरीर, महदादिक तत्वनि की भीर।

पुनि तहां व्रज अपनपे समेति, सांट लियो सिसु कहु सिपि देति।

ताहि चकित भई सब सुधि गई, कहति कि कहा आहि यह दई।

सुपन किधौं हरि देव की माया, मो मति भ्रमी किधौं कछु छाया।

११३ सरित—सहित (क)।

११६ तब—जब (क)।

१२४ इनके बाद 'ख' में ये दो पंक्तियाँ हैं—

जाकी माया करि सब नचे, दरप अहं ममता मद मचे।

ऐसी कुमति परी पग बेरी, सो श्री कृष्ण होहु गति मेरी।

१२६ इस के बाद 'ग' ने ये पंक्तियाँ दी हैं—

कहत कि हम ईस्वर जांनवै, सुलभ है श्रुति मग पहिचांनवै।

अै परि हम सुत करि पाइबै, अति दुरलभ हरि हियें लाइबै।

९३ इन के बाद 'ख' ने दो अतिरिक्त पंक्तियाँ दी है—
अरे पूत पूतना निपातनि, तो सों इक कहि सकत न बातनि।
रहत जु निपट धूरि में सन्यो, पूरब जनम सूकर में मन्यो।
१०३ हित....मात—आन्यौ पकरि आपनौ तात (क), हित गो पिजी जसोमति मात (ख)।
१०५ अनियाई—अनुपाई (ख)।
१०६ यह....मेरो—यह न झूठ बोलै बलि मेरो (ख)।
१११ कहनि तौ इतै लाइ धौं, देषौं रदन बदन बाइ धौं (ख)।
११२-१२० 'ख' ने इन पंक्तियों का पाठ इस प्रकार दिया है—
जगत मथन मधु मथन मुरारि, डारि कै दीनों बदन पसारि।
जननि जहां चितै चकि रही, थिर चर ढंवर अंबर मही।
पावक पवन चंद रवि तारक, सत रज तम गुन तिन के धारक।
ज्योति चक्र जल तेज अनंत, इंद्रियगन मन मूरतिवंत।
शब्द स्पर्श रूप रस गंध, काल स्वभाव कर्म जिय बंधु।
जीव बुद्धि अरु लिंग शरीर, महदादिक तत्वनि की भीर।
पुनि तहां व्रज अपनपे समेति, सांट लियो सिसु कहु सिपि देति।
ताहि चकित भई सब सुधि गई, कहति कि कहा आहि यह दई।
सुपन किधौं हरि देव की माया, मो मति भ्रमी किधौं कछु छाया।
११३ सरित—सहित (क)।
११६ तब—जब (क)।
१२४ इनके बाद 'ख' में ये दो पंक्तियाँ हैं—
जाकी माया करि सब नचे, दरप अहं ममता मद मचे।
ऐसी कुमति परी पग बेरी, सो श्री कृष्ण होहु गति मेरी।
१२६ इस के बाद 'ग' ने ये पंक्तियां दी हैं—
कहत कि हम ईश्वर जानवै, सुलभ है श्रुति मग पहिचानवै।
ऐं परि हम गुन करि पावै, अति दुरलभ हृति हियें लावै।

३८ नैन....दुराइ—नाही मधुमथन मथानी आइ (क)।

४० बिललाहीं—बिलखाहीं (ग)।

४२ जु—जोउ (क)।

४८ गोरी—डोरी (ख)।

५१ उहै....आई—सोई जब पूरन नहि भई (क) (ङ)।

५४ बसनु—बसन (क)।

५७ अवसि—अब (क)।

५८ आवै—पावै (क)।

६० अन—अवसि (ख) (ग)।

६१ रसना....नई—वत्सल रस रसनादिक नई (ख)।

६२ इस के बाद 'ख' ने यह दोहा दिया है—

ग्यान अगम निगमहि अगम, निपट अगम जम नेम।
सब बिधि दुरगम अजेस सुत, सुगम एक ही प्रेम॥

६४-६५

जदपि बिधि शिव सब ही आत्मा, अवरु रहै घर घरनी रमा।
तिनहू कबहू नाहिन चह्यो, जु सुप नंद की ललना लह्यो।
(ख)।

६७ कहँ सुखद हैं—कहुं सुख लहे (क), कह सुखदै (ग)।

७० गत—गति (ख) ; माया—माइक (क)।

७५ छीजत इम देषहु तजि मौन, मृदुल मुकुर पर जिमि मुप पौन (ख)।

७८ आपे—जपे (क), सापे (घ), नाप (ङ) ; जु—नु (ग)।

८१ 'ख' ने इस अध्याय के अंत का दूसरा दोहा पहले दिया है तथा पहले के स्थान पर यह दोहा दिया है—

नंद नवम अध्याय कौं, उर धरि राषौ पेनु।
सहजहि उत्तम होइहै, ज्यौं तिल गंध फुलेल॥

३८ नैन....दरसाइ—ताही मधुनयन नचानी आइ (क)।
४० बिलग्गाहीं—बिलखाहीं (ग)।
४२ जु—जोउ (क)।
४८ गोरी—टोरी (ख)।
५१ जहँ....आई—सोई जब पूरन नहि भई (क) (ङ)।
५४ बस्तु—बसन (क)।
५७ अबसि—अब (क)।
५८ आवै—पावै (क)।
६० अब—अवसि (ख) (ग)।
६१ रसना....नई—वत्सल रस रसनादिक नई (ख)।
६२ इस के बाद 'ख' ने यह दोहा दिया है—

ज्ञान अगम निगमहि अगम, निपट अगम जप नेम।
सब विधि दुरगम ब्रजेस सुत, सुगम एक ही प्रेम॥

६४-६५

जदपि बिधि शिव सब ही आतमा, अवरु जहँ घर घरनी रमा।
तिनहू कबहूं नाहिन चह्यो, जु नृप नंद को ललना लह्यो।
(ख)।

६७ कहँ सुखद हैं—कहुं सुख लहे (क), कह सुखदै (ग)।
७० गत—गति (ख) ; माया—माइक (क)।
७५ छाजत इम देषहु तजि मौन, मृदुल मुकुर पर जिमि सुप पौन (ख)।
७८ आपे—जपे (क), जापे (घ), जाप (ङ) ; जू—जु (ग)।
८१ 'ग' ने इस अध्याय के अंत का दूसरा दोहा पहले दिया है तथा पहले के स्थान पर यह दोहा दिया है—

नंद नवम अध्याय कों, उर धरि राषो पेलु।
सहजहि उत्तम होइहै, ज्यों तिल तेल फुलेल॥

नारद परम अनुग्रह करयौ, पायौ दुर्लभ कृस्न रस भरयौ।
बोले नलकूबर मणिग्रीव, अंजुलि जोरि नमित करि ग्रीव।
५३ वाणी तुव गुन कथन में रहौ, श्रवन कथा रस में निरवहौ (क)।
५४-५५ इन के स्थान पर 'क' में यह पंक्ति है—
चरन कमल रस बस मन भौंर, सपने हूं जिन सूझै और।
५९ प्रीतम—प्रिय तुम (ग) ; हमारी—हमारे (ख)।
६३ डर—मग (ख)।
६४ पुनि....पाइ—चले नाथ को माथ नवाइ (ख)।
६७ नम....चले—गवने रगमगे (ख)।
७१ कथित यह—यह कथा (ग)।

एकादश अध्याय

१-२ अब सुनि एकादस अध्याय, जामें श्री वृंदावन आय।
अवर जु अद्भुत अद्भुत केलि, श्रवननि परम अमी रस बेलि (ख)।
४ अति—तहां (ख) (ग)।
५ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
बड़े अकाय दोऊ रूपरे, धरनि ते जरनि सहित ऊपरे।
१८ सहज—सबै (ग) ; नाचि—नाच (ख) (ग)।
२१ कबहुँक बहुरि—कबहूँ कहूं (क) ; कहैं—करे (क)।
२२ गुहि दै—गुहियैं (क)।
२४ कोउ....वे—अहो कान्ह वे (ख) ; मोहि—नेकु (ख)।
२५ व्रज तिय—निज व्रज (क) (ग)।
२६ सिव कौ मदन—सिसु मर्दन सब (क)।
५१ कहन लग्यौ हित कौ सब बात, अब नौं पनी आहि कुसरात (ख)।
इसे तथा पंक्ति ५० को 'ख' ने पंक्ति ४६ के पहले दिया है।
५६ करें—करैं (ग) ; सुदि—गिरि (ग)।

नारद परम अनुग्रह कर्‌यौ, पायो दुर्लभ कृस्न रस भर्‌यौ।
बोले नलकूबर मणिग्रीव, अंजुलि जोरि नमित करि ग्रीव।

५३ बाणी तुव गुन कथन में रहौ, श्रवन कथा रस में निरवहौं (क)।

५४-५५ इन के स्थान पर 'क' में यह पंक्ति है—
चरन कमल रस बस मन भौंर, सपने हूं जिन सूझै और।

५६ प्रीतम—प्रिय तुम (ग) ; हमारी—हमारे (ख)।

६३ उर—अग (ख)।

६४ पुनि....पाइ—चले नाथ को माथ नवाइ (ख)।

६७ नव....चले—गवने रगमगे (ख)।

७१ कथित यह—यह कथा (ग)।

एकादश अध्याय

१-२ अब सुनि एकादस अध्याय, जामें श्री वृंदावन आय।
अवर जु अद्भुत अद्भुत केलि, श्रवननि परम अमी रस बेलि (ख)।

४ अति—तहां (ख) (ग)।

५ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—
बड़े अकाथ दोऊ रूपरे, धरनि ते जरनि सहित ऊपरे।

१८ सहज—सबै (ग) ; नाचि—नाच (ख) (ग)।

२१ कबहुँक बहुरि—कबहूँ कहू (क) ; कहैं—करे (क)।

२२ तुहि है—तुहियै (क)।

२४ कोउ....वे—अहो कान्ह वे (ख) ; मोहि—नेकु (ख)।

२५ ब्रज तिय—निज ब्रज (क) (ग)।

२६ त्रिय को मर्दन—सिसु मर्दन सब (क)।

५१ कहन लग्यो हित की सब बात, अब लौं परी आहि कुसलात (ख)।
इसे तथा पंक्ति ५० को 'ख' ने पंक्ति ४६ के पहले दिया है।

५६ करै—करैं (ग) ; कुंदि—गिरि (ग)।

१२० पिरि—पूरि (क)।

द्वादश स्कंध

२-४

गिनि जेहि बछ बालक कोटि, हरिहिं हरि ताकौ गल घोटि।
इक दिन पुनि आनी हरि मन में, करिहिं काल्ह कलेऊ बन में।
प्रात काल उठि मोहन लाल, बेनु बजाइ बुलाए ग्वाल (ख)।

७ कनक....नीके—कांचन घरि लए लागति नीके (क)।

८ इस के बाद 'ख' ने ये अतिरिक्त पंक्तियां दी हैं—

उज्जल उज्जल बछ सुहाए, मृदुल फटक के मनों बनाए।
जिनके तन में बालक जिते, निज प्रतिबिंब विलोकत तिते।

९ नंद....चले—बेनु बजावत गावत चले (ख)।

१० नग....नाइक—जैसे नगनि के मधि मधि नाइक (ख)।

११ इत—तहां (ग)।

१५-२८ 'ख' ने इन का पाठ इस प्रकार दिया है—

कैइक ग्वाल नाल डिग जाइ, आवत बैठे बगन खिजाइ।

पंक्ति १६ [केई मिलि—कोइ सिसु ; कुहुकावत—पिजावत]।

केइ निमि कल कोकिल कुहूकावत, केइ खगनि छाया गहि धावत।
पुनि पुनि तिनको चोंप दिखावति, हसति हसति बहुर्‌यों फिरि आवति।

पंक्ति १८

कहुं दिपि नृत्तत मोर किशोर, तैसें ही नृत्तत ए चित चोर।

पंक्ति २२, २१

इहि पुंजा गुंजा अति सोहै, ललित लालरी द्युति तहाँ को है।
तिनकैं रुचिर हार गुहि लावैं, आनि नंद लालहि पहिरावैं।

पंक्ति २९, ३५

इहि बिधि बिहरत भरि अनुराग, श्री सुक बरनत तिनको भाग।
इहि सुख पंडित नाहि अनुसरें, महत है जदपि ब्रह्म सुख रहे।

१२० पिनि—पुनि (क)।

द्वादश स्कंध

२-४

गिनि जैहै बछ बालक कोटि, हरिहैं हरि ताको गल घोटि।
इक दिन पुनि आनी हरि मन में, करिहैं काल्ह कलेऊ बन में।
प्रात काल उठि मोहन लाल, वेनु बजाइ बुलाए ग्वाल (ख)।

७ कनक....नीके—कांचन धरि लए लागति नीके (क)।

८ इस के बाद 'ख' ने ये अतिरिक्त पंक्तियां दी हैं—

उज्जल उज्जल बछ्छ सुहाए, मृदुल फटक के मनों बनाए।
जिनके तन में बालक जिते, निज प्रतिबिंब बिलोकत तिते।

९ नंद....चले—वेनु बजावत गावत चले (ख)।

१० नग....नाइक—जैसे नगनि के मधि मनि नाइक (ख)।

११ इत—तहां (ग)।

१५-२८ 'ख' ने इन का पाठ इस प्रकार दिया है—

कैंइक ग्वाल लाल ढिग जाइ, आवत बैठे बगन खिजाइ।

पंक्ति १६ [केई मिलि—कैइ शिसु ; कुहुकावत—पिजावत]।

केइ मिलि कल कोकिल कुहुकावत, केइ खगनि छाया गहि धावत।
पुनि पुनि तिनको चांपि दिखावति, हसति हसति बहुर्यौं फिरि आवति।

पंक्ति १८

जहं दिसि नृत्तत मोर किसोर, तैसें ही नृत्तत ए चित चोर।

पंक्ति २२, २१

छबि पुंजा गुंजा अति सोहै, ललित लालरी दुति तहाँ को है।
तिनके रुचिर हार गुहि लावै, आनि नंद लालहि पहिरावै।

पंक्ति २४, २५

इहि बिधि बिहरत मनि अनुराग, श्री सुक बरनत तिनको भाग।
इहि सुप पंडित नहि अनुसरे, जद्दत है जदपि ब्रह्म सुप रटे।

८० इस के स्थान पर 'ख' ने दो पंक्तियां दी हैं—

मुनि हरष स्तुति रस जगमगे, गंधर्बौ गुन गावन लगे ।
निर्तत अपछरा को छबि बनी, लटकति फिरति दामिनी मनी ।

८१-८४ कोलाहल सुनि के सुर लोक तें, ब्रज आए जु अपने लोक तें ।
नंद नंदन महिमा अवलोकि, विस्मय करि हिय लीनों रोकि ।
अजगर चरन परस सुभ भर्यो, सूक्यो वृंदावन में पर्यो ।
ब्रज के जिते ग्वाल बछ बाल, खेलत रहे तहां वह काल ।

८४ मल्लार—हुंकरत (क) ।

८६ सो पौगंड वयस कौं पाइ, कह्यौ तिन लरकनि ब्रज आइ (ख) ।

८९-९४ 'ख' ने इन के स्थान पर ये पंक्तियां ही दी हैं—

अरु यह जोति परम दुति सानी, हम देखी इन मांझ समानी ।
अहो मित्र कछू चित्र न आहि, श्री हरि की महिमा तन चाहि ।
मनो मई मूरति जो करै, रंचक आनि हिय में धरे ।

९२ सुनि....रह्यौ—किन हूं गह्यौ किन हू नहि गह्यौ (ग) ।

९३ चित्र—चित्त (ग), चित (ङ) ।

९६ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

अचरज नयो जु श्री सुक गावै, हरि सारूप्य अघासुर पावै ।

९७ हरि—कै (ग) ; सूत कहत द्विज सौं रस ढर्यो, राजा सुनि अति अचरज भर्यो (ख) ।

९९-१०० वह कौमार वयस को करम, कीनों प्रगट नयन निज धरम ।
पुनि पौगंड वयस में आइ, कह्यौ लरिकनि यह बन की भाइ (ख)।

१०५-१०७ इन के स्थान पर 'ग' ने दो पंक्तियां दी हैं—

ऐसें जब पूछे मुनि सत्तम, परम भागवत उत्तम उत्तम ।
सुमिरि हरि चरित रस रगमगे, हिय उमगे दृगनि जगमगे ।

१०९ नंद....भरि—नंद नेह भरि हेत करि (ग) ।

११६ ज्यों—त्यों (ग) ।

८० इस के स्थान पर 'ख' ने दो पंक्तियां दी हैं—

मुनि हरष स्तुति रस जगमगे, गंधर्वौ गुन गावन लगे ।
निर्तत अपछरा को छवि बनी, लटकति फिरति दामिनी मनी ।

८१-८४ कोलाहल सुनि के सुर लोक तें, ब्रज आए जु अपने लोक तें ।
नंद नंदन महिमा अवलोकि, विस्मय करि हिय लीनों रोकि ।
अजगर चरन परस सुख भर्यो, सूक्यो वृंदावन में पर्यो ।
ब्रज के जिते ग्वाल बछ बाल, खेलत रहे तहां बहु काल ।

८८ गह्वर—हुंकरत (क) ।

८९ सो पौगंड वयस कौं पाइ, कह्यौ तिन लरकनि ब्रज आइ (ख) ।

८९-९४ 'ख' ने इन के स्थान पर ये पंक्तियां ही दी हैं—

अरु यह जोति परम दुति सानी, हम देखी इन मांझ समानी ।
अहो भिन्न कछू चित्र न आहि, श्री हरि की महिमा तन चाहि ।
मनो भई मूरति जौ करैं, रंचक आनि हिय मैं धरे ।

९२ सुनि....रह्यौ—चित हूं गह्यौ चित हू नहि गह्यौ (ग) ।

९३ चित्र—चित्त (ग), चित (ङ) ।

९६ इस के बाद 'ख' ने यह पंक्ति दी है—

अचरज नयो जु श्री शुक गावैं, हरि सारूप्य अघासुर पावैं ।

९७ हरि—कै (ग) ; सुत कहत द्विज सौं रस ढर्यो, राजा सुनि अति अनन्द भर्यो (ख) ।

९९-१०० यह कौमार वयस को करम, कीनों कमल नयन निज धरम ।
पुनि पौगंड वयस में आइ, कह्यौ लरिकनि यह बन को भाइ (ख)।

१०५-१०७ इन के स्थान पर 'ग' ने दो पंक्तियां दी हैं—

ऐसें जब पूछे मुनि सत्तम, परम भागवत उत्तम उत्तम ।
सुमिरि हरि चरित रस रसमगे, हिय उमगे दृगनि जगमगे ।

१०९ नंद....भरि—नंद नेह भरि हेत करि (ग) ।

११३ ज्यौं—यौं (ग) ।

६० 'ग' ने इस के बाद यह पंक्ति दी है—

आप ही अपने बच्छ निवेरि, लै गए अपने पगननि पेरि ।

६८ चार....हँसनि—परति न कही नेह की गंसनि (क) ।

७० कौंडि—जोडि (ग) ।

७६ बछरे—बछरै (क), बछरी (ख) ।

८३ बल—बर (ख) ।

८५ हलधर सौं—बलधर सौं (क) ।

८६-८७ संकर्षन तब नीकें जान्यो, जब हँसि हरि सब भेदु बखान्यो ।

बीत्यो बरष हरष भरि धायो, समाचार विधि लैन ही आयो । (ख) ।

९० इस के स्थान पर 'ख' में दो पंक्तियाँ हैं—

उत आवै पुनि उत कौं धावै, पचै विरंचि मरम नहीं पावै ।

पुनि अपने विधि देषनि गयौ, पाछें अद्भुत कौतुक भयौ ।

९४ निरखे चारु—चहे विरंचि (ख) ।

९५ सीसनि ललित किरीट नु लोलें, कुंडल कलित कपोल विलोलें (ख) ।

९७ धरे—लसे (ख) ; आयुध....करे—निकर त्रिभाकर द्युति कहु हंस (ख) ।

१०० पुनि इक इक ब्रह्मांड के नाइक, सब लाइक सुभकरन सुभाइक (ख) ।

१०१-१०३ 'क' ने १०१ को छोड़ दिया है और अवशिष्ट पंक्तियों का पाठ यों रक्खा है—

ब्रह्मादिक विभूति जग जिती, अंड अंड प्रति दिन्वियत तिती ।

सकल कर्म महदादिक जिते, मूरति धरे उपासत तिते ।

१०४-१०५ 'ख' ने इन्हें इस प्रकार दिया है—

अति अचिरज विधि विधि सुधि गई, एक तौ हुती और भई नई ।

चकित भयो सु थकित अस भयौ, हंस कौ अंस पकरि रहि गयो ।

१११ दृग....रहे—दुख भरि दृग उघारि जो चहे (ख) ।

६० 'ग' ने इस के बाद यह पंक्ति दी है—

आप ही अपने बच्छ निबेरि, लै गए अपने पच्छनि घेरि ।

६८ चार....हँसनि—परति न कही नेह की धँसनि (क) ।

७० कोंडि—ओड़ि (ग) ।

७६ बछरे—बछरै (क), बछरी (ख) ।

८३ बल—बर (ख) ।

८५ हलधर सौं—बलधर सौं (क) ।

८६-८७ संकर्षन तब नीकें जान्यौ, जब हसि हरि सब भेदु बखान्यौ ।

बीत्यौ बरष हरष भरि धायौ, समाचार विधि लैन ही आयौ । (ख) ।

९० इस के स्थान पर 'ख' में दो पंक्तियाँ हैं—

इत आवै पुनि उत कौं धावै, पचै बिरंचि मरम नहीं पावै ।
पुनि अपने विधि देषनि गयौ, पाछें अद्भुत कौतुक भयौ ।

९४ निरखे चारु—चहे बिरंचि (ख) ।

९५ सीसनि ललित किरीट सु लोलें, कुंडल कलित कपोलन बिलोलें (ख) ।

९७ धरे—लसे (ख) ; आयुध....करे—निकर त्रिभाकर द्युति कहु हसे (ख) ।

१०० पुनि इक इक ब्रह्मांड के नाइक, सब नाइक सुभकरन सुभाइक (ख) ।

१०१-१०३ 'क' ने १०१ को छोड़ दिया है और अवशिष्ट पंक्तियों का पाठ यों रक्खा है—

ब्रह्मादिक बिभूति जग जिती, अंड अंड प्रति बिन्धियत तिती ।
सकल कर्म महदादिक जिते, मूरति धरे उपासत तिते ।

१०४-१०५ 'ख' ने इन्हें इस प्रकार दिया है—

अति अचिरज विधि बिधि सुधि गई, एक नी हुती और भई नई ।
चकित भयौ सु थकित अस भयौ, हंस कौ अंस पकरि नहि गयौ ।

१११ दृग....नहैं—दुष भरि दृग उघारि जो चहै (ख) ।

३५ तिन्ह—तिन के (ख) ; तनक—ताकौ (ग) ।

३६ तिहि—जिहि (क) ।

४५ तातें तुम्हरी कृपा जु आहि, बंछ्यौ करित दयन बिन नाहि (ख) ।

४७ नैंक न ललचाइ—चितु अजन न जाइ (ख) ।

५६ जज—जो (ख), जन (ग) ; अज्यानी—अज्ञान (ख) ; अभिमानी—अभिमान (ख) ।

६२ कहत....की—तहं ही जैसैं चिटी हाथ की (ग) ।

६४ हौं—है (क) ।

७२ अब विशेष करि जन्म सु अपनो, कहत बिरंचि नयो करि थपनो (ख) ।

७६-७७ 'ख' ने इन के स्थान पर यह पंक्ति दी है—

तौ तू नारायण सुत आहि, जल में जाहि चाहि सं नाहि ।

७७ तहां कहत विधि बुधि अवगाहि, मंदस्मित जुत आनन चाहि (क) ।

८० बहुरि नार—बहुरि नारि (क) ।

८२ जल में तुम्हरी यों मूरति आहि, हसत कहा हरि मो तन चाहि (क) ।

८३-८४ तातें हम ऐसे करि पाये, पानी में परिछिन्न बताये ।

तहां कहत अंबुज को तात, अहो तात अब सुनिये बात ।

८६ जल—रज (ग) ; जितक....ते—कहां ते यों ते (ख) ।

८८ तुम—सो (ख) ।

८९ यौं सुनकैं—अरु उनकैं (ग) ; यह सब तुम्हरी माया नाथ, बहुत जतन सुनके उहि नाथ (ख) ।

९१-९२ 'ख' ने पंक्ति ९२ को नहीं दिया है और ९१ का पाठ यों रक्खा है—

जननी हू कों नहि दिखरायौ, हौं तुम हीं अब हीं बोरायौ ।

९९ इस के बाद 'ग' में यह अतिरिक्त पंक्ति है—

पीत बसन नव घन तन स्याम, सबनि कैं उनकी तुलसी दाम ।

३५ निरख—तिन के (ख) : लगत—लागी (ग)।

३६ तिहि—जिहि (क)।

४५ तातें तुम्हरी कृपा जु आहि, वंछ्यौ करति रचन विन नाहि (ख)।

४७ नैक न लखनाइ—चितु अगम न जाइ (ख)।

५६ जु—जो (ख), जन (ग); अग्यानी—अज्ञान (ख); अभिमानी—अभिमान (ख)।

६२ कहत....की—तह ही जैसें चिटी हाथ की (ग)।

६४ हौं—हैं (क)।

७२ अब विशेष करि जन्म सु अपनौ, कहत विरंचि नयौ करि थपनौ (ख)।

७६-७७ 'ख' ने इन के स्थान पर यह पंक्ति दी है—

तौ तू नारायण सुत आहि, जल में जाहि चाहि मैं नाहि।

७९ तहां कहत विधि बुधि अवगाहि, मंदस्मित जुत आनन चाहि (क)।

८० बहुरि नार—बहुरि नारि (क)।

८२ जल में तुम्हरी यों मूरति आहि, हसत कहा हरि सौ तन चाहि (क)।

८३-८४ तातें हम ऐसे करि पाये, पानी में परिछिन्न बताये।

तहां कहत अंबुज को नाम, अहो तात अब सुनिये बात।

८६ जल—रज (ग); जितक....तै—जहां ते यौ ते (ख)।

८८ सुन—सो (ख)।

८९ यों सुनकें—कर उनकें (ग); यह सब तुम्हरी माया नाथ, बहुत जनक सुनके उहि साथ (ख)।

९१-९२ 'ख' ने पंक्ति ९२ को नहीं लिया है और ९१ का पाठ यों रक्खा है—

जननी हू कों नहि दिखरायौ, हौं तुम हौं अब हीं बोरायौ।

९९ इस के बाद 'ग' में यह अतिरिक्त पंक्ति है—

पीत बसन नव घन तन स्याम, सबनि कैं उनकौ सुनहौ काम।

७ लगी—तृल (ङ) ; वन—उन (क) (घ) ; अवरोचन—आवरहन (घ), अवगाहन (ङ)।

८-२४ इन पंक्तियों को 'क' ने छोड़ दिया है।

९ वीन....कचन—तंदुल वीन मु को (ख)।

१० द्वयँ—द्वै (ग) (ङ) ; व्रज—घर (ख)।

११ त्यों—परम (ख) ; सब के—रूप (ख)।

१२ घसन....करै—इहि विधि गोचारन पर वरें (ङ)।

१३ बरन—अंग (ग) (ङ)।

१४ नरन—नै (ग) (ङ)।

२१ रंगन भरे—इम मन हरै (ख) ; बात....हरे—जनु द्रुम आप में बातें करैं (ख)।

२८ नु रस—गुन्नुति (ग)।

३६ निकरि—निकसि (ङ) ; तुव—शुव (ङ); कौ—के (ग)।

४० जदपि....पावे—छिपे मनुज गति तुम लहि पाए (ग)।

४४ कबहूं निरखि मराल नु चाल, तिन संग खेलत लाल गुपाल (क)।

४५ नंदकिसोर—चित के चोर (क)।

५३ सघन—अघन (क)।

६२ जाइ—जान (क)।

६६ भैया—मईया (क)।

६८ नछिन—ना छिन (क)।

७१ कानन—पैठन (क)।

७२ लिखे—जिखे (क)।

७७ ऊँचे—ऊंचे (क), ऊंचो (ख) ; भारयो—भारी (ग)।

८७ गंडनि—मंडित (ग)।

९१ दूषन....निवाने—बालक विन्ह मु ताप सिरानें (ख)।

९२ हँसनि—हँसित (ख)।

७ लगी—लुभ (ङ) ; बन—झन (क) (घ) ; अवगाहन—आवरहन (घ), अवगाहन (ङ)।

८-२४ इन पंक्तियों को 'क' ने छोड़ दिया है।

९ बीन....कलन—तंबुन बीन सु को (ख)।

१० ज्यें—ज्यैं (ग) (ङ) ; व्रज—घर (ख)।

११ क्या—परम (ग) ; सब के—रूप (ख)।

१२ घनन....करैं—इहि विधि गोचारन पर वरैं (ङ)।

१३ वरन—अंग (ग) (ङ)।

१४ मग—मे (ग) (ङ)।

२१ रंगन भरे—हम मन हरै (ख) ; बात....हरै—जनु द्रुम आप में बातैं करैं (ख)।

२८ नु रत—सुरनुति (ग)।

३६ निकरि—निकसि (ङ) ; तुव—तुव (ङ); कौं—के (ग)।

४० जदपि....पायें—छिपे मनुज गति तुम नहिं पाए (ग)।

४४ कबहुं निरखि मराल सु चाल, तिन संग खेलत लाल गुपाल (क)।

४५ नंदकिसोर—चित के चोर (क)।

५३ सघन—जघन (क)।

६२ जाइ—जात (क)।

६६ मैया—मइया (क)।

६८ नछिन—ना छिन (क)।

७१ कानन—पैठन (क)।

७२ लिखे—लिखे (क)।

७७ ऊँचे—ऊँचै (क), ऊंचो (ख) ; भारचो—भारी (ग)।

८७ गंठनि—गंठनि (ग)।

९१ दृगन....निदाने—आसर चिन्ह सु ताप सिराने (ख)।

९२ हँसनि—हँसनि (ख)।

६४ फन कूटिनि में अहिफन जिते, भगन भए मणि उरल तिते (ख) ।

७४ भार—साज (ख), भांड़ (क) ।

७५ जु दंड—निदंड (क) ।

७८ अमित अंडमय वेष तुम्हारौ, ताकौ भयौ यह वारन हारौ (ख) ।

८३-८४ तब तासौं बोले बनमाली, रे रे विष जाली अहि काली ।
तू अब रमनक दीपहि जाहि, गरुड़ के डर ते कौन डराहि (ख) ।

सप्तदश अध्याय

५ कहा—कौन (ख) ।

६ पर्वनि पर्वनि—सर्पनि पर्वनि (क) ।

१३ बग—पग (ख) ।

१५ ताती—साती (क), सांती (ख) ।

२३ राउ—राय (क) ।

३०-३१ अद्भुत अद्भुत नव मनिमाल, अहि जुवतिन पूजे नंदलाल ।
बने जो तिहि छिन को छवि गनौं, चंदहि ओप दई हैं मनौं (ख) ।

४१ तिहि—तिन (क), तन (ग) ।

अष्टादश अध्याय

१ अष्टादश अध्याय की कथा, बरनि सुनाऊँ मो मति जथा (क) (ङ) ।

१० झूमरे—धूमरे (ङ) ।

१३ जैसी—ऐसी (ख) (ङ) ।

१४ सर—सब (ग) (घ) (ङ) ।

१४-१६ सरनि में सरसीरुह रस भरे, मधुकर निकरनि चंचल करे ।
कदिमन ने घन सार तुसार, ह्वै रह्यौ दुर्दिन आकार ।
सीतल मंद सुगंध समीर, कहौं न परति अनि परिमल भीर ।
देखौ कोकिल कलि जु गावत, सुरपुर के गंधर्व रिझावत ।
(ख) ।

६४ पद कूटिनि में अहिफन जिते, भगन भए मणि टारत तिते (ख) ।
७४ भार—भाज (ख), भांड़ (क) ।
७५ जु दंड—निदंड (क) ।
७८ अमित अंडमय वेष तुम्हारी, ताकौ भयौ यह धारन हारी (ख) ।
८३-८४ तब तासौं बोले बनमाली, रे रे विष जाली अहि काली ।
तू अब रमनक दीपहि जाहि, गरुड़ के डर ते कौन डराहि (ख) ।

सप्तदश अध्याय

५ कहा—कौन (ख) ।
६ पर्वनि पर्वनि—सर्पनि पर्वनि (क) ।
१३ वग—पग (ख) ।
१५ ताती—साती (क), नाती (ख) ।
२३ राउ—नाय (क) ।
३०-३१ अद्भुत अद्भुत नव मनिमाल, अहि जुवतिन पूजे नंदलाल ।
बने जो तिहि छिन को छवि गनौं, चंदहि ओप दई हैं मनौं (ख) ।
४१ तिहि—तिन (क), तन (ग) ।

अष्टादश अध्याय

१ अष्टादश अध्याय की कथा, बरनि सुनाऊँ मो मति जथा (क) (ङ) ।
१० धूमरे—धूसरे (ङ) ।
१३ जैसी—ऐसी (ख) (ङ) ।
१४ सर—सब (ग) (घ) (ङ) ।
१४-१६ सरनि में सरसीरुह रस भरे, मधुकर निकरनि चंचल करे ।
कलिमल ने घन सार तुसार, ह्वै रह्यो दुर्दिन आकार ।
सीतल मंद सुगंध समीर, कहीं न परति अनि परिमल भीर ।
देखी कोकिल रुचि जु गावत, सुरपुर के गंधर्व रिझावत ।
(ख) ।

१० नये—नये (ग)।
१२ सुकी—सूक (ख), सुद्र (ग)।
२१ कुही—गुही ; गुही—हूरी (ग)।
३० परन्नी पै निरखै—सरसे पै निरखे (क)।
३२ विप्र गु—विहिप (ग)।
३५ घुमड़नि—मंडल (ख)।
४२ घरनि—घरनी (क) (ग) ; विवस—विवइ (क)।
४५ दंत—दंभ (ख)।
५३ ऐनन—श्रौहनि (क)।
६६ नहिं निज—नाहिन (ख), नयन जु (ग)।
७७ ह्वै—श्री (क)।
८५ गगन—श्रगन (क)।
८६ मन—यों (क)।

एकविंश अध्याय

८ तरवर....जिते—तरवर सर के खग गन जिते (क)।
१० सुर—धुनि (ख) ; बजवन—बाजत (क) (ख)।
२१ सु—सों (क)।
२४ तिन....फरै—तिन फल प्रियतम दरसत फरे (ङ)।
२७ रागिनि—रागनी (ग)।
४२ मधुन—मधुर (ग)।
४३ निरखि निरखि—हरखि हरखि (ग)।
५७ निव—चखिन (ख)।
६१ कचरि—कचर (क)।
७३ उमगत—घूँमत (क), मपत (ग) ; घूमत—ऊँघत (क)।
७५ सुनि पुनि—पुनि पुनि (ख)।

१० नगे—नये (ग) ।

१९ सुखी—सुख्य (ख), सुख (ग) ।

२१ कुड़ी—सुड़ी ; गुड़ी—हूरी (ग) ।

३० परसैं पै निरखैं—सरसैं पै निरखैं (क) ।

३२ विप्र सु—विद्विप (ग) ।

३५ घुमड़नि—मंडल (ख) ।

४३ धरनि—धरनी (क) (ग) ; त्रिवस—त्रिवह (क) ।

४५ दंत—दंभ (ख) ।

५३ ऐतन—श्रौहनि (क) ।

६९ नहिं निज—नाहिन (ख), नयन जु (ग) ।

७७ ह्वै—यौ (क) ।

८५ गगन—अगन (क) ।

८९ मन—यौ (क) ।

एकविंश अध्याय

८ तरवर....जिते—तरवर सर के खग गन जिते (क) ।

१० सुर—धुनि (ख) ; बजवत—बाजत (क) (ख) ।

२१ सु—सौं (क) ।

२४ तिन....फरैं—तिन फल प्रियतम दरसत फरे (ङ) ।

२७ रागिनि—रागनी (ग) ।

४२ मधुन—मधुर (ग) ।

४३ निरखि निरखि—हरखि हरखि (ग) ।

५७ चित्र—चरित्र (ख) ।

६१ कबरि—कबर (क) ।

७३ उमगत—घुँमत (क), रूपत (ग) ; घूमत—ऊँघत (क) ।

७५ सुनि पुनि—सुनि पुनि (ख) ।

२७ धरे—धारे (ग)।

३२ ध्यान....तैनैं—धरत भई निज हिय मैं तैसे (ग)।

३५ कहत—कहति (क) (ग)।

३८ घाटि—निकट (क) ; कब—अब (क)।

४६ ऊपर—उप रस (ग)।

५२ ते ही—देही (क)।

५३ हृद—दूरि (क)।

५६ भरे, रहे—ररे भरे (क)।

५९ समकंध—सम सरस (ग)।

६७ यह सजनी—आये सजनी (क)।

७९ बहुतै विप्रिय—बहुत विग्य प्रिय (ग)।

८२ ढार—दार (ग) ; सुत धार—सुति धार (ग)।

९१ मुमुखन—मनुपन (ग)।

९२ मुश्रूपन—स्वभूपन (क)।

९६ च्याये—च्याने (क)।

१०५ हियौ—हायौ (क)।

१०६ महा....अनिवारौ—दयौ जुद्ध छय अनल हमारौ (क)।

१४३ भृंगन....घरनी—भृंगनि तहां भृंगनि की घरनी (ग) ; बीन सी—बंसी (ग)।

१४५ कल—फल (ग)।

१५० अंग—रंग (क)।

पदावली

५ डोलैं—लोले (क) ; बांचति लोलैं—बांचती डोले (क)।

६ नथिया—मनिए (ऊ)।

१४ गृह—जे (ऊ)।

२७ धरे—धारे (ग)।

३२ ध्यान....तैनें—धरत भई निज हिय में तैसे (ग)।

३५ कहत—कहति (क) (ग)।

३८ घाटि—निकट (क); कब—अब (क)।

४६ ऊपर—उप रस (ग)।

५२ ते ही—देही (क)।

५३ हद—दूरि (क)।

५६ भरे, रहे—ररे भरे (क)।

५९ समकंध—सम सरस (ग)।

६७ यह सजनी—आये सजनी (क)।

७९ बहुतै विप्रिय—बहुत विग्य प्रिय (ग)।

८२ ढार—दार (ग); सुत धार—सुति धार (ग)।

९१ मुमुखन—मनुपन (ग)।

९२ मुश्रूपन—स्वभूपन (क)।

९६ च्याये—च्याने (क)।

१०५ हियौ—हाथी (क)।

१०६ महा....अनिवारी—दयौ जुद्ध छय अनल हमारी (क)।

१४३ भृंगन....घरनी—भृंगनि तहां भृंगनि की घरनी (ग); बीन सी—बंसी (ग)।

१४५ कल—फल (ग)।

१५० अंग—रंग (क)।

पदावली

५ डोलै—लोलै (क); बांचति लोलै—बांचती डोलै (क)।

६ सखिया—सखिए (ऊ)।

१४ गृह—जे (ऊ)।

१८३ परम अनंद—प्रेमानंद (ई) ।
२०२ भरि लालें—भरि लाजे (ई); नहिं—तव (ई) ।
२२४ मूरति धरे अनंग—सुरत धरे राग रंग (ई) ।
२३४ गति—गहि (क) ।
२३६ घिरि—जुरि (अ) ।
२३७ छेके हैं मदनगोपाल—रोके हें सांवरे लाल (क) ।
२४२ रस—रंग (अ) (आ) ।
२४३ मति—गति (अ) ।
२४४ साँवरे—माधुरी (अ), सांवरी (ई) ।
२५४ लिये—ले (ई) (क) ।
२५५ अंबुद—अंबर (ई) (क) ।
२५७ प्रेम—लाल (ई) ।
२५९ धनुधर—धुरंधर (अ), धनुर्द्धर (ई) ।
२७० चित हू न परैं चैन—चित हूं न परे चेन मुख हूं न आवे वेन (क) ।
२७३ अवनमई री—त्रमित मई री (ऊ) ।
२८१ उपमा को—उपमा नाहिं (ऊ), उपमा काहि (क) ।

---

१८३ परम अनंद—प्रेमानंद (ई)।
२०२ भरि लालैं—भरि लाजे (ई); नहिं—तव (ई)।
२२४ मूरति धरे अनंग—सुरत धरे राग रंग (ई)।
२३४ गति—गहि (क)।
२३६ घिरि—जुरि (अ)।
२३७ छेके हैं मदनगोपाल—रोके हैं सांवरे लाल (क)।
२४२ रस—रंग (अ) (आ)।
२४३ मति—गति (अ)।
२४४ साँवरे—माधुरी (अ), सांवरी (ई)।
२५४ लिये—ले (ई) (क)।
२५५ अंबुद—अंबर (ई) (क)।
२५७ प्रेम—लाल (ई)।
२५९ धनुधर—धुरंधर (अ), धनुर्द्धर (ई)।
२७० चित हू न परैं चैन—चित हूं न परे चेन मुख हूं न आवे वेन (क)।
२७३ श्रवनमई री—स्रमित मई री (ऊ)।
२८१ उपमा को—उपमा नाहि (ऊ), उपमा काहि (क)।

प्रथम पंक्ति	पृष्ठ संख्या



२२९ मृड—शिव; त्राता—रक्षक।
२३६ गैवर—श्रेष्ठ हाथी (गज वर)।
२७७ भंगुर गति—बल खाती हुई चाल; लटी—क्षीण, पतली।
२७९ धमिल—बँधी चोटी।
३१४ धोरैं—निकट; टकटोरैं—टटोलती है।
३१७ जारत की नहियाँ—जलाता है कि नहीं।
३२५ कुंभीपाक—एक नरक विशेप।
३७९ चोप—उत्साह।

मानमंजरी नाममाला

२ करुनार्नव—दया के सागर।
७६ लुकअंजन—"वह कल्पित अंजन जिसके विपय में यह प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है" (हिंदी-शब्दसागर)।
१०० उसीसे सौं उठंगि—तकिया की टेक लगा कर।
११८ मुहकरि—कदाचित् आम की चोपी।

१४९ हांतौ कीय—दूर किया, मिटाया।
३८२ सांति परी...नाह—यह अच्छा ही हुआ कि तेरा विवाह नहीं हुआ, नहीं तो तू अपने पति को दुःख देती।
३९३ तल्प—शय्या।
४६६ कंडु—खुजली।
५२३ असु—प्राण।

अनेकार्थमंजरी

४१ गज-पुष्कर—हाथी की सूंड़।
६० वहिक्रम—आयु।
९६ भगर-विद्या—हाथ की सफ़ाई, जादू।
९९ द्विभुजस्फालन—दोनों हाथों का संघर्प, ताली।

स्यामसगाई

१४ अरदास—प्रार्थना।
२२ चरवाई—चतुर, चालाक।
२३ लंगर—नटखट।
२५ अचपलौ—अत्यंत चंचल।
४४ अरस-परस—दर्शन।
५४ व्हैंक—बहैंक कर, वेसुध हो कर।
६४ ही—थी।

२२१ मृड—शिव; त्राता—रक्षक।
२३६ गैंवर—श्रेष्ठ हाथी (गज वर)।
२७७ भंगुर गति—बल खाती हुई चाल; लटी—क्षीण, पतली।
२७९ धमिल—बँधी चोटी।
३१४ धोरैं—निकट; टकटोरै—टटोलती है।
३१७ जारत की नहियाँ—जलाता है कि नहीं।
३२५ कुंभीपाक—एक नरक विशेष।
३७९ चोप—उत्साह।

मानमंजरी नाममाला

२ करुनार्नव—दया के सागर।
७६ लुकश्रंजन—"वह कल्पित अंजन जिसके विषय में यह प्रसिद्ध है कि इसके लगाने से लगानेवाला अदृश्य हो जाता है" (हिंदी-शब्दसागर)।
१०० उसीसे सौं उठंगि—तकिया की टेक लगा कर।
११८ सुहकारि—कदाचित् आम की चोपी।

१४९ हांती कीय—दूर किया, मिटाया।
३८२ सांति परी...नाह—यह अच्छा ही हुआ कि तेरा विवाह नहीं हुआ, नहीं तो तू अपने पति को दुःख देती।
३९३ तल्प—शय्या।
४६६ कंडु—खुजली।
५२३ असु—प्राण।

अनेकार्थमंजरी

४१ गज-पुष्कर—हाथी की सूंड़।
६० बहिक्रम—आयु।
९६ भगर-विद्या—हाथ की सफ़ाई, जादू।
९९ द्विभुजस्फालन—दोनों हाथों का संघर्ष, ताली।

स्यामसगाई

१४ अरदास—प्रार्थना।
२२ चरवाई—चतुर, चालाक।
२३ लंगर—नटखट।
२५ अचपलौ—अत्यंत चंचल।
४४ अरस-परस—दर्शन।
५४ व्हेंक—बहँक कर, बेसुध हो कर।
६४ ही—थी।

२२७ घातँ—प्रहार, आक्षेप ।
२३२ मसिहारे—काले ।
२५३ हरि भाँति कों—कृष्ण की रीति अथवा युक्तियों को ।
२६५ बादि—व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।
२६६ नंथा—शिक्षा, पाठ ।
३२३ बाध—बाधा, रुकावट ।
३२८ अवसेसहि—शेष भाग को ।
३५२ जबहि. . .मूठी—जब तक मनुष्य की मूठ बँधी रहती है अर्थात् जब तक वह वास्तविकता से अनभिज्ञ रहता है ।

रुक्मिनी मंगल

१८ अर सों—हठपूर्वक ।
५२ काहू नाहिं पतीजो—किसी का विश्वास न करना ।
६२ सुढार—सुंदर; चटा-गन—विद्यार्थियों के समूह ।
६७ अनुहारे—समान रंग-रूप वाले ।
६८ रोवत हैं बारे—सूर्य के डर से अंधकार भाग जाता है, भ्रमर उसी के छोटे छोटे बालक हैं जो उस के चले जाने के कारण रो रहे हैं ।
७१ अरकैं—टकराती हैं; अरक-किरन—सूर्य की किरणें ।
७३ जाल-रंध्र-मग. . .धुरवा—अट्टालिकाओं के झरोखों की जालियों के मार्ग से निकलता हुआ अगर लकड़ी का धुआँ जलपूर्ण मेघ के समान प्रतीत होता है ।
७५ बगर बगर—प्रत्येक महल के ऊपर; गुड़ी—पतंग ।
८७ छिप्र गति—शीघ्रतापूर्वक ।
१०९ सचु—सुख ।
१२६ कौल—कौर, ग्रास; तंतर—लाचार, विवश (विशेष—कदाचित् इस शब्द का संबंध सं० 'तंत्र' से है) ।
१२७ पानिप—ओप, कांति; धोरे—श्वेत, उज्वल ।
१२८ ओरे—ओले ।
१३२ गोमाय—शृगाल ।
१३५ परेवा—कबूतर ।
१३६ छिया—छोकरी, लड़की ।
१४४ अरबर में—अत्यंत शीघ्रता करने के कारण, हड़बड़ी में ।
१४८ दारु. . .जैसें—अरणी नामक काठ के बने हुए एक यंत्र

२२७ घातैं—प्रहार, आक्षेप ।
२३२ मसिहारे—काले ।
२५३ हरि भाँति कों—कृष्ण की रीति अथवा युक्तियों को ।
२६५ बादि—व्यर्थ, निष्प्रयोजन ।
२६६ मंथा—शिक्षा, पाठ ।
३२३ बाध—बाधा, रुकावट ।
३२८ अवसेसहि—शेष भाग को ।
३५२ जबहि...मूठी—जब तक मनुष्य की मूठ बँधी रहती है अर्थात् जब तक वह वास्तविकता से अनभिज्ञ रहता है ।

रुक्मिनी मंगल

१८ अर सौं—हठपूर्वक ।
५२ काहू नाहिं पतीजो—किसी का विश्वास न करना ।
६२ सुढार—सुंदर; चटा-गन—विद्यार्थियों के समूह ।
६७ अनुहारे—समान रंग-रूप वाले ।
६८ रोवत हैं वारे—सूर्य के डर से अंधकार भाग जाता है, भ्रमर उसी के छोटे छोटे बालक हैं जो उस के चले जाने के कारण रो रहे हैं ।
७१ अरकैं—टकराती हैं; अरक-किरन—सूर्य की किरणें ।
७२ जाल-रंध्र-मग...धुरवा—अट्टालिकाओं के झरोखों की जालियों के मार्ग से निकलता हुआ अगर लकड़ी का धुआँ जलपूर्ण मेघ के समान प्रतीत होता है ।
७५ बगर बगर—प्रत्येक महल के ऊपर; गुड़ी—पतंग ।
८७ छिप्र गति—शीघ्रतापूर्वक ।
१०६ सचु—सुख ।
१२६ कौल—कौर, ग्रास; तंतर—लाचार, विवश (विशेष—कदाचित् इस शब्द का संबंध सं० 'तंत्र' से है) ।
१२७ पानिप—ओप, कांति; धोरे—श्वेत, उज्वल ।
१२८ ओरे—ओले ।
१३२ गोमाय—शृगाल ।
१३५ परेवा—कबूतर ।
१३६ छिया—छोकरी, लड़की ।
१४४ अरबर मैं—अत्यंत शीघ्रता करने के कारण, हड़बड़ी में ।
१४८ दारु...जैसैं—अरणी नामक काठ के बने हुए एक यंत्र

पत्तियों के बीच के रिक्त स्थान से)।

१०६ वितन—फैला हुआ, विस्तृत; वितान—शामियाना; तनाव—शामियाने को खींचे रहने वाली रस्सियाँ।

१२३ पंचभौतिक तें न्यारी—पंच भूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) द्वारा बने हुए मनुष्यों के साधारण शरीर से भिन्न।

१२६ सच्यौ—एकत्रित।

१३५ चलीं दुकि—शीघ्रतापूर्वक चलीं।

१४० छवि-विलुलित—सुंदरता से हिलती हुई।

१५० उदर-दरी. . रखवारी—जब परीक्षित अपनी मा उत्तरा के गर्भ में थे तभी द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने उन पर ब्रह्मास्त्र का प्रहार किया था। उस समय गर्भ के भीतर प्रवेश कर के कृष्ण ने उन की रक्षा की थी[1]।

१९६ राका-मयंक—पूर्णिमा का चंद्रमा।

१९९ अनु—समीप।

२०० घर. . .है—स्त्रियों का गृहस्थ धर्म भ्रम है (असत् ज्ञान है), तुम्हारे रूप के सामने उस का कोई महत्त्व नहीं है।

२०४ ते रहे कीर तें—वे एक पंक्ति से (मंत्रमुग्ध की भाँति) खड़े हुए हैं।

२१८ नव-नीत. . हिय—नए प्राप्त किए हुए मित्र का मक्खन के तुल्य (कोमल) हृदय।

२२६ भीर—समूह।

२३३ धूँधरी—धुंधली।

२६० छिलछिल—छिछला।

२६५ पुट—हलका रंग।

२७३ जाति—चमेली की जाति का एक पुष्प। जूथिका—जूही का पुष्प।

---

[1] दे० 'दशम स्कंध', अध्याय १, पंक्ति ८३-८८ तथा 'श्रीमद्भागवत', स्कंध १, अध्याय ८

पत्तियों के बीच के रिक्त स्थान से)।

१०६ वितन—फैला हुआ, विस्तृत; वितान—शामियाना; तनाव—शामियाने को खींचे रहने वाली रस्सियाँ।

१२३ पंचभौतिक तैं न्यारी—पंच भूत (पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश) द्वारा बने हुए मनुष्यों के साधारण शरीर से भिन्न।

१२६ सच्यौं—एकत्रित।

१३५ चलीं ढुकि—शीघ्रतापूर्वक चलीं।

१४० छवि-विलुलित—सुंदरता से हिलती हुई।

१५० उदर-दरी..रखवारी—जब परीक्षित अपनी मा उत्तरा के गर्भ में थे तभी द्रोणाचार्य के पुत्र अश्वत्थामा ने उन पर ब्रह्मास्त्र का प्रहार किया था। उस समय गर्भ के भीतर प्रवेश कर के कृष्ण ने उन की रक्षा की थी[1]।

१६६ राका-मयंक—पूर्णिमा का चंद्रमा।

१६९ अनु—समीप।

२०० घर...है—स्त्रियों का गृहस्थ धर्म भ्रम है (असत् ज्ञान है), तुम्हारे रूप के सामने उस का कोई महत्त्व नहीं है।

२०४ ते रहे कौर तैं—वे एक पंक्ति से (मंत्रमुग्ध की भाँति) खड़े हुए हैं।

२१८ नव-नीत..हिय—नए प्राप्त किए हुए मित्र का मक्खन के तुल्य (कोमल) हृदय।

२२६ भीर—समूह।

२३३ घूँघरी—घुंघली।

२६० छिलछिल—छिछला।

२६५ पुट—हलका रंग।

२७३ जाति—चमेली की जाति का एक पुष्प। जूथिका—जूही का पुष्प।

---

[1] दे० 'दशम स्कंध', अध्याय १, पंक्ति ८३-८८ तथा 'श्रीमद्भागवत', स्कंध १, अध्याय ८

जिस समय वह रुकता है उसे त्रिसम का मुख्य ताल (सम) कहते हैं।

४७७-७८ कोई सुंदर स्त्री किसी सखी के हाथ (हथेली) पर त्रिसम का ताल बाँध कर अथवा त्रिसम की गति से नाचती है। उसे नाचता देख कर ऐसा प्रतीत होता है मानों हथेली पर लट्टू नाच रहा हो; इस दृश्य को देख कर कृष्ण लट्टू (मुग्ध) हो जाते हैं।

४९९ सुलफ—कदाचित् यह शब्द 'सुलप' (=सुंदर आलाप) का विकृत रूप है।

५१९ गोलक—आँख की पुतली।

५३४ दगरी—मार्ग।

५३८ व्रीड़न—लज्जित करने वाले।

५३९ मरगजी-माल—मींजी अथवा मली हुई माला।

५५९ भाँति—रीति।

५८२ अधिकारी—उपयुक्त पात्र।

५८९ हरि-धर्म-बहिर्मुख—वैष्णव-धर्म-विरोधी।

सिद्धांत पंचाध्यायी

६ महाभूत—पंचतत्त्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश)।

७ महतत्व—जीवात्मा।

१० विस्व-प्रभव—विश्व की उत्पत्ति का कारण।

१४ आश्रय—अवलंब, आधार; अवधि-भूत—चरम उत्कर्ष को प्राप्त।

१८ निरोध—प्रतिबंध अथवा नियंत्रण।

२६ निरतास—इस शब्द का भावार्थ सार या निचोड़ जान पड़ता है।

२७ ननु—निश्चयपूर्वक।

६० खेवा—संभवत: इस शब्द का प्रयोग यहाँ 'समूह' के अर्थ में हुआ है।

६१ निदेसा—निर्देश, आज्ञा।

७७ आतमा-निष्ठ—आत्मा में स्थित; आतम-गामी—आत्मा को जानने वाला।

७८ अनावृत—जो ढँका न हो, प्रत्यक्ष।

८० निरवृत्ति-परा तैं—मुक्ति-

जिस समय वह रुकता है उसे त्रिसम का मुख्य ताल (सम) कहते हैं।

४७७-७८ कोई सुंदर स्त्री किसी सखी के हाथ (हथेली) पर त्रिसम का ताल बाँध कर अथवा त्रिसम की गति से नाचती है। उसे नाचता देख कर ऐसा प्रतीत होता है मानों हथेली पर लट्टू नाच रहा हो; इस दृश्य को देख कर कृष्ण लट्टू (मुग्ध) हो जाते हैं।

४९९ सुलफ—कदाचित् यह शब्द 'सुलप' (=सुंदर आलाप) का विकृत रूप है।

५१६ गोलक—आँख की पुतली।

५३४ दगरी—मार्ग।

५३८ व्रीड़न—लज्जित करने वाले।

५३९ मरगजी-माल—मींजी अथवा मली हुई माला।

५५९ भाँति—रीति।

५८३ अधिकारी—उपयुक्त पात्र।

५८९ हरि-धर्म-बहिर्मुख—वैष्णव-धर्म-विरोधी।

सिद्धांत पंचाध्यायी

६ महाभूत—पंचतत्त्व (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश)।

७ महतत्व—जीवात्मा।

१० विस्व-प्रभव—विश्व की उत्पत्ति का कारण।

१४ आश्रय—अवलंब, आधार; अवधि-भूत—चरम उत्कर्ष को प्राप्त।

१८ निरोध—प्रतिबंध अथवा नियंत्रण।

२६ निरतास—इस शब्द का भावार्थ सार या निचोड़ जान पड़ता है।

२७ ननु—निश्चयपूर्वक।

६० खेवा—संभवत: इस शब्द का प्रयोग यहाँ 'समूह' के अर्थ में हुआ है।

६१ निदेसा—निर्देश, आज्ञा।

७७ आतमा-निष्ठ—आत्मा में स्थित; आतम-गामी—आत्मा को जानने वाला।

७८ अनावृत—जो ढँका न हो, प्रत्यक्ष।

८० निरवृत्ति-परा तैं—मुक्ति-

कारण माना गया है और 'कारणसृष्टि' की संज्ञा दी गई है।

२५ विसर्ग—महत्तत्व आदि कारणों द्वारा उत्पन्न समस्त चराचर के स्थूल शरीर। इन्हें 'स्थूलसृष्टि' अथवा 'कार्यसृष्टि' कहा गया है।

२६ मजाद वितान—मर्यादा का विस्तार अथवा उत्कर्ष; 'थान'—अपनी अपनी मर्यादा का पालन करते हुए सूर्यादिक जिस उत्कर्ष अथवा श्रेष्ठता को प्राप्त करते हैं उस का नाम 'स्थान' है।

२९ समीचीन—यथार्थ; 'मन्वं-तर' वृत्ति—मनु आदि के धर्माचरण में संलग्न होने का नाम।

३० 'ईसान कथा'—राजाओं का जीवनचरित।

३१ निरोध—दुष्ट राजाओं को परास्त कर के अपने वश में करना (विशेष—श्री कर्मचंद गुग्गलानी के अनुसार 'नि-रोध' शब्द का यह अर्थ श्रीधर स्वामी कृत है)।

३६ अवर निरोध भेद—उपर्युक्त गुग्गलानी जी के अनुसार वल्लभाचार्य ने 'निरोध' शब्द का अर्थ दो प्रकार से किया है-(१) प्रपंच विस्मृतिपूर्वक भगवान् में भक्त की आसक्ति (२) आत्मविस्मृतिपूर्वक भगवान् की अपने भक्त में आसक्ति। आगे की पंक्तियों में कवि ने दोनों प्रकार के 'निरोध' का वर्णन किया है।

६४ पितहि न...दियौ—यदु ययाति राजा के पुत्र थे। एक समय ययाति के पापा-चरण से क्रुद्ध हो कर शुक्रा-चार्य ने उन्हें श्राप दे कर तुरंत वृद्ध कर दिया किंतु क्रोध शांत होने पर बाद में उन्हों ने यह भी कहा कि तुम किसी पुरुष की युवावस्था के साथ अपनी वृद्धावस्था बदल सकोगे। कामुक ययाति ने अपने पुत्र यदु से अपनी युवा-वस्था देने के लिए आग्रह किया किंतु उस ने ऐसा

कारण माना गया है और 'कारणसृष्टि' की संज्ञा दी गई है।

२५ विसर्ग—महत्तत्व आदि कारणों द्वारा उत्पन्न समस्त चराचर के स्थूल शरीर। इन्हें 'स्थूलसृष्टि' अथवा 'कार्यसृष्टि' कहा गया है।

२६ मजाद वितान—मर्यादा का विस्तार अथवा उत्कर्ष; 'थान'—अपनी अपनी मर्यादा का पालन करते हुए सूर्यादिक जिस उत्कर्ष अथवा श्रेष्ठता को प्राप्त करते हैं उस का नाम 'स्थान' है।

२९ समीचीन—यथार्थ; 'मन्वंतर' वृत्ति—मनु आदि के धर्माचरण में संलग्न होने का नाम।

३० 'ईसान कथा'—राजाओं का जीवनचरित।

३१ निरोध—दुष्ट राजाओं को परास्त कर के अपने वश में करना (विशेष—श्री कर्मचंद गुग्गलानी के अनुसार 'निरोध' शब्द का यह अर्थ श्रीधर स्वामी कृत है)।

३६ अवर निरोध भेद—उपर्युक्त गुग्गलानी जी के अनुसार वल्लभाचार्य ने 'निरोध' शब्द का अर्थ दो प्रकार से किया है—(१) प्रपंच विस्मृतिपूर्वक भगवान् में भक्त की आसक्ति (२) आत्मविस्मृतिपूर्वक भगवान् की अपने भक्त में आसक्ति। आगे की पंक्तियों में कवि ने दोनों प्रकार के 'निरोध' का वर्णन किया है।

६४ पितहि न...दियौ—यदु ययाति राजा के पुत्र थे। एक समय ययाति के पापाचरण से क्रुद्ध हो कर शुक्राचार्य ने उन्हें श्राप दे कर तुरंत वृद्ध कर दिया किंतु क्रोध शांत होने पर बाद में उन्हों ने यह भी कहा कि तुम किसी पुरुष की युवावस्था के साथ अपनी वृद्धावस्था बदल सकोगे। कामुक ययाति ने अपने पुत्र यदु से अपनी युवावस्था देने के लिए आग्रह किया किंतु उस ने ऐसा

तृतीय अध्याय

५७ उपसंहरौ—परित्याग करो।

६७ लटि रही—लुभा रही।

७० घूमि—चक्कर खा कर, व्याकुल हो कर।

चतुर्थ अध्याय

३ रौर—कोलाहल।

१७ गारौ—गर्व।

२३ ब्रम्हहा—ब्रह्महत्या करने वाला।

२५ सौनक—कसाई।

३८ वल्गन करैं—बक बक करते हैं, बातें मारते हैं।

५२ बृकन—भेड़ियों को; अजन प्रति—बकरियों के समीप।

सप्तम अध्याय

२० बरहे—खेत सींचने वाली छोटी नाली।

२१ अभिचार—मंत्र आदि के प्रयोग द्वारा प्रेरित।

३० कूट—पर्वत की चोटी।

३९ साँकरी—संकट, कष्ट।

४३ परी...धुकि—पृथ्वी पर गिर पड़ी।

५० धुरि गयौ—लिपट गया।

५३ किरच किरच—टुकड़े टुकड़े होकर।

अष्टम अध्याय

१२ अतींद्रिय—इंद्रियों के अनुभव के परे, अगोचर।

४० नाक-नथूली—नाक की छोटी नथ; झगूली—बच्चों के पहनने का ढीला कुरता।

४१ जटित बघूली—सोने अथवा चाँदी में जड़ा हुआ छोटा बाघ का नाख़ून।

६१ खरिक—पशुओं के रहने का स्थान, बाड़ा; खोरि—गली।

६४ अरग अरग—चुपके चुपके।

८९ लिलाई—लीला अथवा क्रीड़ा करता है।

१०१ माखन मो हारे—यह पाठ चिंत्य है।

१०३ हित-ईपनी—हित की प्रबल इच्छा रखने वाली।

नवम अध्याय

११ पृथु—चौड़ी; विलुलित—हिलती हुई; कबरी—चोटी।

तृतीय अध्याय

५७ उपसंहरौ—परित्याग करो।
६७ लटि रही—लुभा रही।
७० घूमि—चक्कर खा कर, व्याकुल हो कर।

चतुर्थ अध्याय

३ रौर—कोलाहल।
१७ गारौ—गर्व।
२३ ब्रम्हहा—ब्रह्महत्या करने वाला।
२५ सौनक—कसाई।
३८ बल्गन करैं—बक बक करते हैं, बातें मारते हैं।
५२ वृकन—भेड़ियों को; अजन प्रति—बकरियों के समीप।

सप्तम अध्याय

२० बरहे—खेत सींचने वाली छोटी नाली।
२१ अभिचार—मंत्र आदि के प्रयोग द्वारा प्रेरित।
३० कूट—पर्वत की चोटी।
३९ साँकरी—संकट, कष्ट।
४३ परी...धुकि—पृथ्वी पर गिर पड़ी।
५० घुरि गयो—लिपट गया।
५३ किरच किरच—टुकड़े टुकड़े होकर।

अष्टम अध्याय

१२ अतींद्रिय—इंद्रियों के अनुभव के परे, अगोचर।
४० नाक-नथूली—नाक की छोटी नथ; झगूली—बच्चों के पहनने का ढीला कुरता।
४१ जटित बघूली—सोने अथवा चाँदी में जड़ा हुआ छोटा बाघ का नाख़ून।
६१ खरिक—पशुओं के रहने का स्थान, बाड़ा; खोरि—गली।
६४ अरग अरग—चुपके चुपके।
८९ लिलाई—लीला अथवा क्रीड़ा करता है।
१०१ माखन मो हारे—यह पाठ चित्य है।
१०३ हित-ईपनी—हित की प्रबल इच्छा रखने वाली।

नवम अध्याय

११ पृथु—चौड़ी; विलुलित—हिलती हुई; कवरी—चोटी।

घूमता दिखाई देता है" (हिंदी-शब्दसागर)।

षोडश अध्याय

८ ह्रद—झील।
१७ अमुना—इस से।
४८ बरियारौ—बलवान।
५१ माड़े—मैदे की बनी हुई एक प्रकार की बहुत पतली रोटी;[1] भाँड़े—बरतन।

सप्तदश अध्याय

६ दौर—धावा।
१४ भिहरानौ—टूट पड़ा; मधु-रिपु-आसन—गरुड़।
२६ लेलिह—सर्प।

अष्टादश अध्याय

३१ बीरी—समूह, दल।
४० टोल—मंडली।

एकोनविंश अध्याय

२० बगदी—लुढ़क चली।

विंश अध्याय

३ प्रावृट—पावस, वर्षा।
१६ उत्पथ—कुमार्ग।
२१ बुढ़ी—राम की बुढ़िया, बीर-बहूटी; लुढ़ी—लुढ़क चली; उछलींध्र—कुकुरमुत्ता।
२७ ऊरमी—तरंग, लहर।
५४ वनौकस—वनवासी।
५६ कचोर—कटोरा।
६८ गतकलमष—पाप रहित।
८७ पुहुपवती—रजस्वला।

एकविंश अध्याय

४५ भई . . . ईरति—मुनियों (के हृदय) को आंदोलित अथवा चंचल किया।

द्वाविंश अध्याय

२ दारिका—कन्याएँ।
६ हविषा—साकल्य, जौ तिल आदि मिली हुई हवन की सामग्री।

---

[1] दे० श्रीमद्भागवत, १०—१६—२४ पर श्रीधर स्वामी की टीका—"मंडकपाकभाजनंतद्वत्"।

घूमता दिखाई देता है" (हिंदी-शब्दसागर)।

षोडश अध्याय

८ ह्रद—झील।

१७ अमुना—इस मे।

४८ वरियारौ—बलवान।

५१ माड़े—मैदे की बनी हुई एक प्रकार की बहुत पतली रोटी;[1] भाँड़े—बरतन।

सप्तदश अध्याय

६ दौर—धावा।

१४ भिहरानी—टूट पड़ा; मधु-रिपु-आसन—गरुड़।

२६ लेलिह—सर्प।

अष्टादश अध्याय

२१ बीरी—समूह, दल।

४० टोल—मंडली।

[1] दे० श्रीमद्भागवत, १०—१६—२४ पर श्रीधर स्वामी की टीका—"मंडकपाकभाजनंतद्वत्"।

एकोनविंश अध्याय

२० ढगदी—लुढ़क चली।

विंश अध्याय

३ प्रावृट—पावस, वर्षा।

१६ उत्पथ—कुमार्ग।

२१ बुढ़ी—राम की बुढ़िया, बीर-बहूटी; लुढ़ी—लुढ़क चली; उछलींध्र—कुकुरमुत्ता।

२७ ऊर्म्मी—तरंग, लहर।

५४ वनौकस—वनवासी।

५६ कचोर—कटोरा।

६८ गतकल्मप—पाप रहित।

८७ पुहुपवती—रजस्वला।

एकविंश अध्याय

४५ भई...ईरति—मुनियों (के हृदय) को आंदोलित अथवा चंचल किया।

द्वाविंश अध्याय

२ दारिका—कन्याएँ।

६ हविपा—साकल्य, जौ तिल आदि मिली हुई हवन की सामग्री।

चिन्हित करती है।

८४ गौरी—एक राग।

१०७ उरप तिरप—नृत्य का एक भेद।

१२० हस्तक—ताली।

१२८ मड़हन—मुँडेरियों पर।

१३२ हटरी—दिवाली के अवसर पर मिट्टी का बनाया हुआ एक छोटा सा मकान जो विशेष रूप से सजाया जाता है।

१५१ रमकि रमकि—पेंग मार कर।

१८४ मुरकी—छिड़का हुआ।

२३४ अनाघात—"संगीत के अंतर्गत ताल विशेष। वह विराम जो गायन में चार मात्राओं के बाद आता है और कभी कभी सम का काम देता है" (हिंदी-शब्द-सागर)।

२८५ निस्तम—अंधकार रहित, उज्वल।

चित्रित करती है।

८४ गौरी—एक राग।

१०७ उरप तिरप—नृत्य का एक भेद।

१२० हस्तक—ताली।

१२८ मड़हन—मुंडेरियों पर।

१३२ हटरी—दिवाली के अवसर पर मिट्टी का बनाया हुआ एक छोटा सा मकान जो विशेष रूप से सजाया जाता है।

१५१ रमकि रमकि—पेंग मार कर।

१८४ भुरकी—छिड़का हुआ।

२३४ अनाघात—"संगीत के अंतर्गत ताल विशेष। वह विराम जो गायन में चार मात्राओं के बाद आता है और कभी कभी सम का काम देता है" (हिंदी-शब्द-सागर)।

२८५ निस्तम—अंधकार रहित, उज्वल।